"जय गुरुदेव"

'नाड़ी एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण'

[COMPARITIVE ANALYSIS OF A PERSONALITY ON THE BASIS OF NERVE (PULSE) AND PSYCHOLOGICAL TEST]

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

की विद्यावारिधि (पी-एच. डी.) उपाधि हेतु

शोध - प्रबंध

अप्रैल - 2000





अनुसंधात्री

श्रीमती ऋतु कौशल

परिसर जबलपुर

निर्देशक

डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव

एम.ए.(मनोविज्ञान) एम.एड.,पी-एच.डी.
भूतपूर्व प्राचार्य एवं आचार्य
शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक

डॉ. श्री एम.डी. शास्त्री

एम.ए. आयुर्वेदाचार्य (एफ आर.ए.व्ही.)
विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संकाय
महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

Ref.

''जय गुरुदेव''

'नाड़ी एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण'

[COMPARITIVE ANALYSIS OF A PERSONALITY ON THE BASIS OF NERVE (PULSE) AND PSYCHOLOGICAL TEST]

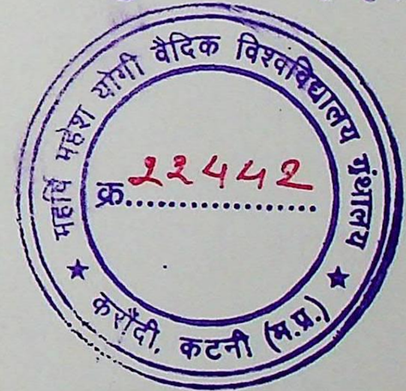
महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

की विद्यावारिधि (पी-एच. डी.) उपाधि हेतु

शोध - प्रबंध

अप्रैल - 2000





अनुसंधात्री

श्रीमती ऋतु कौशल

परिसर जबलपुर

निर्देशक

डॉ.आर.पी. श्रीवास्तव

एम.ए.(मनोविज्ञान) एम.एड.,पी-एच.डी.

भूतपूर्व प्राचार्य एवं आचार्य

शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक

डॉ. श्री एम.डी. शास्त्री

एम.ए. आयुर्वेदाचार्य (एफ आर.ए.व्ही.)

विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संकाय

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

"जय गुरुदेव"

'नाड़ी एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण'

[COMPARITIVE ANALYSIS OF A PERSONALITY ON THE BASIS OF NERVE (PULSE) AND PSYCHOLOGICAL TEST]

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

की विद्यावारिधि (पी-एच. डी.) उपाधि हेतु

शोध - प्रबंध

अप्रैल - 2000



अनुसंधात्री
श्रीमती ऋतु कौशल
परिसर जबलपुर

निर्देशक
डॉ.आर.पी. श्रीवास्तव
एम.ए.(मनोविज्ञान) एम.एड.,पी-एच.डी.
भूतपूर्व प्राचार्य एवं आचार्य
शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक
डॉ. श्री एम.डी. शास्त्री
एम.ए. आयुर्वेदाचार्य (एफ आर.ए.व्ही.)
विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संकाय
महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

"जय गुरुदेव"

'नाड़ी एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण'

[COMPARITIVE ANALYSIS OF A PERSONALITY ON THE BASIS OF NERVE (PULSE) AND PSYCHOLOGICAL TEST]

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

की विद्यावारिधि (पी-एच. डी.) उपाधि हेतु

शोध - प्रबंध

अप्रैल - 2000



अनुसंधात्री

श्रीमती ऋतु कौशल

परिसर जबलपुर

निर्देशक

डॉ.आर.पी. श्रीवास्तव

एम.ए.(मनोविज्ञान) एम.एड.,पी-एच.डी.

भूतपूर्व प्राचार्य एवं आचार्य

शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक

डॉ. श्री एम.डी. शास्त्री

एम.ए. आयुर्वेदाचार्य (एफ आर.ए.व्ही.)

विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संकाय

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)



पूज्य महर्षि श्री महेश योगी
शत् शत् नमन्

संक्षिप्तिका

प्राणिमात्रा की सर्वप्रथम कामना है - सुखमय दीर्घजीवन की प्राप्ति । यद्धपि सभी शास्त्रा मनुष्य को आध्यात्मिक-आधिभौतिक और आधिदैविक इन तीनों प्रकार के संतापों से मुक्त करने का मार्गदर्शन देते हैं । किंतु उनमें बतलाये गये विधानों का पालन करने के लिये स्वास्थ्य तथा आरोग्य परम अपेक्षित है । स्वास्थ्य संरक्षण एवं रोगमुक्ति का शास्त्रा है-आयुर्वेद । सर्वप्रथम समस्त शास्त्रों में सर्वज्ञानमय ब्रम्हा ने शाश्वत एवं अनादि त्रिसूत्रा आयुर्वेद का स्मरण किया। प्राणि जगत की पीड़ा के प्रतिकार के लिये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रुप चतुर्विध पुरुषार्थ साधक आयुर्वेद का 'ब्रम्हसंहिता' में निबद्ध किया एवं सृष्टि रचना के पूर्व ही आयुर्वेद की रचना की जिससे सृष्ट प्राणियों का जीवन सुखमय हो और किसी कष्ट के उत्पन्न होने पर उसे दूर किया जा सके । जिस प्रकार जीवन दान सबसे बड़ा दान है, उसी प्रकार सुंदर स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा सुख है ।

भारत के आदि आयुर्वेदाचार्यों महर्षि चरक, सुश्रुत, धनवन्तरि, नागार्जुन आदि के अनुसार आयुर्वेद न केवल समस्त विश्व बल्कि समस्त ब्रम्हांड के प्राणिमात्रा का संरक्षक है । हमारे इन संसार प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्यों ने आयुर्वेद में जिस स्वास्थ्य का परम चिंतन किया है, उसका विस्तार संबंध जल, थल, नभ से है वह किसी न किसी रूप में संपूर्ण प्राणिमात्रा से संबंधित है। यह



पूज्य महर्षि श्री महेश योगी
शत् शत् नमन्

संक्षिप्तिका

प्राणिमात्रा की सर्वप्रथम कामना है - सुखमय दीर्घजीवन की प्राप्ति । यद्धपि सभी शास्त्रा मनुष्य की आध्यात्मिक-आधिभौतिक और आधिदैविक इन तीनों प्रकार के संतापों से मुक्त करने का मार्गदर्शन देते हैं । कितुं उनमें बतलाये गये विधानों का पालन करने के लिये स्वास्थ्य तथा आरोग्य परम अपेक्षित है । स्वास्थ्य संरक्षण एवं रोगमुक्ति का शास्त्रा है-आयुर्वेद । सर्वप्रथम समस्त शास्त्रों में सर्वज्ञानमय ब्रम्हा ने शाश्वत एवं अनादि त्रिसूत्रा आयुर्वेद का स्मरण किया। प्राणि जगत की पीड़ा के प्रतिकार के लिये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रुप चतुर्विध पुरुषार्थ साधक आयुर्वेद का 'ब्रम्हसंहिता' में निबद्ध किया एवं सृष्टि रचना के पूर्व ही आयुर्वेद की रचना की जिससे सृष्ट प्राणियों का जीवन सुखमय हो और किसी कष्ट के उत्पन्न होने पर उसे दूर किया जा सके । जिस प्रकार जीवन दान सबसे बड़ा दान है, उसी प्रकार सुंदर स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा सुख है ।

भारत के आदि आयुर्वेदाचार्यो महर्षि चरक, सुश्रुत, धनवन्तरि, नागार्जुन आदि के अनुसार आयुर्वेद न केवल समस्त विश्व बल्कि समस्त ब्रम्हांड के प्राणिमात्रा का संरक्षक है । हमारे इन संसार प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्यो ने आयुर्वेद में जिस स्वास्थ्य का परम चिंतन किया है, उसका विस्तार संबंध जल, थल, नभ से है वह किसी न किसी रूप में संपूर्ण प्राणिमात्रा से संबंधित है। यह

दीर्घायु व सुख प्रदान करने वाला ऐसा शास्त्र है जिसकी प्रशंसा आज संसार के महान चिकित्सक भी कर रहे हैं। किसी समय का उपेक्षित भारतीय आयुर्वेद आज सारी दुनिया में परम उपयोगी माना जा रहा है ।

वैदिक स्वास्थ्य विधान (आयुर्वेद) स्वास्थ्य की परिभाषा वात, पित्त, कफ के संतुलन के रुप में देता है । वात, पित्त, कफ मानव प्रकृति के निर्मापक हैं । प्रत्येक पुरुष (person) का जो विशिष्ट शारीरिक स्वरुप और मानव स्वभाव होता है उसे लौकिक व्यवहार में उनकी प्रकृति कहते हैं। और यही उनका व्यक्तित्व कहलाता है । वात आदि दोषों की उत्कर्षता के अनुसार हीन प्रकृति अर्थात वातज या वात प्रकृति, मध्यम प्रकृति अर्थात पित्तज प्रकृति, उत्तम प्रकृति अर्थात कफज प्रकृति इन तीन प्रकार की प्रकृतियों का निर्धारण होता है । इसके अलावा द्विदोषज प्रकृति वात-कफ, वात-पित्त और पित्त-कफ जन्य प्रकृतियाँ निंदित मानी जाती हैं । जिस प्रकार त्रिदोष शारीरिक हैं उसी प्रकार सत्व, रज एवं तम मन के दोष हैं । सात्विक, राजस एवं तामस इनमें से सत्व सदैव ही गुण कहा गया है । मन के दोषों में इसकी गणना नहीं की जाती है । ये तीनों मानस भावों को उत्पन्न करत हैं । विकृत होकर मन को दूषित करते हैं । और मन और शरीर एक दूसरे के साथ जुड़े हुये हैं । इसलिये व्यक्तित्व पर इन मानस त्रिगुण का भी प्रभाव पड़ता है ।

चूंकि व्यक्तित्व एक जटिल प्रत्यय है और यह बात निर्विवाद प्रमाणित होती है कि इस संसार में दो व्यक्ति एक ही व्यक्तित्व के नहीं पाये जाते हैं ।

THERE ARE NO TWO HUMAN BEING IN THE WORLD.

जितने व्यक्ति हैं, उतने ही व्यक्तित्व हैं । किन्हीं भी दो व्यक्तियों में समानता नहीं होती भले ही किसी प्रकार या आधार की समानता पाई जा सकती है। इसी आधार पर व्यक्तित्व का प्राचीन काल से ही वर्गीकरण किया जाता रहा है। कुछ न कुछ शारीरिक भिन्नता, रंगरुप, वैचारिक विभिन्नता हमें सभी व्यक्तियों में देखने को मिलती है और इनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन एवं

परीक्षण भी साधारण नहीं है इसके लिये विभिन्न प्रकार के आयाम हैं । अनेक अनुसंधानों के बाद भी व्यक्तित्व की प्रकृति को निश्चित रूप में परिभाषित करना कठिन है साथ ही व्यक्तित्व शब्द जटिल व गूढ़ होने के कारण लंबे समय तक मनोवैज्ञानिकों द्वारा यह व्यक्तित्व शब्द उपेक्षित रहा है । लेकिन फिर भी इस क्षेत्र में अध्ययन हुआ है। सर्वप्रथम व्यवस्थित अध्ययन क्रेपलिन जेने, फ्रायड आदि चिकित्सा शास्त्रियों द्वारा प्रारंभ किये गये । आधुनिक जीवन में व्यक्तित्व के वैज्ञानिक अध्ययन को अत्याधिक प्रोत्साहन मिला है क्योंकि सफल समायोजन में व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण भूमिका है । जहां जटिल संस्कृतियाँ हैं, वहाँ सामाजिक जीवन में व्यक्तित्व का स्थान सर्वोपरि है ।

व्यक्तित्व के क्षेत्र में जितने भी अध्ययन हुये हैं, उनका ऐतिहासिक दृष्टावलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि व्यक्तित्व प्रत्यय के अर्थ में परिवर्तन के कारण ही मनोविज्ञान की दिशा में निरंतर परिवर्तन दिखाई देता पड़ता है। इसका कारण है कि जहाँ मनोवैज्ञानिकों ने विशिष्ट एवं संगठित व्यक्ति को सामान्य मनोविज्ञान की समस्या समझा है। वहीं जो समाजशास्त्री हैं उन्होंने इसे मानव समूह की अंतिम इकाई माना है। कुछ विद्धान इसे मनुष्य का बाह्य रुप मानते हैं। लेकिन कुछ विचारक (मनोवैज्ञानिक) इसे विभिन्न विशेषताओं का योग (sum total) मानते हैं । इस प्रकार व्यक्तित्व की व्याख्या में अनेक लोगों के अनेक मतों को बल दिया लेकिन व्यक्तित्व को समझने के लिये प्रकृति को समझना आवश्यक है क्योंकि मनुष्य की संवेदनायें, मूल प्रवृतियां, उद्देश्य, कल्पना, स्मृति, प्रत्यक्ष ज्ञान, बुद्धि तथा विवेक ये सभी व्यक्तित्व के अंतर्गत है ।

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में शोधार्थी ने किशोरावस्था को अंतिम सीढ़ी में प्रविष्ट (18 वर्ष) के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन आयुर्वेद (वैदिक स्वास्थ्य विधान) एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से करने का प्रयास किया है कि आयुर्वेद के अनुसार व्यक्तियों की (छात्र-छात्राओं) की क्या

प्रकृति है वे वात प्रकृति के हैं ? कि पित्त प्रकृति के हैं? या कफ प्रकृति के हैं? इस प्रकृतियों के आधार पर छात्र-छात्राओं के अलग-अलग समूहों के व्यक्तित्व का मापन व्यक्तित्व के 16 शीलगुणों के आधार पर मनोवैज्ञानिक परीक्षण के द्वारा ज्ञात करने पर इन समूहों में क्या भिन्नता एवं क्या समानता ज्ञात होती है ? इन सभी जिज्ञासाओं के कारण इस शोध विषय को लेने की आवश्यकता पड़ी । इस शोध द्वारा प्राप्त निष्कर्ष भावी अनुसंधानकर्ता, परिवार एवं समाज के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे ।

इस प्रकार अंत में यह कहेंगे कि व्यक्तित्व जैसे जटिल प्रत्यय को सुगम बनाने के लिये निरन्तर इस पर दिशा में अनुसंधान होना चाहिये तभी व्यक्ति अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं व्यवहारिक जीवन में सफल तरीके में समायोजित हो सकेंगे ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध की विषय सामग्री को पांच अध्यायों में परिभाषित किया गया है ।

प्रथम अध्याय में लिये गये विषय से संबंधित प्रस्तावना दी गई है एवं शोध के विषय को समझाने का प्रयत्न किया गया है कि इस शोध विषय को लेने की क्यों आवश्यकता पड़ी? इसका क्या महत्व है? क्या उद्देश्य हैं? एवं इसकी क्या उपयोगिता है? प्राचीन ग्रंथों में वैदिक स्वास्थ विज्ञान में व्यक्तित्व को किस तरह परिभाषित व वर्णित किया गया है, यह बतलाया गया है।

द्वितीय अध्याय में शोध कार्य के लिये उपकल्पना (Hypothesis) बनाई गई है एवं किशोरावस्था के छात्र-छात्रायें किस शिक्षण संस्थान में संबंधित है? इनका चयन किस प्रकार किया गया ? एवं किन उपकरणों (tools) के माध्यम से इनके व्यक्तित्व का अध्ययन किया? इस विषय में बताया गया है। अंत में पथप्रदर्शी अध्ययन द्वारा किशोरावस्था के ही कुछ छात्र-छात्राओं पर यह अध्ययन किया ताकि आने वाली कठिनाईयों के साथ इसमें खर्च होने

वाले समय, धन, शक्ति का पता चल सके एवं यह भी स्पष्ट हो जावे कि इसका प्रयोग अनुसंधान कार्य के लिये किया जा सकता है अथवा नहीं?

तृतीय अध्याय में एकत्रित आंकड़ों का वर्गीकरण, सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है। जिसके अंतर्गत वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र छात्राओं के अलग-अलग समूहों का वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावाली एवं व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी का आवृत्ति वितरण एवं केन्द्रीय वितरण को स्पष्ट किया गया है। साथ ही प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा प्राप्तांकों के परिणामों को स्पष्ट किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी द्वारा छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों के निम्न, औसत और उच्च इन तीनों स्तरों की अलग-अलग व्याख्या की गई है। तीनों समूहों वात, पित्त एवं कफ के छात्र-छात्राओं के मध्य तुलनात्मक परिणामों को दर्शाया गया है। एवं मापनियों द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर अलग-अलग व्यक्तित्व शीलगुणों की विश्लेषणात्मक व्याख्या की गई है। एवं अंत में शोध कार्य के लिये जो उपकल्पना बनाई गई थी वह सिद्ध हुई कि नहीं उसे 'उपकल्पनाओं का सत्यापन' के अंतर्गत लिखकर स्पष्ट किया गया है।

पांचवें अध्याय में निष्कर्ष व सुझाव दिये गयें हैं।

उपसंहार -

प्रस्तुत शोध कार्य में यह जानने का प्रयास किया गया है कि किशोरावस्था के छात्र-छात्राओं के नाड़ी परीक्षण एवं आयुर्वेद की वात, पित्त, कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली के अनुसार क्या प्रकृति (व्यक्तित्व) है ? एवं इन प्रकृतियों का मनोवैज्ञानिक परीक्षण के व्यक्तित्व शीलगुणों पर क्या प्रभाव पड़ता है ? क्या व्यक्तित्थव में एवं शीलगुणों में लैगिंक भिन्नता (Sex Difference) पाई जाती है अथवा नहीं ? इन सभी प्रश्नों के उत्तर हमें शोधकार्य के माध्यम से

प्राप्त हुये हैं जो निम्नानुसार हैं -

1. प्राचीनतम ग्रंथों के अनुसार वात (वायु) में रजगुण की प्रचुरता होती है। लेकिन शोध कार्य के अंर्तगत चयनित वात प्रकृति की छात्राओं के व्यक्तित्व में रजगुण की प्रधानता प्राप्त नहीं हुई ये छात्रायें सत्वगुणी पाई गई हैं।

2. वात प्रकृति के छात्रों के व्यक्तित्व में रजगुण प्रधान पाया गया।

3. पित्त प्रकृति की छात्राओं के व्यक्तित्व में भी रजगुण की प्रधानता पाई गई।

4. पित्त प्रकृति के छात्रों के व्यक्तित्व में भी रजगुण विशेष रुप से प्राप्त हुआ ।

5. कफ प्रकृति की छात्राओं के व्यक्तित्व में सत्वगुण पाया गया ।

6. कफ प्रकृति की छात्रों के व्यक्तित्व में भी सत्वगुण विशेष रुप से पाया गया ।

7. उपरोक्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व मापन के सोलह कारकों द्वारा प्राप्त परिणामों में व्यक्तित्व भिन्नता पाई गई ।

8. समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व मापन के सोलह कारकों द्वारा प्राप्त परिणामों में छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व शीलगुणों में लैगिंक भिन्नता (Sex Difference) भी पाई गई ।

श्रीमति ऋतु कौशल



"जय गुरुदेव"

'नाड़ी एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण'

[COMPARITIVE ANALYSIS OF A PERSONALITY ON THE BASIS OF NERVE (PULSE) AND PSYCHOLOGICAL TEST]

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

की विद्यावारिधि (पी-एच. डी.) उपाधि हेतु

शोध - प्रबंध

अप्रैल - 2000



अनुसंधात्री

श्रीमती ऋतु कौशल

परिसर जबलपुर

निर्देशक

डॉ.आर.पी. श्रीवास्तव

एम.ए.(मनोविज्ञान) एम.एड.,पी-एच.डी

भूतपूर्व प्राचार्य एवं आचार्य

शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक

डॉ. श्री एम.डी. शास्त्री

एम.ए. आयुर्वेदाचार्य (एफ आर.ए.व्ही.)

विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संकाय

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

"जय गुरुदेव"

'नाड़ी एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण'

[COMPARITIVE ANALYSIS OF A PERSONALITY ON THE BASIS OF NERVE (PULSE) AND PSYCHOLOGICAL TEST]

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

की विद्यावारिधि (पी-एच. डी.) उपाधि हेतु

शोध - प्रबंध

अप्रैल - 2000



अनुसंधात्री

श्रीमती ऋतु कौशल

परिसर जबलपुर

निर्देशक

डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव

एम.ए.(मनोविज्ञान) एम.एड., पी-एच.डी.

भूतपूर्व प्राचार्य एवं आचार्य

शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक

डॉ. श्री एम.डी. शास्त्री

एम.ए. आयुर्वेदाचार्य (एफ आर.ए.व्ही.)

विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संकाय

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

घोषणा - पत्र

मैं **श्रीमती ऋतु कौशल** घोषणा करती हूँ कि ''नाड़ी एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण'' शीर्षक पर आयुर्वेद (वैदिक स्वास्थ्य विधान) एवं व्यावहारिक मनोविज्ञान के अंतर्गत किया गया शोध कार्य डॉ. श्री आर.पी. श्रीवास्तव एवं डॉ. श्री एम.डी. शास्त्री के निरीक्षण एवं मार्गदर्शन में महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय शोध केन्द्र से किया गया है व उपाधि समिति द्वारा स्वीकृत मेरा स्वयं का शोध कार्य है।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि मेरी पूर्ण जानकारी के अनुसार पी-एच.डी. शोध उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध में कार्य का कोई भाग ऐसा नहीं है जो बिना उचित दृष्टांत के प्रस्तुत किया गया है।

Kaushal

श्रीमती ऋतु कौशल

शोधच्छात्रा

निर्देशक
डॉ.आर.पी. श्रीवास्तव
एम.ए.(मनोविज्ञान) एम.एड., पी-एच.डी.
भूतपूर्व प्राचार्य एवं आचार्य
शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक
डॉ. श्री एम.डी. शास्त्री
एम.ए. आयुर्वेदाचार्य (एफ़ आर.ए.व्ही.)
विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संकाय
महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

घोषणा - पत्र

मैं **श्रीमती ऋतु कौशल** घोषणा करती हूँ कि **''नाड़ी एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण''** शीर्षक पर आयुर्वेद (वैदिक स्वास्थ्य विधान) एवं व्यावहारिक मनोविज्ञान के अंतर्गत किया गया शोध कार्य **डॉ. श्री आर.पी.श्रीवास्तव** एवं **डॉ.श्री एम.डी. शास्त्री** के निरीक्षण एवं मार्गदर्शन में महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय शोध केन्द्र से किया गया है व उपाधि समिति द्वारा स्वीकृत मेरा स्वयं का शोध कार्य है।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि मेरी पूर्ण जानकारी के अनुसार **पी-एच.डी.** शोध उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध में कार्य का कोई भाग ऐसा नहीं है जो बिना उचित दृष्टांत के प्रस्तुत किया गया है।

Kaushal

श्रीमती ऋतु कौशल

शोधच्छात्रा

निर्देशक

डॉ.आर.पी. श्रीवास्तव

एम.ए.(मनोविज्ञान) एम.एड., पी-एच.डी.

भूतपूर्व प्राचार्य एवं आचार्य

शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक

डॉ. श्री एम.डी. शास्त्री

एम.ए. आयुर्वेदाचार्य (एफ़ आर.ए.व्ही.)

विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संकाय

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)



प्रमाण-पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि **श्रीमती ऋतु कौशल** (शोधछात्रा, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर जबलपुर) ने शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में लिखा है। इस शोध-प्रबंध में तथ्यों अथवा सिद्धांतों का पर्यालोचन नवीन दृष्टि से किया गया है। शोधार्थी ने महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय में नियमित रूप से शोध कार्य पूर्ण किया है।

अतः शोध प्रबन्ध सहृदय सुधीजनों के समक्ष परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

निर्देशक
डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव
एम.ए.(मनोविज्ञान) एम.एड.,पी-एच.डी.
भूतपूर्व प्राचार्य एवं आचार्य
शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय
जबलपुर(म.प्र.)

9/7/2000
निर्देशक
डॉ. श्री एम.डी. शास्त्री
एम.ए. आयुर्वेदाचार्य (एफ आर.ए.व्ही.)
विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संकाय
महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
जबलपुर(म.प्र.)



प्रमाण-पत्र

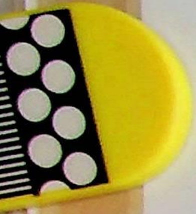
मैं प्रमाणित करता हूँ कि **श्रीमती ऋतु कौशल** (शोधच्छात्रा, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर जबलपुर) ने शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में लिखा है। इस शोध-प्रबंध में तथ्यों अथवा सिद्धांतों का पर्यालोचन नवीन दृष्टि से किया गया है। शोधार्थी ने महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय में नियमित रूप से शोध कार्य पूर्ण किया है।

अतः शोध प्रबन्ध सहृदय सुधीजनों के समक्ष परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

9/7/2010

निर्देशक
डॉ.आर.पी. श्रीवास्तव
एम.ए.(मनोविज्ञान) एम.एड.,पी-एच.डी.
भूतपूर्व प्राचार्य एवं आचार्य
शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय
जबलपुर(म.प्र.)

निर्देशक
डॉ. श्री एम.डी. शास्त्री
एम.ए. आयुर्वेदाचार्य (एफ आर.ए.व्ही.)
विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संकाय
महर्षि महेश योगी वैदिकविश्वविद्यालय
जबलपुर(म.प्र.)



आभार

प्राणिमात्र की सर्वप्रथम कामना है- सुखमय दीर्घजीवन की प्राप्ति । यद्यपि सभी शास्त्र मनुष्य को आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक इन तीनों प्रकार के संतापों से मुक्त करने का मार्गदर्शन देते हैं, किन्तु उनमें बतलाये गये विधानों का पालन करने के लिए उत्तम स्वास्थ्य तथा आरोग्य परम अपेक्षित है । स्वास्थ्य संरक्षण एवं रोगमुक्ति का शास्त्र है- आयुर्वेद । सर्वप्रथम समस्त शास्त्रों में सब ज्ञानमय ब्रह्मा ने शाश्वत एवं अनादि त्रिसूत्र आयुर्वेद का स्मरण किया । प्राणिजगत की पीड़ा के प्रतिकार के लिये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूप चतुर्विध पुरुषार्थ साधक आयुर्वेद को 'ब्रह्मसंहिता' में निबद्ध किया एवं सृष्टि रचना के पूर्व ही आयुर्वेद की रचना की जिससे सृष्ट प्राणियों का जीवन सुखमय हो और किसी कष्ट के उत्पन्न होने पर उसे दूर किया जा सके । जिस प्रकार जीवन दान सबसे बड़ा दान है. उसी प्रकार सुन्दर स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा सुख है । इसलिए आयुर्वेद के उद्देश्यों का अक्षरशः पालन करना चाहिए ।

प्रस्तुत शोध 'नाड़ी एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण' उपर्युक्त विषय गहन आयुर्वेदिक व्यापक मीमांसाओं के आधार पर तैयार किया गया है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा यह शोध कार्य मनुष्य मात्र को दीर्घ सुखमय जीवन प्रदान कर उसके संताप हरेगा । मेरी विनम्र मान्यता है कि जब मनुष्य स्वस्थ्य एवं सुखी होगा तब समाज राष्ट्र व विश्व की मानवता भी सुखी होगी ।

कोई भी प्रदत्त महत कार्य मात्र किसी एक व्यक्ति विशेष के प्रयासों का ही फल नहीं होता । वस्तुतः वह गुरुजनों की प्रेरणा एवं महत्वपूर्ण मार्गदर्शन के बल पर ही पूर्ण होता है । साथ ही आर्तजनों, मित्रों एवं शुभचिन्तकों का भी परामर्श तथा उत्साहवर्धन भी उसमें समाहित रहता है । इन सभी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना आत्मिक एवं नैतिक दायित्व मानती हूँ ।

मेरी सर्वप्रथम आभार पुष्पांजली सर्व शक्तिमान परम ब्रम्ह परमात्मा एवं परम पूज्य गुरुदेव के चरणों में समर्पित है, जिन्होनें अपने मंगल आशीषों से मेरा



आभार

प्राणिमात्रा की सर्वप्रथम कामना है- सुखमय दीर्घजीवन की प्राप्ति । यद्यपि सभी शास्त्रा मनुष्य को आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक इन तीनों प्रकार के संतापों से मुक्त करने का मार्गदर्शन देते हैं, किन्तु उनमें बतलाये गये विधानों का पालन करने के लिए उत्तम स्वास्थ्य तथा आरोग्य परम अपेक्षित है । स्वास्थ्य सरंक्षण एवं रोगमुक्ति का शास्त्रा है- **आयुर्वेद** । सर्वप्रथम समस्त शास्त्रों में सर्व ज्ञानमय ब्रह्मा ने शाश्वत एवं अनादि त्रिसूत्र आयुर्वेद का स्मरण किया । प्राणिजगत की पीड़ा के प्रतिकार के लिये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूप चतुर्विध पुरुषार्थ साधक आयुर्वेद को **'ब्रह्मासंहिता'** में निबद्ध किया एवं सृष्टि रचना के पूर्व ही आयुर्वेद की रचना की जिससे सृष्ट प्राणियों का जीवन सुखमय हो और किसी कष्ट के उत्पन्न होने पर उसे दूर किया जा सके । जिस प्रकार जीवन दान सबसे बड़ा दान है, उसी प्रकार सुन्दर स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा सुख है । इसलिए आयुर्वेद के उद्देश्यों का अक्षरशः पालन करना चाहिए ।

प्रस्तुत शोध **'नाड़ी एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण'** उर्पयुक्त विषय गहन आयुर्वेदिक व्यापक मीमांसाओं के आधार पर तैयार किया गया है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा यह शोध कार्य मनुष्य मात्रा को दीर्घ सुखमय जीवन प्रदान कर उसके संताप हरेगा । मेरी विनम्र मान्यता है कि जब मनुष्य स्वस्थ्य एवं सुखी होगा तब समाज राष्ट्र व विश्व की मानवता भी सुखी होगी ।

कोई भी प्रदत्त महत कार्य मात्र किसी एक व्यक्ति विशेष के प्रयासों का ही फल नहीं होता । वस्तुतः वह गुरुजनों की प्रेरणा एवं महत्वपूर्ण मार्गदर्शन के बल पर ही पूर्ण होता है । साथ ही आर्तजनों, मित्रों एवं शुभचिन्तकों का भी परामर्श तथा उत्साहवर्धन भी उसमें समाहित रहता है । इन सभी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना आत्मिक एवं नैतिक दायित्व मानती हूँ ।

मेरी सर्वप्रथम आभार पुष्पांजली सर्व शक्तिमान **परम ब्रम्ह परमात्मा** एवं **परम पूज्य गुरुदेव** के चरणों में समर्पित है, जिन्होनें अपने मंगल आशीषों से मेरा

मार्ग प्रशस्त किया । बिना उनकी कृपा के मेरी यह सफलता संभव नहीं थी ।

मैं हृदय से जिन कृपालु मार्गदर्शकों की आभारी हूँ वे हैं **डॉ. श्री आर. पी. श्रीवास्तव जी** एवं **डॉ. श्री महेश दत्त शास्त्री जी** की जिन्होंने अपने उचित मार्गदर्शन के द्धारा मेरे शोध कार्य को पूर्ण करवाया । मार्गदर्शकों ने मेरे शोध कार्य के मार्ग में आने वाली हर बाधा का समुचित समाधान कर मेरा उत्साह वर्धन भी किया है । जिसके बिना मेरा यह कार्य असंभव था । उन्होंने कार्य की व्यस्तता के बावजूद भी मुझे अपना अमूल्य समय मार्गदर्शन में दिया है । मैं सदैव उनकी आभारी रहूँगी ।

यद्यपि जन्म लेना एक आकस्मिक घटना है । परन्तु महत्वपूर्ण हैं, उस घटना के घटनाकार माता-पिता। मेरे इस शोध कार्य की प्रथम प्रेरणा स्त्रोत थीं, मेरी पूज्य माँ **स्व. श्रीमति श्यामा दीक्षित** जो आयुर्वेदरत्न थीं । जिसके कारण मुझे बचपन से ही आयुर्वेद विषय में गहन रुचि थी । और जिन्होंने मेरे सुखद भविष्य की कामना की, हर परिस्थितियों मेरा उत्साह वर्धन किया । मेरी पूज्य माँ ही मेरे जीवन का आदर्श हैं, मैं अपने श्रृद्धा सुमन उनकी सुखद स्मृति में अर्पित करती हूँ।

मुझे अपने पतिदेव **श्री योगेश कौशल जी** का इस दिशा में महत्वपूर्ण सहयोग कदम-कदम पर प्राप्त हुआ है । उन्होंने मुझे कभी निरुत्साहित नहीं होने दिया एवं हर तरह से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग देकर मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया । सचमुच मेरे पति पूज्य हैं, महान हैं मैं हमेशा उनकी ऋणी बनी रहूँगी ।

मुझे अपने ससुर **डॉ. श्री पी.डी. गुप्ता** एवं अपनी सास माँ **श्रीमति शान्ति गुप्ता** का भी इस दिशा में प्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है। उन्होंने हमेशा मेरे इस कार्य को पूर्ण करने में अपना सहयोग दिया है, मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ । मुझे अपने घर के अन्य सदस्यों का भी अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ । साथ ही मैं करबद्ध होकर जिन बुद्धिजीवी गुरुजनों, प्रभारी, मार्गदर्शकों एवं पितृ-मातृ तुल्य आशीष प्रदत्तों की आभारी हूँ वे

निम्नानुसार हैं :-

1. श्री गोपाल कृष्ण दवे जी - पूर्व कुल सचिव म. म. यो. वै. विश्वविद्यालय

2. श्री आद्या प्रसाद मिश्र - कुलपति

3. श्री राममूर्ति चतुर्वेदी - वेद विज्ञान अध्यक्ष

4. डॉ. श्रीमति चन्द्रा चतुर्वेदी - शोध समन्वयक (अनुसंधान विभाग)

5. श्री भूपेन्द्र निगम - प्राचार्य, शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय, जबलपुर

6. श्री रजनीश जैन - आचार्य, शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय, जबलपुर

7. श्रीमति क्षमा माण्डवीकर - प्रभारी म. म. योगी वैदिक वि. विश्वविद्यालय महिला परिसर, जबलपुर ।

8. डॉ. श्री रवीन्द्र अग्रवाल - (आयुर्वेद) प्राध्यापक एवं सह निर्देशक के रुप में म.म. योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर

9. डॉ. ज्योति प्रकाश दुबे - एम.ए. (व्यावहारिक मनोविज्ञान) आयुर्वेद वैद्य विशारद एवं पूर्व प्राध्याधपक (म.ज्योतिष) म.म.यो. वैदिक विश्वविद्यालय जबलपुर

10. श्री रमाशंकर झा - (ग्रंथालय सहायक) म.म.यो.वै. विश्वविद्यालय जबलपुर

मैंने इस दुलर्भ कार्य को सफल, सरल एवं उच्चता प्रदान करने में मुझे अनेक शिक्षण संस्थानों एवं पुस्तकालयों ने भी सहयोग दिया है । स्कूल के प्राचार्य, शिक्षक गण, एवं छात्र-छात्राओं ने भी मुझे परम संतोषप्रद लाभ प्रदान कर मुझे आंकड़ों के संकलन में पूर्ण सहयोग प्रदान किया है । मैं इन सभी की आभारी हूँ ।

मैं आभारी हूँ रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, शासकीय शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय, आर्युवेदिक कॉलेज, गोरखपुर एवं इनसेट कम्प्यूटर्स 1371, राइट टाउन, जबलपुर की ।

मैं इन सभी केन्द्रों के समस्त पदाधिकारियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ ।

पुनः महत एवं अपार कृतज्ञता भरा आभार तो मैं ऋषियों के ऋषि महर्षि **पूज्य श्री महेश योगी जी** के प्रति समर्पित करती हूँ जिनके पावन स्मरण एवं प्राणवानवरद हस्त के बिना मेरा यह शोध कार्य असंभव था । मुझे इस दिशा में अज्ञान के अंधकार से बाहर निकालने तथा मेरे अंर्तमन में सफलता के सौ - सौ सूर्य जगमगाने में उनकी सदैव सहृदय कृपा मुझ पर रही जो शोध कार्य के साथ ही जीवन भर मुझ पर रहेगी ।

मैं उनके पावन चरण कमलों में निम्नलिखित स्वनिर्मित काव्य पंक्तियों के श्रृद्धा सुमन प्रस्तुत करती हूँ :-

योगीराज जी महर्षि श्री महेश योगी जी को आज सारी दुनिया शीश झुका नमन करती है ।
उनके आध्यात्मिक चिंतन की अमृतमयी दिव्यवाणी यूरोप और एशिया में पावन गुंजन करती है ।
उनके द्वारा प्रतिपादित भारत की नई ज्ञान पद्धति - वेदों की वैज्ञानिकता का नव विश्लेषण करतीहै।
श्री महेश नाम के अनुरुप शंकर सिद्व हुए तभी उनका यश गाकर दुनिया अभिनन्दन करती है ।

श्रीमति ऋतु कौशल

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
अध्याय - 1	**संप्रत्यय रुपरेखा**	**1-69**
1.1	प्रस्तावना	2-5
1.2	समस्या की व्याख्या,आवश्यकता एवं महत्व	6-8
1.3	चरों की अवधारणा	9
1.3-1	आयुर्वेद में नाड़ी एवं व्यक्तित्व	10-48
1.3-2	मनोविज्ञान में व्यक्तित्व	49-65
1.4	उददेश्य	66
1.5	पूर्वगामी अनुसंधानात्मक साहित्य	67-69
अध्याय- 2	**विधि विज्ञान**	**70-127**
2.1	उपकल्पना	71-74
2.2	न्यादर्श	75-77
2.3	उपकरण	78-82
2.3.1	हस्तगत नाड़ी (Nerve) परीक्षण (उपकरण के रुप में)	78-79
2.3.2	वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली	79-80
2.3.3	व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16.P.F.)	80-82
2.4	पथप्रदर्शी अध्ययन	83-124
2.5	परीक्षण प्रशासन	125-127

अध्याय		विषय	पृष्ठ संख्या
अध्याय-3		**आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या**	**128-211**
	3.1	समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	131-139
	3.2	समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांको का आवृत्ति वितरण एवं आवृत्ति प्रतिशत	140
	3.3	समस्त छात्राओं एवं समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	141-155
	3.4	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूहों का क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	156-169
	3.5	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों की केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरण शीलता	188-196
	3.6	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सात्विक, राजसिक एवं तामसिक प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	197-205
	3.7	समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं व छात्रों के प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम	206-208
	3.8	समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं व छात्रों के सात्विक, राजसिक एवं तामसिक प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम	209-211

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या

अध्याय 4 **व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) में निम्न, औसत एवं उच्च प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता** **212-280**

4.1 समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों के मध्य व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) के तुलनात्मक परिणाम 221-248

4.2 समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व की व्याख्यात्मक विवेचना 249

4.2.1 वात प्रकृति (या हीन प्रकृति) प्रधान छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व 249

4.2.2 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या 250-252

4.2.3 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्म्क व्याख्या 253-255

4.2.4 पित्त प्रकृति (या मध्यम प्रकृति) प्रधान छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व 256

4.2.5 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या 257-259

4.2.6 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या 260-262

4.2.7 कफ प्रकृति (या उत्तम प्रकृति) प्रधान छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व 263

4.2.8 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या 263-265

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या

4.2.9 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या 266-268

4.3 उपकल्पनाओं का सत्यापन 269-280

अध्याय- 5 निष्कर्ष एवं सुझाव **281-285**

5.1 निष्कर्ष 282-283

5.2 सुझाव 284-285

5.2.1 भावी अनुसंधानकर्त्ता के लिये 284

5.2.2 चिकित्सकों के लिये 284

5.2.3 मनोवैज्ञानिकों के लिये 284

5.2.4 शिक्षकों के लिये 285

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

प्राप्तांकों का विवरण

उपकरण

तालिका - सूची

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	2.01	पथप्रदर्शी तालिका	84
2.	2.02	पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक	85
3.	2.03	पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक	87
4.	2.04	पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक	89
5.	2.05	पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक	91
6.	2.06	पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक	93
7.	2.07	पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक	95

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत छात्र -छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
8.	2.08	वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	97
9.	2.09	वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	97

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
10.	2.10	वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम	98
11.	2.11	पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	99
12.	2.12	पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	99
13.	2.13	पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के पित्त, संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम	100
14.	2.14	कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	101
15.	2.15	कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	101
16.	2.16	कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम	102

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सत्व, रज एवं तम गुण के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
17.	2.17	वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	103
18.	2.18	वात प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	103
19.	2.19	वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम	104
20.	2.20	पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	105
21.	2.21	पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	105

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
22.	2.22	पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम	106
23.	2.23	कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज एवं तम् संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	107
24.	2.24	कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज एवं तम् संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	107
25.	2.25	कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सत्व, रज एवं तम् संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम	108
26.	2.26	पथप्रदर्शी अध्ययन के अंर्तगत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	109
27.	2.27	पथप्रदर्शी अध्ययन के अंर्तगत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	111
28.	2.28	पथप्रदर्शी अध्ययन के अंर्तगत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	113
29.	2.29	पथप्रदर्शी अध्ययन के अंर्तगत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	114
30	2.30	पथप्रदर्शी अध्ययन के अथप्रदर्शी अंर्तगत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	115
31.	2.31	पथप्रदर्शी अध्ययन के अंर्तगत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	116

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा समस्त वात, पित्त, कफ प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

32	2.32	व्यक्तित्व शीलगुण "OUTGOING" बहिर्मुखी और "RESERVED" अंर्तमुखी (FACTOR-A) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	117
33	2.33	व्यक्तित्व शीलगुण "MORE INTELLIGENTE" अधिक बुद्धिमान और "LESS INTELLIGENTE" कम बुद्धिमान (FACTOR-B) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	119
34.	2.34	व्यक्तित्व शीलगुण "EMOTIONALLY STABLE" संवेगात्मक रुप से स्थिर और "AFFECTED BY FELLINGS" भावनात्मक रुप से प्रभावित (FACTOR-C) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	120
35.	2.35	व्यक्तित्व शीलगुण "ASSERITIVE" प्रभुत्वशाली और "HUMBLE" उदार (FACTOR- E) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	122
36.	2.36	व्यक्तित्व शीलगुण "HAPPY GO LUCKY" उत्साही और "SOBER" शालीन (FACTOR-F) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	125

समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त, एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

37.	3.37	समस्त छात्र-छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	131-132
38.	3.38	समस्त छात्र-छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	133
39.	3.39	समस्त समस्त छात्र-छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	134

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
40.	3.40	समस्त छात्र-छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	135
41.	3.41	समस्त छात्र-छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	136
42.	3.42	समस्त छात्र-छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	137-139
42.	3.43	समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण एवं आवृत्ति प्रतिशत	140
समस्त छात्राओं एवं समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण			
44.	3.44	समस्त छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	141
45.	3.45	समस्त छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	142
46.	3.46	समस्त छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	143
47.	3.47	समस्त छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	144-145
48.	3.48	समस्त छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	146
49.	3.49	समस्त छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	147
50.	3.50	समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांको का आवृत्ति वितरण	148
51.	3.51	समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	149-150
52	3.52	समस्त छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांको का आवृत्ति वितरण	151
53	3.53	समस्त छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	152

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
54.	3.54	समस्त छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांको का आवृत्ति वितरण	153
55.	3.55	समस्त छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	154-155

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों का क्रमशः वात, पित्त एवंकफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
56	3.56	समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	156
57.	3.57	समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	157
58.	3.58	समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	158
59.	3.59	समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	159-160
60.	3.60	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	161
61.	3.61	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	162
62.	3.62	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	163
63.	3.63	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	164-165
64.	3.64	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	166
65.	3.65	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	167
66.	3.66	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	168

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
67.	3.67	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	169-175
68.	3.68	नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक (वात प्रकृति प्रधान छात्राऍं)	176-177
69.	3.69	नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक (पित्त प्रकृति प्रधान छात्राऍं)	178-179
70.	3.70	नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक (कफ प्रकृति प्रधान छात्राऍं)	180-181
71.	3.71	नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक (वात प्रकृति प्रधान छात्र)	182-183
72.	3.72	नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक (पित्त प्रकृति प्रधान छात्र)	184-185
73	3.73	नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक (कफ प्रकृति प्रधान छात्र)	186-187
74.	3.74	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये वात, पित एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों काकेन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	188

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
75.	3.75	समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	188-190

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
76.	3.76	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	191-193
77.	3.77	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	191-193
78.	3.78	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	194-196
79.	3.79	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	194-196

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये वात, पित्त, कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के राजसिक, तामसिक एवं सात्विक प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों की केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरणशीलता

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
80.	3.80	समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	197-199
81.	3.81	समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	197-199
82.	3.82	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	200-202
83.	3.83	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	200-202
84.	3.84	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	203-205
85.	3.85	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	203-205

समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं व छात्रों के प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
86.	3.86	वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं का तुलनात्मक परिणाम	206
87.	3.87	पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं का तुलनात्मक परिणाम	207
88.	3.88	कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं का तुलनात्मक परिणाम	208

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सात्विक, राजसिक एवं तामसिक प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम			
89.	3.89	वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांको का तुलनात्मक परिणाम	209
90.	3.90	पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांको का तुलनात्मक परिणाम	210
91.	3.91	कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांको का तुलनात्मक परिणाम	211
व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) निम्न औसत एवं उच्च प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता			
92.	4.92	समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (16) प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	214-215
93.	4.93	समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (16) प्राप्तांको का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	216
94.	4.94	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (16) प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	117
95.	4.95	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (16) प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	218
96.	4.96	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (16) प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	219
97.	4.97	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (16) प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	220

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों के मध्य व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) के तुलनात्मक परिणाम			
98.	4.98	व्यक्तित्व शीलगुण "OUTGOING"[EXTROVERT] बहिर्मुरवी और "RESERVED" [INTROVERT] अंर्तमुरवी (FACTOR-A) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	221-222
99.	4.99	व्यक्तित्व शीलगुण "MORE INTELLIGENCE" अधिक बुद्धिमान और "LESS INTELLIGENCE" कम बुद्धिमान (FACTOR-B) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	223-224
100.	4.100	व्यक्तित्व शीलगुण "EMOTIONALLY STABLE" संवेगात्मक रुप से स्थिर और "AFFECTED BY FELLINGS" संवेगात्मक रुप से प्रभावित (FACTOR-C) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	225-226
101.	4.101	व्यक्तित्व शीलगुण "ASSERITIVE" प्रभुत्वशाली और "HUMBLE" उदार (FACTOR-E) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	227
102.	4.102	व्यक्तित्व शीलगुण "HAPPY GO LUCKY" उत्साही और "SOBER" शालीन (FACTOR-F) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	228-229
103.	4.103	व्यक्तित्व शीलगुण "CONSCIENTIOUS" शुद्धमति और "EXPEDIENT" योग्य (FACTOR-G) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	230-231
104.	4.104	व्यक्तित्व शीलगुण "VENTURESOME" जोरिवम उठाने वाला और "SHY" शर्मीला (FACTOR-H) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	232-233
105.	4.105	व्यक्तित्व शीलगुण "TENDER MINDED" मृदुमन वाला और "TOUGH MINDED" दृढ़ निश्चयी (FACTOR-I) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना	234-235

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
106.	4.106	व्यक्तित्व शीलगुण "SUSPICIOUS" शंकालु और "TRUSTING" विश्वासी (FACTOR-L) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं का मध्य प्राप्तांकों की तुलना	236
107.	4.107	व्यक्तित्व शीलगुण "IMAGINATIVE" काल्पनिक और "PRACTICAL" व्यवहारिक (FACTOR-M) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं का मध्य प्राप्तांकों की तुलना	237
108.	4.108	व्यक्तित्व शीलगुण "SHREWD" चतुर और "FORTHRIGHT" स्वाभाविक कलाविहीन (FACTOR-N) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं का मध्य प्राप्तांकों की तुलना	238
109.	4.109	व्यक्तित्व शीलगुण "APPERHENSIVE" विचारवान और "PLACID" शांत (FACTOR-O) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं का मध्य प्राप्तांकों की तुलना	239-240
110.	4.110	व्यक्तित्व शीलगुण "EXPERIMENTING" प्रायोगिक और "CONCERVATIVE" रुढ़िवादी (FACTOR-Q1) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं का मध्य प्राप्तांकों की तुलना	241-242
111.	4.111	व्यक्तित्व शीलगुण "SELF SUFFICIENT" स्वयं निर्णय लेने सक्षम और "GROUP DEPENDED" समूह पर निर्भर (FACTOR-Q2) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं का मध्य प्राप्तांकों की तुलना	243-244
112.	4.112	व्यक्तित्व शीलगुण "CONTROLLED" नियंत्रित और "UN DISCIPLINED. SELF CONFLICT" अनअनुशासित आत्मतंत्र (FACTOR-Q3) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं का मध्य प्राप्तांकों की तुलना	245-246
113.	4.113	व्यक्तित्व शीलगुण "TENSE" तनावयुक्त और "RELAXED" संतुष्ट (FACTOR-Q4) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं का मध्य प्राप्तांकों की तुलना	247-248

रेखाचित्र - सूची

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	3.37, 3.39, 3.41	समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	138
2.	3.37, 3.39, 3.41	समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों की सरलित आवृत्ति का रेखाचित्र	139
3.	3.44	समस्त छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	145
4.	3.46	समस्त छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	145
5.	3.48	समस्त छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	150
6.	3.50	समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	150
7.	3.52	समस्त छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	155
8.	3.54	समस्त छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	155
9.	3.56	समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	160
10.	3.58	समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	160
11.	3.60	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	165

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
12.	3.62	समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	165
13.	3.64	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	170
14.	3.66	समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र	170
15.	3.38, 3.40, 3.42	समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	171
16.	3.45, 3.49, 3.53	समस्त छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	172
17.	3.47, 3.51, 3.55	समस्त छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	173
18.	3.57, 3.61, 3.65	समस्त वात, पित्त, कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	174
19.	3.59, 3.63, 3.67	समस्त वात, पित्त, कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों को केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	175
20.	3.74	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त वात, प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों के केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	190
21.	3.75	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों के केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	190

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
22.	3.76	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गयी समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों के केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	193
23.	3.77	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों के केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	193
24.	3.78	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों के केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	196
25.	3.79	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों के केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	196
26.	3.80	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गयी समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	199
27.	3.81	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	199
28.	3.82	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गयी समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	202
29.	3.83	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	202

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
30.	3.84	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गयी समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	205
31.	3.85	व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता	205
32.	4.98-4.113	व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांक - निम्न, औसत एवं उच्च	252
33.	4.98-4.113	व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में वात प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांक - निम्न, औसत एवं उच्च	255
34.	4.98-4.113	व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांक - निम्न, औसत एवं उच्च	259
35.	4.98-4.113	व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांक - निम्न, औसत एवं उच्च	262
36.	4.98-4.113	व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांक - निम्न, औसत एवं उच्च	265
37.	4.98-4.113	व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांक - निम्न, औसत एवं उच्च	268

अध्याय - 1

संप्रत्यय - रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 समस्या की व्याख्या आवश्यकता एवं महत्व

1.3 चरों की अवधारणा

1.3.1 आयुर्वेद में नाड़ी एवं व्यक्तित्व

1.3.2 मनोविज्ञान एवं व्यक्तित्व

1.4 उद्देश्य

1.5 पूर्वगामी अनुसंधात्मक साहित्य



अध्याय - 1

संप्रत्यय - रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 समस्या की व्याख्या आवश्यकता एवं महत्व

1.3 चरों की अवधारणा

1.3.1 आयुर्वेद में नाड़ी एवं व्यक्तित्व

1.3.2 मनोविज्ञान एवं व्यक्तित्व

1.4 उद्देश्य

1. 5 पूर्वगामी अनुसंधात्मक साहित्य

1.1 प्रस्तावना

यह बात निर्विवाद प्रमाणित होती है कि इस संसार में दो व्यक्ति एक ही व्यक्तित्व के नहीं पाये जाते हैं।

THERE ARE NO TWO HUMAN BEING ALIKE IN THE WORLD.

जितने व्यक्ति हैं उतने ही व्यक्तित्व हैं। व्यक्तिगत विभिन्नता हमें आम जिंदगी में रोज ही देखने मिलती है। किन्हीं भी दो व्यक्तियों में समानता नहीं होती भले ही किसी प्रकार या आधार पर समानता हो परंतु शारीरिक रंग रूप, वैचारिक विभिन्नता हमें सभी व्यक्तियों में देखने मिलती है। अतः इस जगत में विभिन्न प्रकार व्यक्तित्व वाले नारी व पुरुष होते हैं। इनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन एवं परीक्षण भी साधारण नहीं है इसके लिए विभिन्न प्रकार के आयाम हैं । यहाँ पर किशोरावस्था के अंतिम सीढ़ी पर प्रविष्ट छात्र- छात्राएँ इस अनुसंधानात्मक कार्य के अन्तर्गत लिये गये हैं।

प्राचीन समय से लेकर आज तक चलने वाला शास्त्र आयुर्वेद के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण के माध्यम से किशोर व किशोरियों के व्यक्तित्व का परीक्षण कर यह ज्ञात किया जा रहा है कि क्या समान प्रकृति वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व के कुछ गुणों में समानता होती है अथवा उनमें भी भिन्नता पाई जाती है। भारत के आदि आयुर्वेदाचार्यों महर्षि चरक, सुश्रुत धन्वन्तरि, नागार्जुन आदि के अनुसार आयुर्वेद न केवल समस्त विश्व बल्कि समस्त ब्रम्हांड के प्राणिमात्र का संरक्षक है। हमारे इन संसार प्रसिध्द आयुर्वेदाचार्यों ने आयुर्वेद शास्त्र में जिस स्वास्थ्य का परम चिन्तन किया है, उसका विस्तार संबंध जल- थल व नभ से है। वह किसी न किसी रूप में संपूर्ण प्राणिमात्र से संबंधित है। यह दीर्घायु व सुख प्रदान करने वाला ऐसा शास्त्र है जिसकी प्रशंसा आज संसार के महान चिकित्सक भी कर रहें हैं। काल चक्रान्तर्गत किसी समय का उपेक्षित भारतीय आयुर्वेद आज सारी दुनिया में परम उपयोगी माना जा रहा है । क्योंकि इसमें साहित्य कला धर्म एवं विज्ञान आदि समस्त ज्ञान समाहित है। आयुर्वेद स्वयं वेद है। जीवन सौन्दर्य की भव्यता ऐश्वर्य के लिये जीवन सुख की उपलब्धि,आयु के हित,शरीर,इंद्रिय,सत्व आदि के लिए प्रस्तुत ज्ञान राशि आयुर्वेद में अंतर्निहित है। आयुर्वेद जीवन का शास्त्र है यह अथर्ववेद का उपवेद है। यह मानव जीवन की सर्वविध समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। क्योंकि यह मात्र चिकित्साशास्त्र नहीं है बल्कि एक दर्शन है जो अनेक व्याधियों से व्यथित प्राणियों का व्याधिपरिमोक्षण तो करता ही है साथ ही साथ उत्तम सुख तथा आनंद की उपलब्धि के लिये मार्गदर्शन भी करता है। संसार के जितने भी अभीष्ट कार्य है जैसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनकी लब्धि स्वस्थ शरीर से ही हो सकती है। अतः कहा गया है कि स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना

करने वाले प्रत्येक मानव को आयुर्वेद के उपदेशों का पालन करना चाहिये एवं ज्ञान प्राप्त करना चाहिए ।

आयुः कामायमानेन धर्मार्थसुखसाधनम् ।
आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः ॥

वैदिक स्वास्थ्य विधान स्वास्थ्य की परिभाषा वात, पित्त, कफ के संतुलन के रूप में देता है । जबकि स्वास्थ्य का अंग्रेजी पर्याय Health है। किन्तु मूलभूत रूप में स्वास्थ एवं Health बिल्कुल भिन्न धारणाएँ हैं। पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र के अनुसार Health का अर्थ होता है किसी बीमारी का न रहना अर्थात कोई बीमारी नहीं है तो व्यक्ति स्वस्थ है। परंतु भारतीय आयुर्वेद के अनुसार स्वास्थ शब्द का अर्थ है, स्व में स्थित होना। वैदिक स्वास्थ्य विधान की मूल धारणा व्यक्ति को पूर्णतः स्वस्थ करने की है, अर्थात शरीर मन और आत्मा से स्वस्थ व्यक्ति। वैदिक स्वास्थ विधान के अनुसार स्वास्थ का अर्थ है वात, पित्त, कफ में संतुलन के साथ व्यक्ति की आत्मा और शरीर में संतुलन। और इस प्रकार से संतुलित व्यक्ति को हम 'स्व' में स्थित व्यक्ति अर्थात स्वस्थ व्यक्ति कहते हैं। इस प्रकार शोधकार्य में व्यक्तित्व निर्धारण के पश्चात व्यक्तियों को मानसिक एवं शारीरिक समस्याओं का उचित समाधान प्राप्त हो सकेगा।

पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के आधार पर व्यक्तित्व निर्धारण का दूसरा माध्यम मनोवैज्ञानिक परीक्षण लिया गया है। जैसा कि विदित है कि आज पाश्चात्य देश विज्ञान व टेक्नालॉजी में सर्वाधिक आगे हैं अतः आज के मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में विभिन्न प्रकार के परीक्षणों के साथ - साथ व्यक्तित्व परीक्षणों द्वारा मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं का परीक्षण विश्वसनीयता एवं वैधता के साथ किया जाता है। व्यक्तित्व एक जटिल प्रत्यय है लेकिन परिभाषित रूप से इसे समझा जा सकता है :

"व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर मनोवैज्ञानिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जो पर्यावरण के प्रति उसके अनूठे समायोजन का निर्धारण करता है ।" (आलपोर्ट)

उपरोक्त परिभाषा व्यक्तित्व के स्वरूप को भलीभांति स्पष्ट करती है। इसमें अनुकूलन या अभियोजक दृष्टिकोण की प्रधानता है। आज के मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व के तीन घटक चेतन व्यक्तित्व, अचेतन व्यक्तित्व व वस्तुनिष्ठता मानते हैं। व्यक्ति जिस भाग से अवगत रहता है. चेतन व्यक्तित्व है। इसी प्रकार जब किसी भाग की चेतना नहीं रहती वह अचेतन व्यक्तित्व है। व्यक्तित्व का वह भाग जो दूसरों द्वारा निरीक्षण योग्य होता है वस्तुनिष्ठ होता है । जैसा पहले वर्णित किया जा चुका है कि संसार में किसी भी समाज के कोई भी दो व्यक्तियों में समानता नहीं होती है। ये बात अलग है कि उनमें किसी न किसी प्रकार या आधार की समानता पाई जा सकती है। परंतु रूपरंग, स्वभाव व व्यवहार में पूर्णरूपेण एक समान नहीं मिलेंगे । व्यक्तियों में किसी आधार या

प्रकार की समानता होती है इसी आधार पर प्राचीनकाल से ही वर्गीकरण किया जाता रहा है। उदा. स्वरूप भारतीय आयुर्वेद में व्यक्तियों की तीन प्रकृति बताई गई हैं जो कि शरीर रसायन पर आधारित हैं। **वात प्रकृति, पित्त प्रकृति एवं कफ प्रकृति**। इसी प्रकार धर्मशास्त्र में तीन प्रकार की मानसिक वृत्तियों का उल्लेरव किया गया है **सात्विक - राजसिक व तामसिक**। भारतीय विचारकों के अनुसार सात्विक प्रकृति वाले व्यक्ति एकांत प्रिय, चिंतक चरित्रवान व सीधे सादे होते हैं। जो आदर्श आत्मा (Super Ego) द्वारा निर्देशित रहते हैं।

राजसी प्रकृति के व्यक्ति सुरव ऐश्वर्य की कामना करने वाले,समाजप्रेमी, उत्साही व उग्र होते हैं। इनमें Ego प्रधान होता है। तामसी प्रकृति के व्यक्ति इदम् (Ed.) के निर्देशन में चलते हैं। इसलिये ये रवाने पीने के शौकीन,उचित - अनुचित में अंतर करने की योग्यता नहीं ररवते। जर्मनी के मनोवैज्ञानिक ने शरीर रचना के आधार पर भी वर्गीकरण किया जैसे - पिकनिक टाईप, एथलेटिक एसथेनिक, डिस्प्लेटिक। पिकनिक टाईप के व्यक्ति आरामतलब,हंसमुरव, नाटे व मोटे होते हैं। एथलेटिक समाजप्रिय, स्वस्थ , उग्र व मजबूत होते हैं। एसथेनिक, भावकु, अर्न्तमुरवी बुद्धिमान व दुबले पतले होते हैं। और उपरोक्त सभी गुण डिस्प्लेटिक टाईप के व्यक्तियों में पाये जाते हैं।

युंग के अनुसार व्यक्तित्व के दो प्रकार है -

(1)) बर्हुमुरवी (Extovort) (2) अंर्तमुरवी (Intovort)

मार्गन व गिनीलैण्ड ने स्वाभाव के अनुसार व्यक्तित्व संबंध को प्रमाणित किया है। उनके अनुसार (1) प्रफुल्ल (2) उदास (3) चिड़चिड़े व (4) अस्थिर।

शैल्डन ने शरीर रचना व स्वभाव में धनात्मक सहसंबंध को प्रमाणित किया है।

उनके अनुसार - (1) विसेरोटोनिक (2) सोमेटोटोनिक (3) सेरब्रोटोनिक ये तीन प्रकार के व्यक्तित्व हैं। इसमें विसेरोटानिक व्यक्ति प्रेम के भूरवे, दूसरों पर आश्रित, सादे जीने के शौकीन व आराम तलब व पेट से स्थूल होते हैं शरीर रचना एण्डोमार्फिक होती है।

सोमेटोटोनिक व्यक्ति बलवान, क्रियाशील, उत्साही, कर्मठ, स्पष्टवक्ता, आत्मा विश्वासी, साहसी, कर्मठ, अधिकार प्रिय होते हैं। इनका स्वर तेज होता है। सेरेब्राटोनिक व्यक्ति संकोची, संयमी भावुक, एकांत प्रिय, आत्मनिर्भर,धीरे बोलने वाले, अल्प निद्रांलु, स्नेही ब भावनाओं को अभिव्यक्त न करने वाले होते हैं। इस प्रकार अन्य मनोवैज्ञानिकों ने स्वभाव के आधार पर मानसिक रोगों के आधार पर विचार व कल्पना के आधार पर, बुद्धिलब्धि के आधार पर व मूल्यों के आधार पर भी व्यक्तित्व को वर्गीकृत किया है।

समाचार पत्रों या अन्य प्रकार के मीडिया में यह देरवने में आता है कि किशोर व किशोरियों

के व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं हो पाता है । इसके फलस्वरूप उसमें अनुशासनहीनता, कुंठाएँ व अन्य मानसिक व्याधियाँ उपन्न हो जाती हैं । विद्यालय , विश्वविद्यालय के प्रबंधक इनके कारनामों से चिंतित रहते हैं। इसके दुष्कृत्य जैसे बिल्डिंग तोड़ना फोड़ना व अन्य प्रकार के असमाजिक कृत्य करना आदि इसमें शामिल हैं।

चूंकि किशोरावस्था परिपक्वता को प्राप्त करने की ऐसी अवस्था है जिसमें किशोरों का आत्मतंत्र (Self- System) पूर्णतः समन्वित होता है। आयु बढ़ने के साथ - साथ किशोर अपने कर्तव्यों व उत्तरदायित्वों को समझने लगता है। इस अवस्था में किशोर को जैसी आर्थिक परिस्थिति, मानसिक एवं समाजिक वातावरण प्राप्त होता है उसके अनुसार भी उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। यह किशोरावस्था की अंतिम सीढ़ी 17 से 19-20 वर्ष तक रहती है जिसे Late Adolecence कहते हैं। इस अवस्था में किशोर का जैसा व्यक्तित्व उसकी मूल प्रवृति एवं वातावरणजन्य कारकों द्वारा निर्मित हो जाता है वही जीवन भर चलता है। इसी अवस्था में उचित मार्गदर्शन अच्छे व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है।

उपरोक्त वर्णित सभी बातों से यह स्पष्ट होता है कि आयुर्वेद एवं मनोविज्ञान विषयों में व्यक्तित्व पर अनेक अनुसंधान कार्य किये गये हैं जिसके फलस्वरूप व्यक्तित्व के अनेक वर्गीकरण प्राप्त हुये हैं। आयुर्वेद के अंत्तर्गत नाड़ी ज्ञान के संबंध में अगणित पुस्तकें हैं जिसमें प्रकृति पर भी विचार किया गया है। प्रयोग चिंतामणि में उल्लेरिवत महर्षि मार्कण्डेय, वशिष्ठ एवं गौतम के नाड़ी परीक्षा संबंधी वचनों से एतत् संबंधी उनके ग्रंथों का पता चलता है, जिसमें महर्षि मारकण्डेय प्रणीत नाड़ी परीक्षा ग्रंथ जर्मनी के एक पुस्तकागार में आज भी उपलब्ध हैं। माण्डव्य एवं हारीत ऋषि ने भी नाड़ी परीक्षा पर लेरवनी उठाई थी ऐसा ग्रंथों से ज्ञात होता है।

इसी प्रकार निरिवल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ ने अपने पाठ्यक्रम में नाड़ी ज्ञान एवं नाड़ी दर्शन को निर्धारित किया है जो समस्त देश और विदेश में लागू है। उत्तर प्रदेश आदि बहुत से राज्यों में राजकीय आयुर्वेद संबंधी पाठ्यक्रम में भी नाड़ी ज्ञान निर्धारित हुआ है। भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद ने इसे अपने आयुर्वेदीय पाठ्यक्रम में निर्धारित किया है जो समस्त देश में एकाधिकार के साथ लागू है।

निष्कर्षतः आज के वर्तमान युग में किशोर व किशोरियों के संक्षिप्त व्यक्तित्व का ज्ञान नितान्त आवश्यक है। यदि इनके व्यक्तित्व में विकृतियाँ आ जाती हैं तो उसका समुचित निदान व उपचार करके उन्हें उचित मार्ग पर लाने के लिये मार्गदर्शन दिया जा सकता है।

1.2 समस्या की व्याख्या आवश्यकता एवं महत्व

मानव समाज अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टी के लिये अनेक साधनों को अपनाता है यदि किसी आवश्यकता की संतुष्टि किसी उपलब्ध साधन द्वारा नहीं हो पाती तो एक समस्या उपन्न हो जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि आवश्यकता की संतुष्टी के मार्ग में उपस्थित बाधा ही समस्या है। ज्यों ही साधन उपलब्ध हो जाते हैं बाधा दूर हो जाती है और आवश्यकता की संतुष्टी के साथ ही समस्या का अंत हो जाता है। इस बात को निम्न रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

Need - Resources = Problem

समस्या की उत्पत्ति उन परिस्थिती से होती है जिससे कार्यकर्ता जागरुक होता है. तथा उसे इस बात की अनुभूति होती है कि सुचारु रूप से कार्य संचालन के मार्ग में बाधाएँ हैं। इन बाधाओं को दूर किया जा सकता है तथा उनके दूर करने से सैद्धांतिक अथवा व्यावहारिक किसी समस्या का समाधान हो सकता है।

अतः समस्या एक ऐसा प्रश्न है जिसके हल को ढूँढने की आवश्यकता है। अनुसंधात्मक समस्याओं के विषय में विभिन्न शोधकर्ताओं ने अपने - अपने विचार व्यक्त किये हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार से हैं -

1. **टाउनसैण्ड के शब्दों में** - 'A Problem is question proposed for solution.'

   'समस्या तो समाधान के लिये एक प्रस्तावित प्रश्न है।'

2. **करलिंजर के अनुसार** - 'समस्या एक प्रश्नवाचक वाक्य अथवा विवरण है जिसमें दो चल राशियों में संबंध ज्ञात किया जाता है।'

3. **एकॉफ (R.L.) के अनुसार** - 'किसी समस्या का ठीक प्रकार से निर्धारण करना इसका आधा समाधान है।'

मैकगुइगन (Mc. Guigan) के अनुसार - 'एक समाधान योग्य समस्या ऐसा प्रश्न है, जिसका उत्तर व्यक्ति की सामान्य क्षमताओं के प्रयोग से दिया जा सकता है।'

'एक प्रस्तावित समस्या स्वयं अपना आधा समाधान होती है।'

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह ज्ञात होता है कि सभी के विचारों में शब्दावली का ही अंतर है अन्यथा इस बात को सभी स्वीकार करते हैं कि आवश्यकता की संतुष्टि के मार्ग

में बाधा ही समस्या है चाहे यह आवश्यकता जिज्ञासा की संतुष्टि मात्र है जो सभी मूलभूत अनुसंधानों का आधार है अथवा किसी उपयोगिता पर आधारित है।

शोधकार्य के लिये ली गई समस्या में आयुर्वेद के अनुसार वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान व्यक्तियों का चयन उनकी हस्तगत नाड़ी एवं वात, पित्त एवं कफ के शारीरिक मानसिक एवं समाजिक गुणों के आधार पर तैयार की गई प्रश्नावली के माध्यम से किया जावेगा। प्रश्नावली, हस्तगत नाड़ी द्वारा प्राप्त परिणाम को पुष्ट करने हेतु तैयार की गई है। प्रश्नावली के आधार पर प्रयोज्य (Subject) की प्रधानता का मूल्यांकन किया जा सकता है।

नाड़ी परीक्षण एवं तैयार की गई प्रश्नावली दोनों में यदि साम्य है तो हम कह सकते हैं कि अमुक व्यक्ति में किस प्रकृति की प्रधानता है। अर्थात वह वात प्रकृति प्रधान व्यक्ति है या पित्त प्रकृति प्रधान अथवा कफ प्रकृति प्रधान। इस प्रकार न्यादर्श के प्रयोज्यों की विशेषताओं का पता लगाया जावेगा कि वे किस श्रेणी में आते हैं ।

इस प्रकार पूरे न्यादर्श को हम तीन भाग वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के आधार पर बांट सकते हैं। प्रत्येक भाग में 40 छात्र एवं 40 छात्राएँ होंगे । इसके वर्गीकरण के पश्चात प्रत्येक समूहों को व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16P.F.) मनोवैज्ञानिक परीक्षण देकर व्यक्तित्व के 16 कारकों (Factors) के आधार पर व्याख्या कर उनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन एवं तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

आवश्यकता एवं महत्व

व्यक्तित्व निर्धारण लिये मनोविज्ञान में अनेक परीक्षण हैं, पर शोध समस्या की आवश्यकता इसलिये महसूस की गई क्योंकि मैं मनोविज्ञान की छात्रा हूँ एवं वर्तमान में महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की शोध छात्रा भी। चूँकि इस विश्वविद्यालय में वेदों का अध्ययन-अध्यापन होता है। इसलिये मुझे अपने प्रारंभिक विषय मनोविज्ञान एवं नूतन विषय महर्षि स्वास्थ्य विधान (आयुर्वेद) को जोड़कर कुछ जानने की इच्छा बलवती हुई जो शोध समस्या के रूप में उभरकर सामने आई । इस कारण मैने वेद को आधार मानकर व्यक्तित्व के बारे में चिन्तन किया एवं इस निष्कर्ष पर पहुँची कि आयुर्वेद को आधार बनाकर अर्थात स्वास्थ्य विधान के अनुसार वात, पित्त एवं कफ प्रकृति व्यक्तियों का चयनकर मनोवैज्ञानिक परीक्षण व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा यह ज्ञात किया जावे कि समान प्रकृति वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व में भेद पाया जाता है अथवा नहीं? अथवा लिंग भेद (Sex Difference) के कारण व्यक्तितव में भेद हो जाता है। इस प्रकार व्यक्ति के पूर्ण व्यक्तित्व का निर्धारण एवं तुलनात्मक अध्ययन समस्या की आवश्यकता एवं महत्व को परिलक्षित करता है।

1.3 चरों की अवधारणा

1. **करलिंजर के अनुसार (1964)-** 'चर एक ऐसा गुण होता है जिसकी अनेक मात्राएँ हो सकती हैं ।'

2. **गैरेट एच.ई. (1977)-** 'चर ऐसी विशेषताएँ एवं गुण होते हैं जिनमें मात्रात्मक विभिन्नतायें स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं तथा जिनमें किसी एक आयाम पर परिवर्तन होते रहते हैं ।

चर मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं :-

1. स्वतंत्र चर- 'साधारणतः अनुसंधानकर्त्ता का जिस पर नियंत्रण रहता है एवं जिसके प्रभाव को वह अध्ययन करना चाहता है उसे स्वतंत्र चर कहा जाता है ।

2. परतंत्र चर- स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण जो व्यवहार परिवर्तित होता है और जिसका अध्ययन तथा मापन किया जाता है उसे आश्रित चर अथवा परतंत्र चर कहते हैं ।

शोध कार्य में जिन चरों का प्रभाव देखा जायेगा वह हैं -

1. नाड़ी परीक्षण के साथ तैयार की गई वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली ।

2. व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.Test) ।

यहाँ शोध कार्य में दोनों ही, प्रश्नावली एवं परीक्षण (16 P.F.Test) स्वतंत्र चर हैं । इनका प्रभाव व्यक्तित्व पर देखा जावेगा ।

1.3.1 आयुर्वेद में नाड़ी एवं व्यक्तित्व

आयुर्वेद का स्वरूप एवं परिचय

आयुर्वेद शाश्वत, पुण्यतम, यशस्वी, आयुष्य एवं वृत्तिकर शास्त्र है। यह अभ्युदय तथा निःश्रेयसप्रद ज्ञानराशि है। यह जीवन का विज्ञान है । आयु के विषय में जीवन संबंधी जो भी ज्ञान उपलब्ध होता है वह सब आयुर्वेद की सीमा के अंतर्गत आता है। रोगियों का रोग जिस विद्या के द्वारा दूर हो एवं प्राणिमात्र रोगातुर न हो तथा समस्त प्राणियों का जीवन आरोग्यमय एवं दीर्घायुष्य सम्पन्न हो वह सब विद्या आयुर्वेद कहलाती है।
आयुर्वेद शब्द की निरुक्ति - आयुर्वेद शब्द दो शब्दों के संयोग से बना है।

आयुषो वेदः इति आयुर्वेदः।

आयु के वेद को आयुर्वेद कहते हैं । आयुर्वेद का वास्तविक अर्थ जानने के लिये आयु और वेद दोनों शब्दों का अलग - अलग अर्थ जानना आवश्यक है।

शरीरेन्द्रिय सत्वात्म संयोगो धारि जीवितम्,
नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्य्यायाहायुरूच्यते ।

आयु का स्वरूप - शरीर, इंद्रिय, मन और आत्मा के संयोग को आयु कहा गया है। अर्थात 'आयुः एति गच्छाति इति आयुः', निरन्तर चलते रहने से इसका नाम आयु है। इसी को धारि वं जीवित, नित्यक, अनुबंध इन पर्य्यायों से कहा जाता है ।

आयुः कामायमानेन धर्माथ सुख साधनम् ,
आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादर ।

धर्म, अर्थ और सुख का साधन आयु है। इस आयु की जिस पुरुष को चाह हो उसे चाहिये कि वह आयुर्वेद के उपदेशों का अतिशय आदर करें ।

आर्युहिताहितं व्याधे निदानं शमनं तथा ,
विघतेयत्र विद्वभ्दिः स आयुर्वेद उच्यते ।

जिस शास्त्र में आयुष्य के लिये हितकारक और अहित कारक पदार्थों का उल्लेख हो और रोगों के निदान अर्थात उत्पन्न होने का प्रधान कारण और उनकी शांति का उपाय अर्थात चिकित्सा का वर्णन किया गया हो उसे विद्वान लोग आयुर्वेद कहते हैं ।

श्रोत, त्वचा, नेत्र प्राण और जिव्हा ये ज्ञानेन्द्रियां कहलाती हैं पंचमहाभूत विकारात्मक एवं आत्मा के भोगायतन को शरीर कहते हैं । वाणी, हाथ, पैर, मलद्वार एवं मूत्रद्वार ये पंचकर्मेन्द्रियां

हैं। ज्ञान एवं कर्म दोनों होने के कारण मन उभयात्मक इंद्रिय कहलाता है। ज्ञान प्रतिसन्धाता तथा ज्ञान का अधिकरण आत्मा का अदृष्टवश जो संयोग होता है वही संयुक्त स्वरूप आयु का स्वरूप है।

वेद शब्द का अर्थ - वेद का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान । वेद शब्द संस्कृत के विद् धातु से बना है। विद् धातु का प्रयोग चार अर्थों मे किया जाता है।

सत्तायां विधते ज्ञाने वेत्ति विन्दे विचारणे ।
विन्दते विन्दति प्राप्तौ श्यन लुक श्नम - शोष्विदं कृमात् ॥

1. जिसमें अस्तित्व का बोध हो - विधते अस्ति
2. जिससे जाना जाये (वेत्ति ज्ञायते)
3. जिसमें आयु के विषय में विचार किया जाये (विन्ते विर्चायते)
4. जिसमें आयु को प्राप्त किया जाये । (विन्दते विन्दति लभ्यते)

आयुर्वेद शब्द का अर्थ- आयु और वेद दोनों शब्दों की व्यारव्या से आयुर्वेद शब्द का अर्थ स्वयं की सुगमता से बुद्धिगम्य होता है । अतः जिस शास्त्र के द्वारा आयु का ज्ञान हो, जिसके अंतर्गत आयु संबंधी विचार हो एवं जिस शास्त्र के द्वारा आयु की प्राप्ति हो उस शास्त्र को आयुर्वेद कहते हैं । यह शास्त्र आयु की व्यारव्या करता है साथ ही दीर्घ एवं अरोग्यमय आयु की प्राप्ति का मार्ग भी निर्दिष्ट करता है । यह शास्त्र आयु की स्थिरता, स्वास्थ्य संरक्षण एवं व्याधि परिमोक्षण का शास्त्र है।

हिताहितं सुरवं दुःरवमायुस्तस्य हिताहितम् ,
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेद ः स उच्चयते ।

1. सुरवायु - जो व्यक्ति मानसिक या शारिरिक रोगों से आक्रान्त नहीं है एवं युवावस्था से संपन्न है । यश, पौरुष, बलवीर्य एवं पराक्रम युक्त है, व्यवहारज्ञ तथा शास्त्रज्ञ है, जिसकी समस्त इंद्रियाँ प्रसन्न एवं संतुष्ट हैं, जो विविध सुंदर उपभोग संपन्न तथा समृद्धि संपन्न है, जिसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है एवं जो यथेष्ठ विचारशील है, उसकी आयु को सुरवायु कहते हैं।

2. दुःरवायु - सुरवायु के विपरीत की स्थिति दुःरवायु कहीं गई है।

3. हितायु - जो व्यक्ति सबका हितैषी होता है, दूसरे व्यक्ति के धन का लोभ नहीं करता है जिसकी प्रकृति शान्त है, हर क्षण सावधान रहता है, हर विषय में सोच समझकर कदम उठाता है एवं धर्म अर्थ काम आदि का प्रयोग बिना किसी विरोध के करता है, शांति प्रधान है, बुजुर्गों की

सेवा सुश्रूषा करता है, पूज्यनीय व्यक्तियों की पूजा करता है, राग -द्वेष , मद ईर्ष्या और मान आदि के वेगों को नियंत्रित रखता है, ज्ञान तपस्या आदि से प्रेम करता है , दयावान है, अध्यात्मविद है, लोक व परलोक का विचारकर किसी भी कार्य को करने वाला है, उनकी आयु हितायु कही गई है।

4. अहितायु - हितायु के विपरीत स्थिति अहितायु कही गई है। इस प्रकार आयुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय है आयु का हिताहित विवेचन । संपूर्ण आयुर्वेद में अनेकानेक दृष्टियों में आयु के हित और अहित का विचार किया गया है। आयुर्वेद शब्द बहुत शाखाओं वाले चिकित्सा विज्ञान को प्रकट करता हुआ केवल मनुष्यों की चिकित्सा से ही संबंध नही रखता अपितु इसमें हाथी, घोड़े आदि पशु - पक्षियों तथा वृक्ष लता आदि की चिकित्सा का भी विधान है क्योंकि वराहसंहिता, उपवन विनोद आदि ग्रंथों में पालकाप्य, मतङ्ग, शालिहोत्र आदि पशु चिकित्सकों तथा उनके उपदेशों और परम्परागत ग्रंथों का उल्लेख मिलता है। विद्वान लोग आद्यतन (प्रारंभिक ज्ञान) होने के कारण इसका वेद शब्द से उल्लेख करते हैं।

आयुर्वेद का प्रयोजन

मुरव्य रूप से आयुर्वेद के दो प्रयोजन हैं -

1. प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणम् ,

आतुरस्य विकार प्रशमनं च ।

2. इह रवल्वायु प्रयोजनं व्याधुप सृष्टानां ,

व्याधिपरिमोक्षः स्वस्थस्य रक्षणम च ।

प्रथम उद्वेश्य पूर्ति के लिये ऋतुचर्या, दिनचर्या, रात्रिचर्या, सदवृत्त तथा त्रिविध उपस्तंभों का उल्लेरव स्वस्थवृत के द्वारा आयुर्वेद में जगह-जगह किया गया है। विद्ववानों की ऐसी मान्यताएँ है कि उपर्युक्त उपायों के द्वारा क्षेत्ररूपी मानव शरीर को बीजरूपी व्याधि उत्पादक जीवाणुओं से सुरक्षित किया जा सकता है। रोगों से ग्रसित होने पर रोगी के समस्त कष्टों का निवारण संशमन तथा संशोधन चिकित्सा द्वारा किया जाना आयुर्वेद शास्त्र का द्वितीय प्रयोजन है।

इस प्रकार आयुर्वेद शास्त्र का प्रतिपाद्य सूत्र स्वस्थ तन, स्वस्थ मन तथा स्वस्थ रोग रहित समाज प्रमुरवतया परिलक्षित होता है ।

वेदों में आयुर्वेद

आयुर्वेद के सिद्धांतों का प्रतिपादन ब्रम्हा ने सृष्टि रचना के पूर्व ही समस्त प्राणियों की रक्षा एवं व्यवस्था के लिये कर दिया था। जब सृष्टि का आरंभ हुआ तब से रोगों के प्रतिकार का प्रयत्न शुरु हो गया। आयुर्वेद का मुरव्य लक्ष्य था रोगों को दूर कर जीवन को स्वस्थ निरोग तथा दीर्घायु बनाना। संसार के जितने भी प्राचीनतम ग्रंथ हैं अन्य विधाओं के समान आयुर्वेद के भी स्त्रोत हैं। उन्हीं स्त्रोतों से निकलकर यह जीवन का विज्ञान विश्व में प्रवाहित हुआ है।

वैदिक वाङ्मय (साहित्य) में अश्विनी कुमारों को देव वैद्य कहा गया है। इन्होंने आथर्वण दधीचि से 'मधुविद्या' प्राप्त की थी। ये सन्तति समद्धि, आरोग्य, दीर्घायु व पौरूष शक्ति देने वाले कहे गये हैं। वेदों में रुद्र, अग्नि, वरुण, इन्द्र, मरुत आदि दैव्यभिषक कहे गये हैं किन्तु सर्वाधिक प्रसिद्धि इनमें अश्विनी कुमारों को मिली है। जो कि देवानां भिषजो रूप में स्वीकृत है। ऋग्वेद में इनके द्वारा वर्णित चमत्कारों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस काल में आयु विद्या की स्थिति अत्यंत उन्नत थी। अश्विनी कुमार वनस्पति समृद्धि, आरोग्य, दीर्घायु तथा शक्ति के प्रदाता कहे गये हैं वे सभी प्रकार की औषधियों के ज्ञाता थे।

ऋग, यजु, साम, तथा अथर्ववेद के क्रमशः धनुर्वेद गन्धर्ववेद, स्थापत्व वेद तथा आयुर्वेद उपवेद हैं। उपशब्द समीप अर्थ का द्योतक है। आयुर्वेद का किस वेद के साथ संबंध हैं जब हम इस विषय में विचार करते हैं तो देरवते हैं कि सुश्रुताचार्य "इह रवल्वायुर्वेदमष्टाङ्गमुपाङ्ग मथर्ववेदस्य" इस वाक्य के द्वारा स्पष्ट रूप से आयुर्वेद का अथर्ववेद के साथ अवयव तथा अवयवों का संबंध दिरवाते हैं।

ऋग्वेद में आयुर्वेद -

अश्विनी कुमार का चिकित्सा कौशल -

1. राजा रवेल की कन्या विशाला की टूटी हुई टांग की जगह लोहे की टांग लगाई।
2. यज्ञ के कटे हुए, सिर को पुनः जोड़ा।
3. पूषन के टूटे हुये दांतों को फिर से ठीक किया।
4. श्राव के कुष्ठ रोगों को ठीक कर उसे पुनः युवावस्था प्रदान की गई।
5. भग के विदीर्ण नेत्रों को पुनः ठीक किया गया। विशीर्णादशनः पूष्णो नेत्रे नष्टे भगस्य च शशिनो राजयक्ष्माऽभूद श्रिभ्यां ने चिकित्सताः (भावप्रकाश)
6. वृद्ध च्यवन को पुनः यौवन प्रदान किया।

7. वामदेव को माता के गर्भ से निकाला।
8. राजा मान को पुत्रवान बनाया।
9. जहू की प्रजा को दीघायु व पुत्रवान बनाया।
10. वध्रिमति के बन्धयत्व को दूरकर उसे हिरण्यहस्त नामक सन्तान दी।
11. वर्म ऋषि के मदात्य रोग को दूर किया।
12. उचथ्य के पुत्र दीर्घतमा की दुर्बलता व अंधता को दूर किया।
13. जल में डूबे हुए रंभ को बाहर निकालकर स्वस्थ्य बनाया।
14. वृद्ध कलि को यौवन सम्पन्न व पौरूष शक्ति सम्पन्न बनाया।

इन्द्र के चिकित्सा चमत्कार -

1. अपाला के चर्मरोग को दूर किया।
2. अंधे परावृज को दृष्टिदान दिया।
3. अपाला के पिता जो कि खालित्य (गंजेपन) रोग से पीड़ित थे उसे दूर किया।
4. पंड्ग (लूले) श्रोण को चलने में सामर्थ्य किया।
5. चन्द्रमा के राज्यक्ष्मा को ठीक किया।

यत्रौषधीः समगमत राजानः समिताविव ,

विप्रः स उच्चयते भिषग् रक्षोहाऽभीवचातनः।

ऋग्वेद में हृदयरोग , राजयक्ष्मा, अहि, पृष्ठामय आदि रोगों का उल्लेख मिलता है, साथ ही शरीर के अंग प्रत्यंगों का भी वर्णन उपलब्ध होता है। औषध सूक्त में औषधियों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। सभी औषधियों का स्वरूप व प्रयोग एवं उनके कार्यो का भी उल्लेख मिलता है। इनके अलावा सूर्य चिकित्सा द्वारा हृदयरोग आदि को दूर करना जल चिकित्सा व वायु चिकित्सा का संकेत उपलब्ध होता है।

यजुर्वेद में आयुर्वेद- शुक्ल यर्जुवेद में औषधियों की प्रशस्ति, पलाश, स्वयथु, श्लीपद, कुष्ठ रोग आदि रोगों के निवारण का भी उल्लेख मिलता है। इसके अन्तर्गत निर्दोषवाद का स्पष्ट संकेत है।

सामवेद में आयुर्वेद - सामवेद में बहुत से मंत्र ऋग्वेद के ही मंत्र हैं जिसमें आयुर्वेद के विषयों का वर्णन है। इसी कारण इसमें ऋग्वेद की ही तरह यत्र - तत्र आयुर्वेद के विषय उपलब्ध होते हैं।

अथर्ववेद में आयुर्वेद- अथर्ववेद में तो आयुर्वेद के बहुत से विषय मिलते हैं। इसमें आयुर्वेद के सैकड़ों सूक्त तथा मन्त्र मिलते हैं। ऋग्वेद आदि में तो प्रायः केवल ऐतिहासिक रूप

में ही कहीं- कहीं प्रसंगवश आयुर्वेद का विषय आता है परंतु अथर्ववेद में तो स्थान-स्थान पर रोग, शारीरिक अवयव, रोग प्रतिकार विभिन्न औषधियों का विभिन्न रोगों में प्रयोग इत्यादि विषय भरे पड़े हैं । जिससे कि आयुर्वेद का अथर्ववेद से संबंध स्पष्ट प्रतीत होता है।

अथर्ववेद में आयुर्वेद के विकसित सिद्धांतों की पृष्ठभूमि उपलब्ध होती है। इसमें चिकित्सा के विविध प्रकार, पाचन क्रिया, त्रिदोषवाद, अग्नि की स्थिति, शल्य शालाक्य, भूत विद्या, रसायन, बाजीकरण, द्रव्यगुण परिचय इत्यादि का भी विशद वर्णन मिलता है। आयुर्वेद के सैद्धांतिक तथा क्रियात्मक पक्ष का पर्याप्त विकास अथर्ववेद के समय तक हो चुका था। इस कारण आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांतों एवं उसके अंगों से संबद्ध विषय प्रचुर मात्रा में अथर्ववेद में पाये जाते हैं।

वैदिक वाङ्मय में चिकित्सा की जो प्रक्रिया प्रचलित थी वह केवल तन्त्र- मन्त्र, हवन व जादू आदि तक सीमित थी, यह मात्र निराभ्रम है। क्योंकि अर्थवर्वेद में रोगों का उपचार संबंधी निर्देश, औषधियों का प्रयोग, शस्त्रकर्म इत्यादि चिकित्सा की अनेक विधियों का वर्णन है। वैदिक मंत्रों में 360 अस्थियों का उल्लेरव मिलता है ।

द्वादश प्रथयश्र कृमेकं त्रीणि नग्यनिक उत तच्विकेत ,
तत्राहतास्त्रीणि शतानि शङ्कवः षष्टिश्च कीला अविना चलाये ।

मन्त्रों में जो अनगिनत सैकड़ों हजारों शिराओं व धमनियों का उल्लेरव मिलता है इससे यह प्रतीत होता है कि वैदिक कालीन ऋषियों को इसका ज्ञान था ।

शतस्य धमनीनां सहस्त्रस्य हिराणाम ,
अस्थु रिन्यदयमा इमाः साकमन्ता अरंसत ।
इमा यास्ते शतं हिरा : सहस्त्रं धर्मनीरुत ,
तो सां ते सार्वासामहमश्मना विलमप्यधाम ।

360 अस्थियों का उल्लेरव शतपथ ब्राम्हण में भी प्राप्त होता है। कीथ व मैकडोनल जो वैदिक विषयों के पण्डित है, ने लिरवा है कि वैदिक काल के भारतीय लोगों की अभिरुचि बहुत पहले ही शरीर शास्त्र के प्रमुरव प्रश्नों की ओर आकृष्ठ हो गई थी। मानव शरीर के विविध अंगों का विस्तार से वर्णन अत्यंत सूक्ष्मता व पूर्णता के साथ प्राप्त होता है।

शुक्ल यर्जुर्वेद संहिता में - भी 13 वे अध्याय के दो सूक्तों में औषधियों का रोगनाशकत्व औषधियों के रवोदने वाले तथा जिनके लिये औषधियाँ रवरीदी गईं हैं। उन दोनो के लिए उपकारी होना, श्लेष्मा रोग, अर्श, श्लीपद, मुरवपाक, क्षत आदि रोगों का नाश करना, स्थान - स्थान पर घोड़े तथा मनुष्य के शरीर के अंगों का उल्लेरव, यक्ष्मा- रोग, कफरोग, शोथ, कुष्ठ , अंगभेद आदि रोगों का उल्लेरव मिलता है।

तैत्तरीय संहिता के काम्येष्टि प्रकरण में दृष्टि प्राप्ति तथा यक्ष्मा, उन्माद आदि रोगों के परिहार की प्रार्थना यक्ष्म तथा राजयक्ष्म तथा उससे उत्पन्न अन्य रोगों की उत्पत्ति का विषय

प्राप्त होता है।

शरीरशास्त्र के विषय में - शरीर की नाड़ी तथा धमनियों का निर्देश, सौ शिराओं तथा सहस्त्र धमनियों का उल्लेरव, नाना रोगों के साथ शारिरिक अवयवोंका वर्णन, केश, अस्थि.स्त्राव, मांस, मज्जा, पर्व, उरू (जंघा) पैर. घुटने, शिर, हाथ, मुरव, पृष्ट, पार्श्व, जिव्हा, ग्रीवा तथा त्वचा आदि का उल्लेरव मिलता है।

रोग प्रतिकार के विषय में - शलाका द्वारा वेधन, बाहर से प्रविष्ट होकर शरीर में विभिन्न रोगों को उत्पन्न करने वाले विविध कृमियों तथा उनको निकालने का वर्णन, चक्षु, नासिका तथा दांतो में प्रविष्ट होकर रोगों को उत्पन्न करने वाले येवास आदि कृमियों को नष्ट करना, नाना रंग के कृमियों का वर्णन, सूर्य की लाल किरणों द्वारा रोग, कामला, पाण्डु आदि रोगों का नाश प्रभास्नान, प्रातःकाल की धूप मे स्वेदन, जल का सर्वरोगनाशकत्व पर्वत की वायु का आरोग्यदायत्व इत्यादि विषय मिलते हैं।

ब्राम्हण ग्रंथों में - ऐतरेय ब्राम्हण में कहीं कहीं शरीर की उत्पत्ति का, प्राण का उल्लेरव, अश्वियों का देवताओं के वैद्य के रूप में निर्देश तथा ज्ञानेन्द्रियों का वर्णन अंजन के प्रयोग से नेत्ररोगों की निवृत्ति, उन्माद, कुष्ठ, जलोदर, पाचन, हृदय नाड़ियों का वर्णन, निद्रा स्वप्न उल्लेरव आदि मिलता है।

वृहदारण्यक में - अश्व के अंगों, मनुष्य के अंगों, मनुष्य तथा वृक्ष की तुलना, नेत्र रचना, मृत्यु उल्लेरव, श्राप द्वारा रोगों की उत्पत्ति इत्यादि का वर्णन मिलता है।

तैत्तरीयारण्यक में - कृमियों का वर्णन मिलता है।

सामविधान ब्राम्हण में - सर्पो से रक्षा, भूतों का आक्रमण. रोगों का आक्रमणआदि का वर्णन मिलता है।

यत औषधाः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुंगपुरा ः ।

वैदिककाल में तीन युग पूर्व भी औषधियों का ज्ञान था ऐसा वैदिक मंत्रों से ज्ञात होता है।

अनेक शारवाओं प्रशारवाओं मे अथर्थर्वेद , ऋग्वेद इत्यादि में आयुर्वेद शास्त्र के विविध विषय व्याप्त होने से यज्ञ की प्रक्रिया आदि में इस विषय का गुणगान होने से एवं आयुर्वेद नाम से वैदिक प्रस्थान के प्राचीन काल से अलग - अलग भागों में होने से इस भारतीय भैषज्य विज्ञान (आयुर्वेद) की गुरुता, महत्ता व प्राचीनता सिद्ध होती है।

त्रिदोष

आयुर्वेद में तीन दोष कहे गये हैं वात- पित्त और कफ। जो शरीर को दूषित करता है वह दोष है और दूषित करने की शक्ति वात, पित्त एवं कफ में ही है। ये तीनों विकृत होकर मल व धातु को मलिन करते हैं एवं रोग उत्पन्न करते हैं।

वायुः पित्तं कफंश्चेति त्रयोदोषाः समासतः .
विकृताऽविकृतादेहं ध्नन्ति ते व वर्तयन्ति च ,
ते व्यापिनोऽपि हन्ना भ्योर धोसध्योर्ध्वसंश्रया ः ।

वात, पित्त, कफ ये तीनों दोष अविकृत होकर जिलाते रहतें हैं । सुश्रुत ने कहा है कि विसर्ग, आदान, विक्षेप, सोम, सूर्य, अनिल जगत को धारण करते हैं । वैसे ही वात, पित्त, कफ ये तीनों ही शरीर को धारण करते हैं । वात, पित्त, कफ ये तीनों ही शरीर के संभव हेतु हैं ये शरीर में ऊपर नीचे व बीच में स्थित होकर शरीर को धारण करते हैं । दोष ही समावस्था में शरीर को धारण किये रहते हैं व विकृत होकर शरीर में रोगों की उत्पत्ति करते हैं।

रोगस्तु दोष वैषम्यं दोषसाम्यरोगता ।

रोग दोष वैषम्य से होता है। दोषों की साम्यता आरोग्यता है। चिकित्सा का यह सिद्धांत है कि वृद्ध द्वोष का ह्रास करना चाहिये व कमजोर (क्षीण) दोषों को बढ़ाना चाहिये । तीनों दोषों को साम्यावस्था में रखना चाहिये । इस सिद्धांत को अपनाने हेतु ज्ञान की आवश्यकता है । जिस प्रकार अग्नि से गीली लकड़ी को हटाये बिना धूम खत्म नहीं होता उसी प्रकार जब तक रोग का कारण खत्म न किया जाये तब तक रोग नहीं जाता । आयुर्वेद शास्त्र के दो प्रयोजन हैं । इन प्रयोजनों की सफलता के लिये रोगों के कारण व त्रिदोष के ज्ञान. की आवश्यकता ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार रोग बिना दोष के नहीं होता और व्याधियाँ दोषों के बिना नही होती, इस सिद्धांतानुसार आयुर्वेद के ज्ञानियों में मतैक्यता है।

आयुर्वेद में त्रिदोष का महत्व - त्रिदोष अर्थात वात, पित्त, कफ ही संतुलित होने से स्वास्थ्य कर होते हैं। जैसा कि चरक लिखते हैं 'दोषों का विषम होना ही रोग है, दोषों का सम होना ही आरोग्यता है।' इस वचन द्वारा विकृत दोष ही रोग है । एवं अविकृत दोष शरीर को धारण कि हुये है। जिस प्रकार विसर्ग आदान, विक्षेप द्वारा सोम, सूर्य, अनिल, जगत को धारण किये हुये है उसी प्रकार वात, पित्त, कफ रस रक्तादि धातुओं को धारण किये हुए है। आयुर्वेद में अनेक रोगों की चिकित्सा प्रतिपादित है परंतु जब तक रोगों के कारण ज्ञात नहीं होंगे तब तक चिकित्सा भी नहीं हो सकेगी ।

जिस प्रकार उपरोक्त त्रिदोष शारीरिक है उसी प्रकार सत्व, रज एवं तम मन के दोष हैं। सत्व, रज एवं तम इसमें सत्व सदैव ही गुण कहा गया है मन के दोषों में इसकी गणना नहीं

की जाती है।

त्रिदोष त्रिगुण संबंध - त्रिगुण से सत्व, रज और तम का ग्रहण होता है ये तीनों मानस भावों को उत्पन्न करते हैं। सत्व में विकृति नहीं होती इसलिये इसे सदैव गुण ही कहा जाता है। रज और तम ये दोनों मानस दोष कहलाते हैं।

सत्वं प्रकाशकं विद्धि रजश्चापि प्रर्वतकम,
तमो नियामकं प्रोक्तमन्योन्यमिथुनात्मकम् ,
मानस पुनरुद्धिष्टो रजश्च तम एवं च ,
रजतभश्च मानसौ दोषो तमोविकारः ।

कामकृोधलोभमोहेर्ष्यामानमद शोक चिन्तोद्वेग भयहर्षादयः।।

रज और तम जब विकृत होते हैं तब मन को दूषित कर मानस व्याधियों को उत्पन्न करते हैं और मानस विकारों का शरीर पर प्रभाव पड़ता है। और शरीर विकारों का भी मन के ऊपर प्रभाव अवश्यम्भावी है। मन और शरीर एक दूसरे के साथ जुड़े हुये हैं। ते च विकाराः परस्परमनुवर्तमानाः कदाचितनुबध्नन्तिकामादयोज्वरादयश्च।

त्रिदोष का पंचमहाभूत से संबंध - आयुर्वेद शास्त्र पंचमहाभूच की आधारशिला पर आधारित है और आयुर्वेद समस्त दृव्य को पान्चभौतिक मानता है। तीनोंदोष भी दृव्य होने के कारण पान्चभौतिक है।

सर्व दृव्यं पान्चभौतिककम स्मिन्नर्थे ।

तीनों - दोषों की उत्पत्ति पंच महाभूतों से इन पांचों तत्वों के गुणों के आधार पर ही होती है।

आकाशमास्ताभ्यां वातः वह्नि वहिजलाभ्यांम पित्तम ,
जल प्रथिवीभ्यां श्लेष्मा ।

1. आकाश और वायु महाभूत से वात दोष की उत्पत्ति होती है।
2. पित्त दोष की उत्पत्ति अग्नि (तेज) महाभूत से होती है।
3. प्रथ्वी एवं जल महाभूत से कफ दोष की उत्पत्ति होती है। व कफ सोम(जल) गुणात्मक है।

तत्र वायोरात्मैवात्मा, पित्त माग्नेयम, श्लेष्मा सौम्य इति।

त्रिदोष एवं पन्चमहाभूत तथा सत्व, रज एवं तम के उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है तीनों गुण त्रिदोष को प्रभावित करते हैं एवं यह बात भी स्पष्ट होती है कि मानसिक विकार शरीर विकारों के साथ परस्पर संबद्ध हो जाते हैं । शरीर और मन के ये दोष घनिष्ट रूप से परस्पर संबंधित हैं ।

वात (वायु) के गुण

वायु शब्द वा गतिग - धनयोः धातु से बना है जिसका अर्थ है 'वाति गच्छाति इतिवायुः' अर्थात यह सर्वदा चलता रहता है। तीनो दोषों में वायु ही बलवान है क्योंकि वह शरीर के प्रत्येक अवयवों (अंगों) का विभाग करता है । शरीर को जो भी गति मिलती है वह वायु से ही मिलती हैं । वायु रजोगुणयुक्त है, सूक्ष्म है, शीत है, रुक्ष है, लघु (हल्का) है और चल (गतिशील) है ।

तत्र रुक्षो लघुः शीतः स्वरः सूक्ष्मश्चलोऽनिलः ,

वायु शरीर के समस्त स्त्रोतों में प्रवेश करने वाला व चंचल होता है। गौतम इत्यादि मुनियों ने वायु को अनुष्णाशीत अर्थात न ठण्डा न गर्म ही माना है। वायु को शास्त्रों में भी योगवाही होने से अनुष्णाशीत ही कहा गया है जैसे वायु पित्त के संयोग से दाह करने वाला और कफ के संयोग से शीत करने वाला हो जाता है। उष्ण उपायों से वायुशांत होती है। वायु का स्पर्श वैशेषिक दर्शन में अनुष्णाशीत मानते हैं ।

इस शरीर में जितनी भी क्रियायें होती है उन सब क्रियाओं का सम्पापदक वायु है । वायु के बिना शरीर की क्रियायें यन्त्र तथा तन्त्रों का कार्य धातु तथा मल इत्यादि का उधर - उधर जाना या गतिशील होना नहीं हो सकता इसलिये वायु का शरीर के साथ सहोत्पादक भाव संबंध है,कहा भी गया है।

पित्त पंङ्गु कफ पंङ्गु पंङ्गवो मलधातवः ,
वायुना यत्र नीयन्ते तत्र गच्छति मेघवत् ।

पित्त, कफ, मल एवं धातु पंङ्गु हैं । इन्हे वायु ही ले जाता है वहां ये मेघ के समान जाते हैं । वात शरीर के अधोभाग में विशेषकर नाभि के नीचे स्थित रहता है । शरीर के अंदर से मलमूत्र की आकृतियों का कर्ता भी वायु ही है। रक्त एवं मांस इत्यादि स्वयं कुछ नहीं कर सकते इन सबका चालक वायु ही है जिस प्रकार गीले कपड़ों को सुरवाने का कार्य वायु करती है उसी प्रकार शरीरस्य दोषों के जलीय अंश का संशोधन भी शरीरस्य वायु करता है। पक्वाशय वायु का मुरव्य स्थान है ।

पक्वाशय कटीसक्थिश्रोत्ता स्थिरस्पर्शनेन्द्रियम ,
स्थानं वातस्य तत्रापि पक्वाधातं विशेषतः ।

कटि,सक्थि,श्रोत्र,अस्थि,त्वचा इत्यादि वायु के अन्य स्थान है।

वायु के भेद

प्राणादि भेदात्पश्चात्मा वायुः ।

प्राण आदि के भेद से वायु 5 प्रकार की है।

1. प्राण वायु - प्राणोअत्र मूर्धगः कुरुः कण्ठचरों बुद्धि हदयोन्द्रि चित्त द्रक ,

एठीवनश्रवथ्रदगारतिः श्वासन्नप्रवेशकृत।

प्राणवायु शिर में रहती हुई छाती व कंठ में गमन करती है । हृदय, बुद्धि, इंद्रिय एवं मन इनको धारण करती है। छींकना, हिचकी, श्वांस रोग उत्पन्न करती है। श्वांस क्रिया द्वारा ही मनुष्य नाक व मुरव की सहायता से प्राणद्रव्य विशिष्ट वायु को ग्रहण करता है।

2. उदान वायु - उरः स्थान मुदानस्य नासानाभिमगलांश्चेरत्,

वाक्प्रवृत्ति प्रयत्नो बल वर्ण स्मृतिक्रियः ।

उदान वायु का स्थान गला है। उदान वायु द्वारा प्राप्त शक्ति से ही प्राणी (मनुष्य) बातचीत करने में गाने में समर्थ होता है। कुपित होने पर ऊपर की तरफ कंठ प्रभृति स्थानों में रोग पैदा करती है ।

3. व्यान वायु - व्यानों हृदिस्थितः कृतस्नदेहचारी महाजवः,

गत्यपक्षेपणोत्क्षेपनि मेषोन्मेषणादिका ।

प्रायः सर्वा क्रियास्तमिन प्रतिबद्धा शारीरिणाम् ।।

व्यानवायु का मुरव्य स्थान हृदय है। वैसे व्यान वायु संपूर्ण शरीर में व्याप्त है, आंरव बंद करना, रवोलना, शरीर से रवून व पसीने को बहाने इत्यादि का कार्य करती है।

4. समान वायु - समनोऽग्निसमीपस्थः कोष्ठे चरति सर्वतः ,

अन्नं ग्रहति पचति विवेचयति मुश्चति ।

समान वायु नाभि में स्थित होती है। जठराग्नि से मिलकर ग्रहण किये हुये भोजन को पचाती है । सार और किट्ट हुये भोजन को पचाती है। सार और किट्ट में भेद करके किट्ट भाग (मलमूत्र के रूप में) नीचे प्रवृत्त करती है। कुपित होकर अतिसार व वायु गोला आदि रोग पैदा करती है। समानवायु कायग्नि के समीप रहकर उन्हें स्त्राव कराकर बल प्रदान करती है।

4. अपान वायु - अपानोऽपानगः श्रोणिवस्ति मेदोरुगोचरः ,

शुक्रार्तवशकन्मत्त गर्भनिष्क्रमणाक्रियः ।

अपान वायु गुदा में रहती है । श्रोणि वस्ति तथा उरु में विचरण करती है । यह मल-मूत्र, शुक्र. वीर्य व आर्तव को बाहर निकालने का कार्य करती है।

पित्त के गुण

पित्त सस्नेहतीक्ष्णोष्णं लघु विस्त्रं सरंद्रवम् ।

पित्त एक प्रकार का पतला सा द्रव्य है । पित्त कुछ चिकना, तीक्ष्ण आशुकारी, गर्म, हल्का, पीले रंग का नीला सा है । पित्त सतोगुणी, चरपरा, कड़वा, दस्त लाने वाला होता है । पित्त मछलियों की सी दुर्गन्ध वाला होता है।

पित्त अपनी समअवस्था में शरीर में पाचन का कार्य एवं दर्शन (प्रत्येक मूर्तमान वस्तुओं को देखने) का कार्य करता है। एवं शरीर में उष्मा को बनाये रखना , इस प्रकार प्रधान कार्य पित्त के हैं। अन्य कर्म हैं - क्षुधा, रुचि, तृषा, प्रभा, मेधा, शौर्य, शरीर को मृदु बना कर रखना इत्यादि । इसके विपरीत जब - पित्त विकृत हो जाता है तब कटु अम्ल रस का शरीर में बढ़ना, पाण्डु एवं अरुण रंग छोड़कर त्वचा का अन्य वर्ण का हो जाना, मूर्च्छा, शरीर के उबलने जैसा कष्ट, भ्रम, दुर्गन्ध, मद पाक जैसी व्याधियाँ उत्पन्न करता है। जब पित्त आमयुक्त हो जाता है तब उसका रंग हरा स्याव होता है। यह कण्ठ व हृदय में गर्मी (दाह) उत्पन्न करता है। पित्त की जब शरीर में वृद्धि हो जाती है। तब मनुष्य को सब पीला दिखाई देने लगता है। संतोष, निन्द्रा की कमी, बलहानि, मूत्र तथा नेत्रों का पीला होना, ठंडे में रहने की इच्छा इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

पित्त का क्षय होने से शरीर की उष्मा मंद हो जाती है मुख की आभा में कमी आ जाती है साथ ही शीत संबंधी रोग होते हैं । शीत से युक्त होने पर तीक्ष्ण भोजन करने पर पित्त का क्षय होता है एवं उष्मा से प्रकोप होता है व शीत से पित्त का शमन होता है । रोटी, चीनी, दूध, मीठे फल इत्यादि के सेवन से पित्त का प्रशमन होता है ।

पित्त के भेद

पित्त पञ्चात्यकम् (पित्त पांच प्रकार का है।)

1. पाचक पित्त - पञ्चभूतात्मकवेऽपि यत्तैजसगुणोदयात् ,
त्यक्तद्रवत्यं पाकादिक कर्मणाऽनकशब्दितम् ,
पचत्यन्नं विभजते सारकिट्टौ प्रथक तथा ।
तत्तस्थमेव पित्तानां शोषाणामस्यनुग्रहम् ,
करोति बलदानेन पाचकं नाम तत स्मृतम् ।

इनमें पक्वाशय और आमाशय के मध्य (ग्रहणी में) रहने वाला, पित्त पञ्चभूतात्मक होने पर भी तैजस गुण की अधिकता से द्रवता का त्याग कर पाक आदि अग्नि के कार्य करने से

अनल अर्थात अग्नि शब्द से कहा जाता है। यह पित्त अन्न को पचाता है। सार और किट्ट भाग को पृथक करता है और वहीं रहकर शेष पित्तों को बल पहुँचाकर उनको बढ़ाता है इस पित्त को पाचक पित्त कहते हैं।

2. रंजक पित्त - आमाशयाश्रयं पित्तं रञ्जाकं श्सरञ्जनात ।

रंजक पित्त आमाशय में रहता है और रस में रंग देने से रंजक कहलाता है। रंजक पित्त यह कार्य यकृत और प्लीहा के बल से करता है।

3. साधक पित्त - बुद्धिमेधाभिमानाधौरभिप्रेतार्थसाधनात् ,

साधकं हृदगतं पित्तं ।

साधक पित्त हृदय मे रहता है - बुद्धि, मेधा, अभिमान आदि के द्वारा वांछित अर्थ का साधक करने से यह साधक कहलाता है।

4. आलोचक पित्त - रूपालोचतनतः स्मृतम ,

द्वक्स्थमालोचकं ।

आलोचक पित्त आंखों में स्थित है। रूप को दिखाने से इसे आलोचक कहते है ।

5. भ्राजक पित्त - त्वक्स्थं भ्राजकं भ्राजनाद्वचः ।

भ्राजक पित्त त्वचा में स्थित है, यह पित्त त्वचा का दीपन करता है इस कारण भ्राजक कहलाता है। भ्राजक पित्त शरीर में कांतिदायक है।यह लेप व अभ्यंग आदि को पचाता है। त्वचा के द्वारा कई प्रकार की औषधियों को तथा स्नेहों को शोषित कराया जाता है। भ्राजक पित्त इन शोषित पदार्थों का पाचन करके शारीरिक धातुओं के उपयोग करने योग्य बनाता है।

कफ (श्लेष्मा) के गुण

स्निग्ध शीतो गुरुर्मन्दःश्लक्षणो मृत्स्नः स्थिरः कफः ।

कफ स्निग्ध, शीतल, गुरु, मंद, श्लक्षण, मृत्स्न व स्थिर है । यह एक तरह का चेपदार पदार्थ है जो अंगुली से मसलने पर चिपट जाता है । यह तामसिक गुण प्रधान व मधुर रस वाला होता है। जब कफ विदग्ध होता है तब लवणता को प्राप्त होता है।

कफ कण्ठ, शिर, क्लोम, आमाशय, संधि, घ्राण, मेदा व जिव्हा ये कफके स्थान हैं। संधियों मे स्निग्धत्व, स्थिरता, स्नेहन, पूरण, तर्पण, शोषण, उद्क कार्य द्वारा शरीर पर अनुग्रह करता है। श्लेष्मा के विकृत होने से शरीर के स्नेहांश कठिन हो जाते हैं । ठंडक लगती है, शरीर भारी सा हो जाता है ,जोड़ों में रुकावट, सूजन व नींद अधिक आती है ,त्वचा का रंग सफेद, जिव्हा का स्वाद मधुर होता है। कफ की वृद्धि होने पर आलस्य ,गौरव ,अग्नि ,अंगों का शिथिल होना, निंद्रा की अधिकता, संधि कार्यों में रुकावट या अड़चन आदि समस्या होती है। कफ के क्षीण होने पर भ्रम होता है, संधि इत्यादि में रुक्षता, शिथिलता, तृष्णा व दौर्बल्य आदि होते हैं। शीत लगने से, स्निग्ध भोजन करने से श्लेष्मा का प्रकोप होता है । रुक्ष, उष्ण द्रव्यों के सेवन से प्रशमन होता है।

श्लेष्मा तुपञ्चधा (कफ के पाँच प्रकार हैं)

1. अवलम्बक श्लेष्मा (कफ)

उरः स्थ स त्रिकस्स स्ववीर्यत ,
हृदयस्यान्नवीर्याञ्च तत्स्थ एताबुकर्मणा ।
कफधाम्नां चशेषाणां यत्करोत्यवलम्बनम् ,
अतोऽवलम्बकः श्लेष्मा ।

अवलम्बक कफ छाती में रहता है । यह अपनी शक्ति से त्रिक को धारण कर अपनी और अन्न की शक्ति से हृदय का अवलम्बन करता है। हृदय में रहते हुए ही जलीय कार्यों से क्लेदन, पूरण, तर्पण आदि अन्य कफ के स्थानों का (गले इत्यादि) अवलम्बन करता है । यह श्लेष्मा अवलंबिका कला में रहता है यह कला हृदयावरण व फुफ्फुसावरण इन दो तहों के बीच रहता है इसमें रसधातु मिश्रित रहती है।

2. क्लेदक श्लेष्मा (कफ)

यस्त्वामाशयसं स्थितः ,
क्लेदकः सोऽन्नसङ्घातक्लेदनात् ।

क्लेदक कफ आमाशय में स्थित रहता है अन्न समूह का क्लेदन करता है अर्थात अन्न समूह को गीला व मृदु करता है. इसलिए इसे क्लेदक कफ कहते हैं।

3. बोधक श्लेष्मा (कफ)

रसोबोधनात्,

बोधकों रसनास्थायी ।

बोधक कफ जिव्हा में रहता है, यह कफ रक्त आदि का बोध (ज्ञान) कराता है इसलिये इसे बोधक श्लेष्मा कहते हैं।

4. तर्पक श्लेष्मा (कफ) -

शिरः संस्थोऽक्षतर्पणात् तर्पकः ।

यह कफ शिर में रहता है एवं इसका कार्य इंद्रियों का तर्पण करना है व स्नेहन (चिकनापन) करना है । यह उक्त कार्यों से समस्त इंद्रियों को अनुग्रहित करता है ।

5.श्लेषक श्लेष्मा (कफ) -

सन्धि संश्लेषाच्छलेषकः सन्धिणु स्थितः ।

संधियों में स्थित रहते हुये संधियों का श्लेषण अर्थात स्नेहन व बंधन करता है।

प्रकृति (व्यक्तित्व)

वात, पित्त एवं कफ मानव प्रकृति के निर्मापक हैं। प्रत्येक पुरुष (Person) का जो विशिष्ट शारीरिक स्वरूप और मानव स्वभाव होता है उसे लौकिक व्यवहार में उसकी प्रकृति कहते हैं और यही उनका व्यक्तित्व कहलाता है । पुरुषों की इस प्रकृतियों का मूल कारण वात, पित्त एवं कफ ही है ।

प्रकृति का निर्माण - गर्भाधान के समय वात,पित्त या कफ इनमें से जिस दोष की अधिकता होती है उसके अनुसार मनुष्य की प्रकृति का निर्माण होता है । चरक संहिता में दोषों की साम्यवस्था को प्रकृति कहा गया है इसलिये प्रकृति शब्द का अर्थ साम्यावस्था है ।

साम्यं प्रकृतिरुच्यते ।

सांख्यदर्शन में सत्व, रज एवं तम की साम्यवस्था को प्रकृति कहा गया है ।

सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः ।

वस्तुतः वातादि दोषों से पहले रज, तम आदि दोषों की सत्ता स्वीकार की गई है फिर भी आयुर्वेद मे देह प्रकृति का संबंध दोषों से ही माना गया है और रज आदि से मानस प्रकृति का संबंध माना जाता है। ये दोनों ही आयुर्वेद के आधार स्तम्भ हैं । शरीर एवं मन दोनों की चिकित्सा का लक्ष्य आयुर्वेद का है ।

चक्रपाणि ने "प्रकृतिम इति स्वभावम" एवं गंगाधर ने प्रकृति स्वभावः कहा है जिससे मनुष्य के वातात्मक,पित्तात्मक एवं कफात्मक आदि स्वभाव का प्रकृति शब्द से बोध होता है। स्वभाव शब्द शरीर के स्वभाव से यहाँ लिया गया है। चरक संहिता के सूत्र स्थान में चक्रपाणि ने कहा है कि जन्म से जिसकी प्रधानता हो वह वातादि दोष प्रकृति मे ही होते हैं।

शार्ङ्गधर संहिता के गूढ़ार्थदीपिका व्याख्याकार पं. काशीराम के अनुसार शरीर स्वभाव रूप ही प्रकृति होती है । आधुनिक वैज्ञानिकों ने Nature, Temperament Constitution आदि नामों से प्रकृति को समझाया है। उनके अनुसार भी देह प्रकृति जन्मजात होती है।

शुक्रार्तवस्थैर्ज्मादौ विषणेन विषीक्रमेः ,
तैश्च तिस्त्रः प्रकृतयो हीन मध्योत्तमाः पृथक ,
समधातु समस्तासु श्रेष्ठा, निन्द्या द्विदोषजाः ।

प्रकृति स्वरूप वर्णन - जिस प्रकार विष से विषकृमिं उत्पन्न हो जाता है, उसी प्रकार जन्म के समय में शुक्र और आर्तव में स्थित वात - पित्त एवं कफ से मनुष्यों की तीन प्रवृत्तियाँ

बन जाती है। वातादि दोषों की उत्कर्षता के अनुसार हीन प्रकृति अर्थात वातज प्रकृति, मध्यम प्रकृति अर्थात पित्तज प्रकृति, उत्तम प्रकृति अर्थात कफज प्रकृति । इन तीन प्रकार की प्रकृतियों का निर्धारण होता है। इसके अलावा द्विदोषज प्रकृति वात-कफ, वात- पित्त और पित्त-कफ जन्य प्रकृतियाँ निन्दित मानी जाती हैं। जब वात- पित्त-कफ ये तीनों धातु समान होती है तो सम प्रकृति बनी अर्थात वात-कफ, वात- पित्त और पित्त-कफ जन्य प्रकृतियाँ निन्दित होती है।

जिस प्रकार विष के मारक होने पर उससे भी कृमि उत्पन्न हो सकता है। इसी प्रकार दूषित वात आदि रोगोत्पत्ति करते हुए भी प्रकृति बना सकते हैं। यह प्रकृति शुक्र व आर्तक बीज के कारण बनती हैं। इनमें कफ के सात्विक होने से उत्तम प्रकृति, वायु से हीन और पित्त से मध्यम प्रकृति होती है। इनमें समधातु समप्रकृति श्रेष्ठ है। प्रकृति शब्द यहाँ जन्मजात स्वभाव को बताने के लिये हैं वास्तव में यह प्रकृति शब्द वांछित स्वभाव के अर्थ में नहीं है इससे चरक में कहा कहा है -

न खलु सन्ति वात प्रकृतयः, पितप्रकृतयः, श्लेष्म प्रकृतयो वा तस्य तस्य किल दोषस्याधिक्यात या सा दोष प्रकृतिरुच्यते मनुष्याणां, न च विकृतेषु दोषेषु प्रकृतिस्थमुत्पधते तस्यान्नैता प्रकृतयः सन्तिः सन्ति तु खलु वातला पित्तला श्लेष्मलाश्चः अप्रकृतिस्थास्तु ते ज्ञेयाः ।

इसमें भी जो मिश्र प्रकृतियाँ है वे अनारोग्य होने से गर्हित हैं। मनुष्यों को हानि तो नहीं पहुँचाती, परन्तु वात प्रकृति को वातजन्य, पित्तप्रकृति को पित्तजन्य और कफ प्रकृति तो कफजन्य रोग विशेष रूप में और प्रायः होते हैं। प्रकृति को कई आचार्य पान्चभौतिक अर्थात पंचमहाभूत से बनी है। ऐसा मानते हैं। उनके अनुसार पार्थिव, आप्य, तैजस, वायव्य और आकाशीय इस प्रकार से हैं । सुश्रुत में भी यही कहा गया है। यहाँ पर वातादि को शरीर का धारण करने से धातु कहा गया है- 'धारणाद् धातवः' सब मिलकर दोषज सात प्रकृतियाँ होती हैं। यथा -

सप्त प्रकृतयो भवन्ति दोषैः प्रथग द्विशः सक्तैश्च ।

इन प्रकृतियों में केवल शुक्र और शोणित ही कारण हो ऐसी बात नहीं अपितु गर्भ को बनाने वाले दूसरे पदार्थ भी कारण हैं । यथा-'शुक्रासृग्गर्भिणी भोज्यचेष्टा गर्भाशयर्त्तुषु। यः स्याद्दोषोऽधिकस्तेन प्रकृतिः सप्तधोदिता । इसी प्रकार चरक ने मातृतः पितृत आत्मतः सात्मयतो रसतः सत्त्वत इत्येलेम्यो भावेश्यः समुदितेभ्यो गर्भः सम्भवति।' इसलिये गर्भ की प्रकृति बनने में माता-पिता के सिवाय अन्य भी कारण होते हैं।

वात प्रकृति व्यक्तित्व (हीन प्रकृति)

हीन - प्रकृतेर्लक्षणां तस्य जीविनोप्रभावश्च ,
विभुत्वादा शुकारित्वाद बलित्वादन्यकोपनात्,
स्वातन्त्रयाद बहुरोगगत्वाद्दोषाणां प्रबललोऽनिलः ,
प्रायोऽतएव पवनाध्युषिता मनुष्या ,
दोषात्मकाः स्फुटित धूसरकेशगात्राः ,
शीत द्विषश्चल थृति स्मृति बुद्धि चेष्टा ,
सौहार्ददृष्टिगतयोऽतिबहु प्रलापाः ,
अल्पवित्तबलजीवितनिद्राः सन्नसक्त चलजर्जरवाचः ,

नास्तिका बहुभुजः साविला सा शीतहास मृगयाकलिलोल :,
मधुराम्लपटूष्ण आत्म्यकाङ्गाः ,
कृत दीर्घाकृतयः सशब्दयाताः ,
न दृढ़ा न जितेन्द्रियाः न चार्या ,
न च कान्तादयिता बहुप्रजा वा ॥

विभु आशुकारी दोषों में बली होने के कारण अन्य दोषों को कुपित करने वाला तथा स्वयं स्वतंत्र बहुत सा रोग उत्पन्न करने वाला होने के कारण वायु प्रबल है। वातज प्रकृति का मनुष्य प्रायः स्फुटित,धूसर बाल व अंगों वाला, शीतलता का बैरी, स्मृति, बुद्धि मित्रता व चेष्टा में चलायमान होगा। अस्थिर, असंबद्ध बोलने वाला, दोषरूप स्वभाव वाले, वित्तबल और जीवन नींद में अल्पता होगी। अवसादी, विलम्ब से बोलने वाला, चलितरूप ,जर्जरवाणी, फटी आवाज वाला, अत्याधिक भोजन करने वाला, गाना, हंसना, शिकार व कलह में मन लगाने वाला, मधुर, खट्टा सलोना गर्म रसों का अभिलाषी, आकृति लंबी, शरीर स्थूल, दृढ़ता की कमी, जितेन्द्रिय, सज्जनता की कमी, अल्प संतान वाला, स्त्रियों का प्रिय नहीं, तीक्ष्ण नेत्र धूसर, गोल व मरे मनुष्य के समान आँखवें खुली हुई होती हैं ।

नेत्राणि चेषां स्वरधूसराणि ,
व्रतान्यचारुणि मृतोपमानि ,
उन्मोलितानीव भवन्ति सुप्ते,
शैलदुमास्ते गगन च यन्ति,
अधन्या मत्सरा ध्याताः स्तेनाः प्रोद्बद्धपिण्डिकाः ,
श्वश्रृगालोष्ट्र गृध्राखुकाकाऽनुकाश्य वातिकाः ॥

निंद्रा में पर्वत, वृक्ष, आकाश में घूमने वाले, मंगलता से रहित, बदले की भावना वाला, चोरी प्रवृत्ति, ऊँची पिण्डी वाले, कुत्ता, गीदड़, ऊँट, चूहा, कौवा के स्वभाव वाला व्यक्ति वातज प्रकृति का होता है।

सुश्रुत में कहा गया है कि वात प्रकृति व्यक्ति अपने से ही बड़बड़ाया करता है व सपने में अपने को उड़ता हुआ देखता है । इनका नाड़ी संस्थान उत्तेजित्त और विषय को ग्रहण करने की क्षमता उत्तम किन्तु उसे याद रखने की क्षमता (स्मृति) कम रहती है। वर्षा के पूर्व इनका स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ रहता है । इनका तापमान 97^0 से 98^0 तक हुआ करता है । मस्तिष्क, श्वसन मूत्रबस्ति व अस्थियों में व्याधि प्रवणता रहती है।

पित्त प्रकृति (मध्यम प्रकृति)

मध्यमप्रकृतेर्लक्षणं तस्य जीवनोपरि प्रभावश्च ,
पित्तं बह्निर्वहिन्जं वा यदस्मात ,
पित्रोद्रिकस्तीक्ष्ण तृष्णाबुभुक्षुः ,
गौरोष्णाङ्गस्ताभहस्ताङ्गघ्रिवक्रः ,
शूरोमानी पिङ्गकेगोऽल्परोमा ,
दयितमाल्य विलेपन मण्डनः ,
सुचरितः शुचिराश्रितवत्सलः ।।

श्री धनवन्तरि के मतानुसार पित्त अग्नि है इस कारण पित्त प्रकृति वाला मनुष्य तीरवे तृषार्त व क्षुधावाल, गौरवर्ण, गरम शरीरवाला, रक्त हाथ पैर मुरव शूरवीर के समान,कुछ पीले से बालों वाला, कम रोएँ वाला, चंदन व फूल से प्रेम करने वाला, सुन्दर चेष्टा वाला, पवित्र, शरणागत की रक्षा करने वाला ।

विभव साहस बुद्धि बलान्वितों,
भवति भीषुगतिर्द्विषतामपि,
मेधावी प्रशिथिलसन्धिनबन्धमांसो ,
नारीणाम मिमतातोऽल्पशु क्रकामः ,
आवासः पलिततरङ्ग नीलिकानां ,
भूकेऽन्नं मधुरकषायतिक्त शीतम,
धर्मद्वेषी स्वेदनः शतिगन्धिः ,
भूर्युच्चार क्रोध पाना शनेर्ष्य ,
सुप्तः पश्येत कर्णिकाशन् पलाशान् ,
दिन दाहोल्का विधुदर्कानलाश्च ,
तनूनि पिङ्गानि चलानि चैषां ,
तन्वल्,पक्ष्माणि हिमप्रियाणि ,
क्रोधेन मद्येन स्वेश्च भासा,
रागं व्रजन्तयाशु विलौचनानि ।।

विभव, साहस, बुद्धि बल से युक्त पवित्र बुद्धि वाला, मांस व संधि की शिथिलता से युक्त, नारियों को अप्रिय, वीर्य व काम की अल्पता संयुक्त, मधुर, कसैला, कटु, शीतल, अल्प भोजन करने वाला, धर्म का बैरी, पसीने युक्त दुर्गन्ध वाला, विष्ठा, क्रोध भ्रमन-भोजन, ईर्ष्या से

युक्त, नींद में कर्णिकार, पलाश के वृक्षों को देरवने वाला, कुछ पीले रंग का, कम पलकों वाला, शीत से प्रसन्न, क्रोध, मदिरा (शराब), सूर्य की धूप में तत्काल लाल नेत्रों वाला, मध्य आयु वाला, मध्यम बलकारी, क्लेश होने पर भीरु, रीछ, बन्दर, बिलाव, शूकर के समान स्वभाव वाला होता है।

सुश्रुत संहिता में यह विशेष कहा गया है कि इनके नरव, नेत्र, जिव्हा, हथेली एवं तलवे विशेष लाल रहते हैं। मुँह में बार- बार छाले हो जाते हैं। इनका तापमान 97⁰ से 99° तक रहता है । यकृत, प्लीहा, क्लोम व पक्वाशय के रोग अधिक होते हैं। अर्थात इन अंगों की व्याधियाँ ज्यादा होती है। ज्वर, सिरदर्द, फोड़े- फुंसियाँ, मूत्रकृच्छ, पूयमेह, हृदय रोग ये अधिक होते हैं । ये प्रायः उषा काल से पहले ही जाग जाते हैं । स्नानप्रिय होते हैं। पित्त प्रकृति के व्यक्ति तिक्त रस से बहुत द्वेष करते हैं ।

कफ प्रकृति (उत्तम प्रकृति)

उत्तमप्रकृतेर्लक्षण जीवनोपरि प्रभावाश्च,
श्लेष्मा सोमः श्लेमलस्तेन सौम्यो,
गूढ़स्निन्धाश्लिष्टसन्धयस्थिमांसः,
क्षुत्तुडदुः श्वक्लेशध मैश्तप्तो,
बुदध्या युक्तः, सात्विकः सत्यसन्ध ः,
प्रियङ्गुदूर्वाशरकाण्ड शास्त्रगोरोचना पद्म सुवर्ण वर्णः,
प्रलम्बबाहुः प्रथुपीनवक्षा ः महाललाटो धननीलकेशः,
मृदृङ्ग समसुविभक्त चारुदेहो ,
बद्धो जो रतिरस शुक्र पुत्रभ्रत्यः ,
धर्मात्मा वदति न निष्ठुरं च जातु,
कृच्छत्रं कहति दृढ़ चिरं च वैरम ॥

कफ का रूप सोम है अतः कफ प्रधान व्यक्ति सौम्य रूप वाला, गूढ़, चिकनी, श्लिस्ट, संधि, हड्डी, मांस वाला, क्षुधा, तृषा, दुःख, क्लेश, धूप में तप्त न होने वाला, बुद्धिमान, सतोगुणी, सत्य बोलने वाला, प्रियङ्गुदूर्वा, सरकाण्डा, गोरोचन तथा सुवर्ण सदृश, वाला, लंबी बाहू, बड़ा माथा, घने व नीले से केश, कोमल अंगों वाला, धर्मात्मा, पराक्रमी, रस, रति, वीर्य, पुत्र, नौकर आदि से पूर्ण, बैरी, हाथी के समान गमन करने वाला, नम्र बाल्यकाल में न रोने वाला ।

समदडिरदेन्ध्र तुल्ययानो
जलदाम्भोधिमृदङ्ग सिंहघोष ः ।
स्मृति मानभियोगवान विनीतो
न च बाल्येऽप्यतिरोदनो न लोलः ।
तिक्तं कषायं कटुकोष्ठरूक्ष
मल्पं न भुङ्क्ते बलवांस्तथापि
रक्तान्तसुस्निग्धविशालदीर्ध
सुव्यक्तः शुक्लासित पक्ष्मलाक्षः ,
अल्प व्यवहार रक्तोक्रोध पानाशनेहः ,
प्राज्यायुर्वितो दीर्धदर्शी वदान्यः ,
श्रद्धो गंभीर स्थूललक्षः क्षमावा ,
नार्थो निद्रांलु दीर्घसूत्रः कृतज्ञः ,

कफ प्रकृति (उत्तम प्रकृति)

उत्तमप्रकृतेर्लक्षण जीवनोपरि प्रभावाश्च,
श्लेष्मा सोमः श्लेमलस्तेन सौम्यो,
गूढ़स्निन्धाश्लिष्टसन्धयस्थिमांसः,
क्षुत्तुड्दुः श्वक्लेशध मैश्तप्तो,
बुदध्या युक्तः, सात्विकः सत्यसन्ध :,
प्रियङ्गुदूर्वाशरकाण्ड शास्त्रगोरोचना पद्म सुवर्ण वर्णः,
प्रलम्बबाहुः प्रथुपीनवक्षा : महाललाटो धननीलकेशः,
मृदृङ्ग समसुविभक्त चारुदेहो ,
बद्धो जो रतिरस शुक्र पुत्रभ्रत्यः ,
धर्मात्मा वदति न निष्ठुरं च जातु,
कृच्छत्रं कहति दृढ़ चिरं च वैरम ॥

कफ का रूप सोम है अतः कफ प्रधान व्यक्ति सौम्य रूप वाला, गूढ़, चिकनी, शिलस्ट, संधि, हड्डी, मांस वाला, क्षुधा, तृषा, दुःख, क्लेश, धूप में तप्त न होने वाला, बुद्धिमान, सतोगुणी, सत्य बोलने वाला, प्रियङ्गुदूर्वा, सरकाण्डा, गोरोचन तथा सुवर्ण सदृश, वाला, लंबी बाहू, बड़ा माथा, घने व नीले से केश, कोमल अंगों वाला, धर्मात्मा, पराक्रमी, रस, रति, वीर्य, पुत्र, नौकर आदि से पूर्ण, बैरी, हाथी के समान गमन करने वाला, नम्र बाल्यकाल में न रोने वाला ।

समदडिरदेन्ध्र तुल्ययानो
जलदाम्भोधिमृदङ्ग सिंहघोष : ।
स्मृति मानभियोगवान विनीतो
न च बाल्येऽप्यतिरोदनो न लोलः ।
तिक्तं कषायं कटुकोष्ठरूक्ष
मल्पं न भुङ्क्ते बलवांस्तथापि
रक्तान्तसुस्निग्धविशालदीर्ध
सुव्यक्तः शुक्लासित पक्ष्मलाक्षः ,
अल्प व्यवहार रक्तोक्रोध पानाशनेहः ,
प्राज्यायुर्वितो दीर्धदर्शी वदान्यः ,
श्रद्धो गंभीर स्थूललक्षः क्षमावा ,
नार्थो निद्रांलु दीर्घसूत्रः कृतज्ञः ,

ऋतुर्विपश्चित्सुभगः सुलज्जो ,
भक्तो गुरुणां स्थिरसौहदश्च ।।

तीरवा कडुआ, कषैला, चरपरा, गर्म व रूरवा, कम भोजन करने वाला, प्रभूत, रक्त स्निग्ध, विशाल लंबे नेत्रवाला, भक्त, आयु, धन, श्रृद्धावान, दाता, क्षमावान, नींद की अधिकता से युक्त, विद्वान, सज्जन, लज्जावान, भक्त, नींद में पक्षी, कमल, तालाब, बादल इत्यादि देरवने वाला, ब्राम्हण, महादेव इन्द्र, वरूण, गरूड़, पक्षी, हाथी, सिंह, घोड़ा, बैल इत्यादि के स्वभाव वाला व्यक्ति कफ प्रधान या कफ प्रकृति का होता है। कफ प्रधान व्यक्तियों का तापमान प्रायः 96^0 से 97^0 अंश तक रहता है। नींद में इनकी लार टपकती है व खर्राटे लेते हैं । प्रतिश्याय, कास, श्वास (सांस), अग्निमांद्य इन व्याधियों की प्रवणता रहती है। स्वास्थ्य शिशिर व बसंत में बिगड़ा हुआ होता है।

दोषानुसार प्रकृति के लक्षण वात प्रकृति या हीन प्रकृति

1. बातूनी
2. रुक्ष
3. अल्प निद्रा
4. झगड़ालू
5. दुर्बल
6. चंचल
7. बड़बड़िया
8. चोर प्रवृति
9. ठंडे पदार्थों से द्वेष
10. आंरवे रवोलकर सोनेवाला
11. सुन्दरता रहित नेत्रों वाला
12. तीरवा स्वर क्षीण स्मृति
13. रवट्टे - मीठे व गर्म पदार्थों का सेवन करने वाला
14. निर्बल
15. चंचल स्मृति दृढ़ता की कमी अल्प संतति

पित्त प्रकृति या मध्यम प्रकृति

1. पसीने की अधिकता

2. क्रोधी
3. अधिक भूरव प्यास
4. कम उम्र में सफेद बालों वाला
5. स्त्रियों से कम प्रीति रखने वाला
6. ईष्यालु
7. द्वेषी
8. मीठे कसैले शीतल पदार्थ
9. साहसी
10. दयावान
11. क्रोधवश लाल नेत्रोंवाला
12. पवित्र मन
13 क्रोध के समय अग्नि रूपधारण करने वाला
14. गेहुँए वर्ण वाला
15. गंधयुक्त पसीनेवाला
16. बड़बड़ाने वाला
17. उदर रोगी, जिव्हा, हथेली एवं तलवों में ललामी वाला

कफ प्रकृति या उत्तम प्रकृति

1. भूरव का कमी
2. दुरव व क्लेश से दुरवी न होने वाला
3. कड़वे, कसैले, तीक्ष्ण व गर्म पदार्थों का सेवन करने वाला
4. शर्मीला
5. सरल स्वभाव
6. गंभीर
7. क्षमावान
8. गुरु भक्त
9. सतोगुणी

10. श्रृंगार प्रिय
11. कोमल अंगोवाला
12. स्थूल
13 घने काले केश
14. लंबी भुजाएँ
15. सौम्य
16. चौड़ी छाती
17. दूध के समान गौरवर्ण
18. सर्दी जुकाम की अधिकता
19. नींद में लार टपकाने वाला
20. पराक्रमी
21. बैरी
22. बाल्यकाल में रोने वाला
23. विद्ववान
24. सज्जन
25. लज्जावान
26. सत्यवादी
27. खर्राटे लेने वाला

		वात प्रकृति	पित्त प्रकृति	कफ प्रकृति
1.	देह	दुर्बल	मध्यबल	बलवान
		कृश	सुकृश	मांसल
2.	नेत्र	धूसर	पिङ्गल	रक्तान्त
3.	केश	अल्प	अल्प	बहुल
4	ओष्ठ	चल	ताम्रवर्ण	स्थिर
5	स्नायु संधि	अनवस्थित	शिथिल	व्यवस्थित
6.	वर्ण	कृष्ण	गौर	गौर

7.	आयु	अल्प	मध्य	दीर्घ
8.	देहभार	न्यून	किन्चित न्यून	सम
9.	उष्मा	अल्प	अति	सम
10.	तापमान	97^0 से 98^0 तक	97^0 से 99^0 तक	96^0 से 97^0
11.	क्षुधा	विषम	अधिक	अल्प
12.	व्यवहार	चपल	प्रकोपी	मन्द
13.	अग्नि	विषम	अधिक	अल्प
14.	कोष्ठ	क्रूर	मृदु	मध्य

मानस प्रकृतियाँ या महाप्रकृतियाँ

सात्विक प्रकृति	राजसिक प्रकृति	तामसिक प्रकृति	सत्व राजसिक प्रकृति	सत्व तामसिक प्रकृति	रजस्तामसिक प्रकृति	समगुण प्रकृति

सतोगुणी व्यक्तित्व के लक्षण
(सात्विक प्रकृति)

1. आस्तिक	2. सत्यवादी	3. तीक्ष्ण धारणशक्ति
4. बुद्धिमान	5. क्षमावान	6. दयालु
7. ज्ञानी	8. अनिन्दित	9. विनयी
10. धार्मिक	11. क्रोध, लोभ रहित	12. कामनारहित

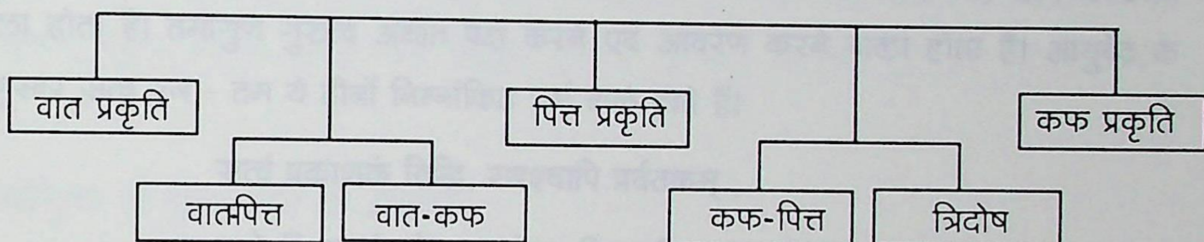
रजोगुणी व्यक्तित्व के लक्षण
(राजसिक प्रकृति)

1. क्रोधी	2. दुःख बहुल	3. आक्रामक
4. दंभी	5. झूठा	6. कामी
7. अधीर	8. अभिमानी	9. आनंदित (हर्षयुक्त)
10. अटनशील	11. सुख की कामना करने वाला	

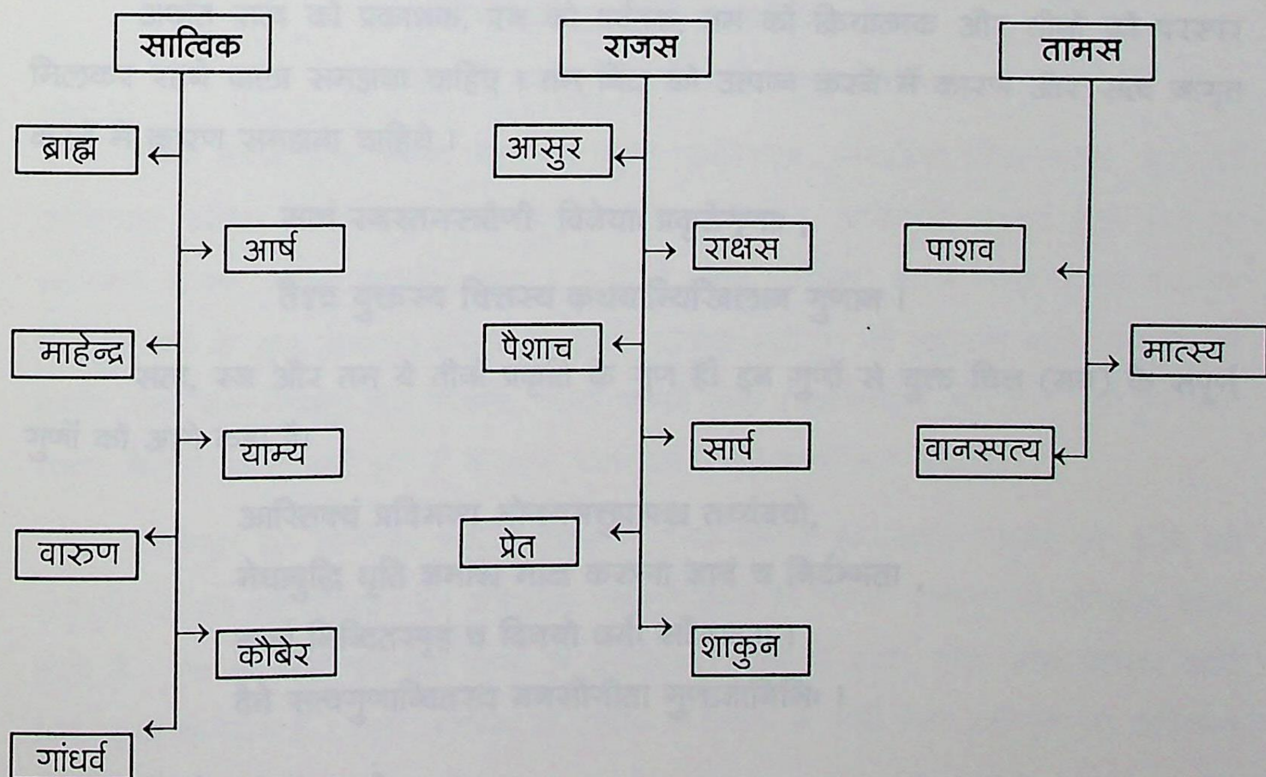
तमोगुणी व्यक्तित्व के लक्षण
(तामसिक प्रकृति)

1. नास्तिक
2. आलसी
3. बुद्धि निरोधी (दुष्ट बुद्धि)
4. निन्दित
5. निंद्रालु
6. अज्ञानी
7. विषादी
8. मूर्ख
9. अधर्मी

दोष प्रकृति



सत्व प्रकृति



इस प्रकार सात्विक, राजस, तामसिक प्रकृतियों के क्रमशः सात - छः व तीन भेदों का वर्णन मिलता है यह भेद शास्त्रों में उपलब्ध होता है एवं इनके पृथक - पृथक लक्षण भी शास्त्रों में वर्णित हैं ।

सत्व - रज - तम गुण के लक्षण (त्रिगुण - प्रकृतियों के गुण)

त्रिगुण अर्थात सत्व-रज-तम । ये तीनों गुण क्रमशः प्रीत्यात्मक (लेखात्मक) अप्रीत्यात्मक (दुःखात्मक) और विषादात्मक (मोहात्मक) हैं । ये तीनों एक दूसरे पर आश्रित रहते हैं व एक दूसरे को उत्पन्न करने वाले होते हैं व एक दूसरे से मिलकर व एक दूसरे में रहते हैं। सत्व गुण लघु अर्थात अंगों में लघुत्व उत्पन्न करने वाला और बुद्धि को प्रकाशित करने वाला होता है । रजोगुण संघर्ष या उत्तेजना पैदा करने वाला एवं चल अर्थात गतीशीलता (गति) उत्पन्न करने वाला होता है। तमोगुण गुरुत्व अर्थात पैदा करने एवं आवरण करने वाला होता है। आयुर्वेद के अनुसार सत्व रज - तम ये तीनों निम्नांकित धर्म वाले होते हैं।

सत्वं प्रकाशकं विद्धि, रजश्चापि प्रर्वतकम् ,

तमो नियामकं प्रोक्तमन्योन्य मिथुनप्रियम् ,

निद्राहेतुस्तमः सत्वं बोधने हेतु रुच्यते ।

अर्थात सत्व को प्रकाशक, रज को प्रर्वतक, तम को क्रियात्मक और तीनों को परस्पर मिलकर रहने वाला समझना चाहिए । तम निंद्रा को उत्पन्न करने में कारण और सत्व जागृत करने में कारण समझना चाहिये ।

सत्वं रजस्तमस्त्रीणी विज्ञेयाः प्रकृतेगुणाः ,

तैश्च युक्तस्य चित्तस्य कथयाम्यिखिलान गुणान ।

सत्व, रज और तम ये तीनों प्रकृति के गुण हैं। इन गुणों से युक्त चित्त (मन) के संपूर्ण गुणों को आगे कहा है।

आस्तिक्यं प्रविभज्य भोजनमत्तुपापश्च तथ्यंवचो,
मेधाबुद्धि धृति ज्ञमाश्च माक्ष करुणा ज्ञानं च निर्दम्भता ,
कर्मा निन्दितस्पृहं च विनयो धर्मः सदैवादरा ।
देते सत्वगुणान्वितस्य मनसोगीता गुणाज्ञानिभिः ।

सत्व गुण से युक्त मन के लक्षण

आस्तिपन, भक्ष्याभक्ष्य का विचार कर भोजन करना (अर्थात भोजन की गुणवत्ता छूत अछूत का विचारकर), सच बोलने वाला, सुनी बात को धारण करने की शक्ति रखने वाला, बुद्धि, क्षमा, करुणा, ज्ञान, अनिंदित (लोकशास्त्र से जो निंदित न हो) व स्पृहा से रहित, कर्म,

विनय और धर्म इन सब सत्व गुणों से युक्त मन के गुणों का ज्ञानियों ने सदैव आदर से वर्णन किया है।

अस्तिधर्म मोक्ष परलोकादिक मिति बुद्धधा चरतीत्यास्तिकस्तस्य भाव आस्तिकस्यम् ।

धर्म, मुक्ति और परलोक (स्वर्गादिक) ये सभी यथार्थ में है । इस बुद्धि से धन की प्राप्ति के लिये जो कर्म करते हैं वे आस्तिक कहलाते हैं और उनके भाव को आस्तिक्य (आस्तिकपन) कहते हैं । अनुत्ताप अर्थात क्रोध रहित ध्रति अर्थात भूत प्रेत कामक्रोध और लोभादिको के आवेश आदि से बचकर रहना, ज्ञान अर्थात आत्म ज्ञान, निर्दम्भता अर्थात कपट न रखना अनिंदित और अस्पृह अधीन कामना से रहित कर्म । इसके अलावा इन्द्रियों की प्रसन्नता एवं निर्मलता, लाघव (स्फूर्ति) उत्साह, अनाशक्ति भोग विलास से विरक्ति, प्रीति (सौहार्द भाव) क्षमा, संतोष ,अनुकम्पा, सरलता, मृदुता, लज्जा, विवेक आदि सद्गुण सुख के ही रूप एवं सत्व गुण के परिणाम विशेष हैं।

रजोगुण से युक्त मन के लक्षण

क्रोधस्ताऽनशीलता च बहुलं दुःखं सुखेच्छाऽधिक,
दम्भः कामुकताऽत्यलीकवचनं चाधीरताऽहऽकृतिः ,
ऐश्वर्यादिभन्मिन्तिडतिशयि तानन्दोधिकश्चटनं ,
प्रख्याता हि रजोगुणेन सहितस्यैते गुणाश्चेतसः ।

क्रोध करने वाला, मारने पीटने की प्रवृत्ति रखनेवाला, अत्याधिक शोक करना, सुख की अभिलाषा अधिक करने वाला, दंभी, झूठा, कामी, अधैर्यवान, अभिमानी, ऐश्वर्यशाली होने का अभिमान करना, अधिक आनंदित होना व पृथ्वी में भ्रमण (अधिक) करने वाला, ये सब रजोगुण से युक्त मन के गुण (लक्षण) प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा रजोगुण की बहुलता वाले या रजोगुणी प्रवृत्ति वाले कम निद्रालु, तीव्र स्वभाव, जल्दी जागने वाले (श्वाननिंद्रः) होते हैं । रजोगुण वाले मनुष्य पैत्तिक प्रकृति वाले होते हैं वे स्पष्ट वक्ता एवं तीखी वाणी वाले होते हैं।

रजोगुण का परिणाम आयुर्वेद दर्शन में दुःख बनाया है। अर्थात मनुष्य को दुःख की अनुभूति या मन की खिन्नता का प्रतिपादक रजोगुण होता है। क्योंकि रजोगुण से प्रतिकूल वेदना होती है । मन के लिये प्रतिकूल वेदना ही दुःखजनक होती है। शोक, खेद, मान, मत्सर आदि इसी दुःख के रूप हैं । अतः अर्न्तमन में उत्पन्न होनेवाले ये सभी भाव रजोगुण की अधिकता को निरूपित करते हैं।

तमोगुण से युक्त मन के लक्षण

नास्तिक्यं सुविषण्णताऽतिशयितालस्यं च दुष्टामतिः,
प्रीतिनिन्दितकर्मशर्मणि सदा निद्रालुताऽकृनिशम् ,
अज्ञानं किल सर्वतोऽपि सततं क्रोधान्धता मूढ़ता ,
प्रख्याता हि तमोगुणेन सहित स्यैते गुणाश्तेच्चसः।

नास्तिपन रखना, अत्यंत खेद करना, आलस करना, दुष्ट बुद्धि का होना, निन्दित कार्य से उत्पन्न सुखों में निरन्तर प्रीति रखना, दिन रात सोना, सभी विषयों में अज्ञानी, मूर्ख ये सब तमोगुण से युक्त मन के लक्षण है।

तत्र प्रभूत सत्वस्तु सात्विकः पुरुषः स्मृतः,
राज सस्तामसश्चैव त्रिविधस्तेन मानवः ।।

इसमें अधिक सत्व गुण से युक्त पुरुष सात्विकी, अधिक रजोगुण वाला राजसी व अधिक तमोगुण वाला तामसी प्रकृति का मनुष्य कहलाता है। तामसी मनुष्य का तमोगुण अपने गुरुत्व के कारण अर्थात भारीपन के कारण सत्वगुण व रजोगुण को सदा दबाए रखता है उसका नियमन नियंत्रण करता है। जब कभी तमोगुण का आधिक्य होता है तो रजोगुण की प्रवृत्तिशीलता मंद हो जाती है और चेतन प्राणी सर्वथा निष्क्रिय हो जाता है इस प्रकार तमोगुण के आवरण से सत्वगुण की भी ज्ञान ग्रहण करने की शक्ति कुंठित हो जाती है और पुरुष को अज्ञान या मिथ्या ज्ञान होता है। तमोगुण के कारण शरीर में गुरूता की वृद्धि के कारण मनुष्य निद्रांलु, प्रमादी, मनोअवसादी, कृपण आदि दुर्गुणों से युक्त होता है।

कफमें सात्विक व तामसिक दोनों लक्षण आयुर्वेद में मिलते हैं पित्त को सत्व की प्रधानता वाला मानकर उसमें रज का सम्मिश्रण मानते हैं और वायु (वात) में रज का सम्मिश्रण मानते हैं और मलिन कफ तामसिक होता है व निर्मल कफ में सत्व की प्रधानता होती है।

नाड़ी-विज्ञान

नाड़ी विज्ञान आयुर्वेद का प्रमुरव अंग है। अर्थर्ववेद का अंश आयुर्वेद माना गया है। आयुर्वेद का मूलस्त्रोत अथर्ववेद ही है उसी के द्वारा आयुर्वेद का प्रणयन हुआ और सर्वप्रथम इसके प्रणेता भगवान शंकर जी हुये । इसका सर्वप्रथम बृह्मा ने अध्ययन किया और बृह्मा से इन्द्र ने यह ज्ञान प्राप्त किया और इन्द्र द्वारा महर्षि कणाद ने विधिवत आयुर्वेद का अध्ययन कर नाड़ी - विज्ञान का निर्माण किया ।

उपरोक्त प्रारव्यान से ज्ञात होता है कि नाड़ी-विज्ञान आयुर्वेद के साथ ही प्रार्दुभूत हुआ । त्रिदोष के सिद्धांत के आधार पर सूत्ररूप में इसका निरूपण वृहत्त्रयी में किया गया है। नाड़ी विज्ञान के बिना आयुर्वेद की महत्ता प्रतिपादित करना कठिन है दोनो ही एक दूसरे पर आधारित है क्योंकि नाड़ी की गति का ज्ञान होने पर व्याधि, कारण, दोषों की स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर रोगी के रोगों का शमन आयुर्वेदिक उपचार द्वारा किया जाता है । जब निर्दोष दुष्टि के कारण तथा उसके उपद्रव का ज्ञान हो जाता है उसके अनुसार नाड़ी की गति को लक्षण के आधार पर उतारकर नाड़ी विज्ञान का स्वरूप उपस्थित किया है और तभी से यह रोग निदान का साधन माना गया है।

आयुर्वेद को पंचम वेद कहा गया है और उससे रसायन विज्ञान तथा नाड़ी विज्ञान का ही बोध होता है, इसका कारण यह है कि वृहत्त्रयी में नाड़ी विज्ञान का वर्णन प्राप्त नहीं होता और यह भी कि योगशास्त्र से नाड़ी - विज्ञान की परम्परा को शुरुआत हुई आदि बाते समझ आना कठिन है क्योंकि आयुर्वेद के सर्वप्रथम प्रचारक महादेव जी हैं तो उन्होने केवल नाड़ी विज्ञान व रस शास्त्र का ही आदेश दिया तो आयुर्वेद के बचे हुये भाग का प्रचार कौन करेगा? जब यह निर्णित है कि आयुर्वेद का प्रदुर्भाव अथर्ववेद से ही हुआ है तो इस बात से यह मानना आवश्यक हो जाता है कि आयुर्वेद के साथ ही नाड़ी विज्ञान का उपदेश हुआ कि नाड़ी विज्ञान उतना विकसित नहीं हो पाया । महायान व सिद्ध समुदाय ने इसका विस्तार किया ।

नाड़ी परीक्षा विधि

करस्याङ्गुष्ठमूले या धमनी जीवसाक्षिणी ,
तच्चेष्टयां सुखं दुखं ज्ञेयं कास्य एण्डिते ।

हाथ के अंगूठे के जड़ के नीचे जो नाड़ी है वह जीव का साक्षी रूप है अर्थात उसे देखकर ही जीव है या नहीं - जाना जा सकता है। क्योंकि जब मनुष्य मूर्छित हो जाता है तब बाहर की सब चेष्टाएं बंद हो जाती हैं और उसके जीव का कोई भी लक्षण ज्ञात नहीं होता है पर नाड़ी छूते ही पता चल जाता है कि अभी प्राण हैं । नाड़ी चलती है इससे उसे जीव की साक्षिणी कहतें है। हृदय से रसादिकों को ये नाड़ियों की सहायता से प्रतिक्षण घुमाती रहती हैं। अर्थात विराम गति से बराबर पम्प की तरह रसादिकों को शरीर के सब भागों में भेजती रहती हैं इससे इन्हें धमनी कहा जाता है इनका संबंध हृदय से रहता है। शरीर में कोई भी सूक्ष्म से लेकर बड़ी तक गड़बड़ या विकास होते ही हृदय की गति में भेद हो जाता हैं और वही भेद नाड़ी में भी होता है।

यद्यपि नाड़ी का विस्तृत वर्णन चरक, सुश्रुत आदि में नहीं है तथापि इसकी उपयोगिता ऐसी है कि सभी को स्वीकार करना पड़ती है। विज्ञ चिकित्सक इसकी चमत्कारिता से असीम लाभ एवं यश प्राप्त करते हैं । आयुर्वेद शास्त्र की उन्नति में यह पूर्ण सहायक है। जब रोगी की अवस्था शोचनीय हो जाती है तब यही एक ऐसी परीक्षा है जिससे मनुष्य (वैद्य) सुख दुख का ज्ञाता होता है।

सत्येन रोगधृति कृर्पटभागमाजाऽऽ ,
पीडयाय दक्षिणकराङ्ग गुलिकात्रणेय ,
अंगुष्ठ मूलमधि पश्चिम भाग मध्यं ,
नाड़ी प्रभश्च न गति सततं परीक्षेत ।

बाएँ हाथ की कलाई के अंदर की तरफ के भाग को स्पर्श कर टटोलकर दाहिने हाथ की तीन अंगुलियों से अंगूठें के मूल के नीचे मध्य भाग में वायु के समान गमन करने वाली नाड़ी की निरन्तर परीक्षा की जाती है । दाहिने हाथ की तीन अंगुलियाँ (तर्जनी मध्यमा न अनामिका) वात, पित्त एवं कफ, द्वन्द व सन्निपात की गति का बोध कराती है। कलाई पर दो अंगुल स्थान पर अंगूठे के नीचे तर्जनी मध्यमा व अन्त में अनामिका अंगुली में दबाकर नाड़ी की गति का अनुभव किया जाता है।

नाड़ी परीक्षा का उचित समय

प्रातः कृतसमाचारः कृताचाशपपरिग्रहम ,
सुखासीनः सुखासीनं परीक्षार्थम मुपाचरेत् ।

नाड़ी परीक्षा का उचित समय तथा नियम

प्रातः समय दैनिक क्रियाओं जैसे मलमूत्र आदि से निवृत होकर सुखपूर्वक बैठकर रोगी की नाड़ी परीक्षा की जाना चाहिये । प्रातः नाड़ी का परीक्षण करना सामान्य है। रोग अपनी चरम स्थिति में हो एवं आवश्यकता पड़ने पर किसी भी समय नाड़ी परीक्षण किया जा सकता है परंतु रातभर आराम करने के बाद नाड़ी अपनी प्राकृतिक दशा में रहती है, ठीक इसी समय नाड़ी परीक्षण करने पर रोग का निदान सरलता से हो जाता है । शाम के समय दिनभर के तनाव इत्यादि के कारण एवं दोपहर में गर्म वातावरण (उष्णता) के कारण नाड़ी चंचल रहती है अतः प्रातःकाल परीक्षण करना उत्तम है ।

नाड़ी परीक्षण का सामान्य नियम

सद्य स्नातस्य भुक्तस्य क्षुतृष्णातप शीलितः ,
व्यायामश्रान्तदेहस्य सम्यङ्ग नाड़ी न बुध्यते ।

भोजन व स्नान करने के तुरंत बाद, भूख प्यास लगने की अवस्था में, धूप में घूमने एवं व्यायाम करने के बाद, भली प्रकार नाड़ी का ज्ञान नहीं हो सकता । इसलिये इन अवस्थाओं में नाड़ी देखना व दिखाना दोनों ही व्यर्थ हैं।

तैलाभ्यङ्गों च सुप्ते च तथा च भोजनान्तरे ,
तथा न ज्ञायते नाड़ी यथा दुर्गमता नदी ।।

शरीर में तेल मालिश के बाद, सोते भक्त, भोजनकाल में, भोजनोपरांत नाड़ी का ज्ञान ठीक प्रकार से नहीं हो पाता है। जिस प्रकार गंभीर नदी की गति का ज्ञान नहीं होता अर्थात पूर्वोक्त समय में नाड़ी की गति गंभीर होती है एवं स्वाभाविक गति से हटकर विकृत एवं चंचल गति धारण कर लेती है ।

अंगुष्ठस्य तु मुले या सा नाड़ी जीवसाक्षिणी,
तस्या गतिपशाद्विघात सुखं दुःखं च योगिणाम ।

अर्थात अंगूठे के मूल के नीचे जो नाड़ी गति करती है वही जीव की साक्षी है अर्थात उस नाड़ी को पकड़ने से ही ज्ञात होता है कि प्राणी जीवित है। नाड़ी की गति से रोगी के सुख-दुख का या रोगी के रोग एवं उसकी साध्य साध्यता का ज्ञान किया जाता है।

नाड़ी परीक्षा उचित समय तथा नियम

आदौ च वहते वातो मध्ये पित्तं तथैव च ,
अन्ते च वहते श्लेष्मा नाड़िकात्रयलक्षणम ।

तीन अंगुली से त्रिदोष ज्ञान : अंगूठे के नीचे एक अंगुल छोड़कर नाड़ी पर हाथ की तीन अंगुलियाँ रखी जाती हैं। प्रथम वात नाड़ी पर हाथ रखा जाता है। प्रथम वात नाड़ी, मध्य में पित्त नाड़ी तथा अंत में कफ की नाड़ी चलती है ये तीनों ही नाड़ी के लक्षण हैं। वात के चंचल और गतिमान होने के कारण वात नाड़ी फड़कती है। पित्त की जो नाड़ी है वह उष्ण व चंचल होती है यह मध्य में फड़कती है । चूंकि कफ नाड़ी मंद व शीतल होती है इसलिये कफ नाड़ी अंत में मालूम पड़ती है। परन्तु वातावरणजन्य कारणों से एवं व्यक्ति की मानसिक स्थिति तथा परीक्षक की मानसिक स्थिति के कारण नाड़ी इसके स्पंदन के ज्ञान में क्रमशः भेद हो जाता है। नाड़ी ज्ञान प्रक्रिया में सतत प्रयास व सूक्ष्म विवेचन सफलता का मूल आधार होता है।

दोषलक्षणज्ञानम

वाताधिका वहेन्मध्ये ये त्वग्रे वहति पित्तला,
अन्ते च बहते श्लेष्मा मिश्रिते मिश्रलक्षणा ।

वृद्धिगत दोष के लक्षण का ज्ञान - वायु की नाड़ी मध्य में चलती है । जब वात दोष अधिक कुपित होता है तब नाड़ी सर्पजलौकादिगति से चलती है। पित्त के कुपित होने पर पित्त नाड़ी आगे चलती है। यह काक व लावक की गति से चलती है एवं कफ के प्रकोप से कफ नाड़ी अंत में चलती है यह राजहंसादि गति से चलती है । द्विदोष कुपित होने पर दो दोषों के लक्षण नाड़ियों द्वारा ज्ञात किये जाते हैं । एवं त्रिदोष होने पर सभी दोषों के लक्षण उत्पन्न होते हैं।

आदौ च वहते पित्तं मध्ये श्लेष्मा तथैव च ,
अन्ते प्रभञ्जतोज्ञेयः सर्वशास्त्र विशारदैः ।।

प्रारंभ में (आदि में) पित्त नाड़ी, मध्य में कफ नाड़ी तथा अंत में वात नाड़ी चलती है ऐसा शास्त्रों के विशेषज्ञों का मत है।

स्वस्थ नाड़ी का लक्षण :- जो व्यक्ति स्वस्थ होता है उसकी निर्दोष गति अर्थात सांप एवं केचुंए के समान स्थिरता व धीरता से चलती है तथा बलवान होती है । अर्थात निरोगी एवं स्वस्थ पुरुष की नाड़ी स्थिर व धीमी होते हुए भी सबल (बलवान) होती है ।

नाड़ी से वात आदि का ज्ञान

वाताद्वक्रगता नाड़ी चपला पित्तवाहिनी,
स्थिरता श्लेष्मवती ज्ञेया मिश्रितेमिश्रिता भवेत् ।

वात दोष की अधिकता या प्रकोप से नाड़ी वक्रीय गति अर्थात टेढ़ी-मेढ़ी चाल से चलती है और जब पित्त प्रकुपित होता है तब नाड़ी चंचलता लिये हुये फुदक - फुदक कर चलती है। तथा कफ के प्रकुपित होने पर मंदता एवं स्थिरता से चलती है । दूसरे शब्दों में वक्रीय गति वात दोष की, चंचलगति पित्त दोष की व मंद गति कफ के प्रकोप की समझना चाहिये । जब वक्रीय व चंचलता लिये हुये नाड़ी चले तब वात - पित्त का प्रकोप व स्थिरता से नाड़ी चले तब वात-कफ का प्रकोप व चंचल एवं मन्द गति से चले तो पित्त-कफ का प्रकुपित होना जानना चाहिये । इसके अलावा वक्रीय चंचल व मंद गति एक साथ चले तब तीनों दोष प्रकुपित हैं ऐसा समझना चाहिये।

सर्पजलौका दिगतिंवदन्ति विबुधाः प्रभञ्जनेननाड़ीम् ,
पित्तेन काक लाव भेकादिगंति विदुः सुधियः ,

राजहंसमयराणां समयरावो पारावतकपोतयोः ,
कुक्कुटस्य गांति धत्ते धमनी कफ समृता ।

नाड़ी की गति को जानने वाले विशेषज्ञों का कथन हैं कि वात के प्रकुपित होने से नाड़ी सांप व जोंक की तरह टेढ़ी मेंढ़ी चलती है । पित्त के प्रकुपित होने से नाड़ी, कौवे लावा , व मेढ़क की गति से समान तथा चंचल गति से फुदक कर चलती है तथा कफ दोष के होने पर नाड़ी मयूर, राजहंस, परेवा, कबूतर व मुर्गी की चाल के समान धीरे धीरे गंभीर व अंदर की ओर घुसती हुई सी चलती है।

मुहुः सर्पगंति नाड़ी मुहुर्मेकगति तथा ,
वात पित्तद्वयोदभूतां तां वदन्ति मतीषिणः ।

जब वात व पित्त एक साथ प्रकुपित होते हैं तब नाड़ी की गति बार बार सांप की गति से तथा फिर मेढ़क की तरह फुदक - फुदक कर चलती है।

भुजगादिगंति नाड़ी राजहंसगंति तथा ,
वात श्लेषम समुद्रभूतां भाषन्तेतद्वितोजनाः ।

नाड़ी की गति जब सांप की तरह टेढ़ी मेढ़ी व राजहंस की तरह मंद व स्थिरता से चले तब नाड़ी ज्ञाता को इसे वात व कफ का प्रकोप अर्थात द्विदोष समझना चाहिए। दूसरे शब्दों में वात व कफ एक साथ प्रकुपित होने पर नाड़ी की गति कभी टेढ़ी-मेढ़ी कभी मंद एवं स्थिर होती है ।

मण्डूकादिगति नाड़ी मयूरादिगति तथा ,
पित्तश्लेष्म सनुद्भूतां प्रवदन्ति विचक्षणाः ।

यदि पित्त व कफ दोनों का एक साथ प्रकोप हो तो नाड़ी मंडूक (मेढ़क) आदि के समान फुदक - फुदक कर व राजहंसादि के समान मंद व स्थिर गति से चलती है।

सूक्ष्माशीताः स्थिरानाड़ी पित्तश्लेष्म समुद्रवा,
कफ वातोद्भूवा नाड़ी संर्पहंसगति भवेत् ॥

पित्त व कफ के एक साथ प्रकुपित होने पर नाड़ी की गति पतली (सूक्ष्म) ठंडी (शीतल) व स्थिरता लिये हुये होती है। कफ तथा वात के प्रकुपित होने पर नाड़ी कभी सर्प तथा कभी हंस के समान चलती है। द्विदोषज विकार में भी लाव, तीतर तथा बटेर के समान अति चन्चल नाड़ी चलती है ।

स्वस्थ व्यक्तियों में 1 मिनिट में नाड़ी की गति निम्नांकित है -

(1) गर्भस्थ शिशु की 140

(2) जन्म लेने पर 130

(3)	प्रथम वर्ष में	120
(4)	द्वितीय वर्ष में	110
(5)	तृतीय वर्ष में	100
(6)	सात वर्ष तक	95
(7)	चौदह वर्ष तक	90
(8)	बीस वर्ष तक	85
(9)	चालीस वर्ष तक	75
(10)	साठ वर्ष तक	70
(11)	अतिवृद्धावस्था में	75 - 80

नाड़ी द्वारा मनोविकारों का ज्ञान

आयुर्वेद की अन्यान्य परीक्षा विधियों के साथ ही नाड़ी परीक्षण भी मानवों के अगणित भावों काम, क्रोध, भय, स्नेह, प्रेम - मत्सर आदि जिनका उद्रेचनो (Secretions) से भी संबंध है का पता लगाती है । अपमानजन्य ओजोह्रास का पता केवल इसी से लगता है।

मानसिक भावों का नाड़ी से संबंध - मष्तिष्कगत आहार (मद्य का प्रभाव) विहारों के परिवर्तन का प्रभाव हृदय के साथ ही विभिन्न वात नाड़ियों द्वारा, समस्त शरीर पर भी पड़ता है । भय का प्रभाव मुरव पर (तेजहीनता के रूप में), त्वचा पर (रोमांच के रूप में), गुदा पर मूत्राशय पर (इनके द्वारा त्याज्य पदार्थों के बाहर निकलने के रूप में) प्रत्यक्ष देरवा ही जाता है। इसी प्रकार काम, क्रोध, मोह, शोक का प्रभाव भी विभिन्न अंगों पर विभिन्न रूप में परिलक्षित होता है । इन भावों की तीव्रता व मृदुता के अनुसार शीघ्रव्यापी और दीर्घव्यापी प्रभाव पड़ते हैं । ये हृदय द्वारा नाड़ी पर भी प्रभाव डालते हैं इसलिये नाड़ी से भी इनका पता लगाया जाता है।

पाश्चात्य मत के अनुसार नाड़ी परीक्षा का स्वरूप

अंग्रेजी में नाड़ी को pulse कहा जाता है जो दो प्रकार की होती है परोक्ष तथा अपरोक्ष नाड़ी । जो देरवने वाले की अंगुलियों को स्पर्श न करें उसे परोक्ष और जो स्पर्श करे उसे अपरोक्ष (प्रत्यक्ष) नाड़ी कहते हैं । पाश्चात्य मत से अधिक घेरा (गति) संरव्या वाली नाड़ी का नाम सामान्य नाड़ी की अपेक्षा नाड़ी की संरव्या अधिक वेगवान हो तो Frequent कहते हैं । अर्थात सामान्य नाड़ी की गति संरव्या निश्चित है। उससे अधिक होने पर Frequent की संज्ञा होती है ।

कम गति संख्यावाली नाड़ी का नाम -

सामान्य नाड़ी संरव्या की अपेक्षा स्पन्दन संरव्या कम हो तो इस मंदचारिणी नाड़ी को Inreguler कहते हैं। जब नाड़ी बहुत देर तक हाथ ररवने पर कुछ न्यूनाधिक्य प्रतीत ना हो तो उस नाड़ी को Regular कहते हैं। यदि बहुत देर तक नाड़ी पर हाथ ररवने से नाड़ी की संरव्या घटती बढ़ती रहे तो उस नाड़ी को Inregular कहते हैं ।

जो नाड़ी रक्त से परिपूर्ण होती है उस नाड़ी को Full of large कहते हैं । केवल एक बार अंगुली का स्पर्श कर छिप जाये वह रक्त को दूषित करने वाली एवं हृदय संबंधी रोग को उत्पन्न करने वाली है। इसको Intermittent कहते हैं । हृदय में रक्ताल्पता के समय नाड़ी Small कही जाती है । धागे के समान सूक्ष्म व क्षीण नाड़ी Thready pulse कहलाती है। शीघ्रगामिनी नाड़ी को quick कहते हैं मृदुता व शीतलता को प्रकट करने वाली नाड़ी Soft कहलाती है। रुक्षता प्रकट करने वाली नाड़ी Hard नाड़ी कहलाती है।

1.3.2 मनोविज्ञान (psychology) और व्यक्तित्व

मनोविज्ञान आधुनिक युग का बड़ा ही महत्वपूर्ण अध्ययन का विषय है। आज व्यक्ति व समाज के व्यवहार संबंधी कोई भी अध्ययन का ऐसा विषय नहीं है जिसमें मनोविज्ञान की अध्ययन की आवश्यकता न हो। अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति शास्त्र, साहित्य आदि समस्त विषयों के गूढ़ अध्ययन के लिये मनोविज्ञान की आवश्यकता होती है ।

मानव के प्रत्येक व्यवहार का कारण मन है। हमारे मन के विचार ही हमारी बाह्य क्रिया में प्रदर्शित होते हैं। सभी विषयों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनमें मनुष्य की क्रियाओं और विचारों का ही वर्णन रहता है। मनोविज्ञान का ध्येय इन विचारों व क्रियाओं के रहस्य को समझना है । मनोविज्ञान का विषय है मनुष्य के मन का अध्ययन करना । चूंकि हमारे मन में प्रत्येक क्षण अनेक विचार उठते हैं हमारा हृदय दिन भर कई संवेगों का अनुभव करता है एवं हमारे मन में कई प्रकार के कार्य करने की इच्छाएँ क्षण - क्षण पर उठा करती हैं इन समस्त मानसिक अनुभूतियों का अध्ययन करना मनोविज्ञान का लक्ष्य है । मनोविज्ञान मन में होने वाली क्रियाओं का क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक अध्ययन ही मनोविज्ञान का विषय है। आधुनिक मनोविज्ञान की उन्नति पदार्थ विज्ञान के साथ-साथ हुई है । आधुनिक मनोविज्ञान पाश्चात्य पण्डितों की देन कहा जाता है । जब पदार्थ विज्ञान विषयक अध्ययन में पर्याप्त उन्नति हो गई तो मनुष्य के मन में वैज्ञानिक रूप से मन का अध्ययन करने की इच्छा हुई इसी इच्छा के परिणामस्वरूप आधुनिक मनोविज्ञान का जन्म हुआ ।

मनोविज्ञान की परिभाषा - मनोविज्ञान के वर्तमान स्वरूप को यदि देरवा जाये तो यह शब्द के शाब्दिक अर्थ से स्पष्ट नहीं होता । मनोविज्ञान का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द Psychology है। यह शब्द यूनानी भाषा से लिया गया है और यूनानी भाषा के शब्दों साईके (Psyche) और लोगस (Logos) से मिलकर बना है। इससे साइके का अर्थ आत्मा से हैं व लोगस का अर्थ है विचार विमर्श । इन दोनों ही शब्दों से साईक्लॉजी बना है। अतएव साईक्लॉजी वह विज्ञान है जिसमें मनुष्य की आत्मा के विषय में चर्चा हो। अतः मनोवैज्ञानिकों के अध्ययन का विषय आत्मा ही माना जाता था। एवं मनोविज्ञान तत्व विज्ञान का एक अंग भी माना जाता था । चूंकि आत्मा के विषय में मनुष्यों के विचारों में मतैक्यता नहीं है एवं आत्मा के स्वरूप का निरूपण करना अत्यंत कठिन कार्य है। अतः जह तक आत्मा को मनोविज्ञान का अध्ययन विषय माना

जाता रहा तब मन का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करना संभव न हुआ और मनोविज्ञान कोई उन्नति नहीं कर सका।

लगभग 16 वीं शताब्दी तक मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में जाना जाता रहा । इस विचारधारा की आलोचना के फलस्वरूप दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन का विज्ञान कहकर पुकारा । तत्पश्चात वर्तमानकाल के प्रारंभ में उपर्युक्त दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ और मनोविज्ञान के अध्ययन का विषय आत्मा को न मानकर चेतन मन के अनुभवों को माना जाने लगा । अर्थात चेतन मन को क्रियाओं का अध्ययन मनोविज्ञान में किया जाने लगा। इस प्रकार इस परिभाषा में मनुष्य जब तक जाग्रत अवस्था में रहता है तब तक उसको किसी न किसी प्रकार की अनुभूतियाँ होती रहती हैं। इन्हीं अनुभूतियों एवं विचारों का नाम मनोविज्ञान है।

जैसे-जैसे मन के अध्ययन का विस्तार होता चला गया उसके स्वरूप में परिवर्तन पर विचार किया जाने लगा । गहन अध्ययन के परिणामस्वरूप विषय का विस्तार किया गया । वर्तमान समय में मनोविज्ञान मन की चेतन क्रियाओं का ही केवल अध्ययन नहीं करता बल्कि मन के उस अंतरंग विषय में भी हमारा ज्ञान बढ़ाने का प्रयास करता है जो चेतन मन की पहुँच के बाहर है । मनोविज्ञान इस परिभाषा में चेतन मन के इन दोनों भागों का वैज्ञानिक अध्ययन करने की चेष्टा करता है।

समय के साथ-साथ अनुभव किया जाने लगा कि हमारी मानसिक क्रियाएँ बाह्य क्रियाओं द्वारा प्रदर्शित होती हैं। अप्रत्यक्ष रूप से हम अपने मन की क्रियाओं को जानते हैं । जब हमारे मन में कोई विचार उठता है उस पर हम ध्यान दे देते हैं और हम उन्हें जान लेते हैं परंतु दूसरे व्यक्ति के मन में कौन सी क्रियाएँ चल रही हैं यह हम स्पष्टतयां नहीं जान सकते हैं जब तक कि वह अपने मन के विचारों व अनुभूतियों को किसी से कहकर न बताएँ। उदाहरणार्थ किसी मनुष्य के सिर में यदि पीड़ा है तो उसकी पीड़ा हमारी पीड़ा नही बन पायेगी। हम उस व्यक्ति की बैचेनी व कराहने से ही उसकी पीड़ा को जान सकेंगे। अर्थात उसकी बाह्य क्रिया व व्यवहार को देरवकर अपनी अनुभूति के आधार पर उसके सिर की पीड़ा की कल्पना करते हैं । इस प्रकार का ज्ञान दूसरों का अनुभूति का ज्ञान परोक्ष ज्ञान है। इस आधार पर मनोविज्ञान का नया स्वरूप सामने आया कि मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मन की चेतन व अचेतन क्रियाओं का अध्ययन अपरोक्ष अनुभूति द्वारा तथा मनुष्य की बाह्य क्रियाओं का निरीक्षण करके करता है । मनोविज्ञान चेतन तथा अचेतन मन की व्यवहार में प्रकाशित तथा अप्रकाशित मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है,परंतु चेतना को अवैज्ञानिक सिद्ध करने में व्यवहारवादियों का प्रमुरव योगदान था ।

इस प्रकार मनोविज्ञान विकास के इतिहास के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रारंभ से ही विद्वान किसी न किसी रूप में प्राणी की अनुक्रियाओं का अध्ययन करते रहें हैं । तत्पश्चात चेतन मन का अध्ययन किया गया फिर मन के दोनों भागों चेतन, अचेतन मन का अध्ययन किया गया एवं अंततः शारीरिक क्रियाओं और व्यवहारों का भी अध्ययन किया गया । बीसवी शताब्दी के प्रारंभ से ही मनोविज्ञान की परिभाषा व्यवहार के विज्ञान के रूप में की जाने लगी ।

1. वुडवर्थ के (1954) के अनुसार - "व्यक्ति के पर्यावरण के संबंध में व्यक्ति की क्रियाओं का विज्ञान ही मनोविज्ञान है। "

2. वाटसन के अनुसार - "मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्व विज्ञान है ।"

3. वुडवर्थ के अनुसार - "मनोविज्ञान संबंधित वातावरण में व्यक्ति की क्रियाओं का विज्ञान है।"

4. हिलगार्ड के अनुसार - "मनोविज्ञान को उस विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो मानव तथा अन्य पशुओं का अध्ययन करता है।"

5. बोंरिग के अनुसार - "मनोविज्ञान मानव की प्रकृति का अध्ययन है।"

6. मैक्डूगल के अनुसार - "मनोविज्ञान जीवित प्राणियों के व्यवहार का विधायक विज्ञान है।"

7. जैम्स ड्रेवर -के अनुसार "मनोविज्ञान वह विधायक विज्ञान है जो मनुष्य तथा पशु के व्यवहार का अध्ययन करता है जहां तक व्यवहार का अर्थ है यह व्यवहार अंत्तर्जगत के मनोविज्ञान एवं विचारों की अभिव्यक्ति है जिसको हम मानसिक जीवन कहते हैं।"

8. मन के अनुसार - (1955) "मनोविज्ञान आज व्यवहार के वैज्ञानिक जांच पड़ताल से संबंधित है जिसमें व्यवहार के दृष्टिकोण से वह सब सम्मिलित है जिसे पहले के मनोवैज्ञानिक अनुभव के रूप में लेते थे । "

9. थाउलस के अनुसार - मनोविज्ञान मानव अनुभव और व्यवहार का विधायक विज्ञान है।

मनोविज्ञान कि उपर्युक्त परिभाषाओं को देरवने से ज्ञात होता है कि आधुनिक युग में इसका क्षेत्र विस्तृत हो गया है। यद्यपि कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। फिर भी मनौवैज्ञानिक किसी न किसी रूप में इस बात को स्वीकार करते हैं कि मनोविज्ञान व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है। मनोविज्ञान अनुभव का ही नहीं बल्कि व्यवहार का विधायक विज्ञान है। यह व्यवहार शब्द मनोविज्ञान में व्यापक अर्थों में किया गया है इसमें पशुओं व बालकों, विक्षिप्तों, रोगियों,

अपराधियों संतों आदि सभी प्रकार के मनुष्यों का व्यवहार आ जाता है। इसमें व्यवहार केवल हाथ, पैर की क्रिया भाव नहीं है इसमें आंख, नाक, कान व जबान आदि सभी इंद्रियों की क्रियायें तथा ध्यान, प्रत्यक्ष, कल्पना, विचार, प्रयत्न, स्मृति, बुद्धि आदि मस्तिष्क की सभी क्रियाएँ आ जाती है।

मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। मनुष्य, पशु, साधारण-असाधारण बालक, वयस्क मनुष्य, पशु इत्यादि सभी का अध्ययन करता है एवं उनकी तुलना करता है । जहाँ कहीं जीवन है वहाँ व्यवहार है । जहाँ व्यवहार है उस जगह पर एक मनोवैज्ञानिक संतों, नेताओं और महापुरुषों तक का अध्ययन करता है । मानव जीवन की अनेक परिस्थितियाँ हो सकती है इन सभी परिस्थितियों में अनेक प्रकार का व्यवहार हो सकता है। इन सबका अध्ययन मनोविज्ञान के क्षेत्र में आयेगा ।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व एक जटिल प्रत्यय है क्योंकि अनेक अनुसंधानों के बाद भी व्यक्तित्व की प्रकृति को निंश्चित रूप में परिभाषित करना कठिन है साथ ही व्यक्तित्व शब्द जटिल व गूढ़ होने के कारण लंबे समय तक मनोवैज्ञानिकों द्वारा यह व्यक्तित्व शब्द उपेक्षित रहा है लोकिन फिर भी इस क्षेत्र में अध्ययन हुआ है । और सर्वप्रथम व्यवस्थित अध्ययन क्रेपलिन जेने, फ्रायड आदि चिकित्सा शास्त्रियों द्वारा प्रारंभ किये गये ।

व्यक्तित्व के स्वरूप का अध्ययन करते समय हमें किसी ऐसे व्यक्ति का ध्यान आना स्वाभाविक है जो सरलता से या सहज रूप से दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेता है जैसे किसी पार्टी में जहां बहुत से लोग एकत्र है कुछ ऐसे व्यक्ति वहां अवश्य होते हैं जो दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं वे ऐसा अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण ही करते हैं। यहाँ प्रश्न यह है कि व्यक्तित्व का स्वरूप क्या है ?

व्यक्तित्व के बारे में लोगों की बहुत सी धारणाएँ हैं । साधारण भाषा में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के शरीर की बनावट से लिया जाता है। कुछ लोग व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के अन्दर जो विशेष गुण पाये जाते हैं उनसे करते हैं। जबकि दूसरे लोग व्यक्तित्व को अस्पष्ट गुणों, अनिश्चित लक्षणों एवं अनिर्णित विशेषताओं का एक जटिल संग्रह मानते हैं। कुछ लोग व्यक्तित्व शीलगुणों को जन्मजात मानते हैं और व्यक्तित्व पर वातावरण का प्रभाव नहीं मानते जबकि दूसरे व्यक्तित्व शीलगुणों पर वातावरण का प्रभाव मानते हैं ।

आधुनिक जीवन में व्यक्तित्व के वैज्ञानिक अध्ययन को अत्याधिक प्रोत्साहन मिला है क्योंकि सफल समायोजन में व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण भूमिका है । जहां जटिल संस्कृतियाँ हैं वहां सामाजिक जीवन में व्यक्तित्व का स्थान सर्वोपरि है। अधिगम सिद्धांतों द्वारा जो प्रभाव उपलब्ध कराये गये है वे भी व्यक्तित्व अध्ययन के लिए प्रोत्साहन का प्रमुरव स्त्रोत हैं । इनके अनुसार इसका कारण व्यक्तित्व निर्धारण में अनुवांशिकता का स्थान उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि अधिगम प्रभावों का है।

व्यक्तित्व मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्याधिक फैला हुआ आकर्षक लेकिन संभ्रांतिपूर्ण है । लेकिन व्यक्तित्व शब्द का जितना अधिक प्रयोग आधुनिक जीवन में होता है उतना मनोविज्ञान के किसी भी अन्य पक्ष का नहीं होता है । व्यक्तित्व शब्द को समझने के लिये यह भी कहा जा सकता है कालेजों पार्टियों तथा अन्य समारोहों में अचानक लोगों को यह कहते हुए सुना जाता है देरवो उस व्यक्ति का व्यक्तित्व कितना अच्छा है । इस वार्तालाप का कारण होता है उस व्यक्ति का आकर्षक व्यक्तित्व । जबकि जनसाधारण प्रायः लोगों के शरीर गठन, रंगरूप, मनमोहक

शरीर की बनावट व आकर्षित करने वाले व्यक्ति को अच्छे व्यक्तित्व वाला व्यक्ति समझते हैं । लेकिन वहां पर सवाल यह उठता है कि क्या यही व्यक्तित्व की परिभाषा है जो जनसाधारण समझते हैं । मनोविज्ञान में व्यक्तित्व का यह अर्थ बिल्कुल नहीं है व्यक्ति की सुंदरता, रंग, आकर्षक पहनावा आदि को व्यक्तित्व नहीं कहा जाता क्योंकि बाहरी रूप को व्यक्तित्व कहा जायेगा तो फिर गांधी जी के विषय में हम क्या कहेगें क्योंकि वे न तो शारीरिक रंगरूप की दृष्टि से आकर्षक थे और न वस्त्रों की दृष्टि से मोहक प्रतीत होते थे तो क्या वे व्यक्तित्व रहित थे!

उपरोक्त सभी बातों से व्यक्तित्व के विषय में इतनी अधिक गूढ़ता पाई गई है कि पूर्व व पश्चिम के दार्शनिकों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और इन सभी लोगों ने व्यक्तित्व को परिभाषित करने का प्रयास किया । और व्यक्तित्व को आत्मा (Soul), अहं (Self) अथवा व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया । प्राचीनकाल के जो दार्शनिक थे उन्होंने व्यक्तित्व को आत्म चेतना माना क्योंकि उस समय मनोविज्ञान को चेतना का विषय माना जाता था इसके ठीक विपरीत जो आधुनिक काल के मनोवैज्ञानिक हैं वे सभी व्यक्तित्व को संगठित प्रतिमान व्यवहार मानते हैं और व्यक्ति विशेष जो वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया करता है उसका अध्ययन करते हैं।

व्यक्तित्व के क्षेत्र में जितने भी अध्ययन हुये हैं उनका ऐतिहासिक दृष्टावलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि व्यक्तित्व प्रत्यय के अर्थ में परिवर्तन के कारण ही मनोविज्ञान की दिशा में निरन्तर परिवर्तन दिरवाई पड़ता है। इसका कारण यह है कि जहां मनोवैज्ञानिकों ने विशिष्ट एवं संगठित व्यक्ति को सामान्य मनोविज्ञान की समस्या समझा है, वहीं जो समाजशास्त्री हैं उन्होंने इसे मानव समूह की अंतिम इकाई माना है। कुछ विद्वान इसे मनुष्य का बाह्य रूप मानते हैं, लेकिन कुछ विचारक (मनोवैज्ञानिक) इसे विभिन्न विशेषताओं का योग (Sum total) मानते हैं। इस तरह व्यक्तित्व की व्यारव्या में अनेक लोगों के अनेक मतों को पक्षों को बल दिया लेकिन व्यक्तित्व को समझने लिए इसकी प्रकृति को समझना आवश्यक है। क्योंकि मनुष्य की संवेदनाएँ, मूल प्रवृत्तियाँ, उद्वेग, कल्पना, स्मृति, प्रत्यक्ष ज्ञान, बुद्धि तथा विवेक ये सभी व्यक्तित्व के अंतर्गत हैं।

व्यक्तित्व की परिभाषा

संसार में प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में अलग प्रकार का है साथ ही घटित होने वाले घटनाएँ भी अपने आप में अनूठी है। फिर भी अनेक व्यक्ति ऐसे देरवने को मिलेंगे जिनमें कुछ न कुछ उभयनिष्ट समानताएँ पाई जाती है। हर मनोवैज्ञानिक इन्हीं प्रतिरूपों के संबंध में ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करता है । मनोविज्ञान में व्यक्तित्व का क्षेत्र संपूर्ण व्यक्ति एवं वैयक्तिक भिन्नताओं से संबंधित है। जब हम अनेक व्यक्तियों की समानताओं का अध्ययन करते हैं तो उनकी भिन्नताओं के बारे में भी ज्ञान प्राप्त करते हैं। व्यक्ति के प्रकार्यों के विभिन्न पक्षों जैसे सीरवना (अधिगम),

प्रत्यक्षीकरण एवं अभिप्रेरणा में जटिल प्रत्ययों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास व्यक्तित्व सिद्धांतवादी करते हैं । व्यक्तित्व के जो अनुसंधान हुये हैं वे प्रत्यक्षीकरण अध्ययन से संबंधित नहीं है बल्कि व्यक्ति अपने प्रत्यक्षीकरण में अन्य व्यक्तियों से कैसे भिन्न होते हैं तथा यह अंतर उन व्यक्तियों संपूर्ण प्रकार्य से किस तरह संबंधित हैं से संबंधित हैं । केवल कोई विशेष मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया ही नहीं बल्कि अनेक प्रक्रियाओं का अंतर भी व्यक्तित्व अनुसंधान का केन्द्र है जो व्यक्तित्व के अध्ययनकर्ता हैं उनके लिये व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग एक अध्ययन क्षेत्र को पारिभाषित करने के लिये किया जाता है।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक किसी एक परिभाषा पर सहमत नही हैं । कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि जैव रासायनिक एवं शारीरिक पक्ष पर व्यक्तित्व निर्भर करता है तो दूसरी ओर बाह्य व्यवहार के निरीक्षण को अन्य मनोवैज्ञानिक बल देते हैं । कुछ मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व की परिभाषा विशेषताओं जैसे अचेतन प्रक्रियाओं के रूप में करते हैं।

व्यक्तित्व की विभिन्न परिभाषाएं प्रस्तुत की गई हैं तथा प्रत्येक परिभाषा में व्यवहार के अलग अलग पक्षों पर बल दिया गया है ये सभी परिभाषाएँ अमूर्त भी हो सकती हैं और मूर्त भी । साथ इस तथ्य पर भी प्रकाश डालती हैं कि व्यक्ति किस प्रकार अर्न्तक्रिया करता है? व्यक्ति में क्या दुर्लभ तथा क्या उभयनिष्ठ है ?

व्यक्तित्व की परिभाषाओं पर विचार करते समय दो तथ्यों पर ध्यान दिया जाना चाहिये प्रथम व्यक्तित्व की परिभाषा उन व्यवहार प्रकारों पर प्रकाश डालती है जिन पर मनोवैज्ञानिक अपना ध्यान केन्द्रित करता है तथा अध्ययन हेतु विभिन्न विधियों का प्रयोग करता है । द्वितीय यह कि व्यक्तित्व की परिभाषा में से न तो कोई सही है न कोई गलत । क्योंकि सभी परिभाषाएँ कुछ न कुछ व्यक्तित्व के मूल्यांकन के अनुसंधान के लिये कम या ज्यादा लाभदायक होती हैं।

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी के (Personality) का पर्याय है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के (Persona) परसोना शब्द से हुई है परसोना का अर्थ है मुरवौटा (MasK) या नकली चेहरा । प्राचीन समय के यूनानी कलाकार अपनी पहचान को छिपाने व नाटक के उस पात्र का वास्तविक रूप दर्शाने के लिये मुरवौटे या नकली चेहरे का उपयोग करते थे। इस नाटकीय प्रणाली को आगे चलकर रोमवासियों ने अपना लिया और उनसे हमें यह आधुनिक शब्द Personality प्राप्त हुआ। व्यक्तित्व शब्द की इस धारणा का आधार प्लेटो का दर्शन था। इस धारणा के अनुसार किसी आंतरिक दृश्य का बाह्य रूप ही व्यक्तित्व है । ऐसी ही धारणा आधुनिक मनोविश्लेषणवादियों की भी है। क्योंकि वे भी आंतरिक अहं (Ego) को असली व्यक्तित्व मानते हैं और उसकी ही अभिव्यक्ति को व्यवहार मानते हैं ।

रोमवासियों के लिये Persona का अभिप्राय जैसा दूसरों को दिरवाई देता से है । इसका

अर्थ यह हुआ कि मुखौटा लगाकर कलाकार दर्शकों के सामने जिस पात्र की भूमिका में मंच पर आते हैं उस पात्र का सही प्रभाव उत्पन्न करने का सही प्रयास करते हैं । इस प्राचीन अभिप्राय से Personality का हमारा सम्प्रत लोकप्रिय अभिप्राय प्राप्त हुआ है जिसका अर्थ दूसरों का प्रभाव (An effect one has on others) है। कोई भी व्यक्ति जो कुछ भी अपने विचार करता है वह सभी कुछ व्यक्तित्व की मनोवैज्ञानिक संरचना का अंश है और काफी मात्रा में उस व्यक्ति के व्यवहार द्वारा अभिव्यक्त होता है । इस प्रकार यदि देखा जाए तो व्यक्तित्व का कोई विशिष्ट गुण निश्चित नहीं है बल्कि संपूर्ण व्यक्ति के कुल व्यवहार का गुण है।

व्यक्तित्व के शाब्दिक अर्थ के अतिरिक्त कुछ अन्य दृष्टिकोण भी हैं जिनमें व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों की व्याख्या होती है ये दृष्टिकोण निम्नलिखित हैं ।

1. सामान्य दृष्टिकोण (General View) - सामान्य दृष्टिकोण से व्यक्तित्व सर्वांगीण विकास का स्वरूप है।

2. दार्शनिक दृष्टिकोण (Philosophical View) - इस दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व सामाजिक क्षेत्र में कुछ गुणों का एक संगठन मात्र है ।

4. मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण (Psychoanalytic View) - के अनुसार व्यक्तित्व इदम् (Ed) , अहम् (Ego) तथा नैतिक मन (Super Ego) का स्वरूप है।

5. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण (Psychological View) इस दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व वंश परम्परा तथा वातावरण की देन है।

व्यक्तित्व के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोण व्यक्तित्व शब्द की परिभाषा की ओर संकेत करते हैं । व्यक्तित्व की परिभाषा में मनोवैज्ञानिक जिन विचारों को प्रकट कर रहें हैं उसे गिलफोर्ड के मतानुसार निम्नलिखित 4 भागों में बांट सकते हैं।

1. प्रथम वर्ग में वे परिभाषाएँ आती हैं जो व्यक्ति की संपूर्ण प्रतिक्रियाओं के आधार पर व्यक्तित्व को परिभाषित करती हैं । ऐसी परिभाषाओं में व्यक्ति की रुचि, आदतें तथा योग्यताएँ सम्मिलित की जाती हैं। इन्हें सर्वांगीण परिभाषाएँ कहते हैं।

2. द्वितीय वर्ग की परिभाषाएँ संगठनात्मक परिभाषाएँ कहलाती हैं जिनमें व्यक्ति के संगठन की बात कही जाती है।

3. तृतीय वर्ग की परिभाषाओं को इन्टीग्रेटिव परिभाषाओं के रूप में जाना जाता है। जो व्यक्ति के विभिन्न रूपों के योग पर बल देती हैं।

4. चतुर्थ वर्ग की परिभाषाएँ व्यक्तित्व के समायोजन पर बल देती हैं ।

उपर्युक्त वर्गों से संबंधित विभिन्न परिभाषाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. आलपोर्ट (1961) के अनुसार - "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर मनोदैहिक गुणों वह गत्यात्मक संगठन है जो पर्यावरण के प्रति उसके अनूठे समायोजन का निर्धारण करता है।"

2. म्यूरहैड के शब्दों में - "व्यक्ति संपूर्ण व्यक्ति का समावेश है यह व्यक्ति के गठन, रुचि, अभिरुचि, क्षमता तथा योग्याताओं और अभिवृत्तियों का विशेष संगठन है।"

3. वैरन के अनुसार - "ज्ञानात्मक, भावनात्मक, क्रियात्मक तथा शारीरिक विशेषताओं के एक व्यक्ति का संगठित स्वरूप जो दूसरों से बिल्कुल भिन्न होता है।"

4. मन के अनुसार - "व्यक्तित्व किसी व्यक्ति की बनावट, व्यवहार के ढंग, रुचि, अभिवृत्ति, शक्ति, योग्यता तथा अभिरुचियों के विशेष संगठन के रूप में पारिभाषित किया जा सकता है ।"

5. कैम्फ के अनुसार - "व्यक्तित्व उन अभ्यासों के रूपों का समन्वय है जो किसी वातावरण में व्यक्ति विशेष के समायोजन को प्रस्तुत करता है ।"

6. बोरिंग के अनुसार - "व्यक्तित्व व्यक्ति का उसके वातावरण के साथ अपूर्व और स्थायी समायोजन है ।"

7. गुथरी (1944) के अनुसार - "व्यक्तित्व की परिभाषा सामाजिक महत्व की उन आदतों तथा आदत संस्थानों के रूप में दी जा सकती है जो स्थिर तथा परिवर्तन के अवरोध वाली होती है।"

8. मन (1953) के अनुसार - "व्यक्तित्व की परिभाषा उस अति विशेषता पूर्ण संगठन के रूप में दी जा सकती है जिसमें व्यक्तित्व की संरचना व्यवहार के ढंग, रुचियाँ, अभिवृत्तियाँ, क्षमताएँ और प्रवणताएँ सम्मिलित हैं ।"

आलपोर्ट के अनुसार (1961) - आज आलपोर्ट की परिभाषा अन्य परिभाषाओं की तुलना में सर्वाधिक मान्य है क्योंकि यह परिभाषा अन्य की अपेक्षा अधिक व्यापक होने के कारण व्यक्ति के स्वरूप को अधिक भली-भांति स्पष्ट करती है । इसमें अनुकूलन या अभियोजक दृष्टिकोण की प्रधानता है।

आज के मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व के तीन घटक चेतन व्यक्तित्व, अचेतन व्यक्तित्व व वस्तुनिष्ठता मानते हैं कि व्यक्ति जिस भाग से अवगत रहता है चेतन व्यक्तित्व है। इसी प्रकार व्यक्ति को जब किसी भाग की चेतना नहीं रहती वह अचेतन व्यक्तित्व है। व्यक्तित्व का वह भाग जो दूसरों द्वारा निरीक्षण योग्य होता है वस्तुनिष्ठ होता है।

व्यक्तित्व के प्रकार *(Type of Personality)*

संसार में किसी भी समाज के कोई भी दो व्यक्तियों में समानता नहीं होती है। ये बात अलग है कि उनमें किसी न किसी प्रकार या आधार की समानता पाई जा सकती है। परंतु दो व्यक्ति आकार, प्रकार, रूपरंग और स्वभाव व व्यवहार में पूर्णरूपेण एक समान नहीं मिलेंगे। किन्तु व्यक्तियों में किसी आधार या प्रकार की समानता होती है । इसी आधार पर व्यक्तित्व का प्राचीनकाल से ही वर्गीकरण किया जाता रहा है। उदाहरणार्थ- भारतीय आयुर्वेद में व्यक्तियों की तीन प्रकार की प्रकृति बताई गई है। जो शरीर रसायन पर आधारित है - **वात, पित्त, कफ**। इसी तरह धर्मशास्त्र में तीन प्रकार की मानसिक वृत्तियों का उल्लेख किया गया है - **सात्विक, राजसिक व तामसिक** । भारतीय विचारकों के अनुसार सात्विक प्रकृति के व्यक्ति चिन्तक, एकान्तप्रिय, चरित्रवान, सीधी- सादे व्यक्ति होते हैं । राजसी - प्रकृति के व्यक्ति सुख - ऐश्वर्य पसंद करने वाले, समाजप्रेमी व्यक्ति होते हैं । इनमें उत्साह व उग्रता होती है. इनमें अहं (Ego) की प्रधानता पाई जाती है। तामसी - तामसी प्रकृति के व्यक्ति (Id) इदं के निर्देशन में चलते हैं । चूंकि इनका व्यवहार पशु प्रवृत्ति का होता है इसलिये इन्हें खाने पीने संबंधी उचित अनुचित में अंतर करने संबंधी योग्यता नहीं होती है ।

हिप्पोक्रेट्स का वर्गीकरण स्वभाव व शरीर रचना को अलग अलग ध्यान में रखते हुए किया । क्योंकि यह सत्य है कि स्वभाव व शरीर रचना में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

शरीर रचना के दृष्टिकोण से जर्मन विचारक **क्रेश्मर** ने व्यक्तियों को 4 वर्गों में बांटा है।

1. पिकनिक टाईप - पिकनिक पर्सनेलिटी के व्यक्ति आरामतलब एवं हंसमुख स्वभाव के होते हैं । ये व्यक्ति कद में छोटे शरीर से मोटे एवं इनका शरीर चिकना होता है।

2. एथलेटिक - ऐसे व्यक्ति समाजप्रिय, स्वस्थ एवं स्वभाव में उग्र होते हैं । इनकी शारीरिक रचना कसरती शरीर वालों की तरह होती है । पेशियाँ मजबूत होती है।

3. एस्थेनिक - ऐसे व्यक्ति अत्यंत भावुक अंर्तमुखी, कल्पनाशील एवं बुद्धिमान होते हैं। शारीरिक रूप से दुबले पतले होते हैं।

4. डिस्प्लेटिक - उपरोक्त तीनों प्रकारों के गुण डिस्पलेटिक टाईप के व्यक्तियों में पाये जाते हैं।

शैल्डन (1942) का वर्गीकरण शारीरिक गुणों के अध्ययनों पर आधारित है।

1. एण्डोमार्फिक - इनका पेट बड़ा होता है ये व्यक्ति गोल मटोल चिकने होते हैं।

2. मेसोमार्फिक - ऐसे व्यक्ति ठोस, कसरती शरीर वाले होते हैं । इनकी पेशियाँ व हड्डियों में अधिक बल होता है । ये व्यक्ति अधिक तंदुरस्त व शक्तिशाली होते हैं।

3. एक्टोमार्फिक - इनकी अस्थियां लंबी शरीर दुबला पतला, दुर्बल मांसपेशियां, देखने में शक्तिहीन होते हैं।

युंग ने व्यक्तित्व का जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया है वह आज भी प्रचलित है - उसके अनुसार व्यक्तित्व के दो प्रकार है -

1. बहिर्मुखी व्यक्तित्व - ऐसे व्यक्ति यथार्थ को मानने वाले व्यावहारिक भावना प्रधान, निःसंकोची, भौतिकवादी, वाकपटु, अधिक कार्यक्षमता वाले, वर्तमान में जीने वाले, तुरंत निर्णय लेने वाले होते हैं ।

2. अर्न्तमुखी व्यक्तित्व - ऐसे व्यक्तियों में व्यावहारिकता की कमी, संकोची, विचार करने वाले, एकान्त को पसंद करने वाले, देर से निर्णय लेने वाले, अपने द्वारा लिये गये निर्णय को देर से क्रियान्वित करने वाले, भविष्य को प्रमुखता देने वाले व कम बोलने वाले होते हैं ।

मार्गन व गिनीलैण्ड ने स्वभाव के अनुसार 4 प्रकार के व्यक्ति बतलाये हैं -

1. प्रफुल्ल - ऐसे व्यक्ति हंसमुख, आशावादी स्वभाव के होते हैं ।

2. उदास - ऐसे व्यक्ति निराशावादी व उदास रहते हैं ।

3. चिड़चिड़े - ऐसे व्यक्ति झगड़ालू व तेज मिजाज के होते हैं ।

4. अस्थिर - ये व्यक्ति अस्थिर चित्त के व संवेगात्मक होते हैं । इनके विचारों व मूड कोई भरोसा नहीं होता क्योंकि ये व्यक्ति एक पल में खुश होते हैं तो एक पल में क्रोधित हो उठते हैं ।

शैल्डन ने स्वभाव एवं शरीर रचना में धनात्मक सहसंबंध प्रमाणित किया है और अपना वर्गीकरण निम्न प्रकार से दिया है।

1. विसेरोटोनिक - इस टाईप के व्यक्ति स्नेह के भूखे आराम पसंद करने वाले होते हैं इसीलिये इनका पेट व आंतों का भाग अधिक विकसित होता है।

2. सोमेटोटोनिक - ऐसे व्यक्ति शक्तिशाली , क्रियाशील, उत्साही, आत्मविश्वासी साहसी, कर्मठ, स्पष्ट वक्ता, अधिकार प्रिय एवं इनका स्वर तेज होता है।

8. सेरेब्रोटोनिक - ऐसे व्यक्ति अत्याधिक संकोची, संयमी, भावुक, एकान्त प्रिय, स्नेही, आत्म निर्भर, अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त न करने वाले व धीमे बोलने वाले होते हैं । इन्हें अच्छी नींद नहीं आती है।

थार्नडाईक ने विचार और कल्पना के दृष्टिकोण से तीन प्रकार के व्यक्तित्व बताये हैं -

1. सूक्ष्म विचारक 2. प्रत्यय विचारक 3. स्थूल विचारक

स्प्रैंमर ने मूल्यों (Value) के आधार पर छः प्रकार के व्यक्ति बतलाये हैं -

1. सैद्धांतिक 2. सौन्दर्यात्मक 3. आर्थिक
4. धार्मिक 5. सामाजिक 6. राजनीतिक

टरमैन ने बुद्धिलब्धि के आधार पर 11 प्रकार के व्यक्ति बताये हैं -

1. अति प्रतिभा सम्पन्न 2. प्रतिभाशाली 3. अति उत्कृष्ट
4. उत्कृष्ट 5. सामान्य 6. मंद बुद्धि
7. निर्बल बुद्धि 8. हीन बुद्धि 9. मूर्ख
10. गूढ़ 11. जड़

कैश्मर ने मानसिक रोगों को आधार मानकर दो प्रकार के व्यक्ति बतलाते हैं :-

1. साइक्लोयड - ऐसे व्यक्ति समाज प्रेमी एवं हंसमुख होते हैं । ये अक्सर Monic depressive psychosis से अधिक ग्रस्त होते हैं ।

2. शिजोयड (Schizoid) - ये व्यक्ति संकोची व एकान्तप्रिय होते हैं । इनको Schizophrenia का रोग होता है ।

हैविंगहर्स्ट और टाबा ने स्वभाव के आधार पर व्यक्ति 4 प्रकार बताये हैं -

1. आत्म निर्देशित (Self - Directive) - ये विचारक और स्वतंत्र विचार वाले होते हैं। ये आत्म निर्णय लेते हैं। एवं उसी के अनुसार कार्य करते हैं।

2. समायोजनशील (Adoptive) - ऐसे व्यक्ति हर परिस्थिति में समायोजन कर लेते हैं साथ ही साथ बुद्धिमान और अवसरवादी भी होते हैं ।

3. असमायोजित (Unadiusted) - ये व्यक्ति कहीं पर भी समायोजन नहीं कर पाते हैं ये व्यक्ति असंतुष्ट एवं कुन्ठित होते हैं।

4. विरोधी (Defiant) - ये व्यक्ति जल्दी क्रोधित होते हैं एवं झगड़ालू प्रवृत्ति के होते हैं प्रत्येक बात के विरोधी होते हैं ।

व्यक्तित्व का सबसे अधिक महत्वपूर्ण वर्गीकरण **युंग** का है ।

व्यक्तित्व के निर्धारक

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों को दो भागों में रखा गया है।

1. आनुवांशिकता 2. वातावरण

आनुवांशिक कारक के अंतर्गत जैवकीय कारक आते हैं

1. अन्तःस्रावी ग्रंथियाँ 2. शरीर की रचना 3. शरीर रसायन

वातावरण के अंतर्गत

1. भौतिक 2. सामाजिक 3 सांस्कृतिक

जैविक कारक - जैविक कारक के द्वारा वह सीमा निर्धारित की जाती है जिसके बाहर व्यक्तित्व का विकास नहीं कर सकते । बालक को एक अच्छा वातावरण देकर उसके व्यक्तित्व का विकास तो किया जा सकता है । परंतु यह विकास उस निश्चित सीमा में होता है जो वंश के द्वारा निर्धारित की गई होती है।

1. अंतःस्रावी ग्रंथियाँ -

(a) पोषण ग्रन्थि - इस ग्रंथि की क्रियाशीलता में कमी होने पर व्यक्ति बौना व अनाकर्षक हो जाता है किन्तु बुद्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता इसके विपरीत क्रियाशीलता में वृद्धि होने पर व्यक्ति दैत्याकार हो जाता है।

(b) पीनियल ग्रंथि (Pineal) - इस ग्रंथि के न्यासर्ग पूरे व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

(c) मूल ग्रंथि (Thyroid) - इसके नष्ट हो जाने पर myxoedema रोग हो जाता है जिसके कारण शरीर दिमाग व पेशियां शिथिल हो जाती है। व ध्यान देने तथा स्मरण करने शक्ति में कमी आ जाती है। न्यासर्ग में कमी होने से विकास अवरुद्ध हो जाता है। ऐसे बौने व्यक्ति कुरूप व मंदबुद्धि होते हैं ।

(d) उपगल (Parathyroid) - यह ग्रंथि सामान्य स्थिति में शरीर को शांत व संतुलित रखती है परंतु इसकी असमान्यता व्यक्ति के संवेगात्मक व मानसिक संतुलन को अस्त व्यस्त कर देती है ।

(e) थाइमस (Thymus) - इसका संबंध व्यक्ति के शारीरिक विकास से है ।

(f) सर्वकिंवीं ग्रन्थि (pancreas) यह रक्त में शर्करा की मात्रा का संतुलन करती है।

(g) अभिवृक्क ग्रंथि (Adrenal) - इसके न्यासर्ग के अधिक होने से स्त्रियों में पुरुषों

के गुणों के लक्षण दिखाई देते हैं जैसे आवाज मोटी होना, होठों पर बाल आना इत्यादि। न्यासर्ग के अभाव में एडीसन नाम का रोग हो जाता है।

(h) जनन ग्रंथि (Gonads) इस ग्रंथि से 3 प्रकार न्यासर्ग निकलते हैं । इनका व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है । इन्हीं से पुरुषों में पुरुषोचित गुण व स्त्रियों में स्त्रियत्व के लक्षण जैसे - गर्भाधान, मासिक धर्म, मातृत्व इत्यादि विकसित होते हैं ।

2. शरीर की रचना

शरीर की रचना के अंतर्गत व्यक्ति की लंबाई-चौड़ाई, रंग, शरीर की बनावट आदि आती है जो समाज में व्यक्ति के उद्दीपक मूल्य को कम ज्यादा करता है । शरीर की सुदृढ़ता से यह मूल्य बढ़ता है यह व्यक्तित्व का केवल बाह्य पक्ष है । स्वभाव व शरीर रचना परस्पर संबंधित है । दोषपूर्ण शरीर रचना व्यक्ति में हीनभावना व व्यावहारिक दोष उत्पन्न करती है। इसी प्रकार मोटे व्यक्ति खुश मिजाज, आरामप्रिय व सामाजिक होते हैं। व दुबले व्यक्ति चिड़चिड़े तेज व संयमी होते हैं ।

3. शरीर रसायन

शरीर के रासायनिक तत्वों का व्यक्ति के स्वभाव पर प्रभाव पड़ता बै । जैसे रक्त की अधिकता से व्यक्ति आशावादी, पित्त की अधिकता से चिड़चिड़ा व कफ की अधिकता से शान्त रहता है। मस्तिष्क व शरीर में समय समय पर जो परिवर्तन होता रहता है उसका व्यक्तित्व पर सीधा प्रभाव पड़ता है। पाचन क्रिया ठीन न होने पर व्यक्ति उदास व सुस्त दिखेगा चिड़चिड़ापन भी उसके व्यवहार में परिलक्षित होगा । विटामिनों की कमी व लंबे समय से चले आ रहे शारीरिक रोगों का प्रभाव व्यक्ति के शरीर व मन दोनों पर पड़ता है जो व्यवहार में दिखाई देता है।

वातावरण

1. भौतिक वातावरण - अर्थात जिस स्थान पर व्यक्ति रह रहा है उस स्थान की प्रकृति और जलवायु आदि ये तत्व बालक के व्यवहार, स्वभाव पर अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालते हैं । ठंडे देश के व्यक्ति स्वस्थ सुन्दर परिश्रमी बुद्धिजीवी व गोरे होते हैं। पहाड़ों पर रहने वाले बच्चे अत्यधिक परिश्रमी व साहसी होते हैं ।

2. **सामाजिक वातावरण** - जन्म के बाद बालक एक विशेष समूह के सदस्य के रूप में बढ़ता है। इस समूह में अनेक प्रकार के व्यक्ति होते हैं। इस समूह को ही सामाजिक समूह कहा जाता है। सामाजिक कारकों को 3 भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(1) गृह (2) विद्यालय (3) समाज

(1) व्यक्तित्व पर गृह का प्रभाव - गृह से संबंधित अनेक ऐसे कारक है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं ।

(A) मां का महत्व - जीवन के प्रारम्भ में मां से परस्पर संबंध बालक के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं क्योंकि बालक का बौद्धिक व संवेगात्मक विकास मां के साथ ही अंत;क्रिया द्वारा अर्थात मां के स्नेह और प्यार पर निर्भर है ।

(B) पिता का महत्व - घर में पिता की उपस्थिति का बालक के व्यक्तित्व पर गहरा असर पड़ता है परिवार में वस्तुओं के प्रति बालक की जिज्ञासा का दमन किया जाता है तब ऐसा व्यवहार बालक को अर्न्तमुखी बना देता है । माता पिता - को अत्याधिक संरक्षण व स्नेह बालक में आत्म निर्भरता की कमी उत्पन्न कर देता है।

(C) माता पिता के पारस्परिक संबंध - यदि माता- पिता में से एक की मृत्यु या तलाक हो जाता है। तो बालक अपने को असुरक्षित महसूस करता है जिसके कारण उसकी जन्मजात विशेषताएँ विकसित नहीं हो पाती हैं ।

(D) पारिवारिक संबंध - परिवार के अन्य सदस्यों का व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है भाई बहनों का स्नेहपूर्ण व्यवहार बच्चे की जरुरतों का ध्यान उसे सुरवद वातावरण देता है जिससे उसके सदगुणों का विकास होता है।

(F) परिवार का रूप - एकाकी परिवार व संयुक्त परिवार को भी बालक का व्यक्तित्व निर्धारित होता जाता है। एकाकी परिवार में बालक केवल माता पिता व भाई- बहिन के संपर्क में रहता है। जबकि संयुक्त परिवार में दादा-दादी बुआ ताउ-ताई अन्य बच्चों के साथ रहने पर उसका व्यक्तित्व अलग ढंग से प्रभावित होता है अधिक स्नेह व सुरक्षा बच्चों को जिद्दी बना देती है।

(G) परिवार के संस्कार - जिन परिवारों में बालक को अच्छी शिक्षा दी जाती है। अच्छे संस्कार सिरवाये जाते हैं वे बच्चे सच्चरित्र होते हैं। इसके विपरीत अपराधी परिवार में बच्चे भी अपराध करना सीरवते हैं व असमाजिक तत्व बनते हैं।

(H) परिवार का आकार - परिवार का आकार अर्थात परिवार के सदस्यों व अन्य बच्चों की संरव्या का निर्धारण परिवार के सदस्य जितने अधिक होंगे। बालक का भाषा विकास समाजिकता व अन्य योग्यताओं का शीघ्र विकास होता है परंतु दूसरी तरफ अधिक भाई बहिनों के कारण पालन पोषण शिक्षा - दीक्षा में फर्क पड़ता है ऐसी स्थिति में परिवार के आकार का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

(J) परिवार का आर्थिक स्तर :- आर्थिक रूप से कमजोर हीनभावना व असुरक्षा की भावना का विकास होता है साथ ही खान पान व अन्य सुख- सुविधाओं से भी बालकों को वंचित होना पड़ता है। परंतु शारीरिक शक्ति व आत्मा निर्भरता ऐसे बालकों में अपेक्षाकृत अधिक होती है आर्थिक रूप से मजबूत परिवार के बालक, आलस्ययुक्त दूसरों पर निर्भर व श्रेष्ठता की भावना से युक्त होते हैं । अहं भावना इनके व्यक्तित्व में प्रमुख रूप से होती है ।

(L) परिवार में बालक की स्थिति - यदि बालक अपने माता-पिता की अकेली संतान है तो अत्यधिक प्यार दुलार मिलने से बालक अहंकारी, जिद्दी, दूसरों पर निर्भर व स्वार्थी किस्म का हो जाता है उसमें सामाजिकता की प्रायः कमी पाई जाती है । यदि परिवार में भाईयों की संख्या अधिक है व बहिन अकेली है या बहनें अधिक हैं भाई अकेला है तो भी बालक बालिकाएँ अपने स्वयं निर्णय लेने में कठिनाई महसूस करते हैं साथ ही आत्म केन्द्रित हो जाते हैं।

(M) पड़ोस - यदि बालक को पास - पड़ोस का वातावरण व बच्चे अच्छे मिले तो बालक का विकास भी अच्छा होता है।

(N) विद्यालय का प्रभाव - यदि विद्यालय में अच्छे घरों के बालक, अच्छे शिक्षक हो व विद्यालय का वातावरण सुखद हो तो बालक के नैतिक गुणों का विकास होता है।

(O) साथियों का प्रभाव - विद्यालय में अनेक परिवारों के आर्थिक स्तर भिन्न - भिन्न होता है । इन सभी से बालक का संपर्क होता है। इस दौरान इन सभी बालकों का आचरण रहन - सहन विचार आदतें वातावरण, अनुशासन पाठ्यक्रम, नियम इत्यादि बालक के व्यक्तित्व को विकसित करते हैं। श्रेष्ठ बुद्धि, साहसी व आत्मनिर्भरता वाकपटुता बालक को नेता बनाती है।

(P) साहित्य - बालक जो कुछ भी अध्ययन करता है वहीं उसके व्यक्तित्व को निर्धारित करता है जिस प्रकार का साहित्य बालक पढ़ेगा वैसी ही उसके मन मस्तिष्क पर उसकी छाप पड़ेगी ।

(Q) देवालय - अध्यात्म से संबंधित चर्चा - घर पर पूजापाठ का वातावरण, प्रवचन इत्यादि का बालक के व्यक्तित्व पर पूरा पूरा असर पड़ता है ।

(R) चलचित्र और क्लब - बालक का मस्तिष्क अपरिपक्व होता है। चलचित्रों में यदि अच्छाई हो तो बालक का व्यक्तित्व अच्छी दिशा में विकसित होने लगता है। इसके विपरीत यदि चोरी डकैती, हत्या इत्यादि अपराधों का प्रदर्शन नये नये ढंग से दिखाया जाता है तो बालक भी उसका अनुकरण कर सकता है और अपराधी प्रवृति उसमें जन्म ले सकती है।

(3) सांस्कृतिक वातावरण : बालक को जैसे संस्कार सिखाये जाते हैं उसका वैसा ही प्रभाव बालक पर पड़ता है बालक को उसकी संस्कृति वह कच्चा माल प्रदान करती है जिससे

वह अपने जीवन का निर्माण करता है । यदि वह कच्चा माल अपर्याप्त है तो व्यक्ति का विकास समुचित ढंग से नहीं हो पाता और यदि यह कच्चा माल बालक के लिये पर्याप्त है तो व्यक्ति अवसर पर उन्नति हेतु उसका सदुपयोग कर सकता है ऐसा संस्कृति के महत्व को दर्शाते हुये **बेनीडिक्ट** कहते हैं ।

संस्कृति विभिन्न रूपों में व्यक्ति को प्रभावित करती है । जैसे परम्पराएँ, प्रथाएँ, आचार व धर्म, रुढ़ियाँ, बालक को पालन पोषण का ढंग संस्थाएँ इत्यादि ।

1.4 उद्देश्य

प्रत्येक अनुसंधान का परिचालन उसके उद्देश्यों पर ही निर्भर करता है । उद्देश्य ही अनुसंधान को संतुलित यथार्थ एवं उपयोगी बनाता है इस अनुसंधान के अग्रलिखित उद्देश्य हैं -

1. प्रथम उद्देश्य यह ज्ञात करता है कि वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान व्यक्तियों में शारीरिक रंग रूप मानसिक एवं सामाजिक लक्षणों के आधार पर भिन्नता पाई जाती है। अथवा नहीं ?

2. दूसरा उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि क्या समान प्रकृति वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व में भिन्नता होती है अथवा नहीं ?

3. तृतीय उद्देश्य यह है कि समान वात प्रकृति प्रधान एवं समान पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान लड़के एवं लड़कियों में लिंग भेद के कारण मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर व्यक्तित्व में समानता पाई जाती है या सार्थक अंतर पाया जाता है। और यदि अंतर पाया जाता है तो व्यक्तित्व ता निर्धारण एवं तुलनात्मतक अध्ययन शोध कार्य का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

4. चौथा उद्देश्य यह है कि उपकरण में लिये मनोवैज्ञानिक परीक्षण 16.P.F. में व्यक्तित्व के 16 कारकों में से कौन से कारक ऐसे है जिनमें लड़के लड़कियों के व्यक्तित्व में समानता पाई जाती है एवं कौन से कारकों में भेद पाया जाता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है। कि शोधकार्य के लिये ली गई समस्या द्वारा लड़के लड़कियों में आयुर्वेद के अनुसार समान वात, पित्त एवं कफ प्रकृति व्यक्ति पाई जाने पर मनोवैज्ञानिक परीक्षण द्वारा व्यक्तित्व में भिन्नता ज्ञात कर व्यक्तित्व का मूल्यांकन एवं विश्लेषण, निर्धारण एवं तुलनात्मक अध्ययन करना ही समस्या का पूर्ण उद्देश्य है।

5. इस शोधकार्य का पांचवा एवं अंतिम सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ साथ मानसिक स्वास्थ्य का पता लगाकर पूर्ण व्यक्तित्व का निर्धारण करना है एवं व्यक्तित्व के अनुसार आवश्यक सुझाव देना है । इससे शोधार्थियों को नवीन शोधकार्य के लिये मदद मिल सकेगी ।

1.5 पूर्वगामी अनुसंधात्मक साहित्य

अनुसंधान का प्राचीन स्वरूप

मानव शरीर विश्व सृष्टि की मूल्यवान निधि है। अतएव उसके दैनिक प्रयोग किये जाने वाले खाद्य पदार्थों, द्रव्यों एवं अन्य उपकरणों का प्रयोग तभी किया जाना उचित है, जब अनुसंधान द्वारा यह निश्चित कर लिया जाये कि उपयोग किया जाने वाला आहार इत्यादि निर्विष और निर्दोष है । भोजन के पहले भोज्य पदार्थ का अग्नि में हवन पशु-पक्षियों को खिलाने के बाद भोजन करने एवं पशु जैसे- कुत्ते, बिल्ली, कौआ आदि को पहले आहार देकर फिर स्वयं खाने के नियम का तात्पर्य यही है कि इन प्रयोगों से जब आहार की विकृतावस्था या अविकृतावस्था का परिज्ञान कर लिया जाये तब उसका त्याग या ग्रहण किया जाये ।

आचार्य सुश्रुत ने विकृत विषयुक्त आहार का अग्नि के ऊपर डालने या पशु- पक्षियों को खिलाने से होने वाले प्रभाव का विस्तार से वर्णन सुश्रुत संहिता के कल्प स्थान में किया है । सुश्रुत के अनुसार वैद्य को अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति का होना चाहिये । उसे राजा के प्रयोग में लाई जाने वाली वस्तुएँ जैसे भोज्य पदार्थ, पेय, दातौन, उबटन, माला, वस्त्र. आभूषण. शय्या, कवच, नस्य, अञ्जन एवं अन्य उपकरणों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहना चाहिए ।

उपरोक्त संदर्भों से यह ज्ञात होता है कि आयुर्वेद में सुदीर्धकाल में अनुसंधान की प्रवृत्ति जागरुक रही है। समस्त प्रकृति मानव की उपभोग की जाने वाली वस्तु है इसलिये प्रकृति की सभी सजीव एवं निर्जीव वस्तुओं का मानव की प्रकृति के साथ परीक्षण करके उन्हें मनुष्य की रक्षा का साधन बना रखा है। औषधियों के विषय में उनके प्रभाव आदि के ज्ञान के लिये प्राचीनकाल से ही जन्तुओं पर उनका प्रयोग कर प्रतिक्रिया का ज्ञान किया जाता है । राजदरबारों को चिकित्सक अपने यहा चकोर, मयूर, शुक, वानर तथा हिरण आदि पालकर राजाओं के भोजन का उन पर परीक्षण करते थे ।

सन्निकृष्टाँस्ततः कुर्याद राज्ञस्तान मृगपक्षिणः ।
पेश्मनोऽय विभूषार्थं रक्षार्थं चात्मनः सदा ।

अनेक रोगों में जान्तव द्रव्यों का प्रयोग करने के बहुतेरे उदाहरण चरकसंहिता आदि ग्रन्थों में मिलते हैं, जिससे प्राचीन आयुर्वेद शास्त्र में अनुसंधात्मक प्रवृत्ति का होना स्पष्ट है। अधुना अनुसंधान में पशु-पक्षियों पर प्रयोग करने की प्रचलित प्रणाली प्राचीन आयुर्वेद सम्मत है। आवश्यकता इस बात की है कि अनुसंधान की दिशा आयुर्वेदीय हो। दोष-द्रव्य के आधार पर अनुसंधान की प्रक्रिया को अपनाना चाहिये । आयुर्वेद के अनेक द्रव्यों का नये ढंग से अनुसंधान कर उनके गुण-धर्म को जानकर नवीन चिकित्सा-विज्ञान के विद्वान उनका सफलता के साथ

भारत में आयुर्वेदीय अनुसंधान की प्रगति

भारतवर्ष ही एक ऐसा देश है जहाँ आयुर्वेद संपूर्ण रूप से अपने मूलभूत सिद्धांतों सहित जीवित है और इसे पूर्ण रूप से राजकीय मान्यता प्राप्त है। भारत सरकार की केन्द्रीय आयुर्वेद सिद्ध अनुसंधान परिषद के तत्वाधान में पूरे देश में अनुसंधान कार्य प्रगति पर है । यह कार्य मुरव्य रूप में आयुर्वेद साहित्य सिद्धांत औषधीय मूल्यांकन तथा अध्ययन के रूप में हो रहे हैं । परिषद में दिल्ली स्थित मुरव्यालय के अलावा इनकी अनेक संबंधित संस्थाएँ देशभर में काम कर रही हैं । इस परिषद का दृष्टिकोण मुरव्यतः वैज्ञानिक है । यहाँ पर आधुनिक वैज्ञानिक मापदण्डों पर आयुवेर्दीय औषधियों का मूल्यांकन हो रहा है। परिषद की संस्थाओं में होने वाले महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्यों में अपस्मार की चिकित्सा, मलेरिया की चिकित्सा पंचकर्म तथा परिवार नियोजनार्थ वानस्पतिक द्रव्यों का प्रयोग उल्लेरवनीय है। मधुमेह में आयुष 82, श्लीपद एवं मलेरिया में आयुष 64, मेदारोग में आयुष 55, अपस्मार में आयुष 56 पर कार्य हो रहा है।

इसके अलावा लरवनऊ स्थित केन्द्रीय औषधीय अनुसंधान संस्थान में भी आयुर्वेदीय औषधियों पर अनुसंधान हो रहा है । अभी हाल ही में गुग्गुल से मेदोहर प्रभाव वाली एक औषधी तैयार कर सिप्ला कम्पनी के माध्यम से बाजार में उपलब्ध है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेद संकाय में 1963 से ही लगातार इस क्षेत्र में कार्य हो रहा है । इस संस्थान में प्रो. पी. जे. देशपाण्डे के निर्देश भगन्दर तथा अर्श की क्षारसूत्र द्वारा चिकित्सा का एक सफल प्रयोग किया गया है। यह विधि अब सर्वमान्य होकर अत्यंत लोकप्रिय हो रही है । इसके अलावा मूत्र रोगों में वरुण, शिग्रु तथा पुनर्नवा के सफल प्रयोग किये गये हैं तथा वैज्ञानिक शोध के परिणाम प्रकाश में आये हैं । मानसिक रोगों तथा मानसिक तनाव की चिकित्सा में से मध्य रसायन औषधियों के प्रयोग का सफल मूल्यांकन किया गया है । अपस्मार की चिकित्सा में भी मेध्य रसायनों (शंरवपुष्पी, ब्राम्ही, मण्डूक पर्णी तथा अश्वगंधा) का प्रयोग उपयोगी पाया गया है। प्रमेह में जम्बूबीज तथा विजयसार का प्रयोग लाभकर सिद्ध किया गया है। हृदयरोग में अर्जुन का प्रयोग परम्परा से होता आया है। हाल ही में प्रो. के. एन. उडुप्पा तथा उनके सहयोगियों ने आधुनिक अनुसंधान के माध्यम से इसकी पुष्टि की है। पंचकर्म तथा रसायन पर भी कार्य प्रगति पर है । राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, वाराणसी के मौलिक सिद्धांत विभाग द्वारा देह प्रकृति विनिश्चय में एवं उच्चकोटि के ग्रंथों का लेरवन हुआ है। गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर में आयुर्वेद के सिद्धांतों पर कार्य चल रहा है। राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर में मुरव्य रूप में जलोदर ग्रहणी, तमक श्वास आदि पर कार्य प्रगति पर है।

विदेशों में अनुसंधान की दिशा व प्रगति

विश्व के अनेक देशों में मुख्य रूप से श्रीलंका, नेपाल, मॉरीशस तथा वर्मा में देशी चिकित्सा संबंधी अनुसंधान कार्य प्रगति पर है । श्रीलंका के भण्डारनायक स्मारक आयुर्वेद संस्थान में अध्ययन अध्यापन शोध कार्य में मुख्य रूप से आमवात, कामला वातव्याधि और उदर रोगों पर कार्य हो रहा है । नेपाल में त्रिभुवन विश्वविद्यालय के तत्वाधान में आयुर्वेद संकाय के अतंर्गत आयुर्वेदीय स्नातक पाठ्यक्रम के साथ साथ अध्यापन सामग्री के विकास के संबंध में कुछ प्रारंभिक शोध कार्य भी चल रहा है।

यूरोप के अनेक देशों में अनेक वनौषधियाँ परम्परा से चिकित्सार्थ प्रयोग में चली आ रही हैं । ये अब और भी लोकप्रिय होती जा रही हैं, इन पर कहीं कहीं अनुसंधान भी हो रहा है। जेकोस्लोवाकिया में लगभग 800 पौधों का प्रयोग पररंपरा से होता रहा है । वहाँ की लगभग 15% औषधियां पौधों से तैयार की जाती हैं और बहुत लोकप्रिय भी हैं । पिछले वर्षों में इन औषधियों पर वैज्ञानिक शोधकार्य भी होने लगा है। चीन में बड़े-बड़े अस्पतालों तथा प्रयोगशालाओं में देशी चिकित्सा पद्धति, एक्यूपंचर चिकित्सा पद्धति के अतिरिक्त अनेक वानस्पतिक औषधियों का परीक्षण व मूल्यांकन करके आधुनिक स्वरूप में प्रयोग बहुत बड़े पैमाने पर हो रहा है । रुस में भी आयुर्वेद अध्ययन पर रुचि ली जा रही है इंग्लैण्ड स्कूल आफ हर्बल मेडीसन नामक संस्थान इस पद्धति में स्नातक तैयार करने तथा वनस्पतियों के औषधीय गुणों के अनुसंधान में रत् है।

अमेरिका में भी पारस्परिक वनौषधियों के सामान्य प्रयोग विशेषतः टॉनिक तथा पेय के रूप में हो रहा है इसी प्रकार अफ्रीका तथा दक्षिणी अमेरिका के देशों में भी व्यापक वनौषधीय संस्कृति परिलक्षित होती है। व्यक्तित्व पर भी आयुर्वेद में प्राचीनकाल से अनुसंधान कार्य हो रहा है जो धर्मशास्त्र एवं भारतीय आयुर्वेद में प्राप्त होता है।

अध्याय - 2

विधि-विज्ञान

2.1 उपकल्पना

2.2 न्यादर्श

2.3 उपकरण

2.3.1 नाड़ी परीक्षण (Nerve Test) उपकरण के रुप में

2.3.2 वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली

2.3.3 व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.)

2.4 पथप्रदर्शी अध्ययन

2.5 परीक्षण प्रशासन



अध्याय - 2

विधि-विज्ञान

2.1 उपकल्पना

2.2 न्यादर्श

2.3 उपकरण

2.3.1 नाड़ी परीक्षण (Nerve Test) उपकरण के रूप में

2.3.2 वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली

2.3.3 व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.)

2.4 पथप्रदर्शी अध्ययन

2.5 परीक्षण प्रशासन

2.1 उपकल्पना

अनुसंधान के प्रक्रम में समस्या के कथन के तुरंत पश्चात एक उपयुक्त परिकल्पना की रचना की आवश्यकता होती है । परिकल्पना के अभाव में अनुसंधान प्रायः संभव नहीं है। कोई भी वैज्ञानिक अध्ययन समस्या से प्रारम्भ होता है और समस्या भी ऐसी जो हल हो सके । ऐसी किसी भी समस्या का संभावित उत्तर एक कथन के रूप में दिया जाता है । इस कथन की सार्थकता इस बात में है कि इसकी परीक्षा की जा सके । अर्थात इसके संबंध में यह निश्चित करना संभव हो सके कि वह कथन सत्य है अथवा असत्य । ऐसे कथन को 'उपकल्पना' कहते हैं । अतः एक उपकल्पना परीक्षा योग्य कथन है जो किसी समस्या का हल हो सकता है।

यदि उपयुक्त प्रयोग के पश्चात यह ज्ञात होता है कि संबंधित उपकल्पना सत्य है तब हम कह सकते हैं कि वह उपकल्पना उस समस्या को हल करती है जिसके संबंध में उसका निर्माण किया गया था । यदि उपकल्पना असत्य सिद्ध होती है तो हम कहते हैं कि वह समस्या का हल नहीं करती है । इसे स्पष्ट करने के लिए हम उदाहरण स्वरूप एक समस्या लें 'शतरंज का अच्छा खिलाड़ी कौन हो सकता है? तो कदाचित हमारी एक उपकल्पना होगी कि 'शतरंज का अच्छा खिलाड़ी वह हो सकता है जिसकी बुद्धिलब्धि (I.Q) अधिक हो तथा जिसमें एकाग्रता की अधिक क्षमता हो'। पर्याप्त प्रदत्तों का एकत्रीकरण तथा उनकी व्याख्या एवं उपकल्पना का स्थायित्व कर सकते हैं । ऐसी अवस्था में हम कह सकते हैं कि हमने समस्या का हल खोज लिया है। क्योंकि हम प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं लेकिन समस्या का यह हल पूर्ण नहीं है, क्योंकि अनेक अन्य ऐसे घटक हैं जो एक व्यक्ति को शतरंज का अच्छा खिलाड़ी बनाने में योगदान देते हैं । अतः हमें और प्रयोग करने होंगे तथा एक विस्तृत उपकल्पना का निर्माण करना होगा ।

दूसरी अवस्था में यह हो सकता है कि हमारी उपकल्पना सिद्ध न हो। ऐसी अवस्था में यह स्पष्ट है कि हमारी समस्या का समाधान नहीं हुआ है और हम सूचना प्राप्त करने में असफल रहे हैं ।

1. एफ. जे. मैकग्यूगन के अनुसार - "दो या दो से अधिक परिवर्तियों के बीच तथ्ययुक्त संबंधों के परीक्षण युक्त कथन को उपकल्पना कहते हैं ।"

2. लुण्डवर्ग के अनुसार - "उपकल्पना एक संभावित सामान्यीकरण है जिसकी वैधता की परीक्षा अभी बाकी है । बिलकुल प्रारंभिक स्तर पर उपकल्पना एक अनुमान अथवा काल्पनिक विचार हो सकती है, जिसके आधार पर हम आगे क्रियात्मक कार्य अथवा खोज करते हैं ।"

3. टाउनसैन्ड के अनुसार - "महोदय ने उपकल्पना को समस्या का संभावित उत्तर बताया है ।"

4. गुड तथा हाट के अनुसार - "एक ऐसा प्रस्ताव बताया है जिसकी वैधता का निर्धारण करने के लिये उसे जांच के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है ।"

5. एफ.एन. करलिंजर - "A Hypothesis is a conjectural statement of the relation between two of more variables."

6. वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार - "एक प्रस्ताव जिसकी कल्पना कदाचित बिना विश्वास के की गई है जिससे कि उसके तार्किक परिणामों को जाना जा सके और इस प्रकार ज्ञात अथवा ज्ञातव्य तथ्यों से संबंध स्थापित किया जा सके, उपकल्पना कहलाता है ।"

7. "अच्छे अनुसंधान में उपकल्पना का निर्माण एक केन्द्रीय पथ है।"

8. वान डेलन के अनुसार - "उपकल्पना एक शक्तिशाली आकाशद्वीप के समान है, जो अनुसंधानकर्ता का मार्ग प्रकट करती है ।"

उपकल्पना के कार्य

1. मार्गदर्शन - उपकल्पना द्वारा अनुसंधान का मार्गदर्शन होता है । अनुसंधान की क्रियाओं का निश्चय उपकल्पना द्वारा ही होता है।

2. प्रमुख तथ्यों का चुनाव - उपकल्पना द्वारा समस्या के सीमित हो जाने के कारण महत्वपूर्ण तथ्यों का चयन सरलता से हो सकता है । किसी भी प्रत्यय से संबंधित अनेक परिवर्ती हो सकते हैं । उपकल्पना द्वारा यह निश्चय हो जाता है कि अनुसंधानकर्ता को केवल परिवर्ती विशेष का ही अध्ययन करना है।

3. क्षेत्र का निर्धारण :- उपकल्पना द्वारा समस्या संकुचित हो जाती है तथा अध्ययन क्षेत्र निश्चित हो जाता है।

4. पुनरावृत्ति संभव होना :- उपकल्पना द्वारा ही किसी अध्ययन की पुनरावृत्ति अन्य अनुसंधानकर्त्ताओं द्वारा संभव होती है। वह अध्ययन के निष्कर्षों का परीक्षण कर सकते हैं ।

5. निष्कर्ष निकालने में सहायक :- इसके द्वारा समस्या का संकुचन संभव होने और दिशा निश्चित हो जाने के कारण सही निष्कर्षों पर पहुँचने में सहायता मिलती है। अनुसंधानकर्ता उपकल्पना द्वारा ही वांछित उद्देश्य को प्राप्त करता है ।

उपकल्पना कथन के प्रकार

उपकल्पना कथन के तीन प्रकार है -

1. सकरात्मक 2. नकरात्मक 3. शून्य

सकरात्मक :- इसमें उपकल्पना कथन सकरात्मक रूप से होता है । उदाहरण के लिये "अभ्यास से सीखने में उन्नति होती है।"

नकरात्मक - इस प्रकार की उपकल्पना में कथन नकरात्मक रूप में होता है । उदाहरण के लिये "लड़के - लड़कियों की अपेक्षा बुद्धिमान नहीं होते ।"

शून्य - इस प्रकार की उपकल्पना की यह धारणा होती है कि स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण दो या दो से अधिक समूहों में कोई वास्तविक अंतर नहीं होता है जो अंतर होता है वह जब तक संदेह से परे सिद्ध नहीं किया जाता सार्थक नही माना जा सकता है।

उदाहरण :- शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन में अंतर नहीं होता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में संबंधित चरों मे पूर्व अनुसंधान के निष्कर्षों के आधार पर कुछ निष्कर्ष सकारात्मक (positive) एवं कुछ निष्कर्ष नकारात्मक (Negative) प्राप्त हुये हैं । कुछ परिणाम अपवाद स्वरुप भी प्राप्त हुये हैं । इसलिये शोधकर्ती के लिये शून्य उपकल्पना (Nill Hypothesis) बनाना ही श्रेयस्कर होगा ।

(i) नाड़ी परीक्षण संबंधी परिकल्पनाएँ -

(1) वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के क्षेत्र में लैंगिक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है ।

(2) वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के क्षेत्र में सत्व, रज एवं तम (त्रिगुण मन के लक्षण) में लैंगिक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है ।

(ii) मनोवैज्ञानिक परीक्षण संबंधी परिकल्पनाएँ -

1. व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) के Factor A, B, C, E में लैंगिक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है ।

2. व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) के Factor F, G, H, I में लैंगिक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है ।

3. व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) के Factor L, M, N, O में लैंगिक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है

4. व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) के Factor Q1, Q2, Q3, Q4 में लैंगिक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है ।

(iii) व्यक्तित्व शीलगुण संबंधी परिकल्पना -

1. वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के व्यक्तित्व शीलगुणों में कोई लैंगिक अंतर (Sex Difference) परिलक्षित नहीं होती है ।

2.2 न्यादर्श

व्यावहारिक एवं समाजिक अध्ययनों में प्रायः न्यादर्श द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर ही सामान्यीकरण किया जाता है। किसी भी मनोवैज्ञानिक तथ्य अथवा मानवीय व्यवहार के सत्यापन के लिये पूर्ण, समग्र (समूह) का अध्ययन असंभव नहीं तो कठिन अवश्य होता है । अतः अधिकांश अवस्थाओं में न्यादर्श द्वारा ही काम चलाया जाता है। इस दृष्टि से सामाजिक अध्ययनों के क्षेत्र में न्यादर्श का बड़ा महत्व है। शोध समस्या का चयन कर लेने के पश्चात शोध कार्य के लिये सम्बन्धित परिकल्पनाओं की पुष्टि हेतु सामग्री एकत्रीकरण की भी आवश्यकता पड़ती है । अनुसंधान कार्य में ये सामग्री एकत्रित करने से पूर्व इस तथ्य पर गहन विचार आवश्यक है कि अध्ययन के लिये ईकाइयाँ क्या और कितनी होंगी ? जिसको आधार बनाकर संगणना या निर्देशन विधि का चुनाव किया जाता है।

पी. पी. यंग के अनुसार - 'एक न्यादर्श अपने सम्पूर्ण समूह का लघु चित्र होता है।'

क्रावस्टन तथा काउडेन के अनुसार - 'एक बड़े समग्र में से प्रतिदर्श लेकर उसका अध्ययन किया जा सकता है तथा यदि वह प्रतिदर्श समग्र का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करता है तो हम सही निष्कर्षों पर पहुंच सकते हैं ।

गुड तथा हाट के अनुसार - "एक न्यादर्श बड़े समूह का छोटा प्रतिनिधि है ।"

स्नेडेकार ने व्यावहारिक एवं दैहिक जीवन में इसकी उपयोगिता को समझाते हुये लिखा है कि केवल कुछ ही पौण्ड कोयले की जांच के आधार पर एक गाड़ी कोयला स्वीकृत या अस्वीकृत कर दिया जाता है। केवल एक बूंद रक्त की जांच से चिकित्सक रोगी के रक्त के बारे में निष्कर्ष निकाल लेते हैं ।

प्रतिदर्शी कुछ ही इकाइयों के निरीक्षण द्वारा बड़ी मात्राओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने की विधि है।

उपरोक्त परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि समूह में से चुने गये कुछ ऐसे तत्व जो कि पूरे समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं न्यादर्श कहलाते हैं । प्रस्तुत शोध में समंकों को एकत्रित करने के लिये न्यादर्श विधि को लिया गया है जो कि समय धन व शक्ति की बचत तो करता ही है साथ ही अध्ययन को गहन बनाने व निष्कर्षों की परिशुद्धता एवं प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से भी उपयुक्त है।

न्यादर्श (प्रतिचयन) की तीन मुख्य विधियाँ होती है :-

1. प्रसम्भावना प्रतिचयन - प्रसम्भाव्यता प्रतिचयन में ईकाइयों का चयन संयोगिक आधार पर किया जाता है । जिसके अंतर्गत समिष्टि की प्रत्येक इकाई के चयन की समान प्रसम्भाव्यता रहती है । इसकी तीन विधियाँ हैं - लॉटरी विधि, ड्रम. चक्र विधि, टिपिट की संयोगिता संख्याएँ ।

2. अर्द्ध सम्भाव्यता प्रतिचयन - अर्द्ध प्रसम्भाव्यता प्रतिचयन में प्रायः केवल प्रथम इकाई का चयन संयोग पर आधारित होता है । शेष ईकाईयों का चयन फिर क्रमानुसार प्रतिचयन, स्तरानुसार प्रतिचयन, पुंजानुसार प्रतिचयन आदि ।

3. अप्रसम्भाव्यता प्रतिचयन :- जब इकाइयों के चयन का आधार संयोग न रहकर सुविधा, अवसर, निर्णय आदि रहता है तब ऐसे प्रतिचयन को अप्रसम्भाव्यता प्रतिचयन कहते हैं।

अप्रसम्भाव्यता प्रतिचयन की अनेक विधियाँ हैं।

उदाहरण स्वरूप - खण्ड प्रतिचयन, अवसरानुसार प्रतिचयन, सुविधानुसार प्रतिचयन, उद्देश्यानुसार प्रतिचयन, विशेषतानुसार प्रतिचयन आदि प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श का आधार अप्रसम्भाव्यता प्रतिचयन है ।

न्यादर्श

क्रमांक	न्यादर्श के क्षेत्र	संख्या	आयु
1.	सेन्ट नार्बट स्कूल (भँवरताल) छात्राएँ	42	17 से 18
2.	भारत सेवक समाज क. उ.मा. शाला (घमापुर) छात्राएँ	43	17 से 18 वर्ष तक
3.	सिटी बंगाली क्लब (करमचंद चौक) छात्राएँ	35	17 से 18 वर्ष
4.	नवीन विद्या भवन (नेपियर टाउन) छात्र	32	17 से 18 वर्ष तक
5.	नवीन विद्या भवन (नेपियर टाउन) छात्र	40	17 से 18 वर्ष तक
6.	नवीन विद्या भवन (नेपियर टाउन) छात्र	32	17 से 18 वर्ष तक
7.	महर्षि विद्या मंदिर (रामपुर) छात्र	16	15 से 18 वर्ष तक

संपूर्ण छात्र / छात्राएँ

संपूर्ण छात्राएँ	120	संपूर्ण छात्र	120
वात प्रकृति प्रधान	40	वात प्रकृति प्रधान	40
पित्त प्रकृति प्रधान	40	पित्त प्रकृति प्रधान	40
कफ प्रकृति प्रधान	40	कफ प्रकृति प्रधान	40

2.3 उपकरण

उपकरण के अंतर्गत वह सभी सामग्री आती है जिसका उपयोग शोधकार्य के लिये किया जाता है। प्रस्तुत शोधकार्य के लिये ली गई समस्या के प्रयोगात्मक हल के जिन उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है, वे निम्नानुसार हैं -

1. हस्तगत नाड़ी (Nerve) परीक्षण (उपकरण के रूप में)
2. वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली
3. व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F)
   (16 Personality factor questinnair psychological Test)

2.3.1. हस्तगत नाड़ी (Nerve) परीक्षण (उपकरण के रूप में)

प्रस्तुत शोध में नाड़ी परीक्षण तैयार की गई प्रश्नावली वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली को न्यादर्श के लिये चयन करने हेतु प्रयोग में लाया जावेगा । सर्वप्रथम छात्र-छात्राओं की हस्तगत नाड़ी का परीक्षण किया जायेगा । नाड़ी परीक्षण (Nerve Test) के लिये छात्रों की दाहिने हाथ की नाड़ी एवं छात्राओं की बायें हाथ की नाड़ी देरवने का कारण यह कि एक कच्छपाकार नाड़ी जाल स्त्रियों की नाभि में उर्ध्वमुरव तथा पुरुषों की नाभि में अधः मुरव होता है कूर्म की इस विरोधी स्थिति (व्यतिक्रान्त) के कारण ही नाड़ी को देरवने की प्रकिया भी स्थिति पार्थक्य रखती है।

छात्रों के नाड़ी परीक्षण के लिये दाहिने हाथ की कलाई पर तीन अंगुलियां तर्जनी , मध्यमा एवं अनामिका को इस प्रकार रखा जावेगा की तर्जनी पंजे को ओर हो । कुछ समय उँगलियों से स्पर्शकर नाड़ी स्पन्दन स्पष्ट रूप से ज्ञात किया जावेगा । जैसी ही तीनों अंगुलियों में से जिसमें स्पर्श मिलेगा (नाड़ी स्पन्दन का) वैसे ही उसकी स्पष्टता का बोध किया जावेगा। उंगलियाँ रखते ही साथ जो स्पर्श सर्वप्रथम प्राप्त होता है वही उस व्यक्ति की प्रकृति इंगित करेगा। एवं यह देरवा जावेगा की दूसरे नंबर कौन सी उंगली में स्पन्दन प्राप्त हो रहा है क्योंकि तर्जनी उंगली वात को बतलाती है, मध्यमा पित्त को एवं अनामिका कफ को । इस प्रकार इन्हें क्रमशः नोट किया जावेगा तथा इन्हें अंक प्रदान कर स्पष्ट किया जावेगा। इसी प्रकार छात्राओं का नाड़ी परीक्षण भी किया जावेगा लेकिन इस बात का ध्यान देना होगा कि स्त्रियों का बायें हाथ की कलाई में उँगलियां इस प्रकार रखी जायें कि तर्जनी पंजे की तरफ हो ।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णन के आधार पर प्राप्तांक प्राप्त किये । प्राप्तांक देने के लिये व्यक्ति की जो प्रकृति पाई गई उसको 7 नंबर दिये तथा दूसरे नंबर पर जो स्पन्दन मिला उसको

4 नंबर दिये एवं अंतिम स्पन्दन को 1 नंबर देकर क्रमशः प्रयोज्य की प्रकृति (वात-पित्त एवं कफ में से जो भी हो), दूसरा गुण एवं तीसरे स्थान पर तीसरे गुण को स्पष्टता प्रदान की। उदाहरणार्थ - मान लीजिये किसी छात्रा की वात प्रकृति नाड़ी द्वारा ज्ञात होती है और दूसरे स्थान पर कफ की नाड़ी मिलती है एवं तीसरे स्थान पर पित्त की नाड़ी मिलती है तो इस शोध कार्य के लिए एकत्र किये जाने वाले प्राप्तांको के लिये निम्नानुसार लिखा जावेगा।

छात्रा - नाड़ी स्पन्दन

नाम - वात - पित्त - कफ

7 - 1 - 4

2.3.2 वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली

वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण, प्रश्नावली का निर्माण प्राचीन ग्रंथों अष्टाङ्गहृदयम, भावप्रकाश संहिता, अथर्ववेद, त्रिदोष ज्योत्सना आदि के आधार पर किया गया है। इस प्रश्नावली को सर्वप्रथम 5 क्षेत्रों के लिये मापन के लिये प्रस्तावित किया गया था। निर्देशकों के मूल्यांकन के फलस्वरूप 4 क्षेत्र मुख्य रूप से रह गये। ये क्षेत्र हैं शारीरिक रंगरूप, मानसिक गुण एवं सामाजिक गुण। चौथे एवं अंतिम क्षेत्र के रूप में सत्व, रज एवं तम प्रकृति के गुणों को आधार बनाकर प्रश्न रखे गये हैं प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित कुल 130 प्रश्न निर्मित किये गये थे। Item Analysis के आधार पर कुल 84 प्रश्न रह गये हैं जिसमें 21 प्रश्न व्यक्ति के शारीरिक लक्षण (बाह्य) रूप रंग इत्यादि से संबंधित हैं। 21 प्रश्न मानसिक लक्षणों गुण को बतलाते हैं। 21 प्रश्न व्यक्ति के सामाजिक क्रियाकलाप इत्यादि की जानकारी देते हैं। 21 प्रश्न सत्व, रज और तम गुणों की सूचना देते हैं कि व्यक्ति में किस गुण की प्रधानता है।

इसकी Relibility Test Retest के माध्यम से आंकी गई है जो .74 आई और इस मापनी की Velidity Rating के आधार पर की गई जो कि .68 है। इस प्रकार यह परीक्षण पूरी तरह से विश्वसनीय व वैद्य रहा।

फलांकन - वात, पित्त एवं कफ निर्धारण प्रश्नावली का फलांकन दो चरणों में किया गया। प्रथम चरण के प्रारंभ में तीन क्षेत्रों में शारीरिक रूप रंग, मानसिक एवं सामाजिक गुणों का फलांकन किया। द्वितीयचरण में सत्व, रज एव तम गुणों का फलांकन किया। प्रथम चरण में प्रारंभ के तीन संभावित उत्तरों में से पहला उत्तर वात प्रकृति होने की सूचना देता है। दूसरा उत्तर पित्त प्रकृति होने की सूचना देता है एवं तीसरा उत्तर कफ प्रकृति होने की। प्रयोज्य द्वारा लगाये गये सही (✔) के निशानों को अलग अलग जोड़ लिया। पहले वात वाले Answer को V नाम दिया, पित्त वाले को P नाम दिया व कफ वाले Answer को C नाम दिया। तत्पश्चात कुल वात (V), कुल पित्त (P) व कुल कफ (C) को जोड़ लिया जो संख्या में ज्यादा आये उन्हें

उस प्रकृति से संबधित गुणों की प्रधानता वाला माना । द्वितीय चरण में 21 प्रश्नों सत्व, रज, तम का फलांकन किया उसमें प्रत्येक प्रश्न के संभावित उत्तरों में पहला उत्तर रज प्रकृति से संबंधित दूसरा, उत्तर तम प्रकृति से एवं तीसरा उत्तर सत्व प्रकृति से संबंधित है चूंकि रज, तम एवं सत्व का संबंध वात, पित्त एवं कफ से होता है । इस प्रकार संभावित जवाबों (उत्तरों) में पहले उत्तर को (R) नाम दिया दूसरे उत्तर को (T) नाम दिया व तीसरे उत्तर को (S) नाम दिया। प्रयोज्य द्वारा लगाये गये निशान के आधार पर कुल R, कुल T व कुल S को जोड़ लिया जो ज्यादा संरव्या में प्राप्त हुये हैं उन्हें उस गुण की प्रधानता वाला माना। प्राप्तांकों को तालिकबद्ध किया एवं केन्द्रीय वृत्ति के माप मध्यमान (Mean), मध्यांक (Mdn) एवं बहुलांक (Mode), मानक विचलन (S.D.), ककुदता (Ku) इत्यादि ज्ञात किया गये व निष्कर्ष प्राप्त किये । प्राप्तांकों को निम्नानुसार लिरवा और नाड़ी स्पन्दन से वात, पित्त एवं कफ के प्राप्तांकों का मिलान करके रज, तम, सत्व का परिणामों का वात, पित्त, कफ में मिलानकर ज्ञात किया कि प्रपत्र व नाड़ी परीक्षण के परिणामों में साम्य है अथवा नहीं।

उदाहरणार्थ -

क्र.	छात्रा का नाम	आयु	नाड़ी स्पन्दन	त्रिदोष वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज-तम-सत्व
1	श्वेता	18	7-1-4	32 - 1 3 - 18	10 - 3 - 8

उपरोक्त उदाहरण में छात्रा वात प्रकृति छात्रा की पाई गई। इसलिये वात को 7 नंबर दिये, दूसरे स्थान पर कफ नाड़ी प्राप्त हुई इसलिये दूसरा नंबर दर्शाने के लिये उसे 4 अंक प्रदान किये एवं पित्त नाड़ी अंत में प्राप्त हुई इसलिये उसे 1 नंबर दिया । प्रश्नावली के प्राप्तांकों में भी वात को सर्वाधिक प्राप्तांक मिले हैं 32, कफ को 18 एवं पित्त को सबसे कम 13 अर्थात नाड़ी स्पन्दन व वात, पित्त, कफ मापनी के प्राप्तांकों में साम्यता है । अतः यह मिलान करके सभी प्रयोज्यों के प्राप्तांकों में यह देरवा कि नाड़ी परीक्षण एवं प्रपत्र में साम्यता है अथवा नहीं अंत में त्रिगुण रज, तम व सत्व का क्रमशः वात, पित्त कफ से मिलान करके निष्कर्ष प्राप्त किये ।

2.3.3 व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16P.F.)

इस व्यक्तित्व अनुसूची का निर्माण और मानकीकरण कैटिल एवं इवर (R.B. Cattel & H.W. Eber 1956) ने किया । इस परीक्षण का उपयोग 17 वर्ष व उससे अधिक आयु के लोगों के लिये किया जाता है। इस परीक्षण के A.B.C.D.E. और F प्रारूप (Forms) उपलब्ध हैं । प्रारूप A और B 18 वर्ष से लेकर कॉलेज में पढ़ने वाले छात्र व छात्राओं के लिये हैं व E और

F कम पढ़े लिखे व्यस्कों के लिये हैं । इस परीक्षण द्वारा जिन 16 कारकों का मापन किया जाता है वे निम्न प्रकार से हैं ।

	Factor	Description
A.	Reserved (Introvert) अंर्तमुखी	Out going (Extrovert) बर्हिमुखी
B.	Less Inteligente कम बुद्धिमान	More Intellingente अधिक बुद्धिमान
C.	Affected by Fellings संवेगात्मक रूप से प्रभावित	Emotionally Stable संवेगात्मक रूप से स्थिर
E.	Humble उदार	Assertive प्रभुत्वशाली
F.	Sober संयमी	Happy go Lucky उत्साही
G.	Expedient योग्य	Conscientious शुद्धमति
H.	Shy शर्मीला	Venturesome जोखिम उठाने वाला
I.	Tough minded दृढ़ निश्चयी प्रवृत्ति का	Tender Minded मृदु मन वाला
L.	Trusting विश्वासी	Suspicious शंकालु
M.	Pratical व्यवहारिक	Imaginative काल्पनिक
N.	Forthright स्वाभाविक कलाविहीन	Shrewd चतुर, धूर्त
O.	Placid शान्त गंभीर	Apprehensive बुद्धिमान, विचारवान
Q1.	Concervative रुढ़िवादी	Experimenting प्रायोगिक
Q2.	Group Dipendent	Self Sufficient

	समूह पर निर्भर	निर्णय लेने में सक्षम
Q3.	Undisciplined ,self conflict	Controlled
	अनअनुशासित आत्म	नियंत्रित
Q4.	Relaxed	Tense
	संतुष्ट	तनावयुक्त

उपयुक्त वर्णित परीक्षण के सोलह कारक प्रथम क्रम के कारक (First order factors) कहलाते हैं । इन 16 कारकों के अतिरिक्त कुछ द्वितीय क्रम के कारक (Second Order factors) हैं । परीक्षणों के भिन्न-भिन्न प्रारूपों में इनकी संख्या भिन्न-भिन्न है परंतु शोधकार्य में इन Second Order factors को शामिल नहीं किया गया है। इन 16 कारकों का चयन कैटिल ने कारक विश्लेषण विधि के आधार पर किया। ये सभी कारक एक दूसरे से सापेक्षिक रूप से स्वतंत्र है। इस मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों को Sten Norms में उपलब्ध सारणियों की सहायता से सरलता से परिवर्तित किया जा सकता है। परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक .34 से लेकर .96 तक है । तथा वैद्यता गुणांक .42 से लेकर .99 तक है। भारतीय परिस्थितियों में इस परीक्षण का भारतीय अनुकूलन दिल्ली के एस. डी. कपूर ने किया है।

फलांकन - परीक्षण का फलांकन कुंजियों (Scoring key) की सहायता से किया गया । परीक्षण में दिये 187 प्रश्नों का उत्तर उत्तर पत्र (Answer Sheet) में दिये गये खानों में (x) के रूप में देना होता है। प्रत्येक Factor के Raw- Score ज्ञात करने के लिये 2 कुंजियों का प्रयोग किया गया । दोनों कुंजियों द्वारा 8-8 Factor के Raw Score उत्तर प्रपत्र में कुंजियों को लगाकर प्राप्त किये । अलग अलग Factor के प्राप्त Raw Score को Sten-Score को परिवर्तित करने के लिये Manual की सहायता ली एवं यह देखा कि कौन से Factor का Sten Score - Low -Score है कौन सा High Score एवं कौन सा Avrage Score है । तत्पश्चात छात्र-छात्राओं के अलग 16 Factor में समानता व विभिन्नता को ज्ञातकर तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किये ।

2.4 पथप्रदर्शी अध्ययन

एकॉफ के अनुसार - एक अनुसंधान के समस्त व्यावहारिक पक्षों के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से मूल सर्वेक्षण से पहले अत्यंत छोटे पैमाने में जो सर्वेक्षण किया जाता है उसे पूर्वगामी अध्ययन कहा जाता है। पूर्वगामी अध्ययन ऐसा अध्ययन है जो मुख्य अध्ययन से पूर्व किया जाता है। इस अध्ययन के द्वारा न्यादर्श के चुनाव में सूचना एकत्र करने में कार्य में आने वाली कठिनाईयों के बारे में प्रमाणित विकल्पों के बारे में तथा अध्ययन में लगने वाले समय, धन तथा शक्ति का अनुमान लगाया जा सकता है जिससे कार्य में सुविधा होती है। यह अध्ययन पथ प्रदर्शक की तरह कार्य करता है किसी भी नवीन कार्य को बड़े पैमाने पर करने से पूर्व इस प्रकार का अध्ययन करना बुद्धिमत्तापूर्ण होता है विशेषकर अनुसंधान कार्य में।

वर्तमान में भी अनुसंधान कार्य को सूक्ष्म व सरल बनाने हेतु पूर्वगामी अध्ययन किया है जिसका विवरण निम्नानुसार है-

1. न्यादर्श पूर्वगामी - अध्ययन हेतु 60 छात्राओं एवं 60 छात्रों को लिया गया है जिसमें 20 वात प्रकृति प्रधान छात्र, 20 पित्त प्रकृति प्रधान छात्र, 20 कफप्रकृति प्रधान छात्र हैं। इसी प्रकार 20 वात प्रकृति प्रधान छात्राएँ, 20 पित्त प्रकृति प्रधान छात्राएँ एवं 20 कफ प्रकृति प्रधान छात्राएँ हैं।

2. पथप्रदर्शी अध्ययन - में अनुसंधान कार्य में प्रयुक्त होने वाले निम्नांकित परीक्षण न्यादर्श पर किये गये।

परीक्षण क्रमांक 1 - वात पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली शारीरिक रंगरूप, मानसिक एवं सामाजिक लक्षणों की समस्या जानकारी हेतु प्रपत्र।

परीक्षण क्रमांक 2 - व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.)।

3. परीक्षण प्रशासन - पथप्रदर्शी अध्ययन के लिये 100 छात्राओं एवं 100 छात्रों को वात पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली प्रपत्र दिया एवं साथ ही उनका नाड़ी परीक्षण भी किया। फलांकन के आधार पर कुल 60 छात्र एवं 60 छात्राओं को प्रकृति अनुसार चयनित किया तत्पश्चात उन्हें द्वितीय चरण में (16 P.F.) परीक्षण दिया एवं फलांकन के आधार पर प्राप्तांक प्राप्त किये।

4. आंकड़ों का संकलन - पथप्रदर्शी न्यादर्श के चुनाव के लिये जबलपुर के 12वीं कक्षा के छात्र- छात्राओं को चुना गया जिसका विवरण निम्न तालिका द्वारा दर्शाया गया है।

पथप्रदर्शी तालिका - 2.01

क्रमांक	जिला जबलपुर	संख्या
1.	वात प्रकृति प्रधान छात्र (महाकौशल हायर सेकेंड्री स्कूल, गोलबाजार)	20
2.	पित्त प्रकृति प्रधान छात्र (मॉडल हाई स्कूल, ब्यौहार बाग)	20
3.	कफ प्रकृति प्रधान छात्र (मॉडल हाई स्कूल, ब्यौहार बाग)	20
4.	वात प्रकृति प्रधान छात्राएँ (भारत सेवक समाज क.उ.मा. शाला, कांचघर)	20
5.	पित्त प्रकृति प्रधान छात्राएँ (भारत सेवक समाज क.उ.मा. शाला, कांचघर)	20
6.	कफ प्रकृति प्रधान छात्राएँ (सदर क. उ. मा. शाला)	20
	योग	120

तालिका - 2.02

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संवंधी प्राप्तांक

N= 20

प्रयोज्य	नाड़ी स्पन्दन			त्रिदोष (प्रकृति)			त्रिगुण		
क्रमांक	वात -	पित्त -	कफ	वात -	पित्त -	कफ	रज -	तम -	सत्व
1	7	1	4	32	14	17	10	3	8
2	7	4	1	29	23	11	12	2	7
3	7	4	1	27	29	17	11	2	8
4	7	1	4	25	19	19	13	3	5
5	7	4	1	29	20	14	13	3	5
6	7	4	1	24	22	17	9	7	5
7	7	4	1	36	14	13	10	6	5
8	7	1	4	29	16	18	11	4	6
9	7	1	4	25	15	23	12	4	5
10	7	1	4	29	17	17	10	3	8
11	7	1	4	28	16	19	9	5	7
12	1	4	7	32	13	18	10	4	7
13	7	4	1	26	23	14	9	4	8
14	4	1	7	41	13	9	10	3	8
15	4	7	1	33	8	2	9	5	7
16	7	4	1	34	16	13	12	2	7
17	7	4	1	26	21	16	8	5	8
18	7	1	4	26	19	18	11	4	6
19	7	1	4	29	16	18	11	2	8
20	1	4	7	41	11	11	10	4	7

उपरोक्त तालिका का सूक्ष्मता से अवलोकन करने पर दो बातें स्पष्ट होती हैं पहली यह कि नाड़ी परीक्षण से प्राप्त स्पन्दनों को जो अंक प्रदान किये गये हैं उसके अनुसार 7 नंबर (सर्वाधिक) प्रयोज्य की प्रकृति को प्रदान किये गये हैं द्वितीय स्थान पर प्राप्त स्पन्दन को 4 अंक

एवं तृतीय स्थान प्राप्त स्पन्दन को 1 अंक दिया गया है। ये अंक प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा प्राप्त वात- पित्त एवं कफ के प्राप्तांकों से यदि साम्यता रखते हैं तो इसका अर्थ यह हुआ कि नाड़ी द्वारा प्रकृति एवं प्रश्नावली दोनों के द्वारा प्राप्त प्रकृति ही व्यक्ति की प्रकृति होगी।

प्रयोज्य क्रमांक 1 की वात प्रकृति नाड़ी परीक्षण द्वारा पाई गई व प्रश्नावली में सर्वाधिक प्राप्तांक 32 वात को ही मिले हैं अर्थात यह छात्र वात प्रकृति प्रधान है इसी प्रयोज्य की कफ की नाड़ी दूसरे नंबर पर प्राप्त हुई प्रश्नावली के प्राप्तांकों में भी दूसरे स्थान पर कफ को ही अंक 17 प्राप्त हुये हैं। तृतीय नाड़ी पित्त की नाड़ी प्राप्त हुई है। प्रश्नावली के तृतीय स्थान पर अर्थात सबसे कम अंक कफ को 14 प्राप्त हुये हैं।

दूसरी बात यह बात यह स्पष्ट होती है कि त्रिगुण का त्रिदोष से संबंध होता है वातज प्रकृति के व्यक्ति में रज गुण की प्रचुरता होती है प्रयोज्य क्रमांक 1 के रज गुण संबंधी प्राप्तांक सर्वाधिक हैं ।

उपरोक्त स्थिति में प्रयोज्य क्रमांक 2,3,4,7,8,10,13, 17, एवं 19 के प्राप्तांकों में भी है परंतु प्रयोज्य क्रमांक 12, 14, 15, 18 एवं 20 के प्राप्तांकों में यह स्थिति नहीं पाई गई । लेकिन त्रिगुण का त्रिदोष से संबंध प्राप्त हो रहा है इस विचलन के अनेक कारण हो सकते हैं जैसे न्यादर्श का छोटा होना, प्रयोज्यों के स्वाथ्य के कारण उनकी मानसिक स्थिति के कारण एवं वातावरण जन्य कारकों के कारण ।

तालिका - 2.03

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संवंधी प्राप्तांक

N= 20

प्रयोज्य	नाड़ी स्पन्दन			त्रिदोष (प्रकृति)			त्रिगुण		
क्रमांक	वात -	पित्त -	कफ	वात -	पित्त -	कफ	रज -	तम	- सत्व
1	1	4	7	13	32	18	9	8	4
2	4	7	1	16	36	11	8	7	6
3	1	7	4	14	26	23	10	4	7
4	1	7	4	15	26	22	14	2	5
5	4	7	1	20	24	19	10	2	9
6	1	4	7	13	26	24	9	8	4
7	1	7	4	11	27	25	9	4	8
8	1	7	4	12	34	17	8	3	10
9	1	7	4	14	26	23	10	5	6
10	1	7	4	14	27	22	8	7	6
11	1	7	4	15	27	21	9	4	8
12	4	7	1	17	29	17	9	8	5
13	1	4	7	17	27	19	8	7	6
14	1	4	7	10	32	21	10	2	9
15	1	7	4	13	30	20	9	8	4
16	7	1	4	16	25	22	11	8	2
17	4	7	1	18	24	21	10	2	9
18	1	7	4	17	27	19	8	7	6
19	1	7	4	17	29	17	9	4	8
20	1	4	7	13	28	22	6	9	6

उपरोक्त तालिका में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांकों से स्पष्ट होता है कि प्रयोज्य क्रमांक 1 के नाड़ी परीक्षण द्वारा उसकी पैत्तिक प्रकृति पाई गई है। प्रश्नावली द्वारा भी पित्त को सर्वाधिक प्राप्तांक (36) मिले हैं। द्वितीय स्थान पर वात नाड़ी ज्ञात हुई तृतीय स्थान पर कफ की

नाड़ी प्राप्त हुई। प्रश्नावली में भी कफ को सबसे कम प्राप्तांक 11 प्राप्त हुये हैं । त्रिगुण में कुछ प्रयोज्य अधिकांश प्रयोज्य रज प्रकृति के पाये गये हैं व कुछ तामसिक प्रकृति के पाये गये हैं । आयुर्वेद दर्शन के अनुसार पैत्रिक प्रकृति के व्यक्ति रजोगुणी होते हैं।

उपरोक्त स्थिति प्रयोज्य क्रमांक 3, 4, 5, 7, 8, 9, 10, 11, 15, 18, 19 के प्राप्तांकों में प्राप्त हो रही है । त्रिगुण का त्रिदोष से संबंध प्राप्त होता है परंतु प्रयोज्य क्रमांक 1, 6, 12, 13, 14, 16 एवं 20 में नाड़ी एवं त्रिदोष में संबंध प्राप्त नहीं होता है। अधिकांश छात्रों की नाड़ी परीक्षण द्वारा प्रकृति व वात -पित-कफ प्रकृति प्रश्नावली में प्राप्त प्रकृति में साम्यता प्राप्त होती है।

तालिका - 2.04

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संवंधी प्राप्तांक

N= 20

प्रयोज्य क्रमांक	नाड़ी स्पन्दन			त्रिदोष (प्रकृति)			त्रिगुण		
	वात	पित्त	कफ	वात	पित्त	कफ	रज	तम	सत्व
1	1	4	7	12	21	30	9	2	10
2	1	4	7	13	22	28	7	4	10
3	4	1	7	15	15	33	7	5	10
4	1	4	7	13	17	33	4	2	15
5	1	4	7	11	21	31	6	4	11
6	1	4	7	14	18	31	8	2	11
7	1	7	4	14	20	26	5	3	13
8	1	4	7	13	22	28	5	6	10
9	1	4	7	12	20	31	5	4	12
10	1	4	7	13	24	26	6	2	13
11	1	4	7	15	21	27	9	2	10
12	4	7	1	11	22	30	7	4	10
13	1	4	7	14	20	29	7	5	9
14	4	1	7	13	19	31	5	4	12
15	1	4	7	17	19	27	6	4	11
16	1	4	7	16	20	27	8	2	11
17	1	4	7	14	20	29	11	3	7
18	1	7	4	13	19	31	4	4	13
19	1	7	4	15	22	26	4	6	8
20	4	1	7	18	22	23	9	2	10

उपरोक्त तालिका में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के नाड़ी परीक्षण एवं प्रश्नावली के प्राप्तांकों से वात, पित्त एवं कफ की स्थिति स्पष्ट होती है। प्रयोज्य क्रमांक 1 की कफ नाड़ी द्वारा कफ प्रकृति प्राप्त हुई। प्रश्नावली में सर्वाधिक प्राप्तांक 30 प्राप्त हुये हैं द्वितीय स्थान पर पित्त

नाड़ी ज्ञात हुई। प्रपत्र में प्राप्तांक भी (21) द्वितीय स्थान पर पित्त को प्राप्त हुये । वात नाड़ी भी तृतीय स्थान पर पाई गई। प्राप्तांक तृतीय स्थान पर 12 प्राप्त हुये । कफ प्रकृति की छात्राओं में सत्व गुण की प्रधानता पाई गई । प्रयोज्य क्रमांक 17 में रज गुण की प्रधानता पाई। अन्य सभी प्रयोज्यों सत्व गुण ही प्रधान पाया गया । कफ को सतोगुणी कहा गया है। विकृत कफ तामसिक होता है।

उपरोक्त स्थिति प्रयोज्य क्रमांक 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 11, 13, 15, 16, 17 में पाई गई । प्रयोज्य क्रमांक 12, 14, 18, 19, 20 में प्राप्त यह संबंध प्राप्त नहीं होता है किन्तु न्यादर्श छोटा होने के वावजूद भी अधिकांश छात्रों में नाड़ी एवं प्रपत्र में साम्यता पाई गई ।

तालिका - 2.05

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संवंधी प्राप्तांक

N= 20

प्रयोज्य क्रमांक	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ			त्रिदोष (प्रकृति) वात - पित्त - कफ			त्रिगुण रज - तम - सत्व		
1	7	4	1	30	18	15	14	2	5
2	7	1	4	30	16	17	6	3	12
3	7	1	4	33	18	22	8	1	12
4	7	1	4	28	17	18	7	8	6
5	7	4	1	39	17	7	13	2	6
6	7	1	4	28	17	18	9	2	10
7	7	1	4	26	16	21	8	3	10
8	7	4	1	30	23	10	6	4	11
9	7	4	1	25	20	18	10	7	4
10	7	4	1	23	22	18	8	6	7
11	4	7	1	27	19	17	8	6	7
12	7	4	1	26	20	17	9	8	4
13	7	1	4	28	25	10	11	3	7
14	7	4	1	27	19	17	10	8	3
15	4	7	1	29	24	10	12	2	7
16	7	1	4	24	21	18	9	8	4
17	7	4	1	23	18	22	6	3	12
18	7	4	1	25	19	19	8	5	8
19	7	1	4	25	18	20	11	3	7
20	7	4	1	23	22	18	9	8	4

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि वात प्रकृति प्रधान छात्रों के नाड़ी परीक्षण एवं प्रपत्र द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों में साम्यता प्राप्त है। प्रयोन्य क्रमांक 1 में वात प्रकृति पाई गई है क्योंकि प्रपत्र में भी वात को सर्वाधिक अंक 30 प्राप्त हुए है व नाड़ी स्पन्दन द्वारा भी वात प्रकृति प्राप्त

हुई । दूसरे नंबर पर पित्त नाड़ी पाई गयी, प्रपत्र में पित्त को 18 नंबर प्राप्त हुये हैं । तीसरे नंबर पर कफ की नाड़ी प्राप्त हुई, प्रपत्र में कफ को तीसरे स्थान पर 15 नंबर प्राप्त हुये हैं । इस प्रकार दोनों नाड़ी परीक्षण एवं प्रपत्र द्वारा प्राप्तांकों में साम्यता प्रयोज्य की वात प्रकृति को इंगित करती है। वातज प्रकृति के कुछ छात्र रजोगुणी पाये गये एवं कुछ छात्र सतोगुणी पाये गये । अधिकांश छात्र सतोगुणी पाये गये ।

उपरोक्त स्थिति प्रयोज्य 11, 13, 15, 16 व 17 में प्राप्त नहीं हुई है।

तालिका - 2.06

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंर्तगत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संवंधी प्राप्तांक

N= 20

प्रयोज्य क्रमांक	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ			त्रिदोष (प्रकृति) वात - पित्त - कफ			त्रिगुण रज - तम - सत्व		
1	1	4	7	13	27	23	10	6	5
2	1	7	4	17	28	18	9	3	9
3	1	7	4	16	27	20	11	3	7
4	1	7	4	17	28	18	9	6	6
5	4	1	7	19	28	16	10	5	6
6	1	7	4	18	27	18	9	8	4
7	4	7	1	18	28	17	10	2	9
8	4	7	1	19	27	17	11	2	8
9	4	7	1	19	28	16	11	4	6
10	1	7	4	21	24	18	13	3	5
11	4	7	1	13	26	24	9	7	6
12	1	7	4	16	25	22	12	5	4
13	1	7	4	20	22	21	6	7	8
14	1	4	7	14	25	24	9	4	8
15	1	7	4	10	27	26	9	6	6
16	1	4	7	17	24	22	12	6	9
17	1	7	4	20	23	20	9	4	8
18	1	7	4	17	25	21	10	6	5
19	1	7	4	14	27	22	8	7	6
20	4	7	1	22	26	15	12	5	4

उपरोक्त तालिका में भी पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों में साम्यता एवं संबंध को दर्शाया गया है। प्रयोज्य क्रमांक 2 की पित्त नाड़ी प्रधान पाई गई अर्थात पित्त प्रकृति पाई गई। प्रपत्र में भी पित्त को सर्वाधिक प्राप्तांक

27 प्राप्त हुये हैं । कफ नाड़ी द्वितीय स्थान पर प्राप्त हुई है । कफ के प्राप्तांक प्रपत्र में भी 18 दूसरे नंबर पर पाये गये हैं। वात को सबसे कम 17 अंक तृतीय स्थान पर प्राप्त हुये हैं। पित्त प्रकृति छात्रों में रजगुण की प्रधानता पाई गई । त्रिगुण का त्रिदोष से संबंध सभी छात्रों में पाया गया है परंतु प्रपत्र एवं नाड़ी के प्राप्तांकों को सहसंबंध सभी प्रयोज्यों में प्राप्त नहीं होता है जैसे प्रयोज्य क्रमांक 1, 5, 11, 14 और 16 इनके परिणामों में अन्य प्रयोज्यों की तुलना में भिन्न पाये गये।

तालिका - 2.07

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक

N= 20

प्रयोज्य क्रमांक	नाड़ी स्पन्दन वात	पित्त	कफ	त्रिदोष (प्रकृति) वात	पित्त	कफ	त्रिगुण रज	तम	सत्व
1	1	4	7	13	22	28	6	2	13
2	1	4	7	13	20	30	4	4	13
3	4	1	7	19	20	24	5	7	9
4	4	1	7	17	14	32	7	1	13
5	4	1	7	16	15	32	8	4	9
6	1	4	7	21	19	23	7	4	10
7	1	4	7	13	24	26	6	3	12
8	1	4	7	16	23	24	5	2	14
9	7	1	4	17	21	25	6	6	9
10	1	4	7	12	22	28	9	5	7
11	1	4	7	18	22	23	6	4	11
12	1	4	7	17	22	24	9	3	9
13	4	1	7	20	20	23	7	4	10
14	7	4	1	16	19	28	5	4	12
15	1	4	7	20	20	23	5	2	14
16	1	7	4	15	17	31	6	5	10
17	1	4	7	15	20	28	8	4	9
18	4	1	7	16	23	24	8	2	11
19	1	4	7	17	20	26	9	4	8
20	1	4	7	17	21	25	5	9	7

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के नाड़ी परीक्षण संबंधी प्राप्तांक एवं प्रपत्र के प्राप्तांकों में सहसंबंध है। प्रयोज्य क्रमांक 1 की कफ प्रकृति पाई गई है। कफ को 7 अंक प्रदान किये गये हैं (नाड़ी परीक्षण में) प्रपत्र में प्रयोज्य को 28 अंक मिले हैं। नाड़ी

परीक्षण में भी अधिकतम अंक एवं प्रपत्र भी कफ को अधिकतम अंक मिले हैं जो प्रयोज्य की कफ प्रकृति का होना बताता है। पैत्तिक गुण को प्रपत्र में 22 अंक,नाड़ी परीक्षण में 4 अंक मिले है जो वात के प्राप्तांकों से कम दूसरे स्थान पर है तृतीय स्थान कफ का है प्रपत्र में कफ को 13 एवं नाड़ी परीक्षण एंव कफ द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों की साम्यता यह दर्शाती है कि प्रयोज्य के नाड़ी परीक्षण एवं प्रपत्र दोनों के द्वारा उसकी प्रकृति ज्ञात की जा सकती है। कफ प्रकृति के छात्रों में सत्व गुण की प्रधानता पाई गई । प्रयोज्य क्रमांक 3, 6, 9, 16, 18 में नाड़ी परीक्षण एवं प्रपत्र के प्राप्तांकों में साम्य नहीं पाया गया ।

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंर्तगत छात्र -छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

तालिका 2.08

वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	26.10	24.64	21.72	3.44	0.76	1.27	0.13	23.1	27.50
पित्त	19.20	19.50	20.10	2.98	0.66	-0.30	0.13	17.16	21.50
कफ	18.20	18.50	19.10	3.05	0.68	-0.29	0.12	16.50	20.50

तालिका 2.09

वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	26.70	24.50	20.10	4.28	0.95	1.54	0.19	23.16	29.50
पित्त	18.30	18.00	17.40	2.03	0.45	0.44	0.10	16.75	20.00
कफ	18.50	20.22	23.66	4.12	0.92	-1.25	0.15	16.83	21.64

तालिका 2.10

वात प्रकृति प्रधान छात्र - छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

Factor	Group	No	mean	S.D.	T. Value	Significance
वात प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	20	26.10	3.44	0.48	Non Significant
	छात्र	20	26.70	4.28		

स्वतंत्रता के अंश df. = (20-1) + (20-1) = 38

0.05 = 2.02

0.01= 2.71

पथप्रदर्शी अध्ययन में चयनित वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली में वात संबधी प्राप्तांकों का mean 26.10 है । SEm 0.76 है। जो 1.96 से कम है । अतः प्राप्तांकों का वक्र संभावना वक्र की ओर है Sk 1.27 है जो ± 3 से कम है वितरण में धनात्मक विषमता है परंतु न्यून है । Ku 0.13 है जो 0.263 से कम है अर्थात वक्र Lepto kurtic Type का है ।

वात प्रकृति प्रधान छात्रो के वात संबंधी प्राप्तांकों का mean 26.70 है । SEm 0.95 जो 1.96 से कम हैं। अतः प्राप्तांकों का वक्र संभावना वक्र की ओर हैं। Sk 1.54 जो ± 3 से कम है वितरण में धनात्मक विषमता है परंतु न्यून है । Ku 0.190 है जो 0.263 से कम है अर्थात वक्र lepto kurtic Type का है ।

उपरोक्त वर्णन में छात्र छात्राओं के mean S.D. के आधार पर टी मूल्य (T. Value) ज्ञात किया जो 0.48 आया। यह मान 0.1 एवं 0.5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर को प्रकट नहीं करता है । अर्थात वात प्रकृति प्रधान छात्र व छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है ।

तालिका 2.11

पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुद्‌ता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	16.00	16.16	16.48	2.43	0.54	-0.19	0.11	14.30	17.90
पित्त	26.40	26.10	25.50	2.32	0.51	0.38	0.11	24.50	28.10
कफ	20.90	20.72	20.36	1.74	0.38	-0.31	0.07	19.35	21.83

तालिका 2.12

पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुद्‌ता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	15.20	15.64	16.52	2.21	0.49	-0.59	0.11	13.50	17.07
पित्त	25.60	26.07	26.92	1.84	0.41	-0.71	0.08	24.16	26.95
कफ	21.20	21.92	23.36	2.47	0.55	-0.87	0.10	20.50	23.70

तालिका 2.13
पित्त प्रकृति प्रधान छात्र - छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

N-20

Factor	Group	No	mean	S.D.	T. Value	Significance
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	20	26.40	2.32	1.23	Non Significant
प्रधान	छात्र	20	25.60	1.84		

स्वतंत्रता के अंश df. = (20-1) + (20-1) = 38 0.05 = 2.02
0.01= 2.71

पथप्रदर्शी अध्ययन में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली में पित्त संबंधी प्राप्तांकों का mean 26.40 है । SEm 0.51 है जो 1.96 से कम है अर्थात प्राप्तांकों का वितरण संभावना वक्र की ओर है । Sk0.38 है। जो ± 3 से कम है वितरण में ऋणात्मक विषमता है। Ku 0.11 आया जो 0.263 के मान से कम है अर्थात वक्र lepto kurtic Type का है ।

पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का mean 25.60 है । SEm 0.41 है जो 1.96 से कम है अर्थात प्राप्तांकों का वितरण संभावना वक्र की ओर है । Sk -0.71 है जो ± 3 से कम है वितरण में ऋणात्मक विषमता है परंतु न्यून मात्रा में है । Ku 0.08 है जो 0.263 से कम है अर्थात वक्र lepto kurtic Type का होगा।

उपरोक्त वर्णन में पित्त प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के mean व S.D. के आधार पर टी मूल्य (T. Value) ज्ञात किया जो 1.23 आया। यह मान 0.1 व 0.5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर को प्रकट नहीं करता अर्थात पित्त प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है ।

तालिका 2.14

कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	14.10	14.22	14.46	1.90	0.42	-0.18	0.09	12.50	15.64
पित्त	21.30	21.61	22.23	2.35	0.52	-0.39	0.15	20.50	22.90
कफ	27.70	26.83	25.09	3.15	0.70	0.82	0.16	25.16	30.50

तालिका 2.15

कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	16.90	16.50	15.70	2.90	0.64	0.41	0.16	14.16	19.5
पित्त	19.20	19.70	20.70	3.05	0.68	0.49	0.14	17.00	21.70
कफ	26.80	25.20	23.74	3.11	0.69	0.98	0.14	24.35	28.83

तालिका 2.16

कफ प्रकृति प्रधान छात्र - छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

Factor	Group	No	mean	S.D.	T. Value	Significance
कफ	छात्राएँ	20	27.70	3.15	0.90	Non Significant
प्रकृति						
प्रधान	छात्र	20	26.80	3.11		

स्वतंत्रता के अंश df. = (20-1) + (20-1) = 38 0.05 = 2.02
0.01= 2.71

पथप्रदर्शी अध्ययन में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली में कफ संबंधी प्राप्तांकों का mean 27.70 है । SEm 0.70 है जो 1.96 से कम है अर्थात प्राप्तांकों का वितरण संभावना वक्र की ओर है Sk 0.82 आया है जो ± 3 से कम है। वितरण में धनात्मक विषमता है परंतु न्यून है । Ku 0.16 है जो 0.263 से कम है अर्थात वक्र यहाँ भी Lepto Kuritc (शिखरीय) है ।

कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों का mean 26.80 है SEm 0.69 है जो 1.96 के मान से कम है अर्थात प्राप्तांकों का वितरण संभावना वक्र की ओर है। Sk 0.98 है जो ± 3 से कम है। वितरण में धनात्मक विषमता है। Ku 0.19 है जो 0.263 से कम है अर्थात प्राप्तांकों का वक्र Lepto kurtic type का होगा । .

उपरोक्त वर्णन में छात्र-छात्राओं के mean व S.D. के आधार पर टी मूल्य (T. Value) 0.20 आया । यह मान 0.1 एवं 0.5% विश्वास के स्तर पर सार्थक अंतर को प्रकट नहीं करता अर्थात अधिक कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है ।

वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सत्व, रज एवं तम गुण के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

तालिका 2.17

वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रज	10.10	10.00	9.80	1.49	0.33	0.20	0.07	8.75	11.25
तम	4.20	4.20	4.20	1.70	0.38	0	0.08	2.94	5.50
सत्व	6.40	6.38	6.34	1.47	0.32	0.04	0.07	5.16	7.50

तालिका 2.18

वात प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रज	6.90	7.92	9.96	2.90	0.64	-1.05	0.10	6.50	10.00
तम	4.50	3.83	2.89	3.31	0.74	0.60	0.11	2.16	5.70
सत्व	8.40	8.16	7.68	2.64	0.59	-0.27	0.12	6.50	10.5

तालिका 2.19

वात प्रकृति प्रधान छात्र - छात्राओं के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

N = 80

Factor	Group	No	mean	S.D.	T. Value	Significance
रजगुण प्रधान	छात्राएँ	20	10.10	1.49	4.38	Significant
	छात्र	20	6.90	2.90		
सत्वगुण प्रधान	छात्राएँ	20	6.40	1.47	5.98	Significant
	छात्र	20	8.40	0.27		

स्वतंत्रता के अंश df. = (20-1) + (20-1) = 38 0.05 = 2.02

0.01= 2.71

वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व,रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों में रज गुण को सर्वाधिक प्राप्तांक प्राप्त हुए हैं। प्राप्तांको का mean 10.10है । SEm 0.33 है जो 1.96 से कम है अर्थात प्राप्तांको का वितरण संभावना वक की ओर है । Sk 0.20 है जो ± 3 से कम है। वितरण में धनात्मक विषमता है परंतु न्यून है । Ku 0.07 है जो 0.263 से कम है जो यह प्रदर्शित करता है कि वितरण Lepto kurtic है ।

वात प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों में सत्व गुण कीप्रधानता पाई गई । प्राप्तांकों का mean 8.40 है । SEm 0.59 जो 1.96 से कम है अतः वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है । Sk 0.27 है जो ± 3 से कम है वितरण में धनात्मक विषमता है परंतु न्यून है । Ku 0.12 है जो 0.263 से कम है अतः वक्र Lepto kurtic है।

उपरोक्त वर्णन में छात्र-छात्राओं के रज गुण संबधी mean व S.D. के आधार पर टी मूल्य (T. Value) ज्ञात किया जो 4.38 आया जो 0.1 व 0.5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर को प्रकट करता है सत्व गुण संबंधी प्राप्तांकों के mean व S.D. के आधार पर टी मान 5.98 आया यह भी 0.1 व 0.5% पर सार्थक अंतर को प्रकट कर रहा है ।

अतः यह कहा जा सकता हैं।के वात प्रकृति प्रधान छात्राओं में रज गुण की प्रधानता पाई गई एवं वात प्रकृति प्रधान छात्रों में सत्व गुण की प्रधानता पाई गई।

तालिका 2.20

पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रज	7.70	7.30	6.50	1.83	0.40	0.65	0.07	6.30	8.83
तम	6.50	7.70	10.10	-0.63	-0.14	-5.71	0.14	4.00	8.70
सत्व	7.00	6.72	6.16	1.66	0.37	0.50	0.07	5.61	8.00

तालिका 2.21

पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रज	8.30	8.33	8.39	1.24	0.27	0.07	0.05	7.50	9.16
तम	4.80	4.61	4.23	1.81	0.40	0.31	0.07	3.50	6.00
सत्व	8.00	7.75	7.25	1.92	0.42	0.39	0.08	6.35	0.08

तालिका 2.22

पित्त प्रकृति प्रधान छात्र - छात्राओं के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

N = 40

Factor	Group	No	mean	S.D.	T. Value	Significance
रज गुण प्रधान	छात्राएँ	20	7.70	1.83	1.21	Non Significant
	छात्र	20	8.30	1.24		

स्वतंत्रता के अंश df. = (20-1) + (20-1) = 38 　　　 0.05 = 2.02

0.01= 2.71

पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं में रज गुण की प्रधानता पाई गई प्राप्तांकों का mean 7.70है । SEm 0.40 आया जो 1.96 से कम है अर्थात प्राप्तांकों का वक्र संभावना वक्र की ओर है। S.k 0.65 आया जो ± 3 से कम है वितरण में धनात्मक विषमता है Ku 0.07 है जो 0.263 से कम है अतः वक्र Lepto Kurtic है ।

पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों में भी रज गुण की प्रधानता पाई गई प्राप्तांकों का mean 8.30 है । SEm 0.27 है। जो 1.96 से कम है अर्थात प्राप्तांकों का वक्र संभावना वक्र की ओर है । Sk 0.07 हैं जो ± 3 से कम है वितरण में ऋणात्मक विषमता है । Ku 0.05 आया जो 0.263 से कम हैं अर्थात वक्र शिखरीय Lepto kurtic है ।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं में रज गुण की प्रधानता पाई गई। आयुर्वेद दर्शन में भी कहा गया है कि पैत्रिक प्रकृति के मनुष्य रज.गुणी होते हैं। रज.गुण संबंधी प्राप्तांकों के mean व S.D. के आधार पर टी मूल्य (T. Value) ज्ञात किया जो 1.21 आया जो कि 0.1 एवं 0.5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर को प्रकट नहीं करता है ।

तालिका 2.23
कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रज	7.10	6.75	6.05	1.49	0.33	0.70	0.08	5.50	8.21
तम	3.80	3.50	2.90	1.52	0.34	0.59	0.07	2.50	4.92
सत्व	10.70	10.61	10.43	1.66	0.37	0.16	0.07	9.50	11.90

तालिका 2.24
कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

कारक factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रज	7.70	7.21	6.23	2.40	0.53	0.61	0.12	5.78	9.90
तम	3.90	3.93	3.99	1.74	0.38	0.05	0.09	2.16	5.35
सत्व	9.10	9.00	8.80	3.41	0.76	0.08	0.16	6.16	11.50

तालिका 2.25

कफ प्रकृति प्रधान छात्र - छात्राओं केसत्व, रज एवं तम संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

N = 40

Factor	Group	No	mean	S.D.	T. Value	Significance
सत्वगुण प्रधान	छात्राएँ	20	10.70	1.66	1.88	Non Significant
	छात्र	20	9.10	3.41		

स्वतंत्रता के अंश df. = (20-1) + (20-1) = 38 0.05 = 2.02

0.01= 2.71

कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं में सत्व गुण की प्रधानता पाई गई प्राप्तांकों का mean 10.70 है। SEm 0.37 आया जो 1.96 से कम है अर्थात प्राप्तांकों का वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है। Sk 0.16 आया है जो कि ± 3 से कम है अर्थात वितरण में धनात्मक विषमता है परंतु न्यून है Ku का मान 0.07 प्राप्त हुआ जो 0.263 से कम है अर्थात वक्र Lepto Kurtic है।

कफ प्रकृति प्रधान छात्रों में भी सत्व गुण की प्रधानता पाई गई प्राप्तांकों का mean 9.10 है। SEm 0.76 है जो 1.96 से कम है अतः प्राप्तांकों का वक्र संभावना वक्र की ओर है। Ku 0.08 है ± 3 से कम है अर्थात वितरण में धनात्मक विषमता है Ku 0.16 है जो 0.263 के मान से कम है अर्थात वक्र यहाँ भी Lepto kurtic Type का है।

उपरोक्त वर्णन से ज्ञात होता है कि कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं में सत्व गुण की प्रधानता पाई गई। कफ को सत्व गुणी कहा गया है। निर्मल कफ में सत्व गुण होता है व मलिन कफ तामसिक होता है। कफ प्रकृति के व्यक्तियों में तामसी गुण भी पाया जा सकता है।

कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सत्व गुण संबंधी प्राप्तांकों के mean व S.D. के आधार पर टी मूल्य (T. Value) 1.88 आया जो 0.1 व 0.5% पर सार्थक अंतर नहीं है इस बात को स्पष्ट कर रहा है।

तालिका 2.26

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतगत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	5.30	5.38	5.54	0.60	0.13	-0.39	0.03	4.83	5.94
2.	B	3.20	3.16	3.08	1.70	0.38	0.07	0.05	2.16	4.00
3.	C	5.30	5.35	5.45	1.53	0.34	-0.09	0.04	4.64	6.07
4.	E	8.40	8.83	9.69	1.61	0.10	-0.80	0.06	7.50	9.66
5.	F	7.10	7.75	9.05	2.65	0.59	-0.73	0.01	9.50	9.07
6.	G	2.50	2.50	2.50	2.56	0.57	0.00	0.08	1.50	4.16
7.	H	5.80	5.57	5.65	1.92	0.42	0.35	0.04	4.80	6.34
8.	I	7.40	8.05	9.35	2.32	0.51	-0.84	0.07	6.94	9.25
9.	L	6.50	7.35	9.05	2.86	0.63	-0.89	0.31	3.83	8.83
10.	M	4.20	3.90	3.30	1.82	0.40	0.49	0.08	2.90	5.50
11.	N	5.40	5.44	5.52	1.33	0.29	-0.09	0.03	4.85	6.02
12.	O	4.60	4.00	2.80	2.48	0.55	0.72	0.11	2.75	6.50
13.	Q1	4.60	4.50	4.30	2.48	0.55	0.12	0.17	10.50	4.90
14.	Q2	8.30	8.50	8.50	1.46	0.32	-0.41	0.05	7.60	9.50
15.	Q3	5.00	5.21	5.63	1.88	0.42	-0.33	0.04	4.50	5.92
16.	Q4	5.40	5.50	5.70	1.84	0.41	-0.16	0.05	4.66	6.33

उपरोक्त तालिका 2.26 में पथप्रदर्शी अध्ययन में न्यादर्श में चयनित वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शायागया है । केन्द्रीय वृत्ति के

मापों में मध्यमान (mean), मध्यांक (mdn), बहुलांक (mode), प्रमाणिक विचलन (SD), मानक त्रुटि (SEm), विषमता (SK), ककुदता (Ku), प्रथम चतुर्थांश(Q1) एवं तृतीय चतुर्थांश (Q3) ज्ञात किये गये हैं। mean, mdn, mode, में सें यदि mean वितरण के mode से कम है तो ऐसी स्थिति में वितरण की विषमता ऋणात्मक होगी । एवं mean, mode से अधिक है तो ऐसा वितरण धनात्मक वितरण कहलाता है । तालिका में वात प्रकृति छात्राओं के (16 P.F. Test) व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी के 16 factor में से Factor A.C.E.F.I.L.N.Q2.Q3.Q4. के वितरण में ऋणात्मक विषमता है क्योंकि इन factors में Sk का मान ऋणात्मक आया है और इन factors का मध्यमान, मध्यांक से कम है । अतः वितरण में ऋणात्मक विषमता है पर कम है । ± 3 से अधिक होने पर विषमता अधिक होती है ।

B.G.H.M.O. के वितरण में धनात्मक विषमता है क्योंकि इन factors के प्राप्तांकों के वितरण में मध्यमान (mean) बहुलांक (mode) से अधिक है । SEm का मान सभी factors में 1.96 से कम है अतः सभी factors का mean अपने समूह की प्रतिनिध्यात्मकता को प्रकट करता है । Ku का मान 0.263 से कम है अतः वितरणों के वक्र Lepto Kurtic (शिखरीय) होंगे।

तालिका 2.27

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंर्तगत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	4.00	3.50	2.50	2.34	0.52	0.64	0.06	2.50	4.50
2.	B	3.10	3.04	2.92	1.48	0.33	0.12	0.05	0.36	3.95
3.	C	5.00	3.90	1.70	2.70	0.60	1.20	0.14	2.90	7.50
4.	E	6.10	5.83	5.29	2.00	0.44	0.39	0.04	5.16	6.50
5.	F	4.90	4.05	2.35	2.60	0.58	0.96	0.13	2.90	7.10
6.	G	7.60	7.90	8.50	2.04	0.45	-0.42	0.06	6.90	9.07
7.	H	5.70	5.59	5.37	2.18	0.48	0.15	0.05	4.68	6.50
8.	I	4.40	3.90	2.90	2.04	0.45	0.72	0.11	2.90	6.50
9.	L	5.40	5.50	5.70	1.16	0.25	-0.24	0.03	4.87	6.12
10.	M	3.90	2.72	0.36	2.72	0.60	1.30	0.16	0.50	5.80
11.	N	5.10	5.32	5.76	1.00	0.22	-0.63	0.03	4.73	5.90
12.	O	5.80	5.90	6.10	2.30	2.51	-0.13	0.04	5.10	6.64
13.	Q1	6.70	7.25	8.35	2.48	0.55	-0.66	0.10	5.10	8.50
14.	Q.2	6.00	5.80	5.40	1.76	0.39	0.33	0.06	5.00	7.00
15.	Q.3	8.20	8.50	9.10	1.58	0.35	-0.56	0.07	7.25	9.50
16.	Q.4	7.40	7.80	8.60	2.22	0.49	-0.54	0.07	6.70	9.07

उपरोक्त तालिका 2.27 में वात प्रकृति प्रधान छात्रों के 16.P.F. Test के प्राप्तांकों के केन्द्रीय वृति के माप दर्शाये गए हैं।

Factor G.L.N.O.Q1,Q3, एवं Q4 प्राप्तांकों के वितरण में ऋणात्मक विषमता है। factor A.B.C.E.E.F.H.I.M. व Q2 के प्राप्तांकों के वितरण में धनात्मक विषमता है। Sk का मान इन सभी में factor में ± 3 से कम है । अतः वितरणों में विषमता कम है । सभी factor में SEm का मान 1.96 से कम है। अतः सभी वितरणों का मध्यमान अपने समूह को Represent कर रहा है । Ku का मान 0.263 से कम है । अतः सभी factor के प्राप्तांकों के वक्र Lepto Kurtic होंगें।

तालिका क्रमांक 2.28

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	5.40	5.43	5.49	0.99	0.22	-0.03	0.04	4.76	6.10
2.	B	4.50	3.75	2.25	2.64	0.59	0.85	0.14	2.50	7.00
3.	C	6.10	5.70	4.90	2.10	0.46	0.57	0.08	4.70	7.50
4.	E	4.40	3.92	2.96	2.32	0.51	0.62	0.13	2.50	6.83
5.	F	7.90	0..20	9.10	1.85	0.41	-0.64	0.07	7.00	9.38
6.	G	8.30	8.30	8.30	1.16	0.25	0.00	0.06	7.30	9.39
7.	H	5.80	5.56	5.08	1.44	0.32	0.49	0.04	4.90	6.23
8.	I	5.70	5.57	5.31	1.40	0.30	0.27	0.04	4.80	6.34
9.	L	6.00	6.75	8.25	2.44	0.54	-0.92	0.13	3.70	8.00
10.	M	4.80	5.16	5.88	1.70	0.38	-0.63	0.06	3.83	6.00
11.	N	7.20	8.00	9.60	2.47	0.55	-0.97	0.11	5.5	9.25
12.	O	3.20	2.72	1.76	1.92	0.42	0.75	0.08	1.61	4.21
13.	Q.1	7.50	8.50	10.50	2.44	0.54	-1..22	0.15	4.5	9.50
14.	Q.2	4.00	3.66	2.98	1.77	0.39	0.87	0.05	2.83	4.50
15.	Q.3	8.00	8.50	9.50	1.98	0.42	-0.17	0.07	7.07	7.50
16.	Q.4	5.10	5.32	5.76	1.00	0.22	-0.66	0.03	4.73	5.90.

उपरोक्त तालिका 2.28 में Factor A.F.L.M.N.Q1.Q3.Q4. के प्राप्तांकों के वितरण में ऋणात्मक विषमता है । एवं Factor B.C.E.H.I.O.Q2 में धनात्मक विषमता है । इन सभी 16 Factor में Sk का मान ± 3 से कम है अतः विषमता है परंतु कम है। Factor G में Sk O आया है अतः वितरण में विषमता नहीं है । प्राप्तांकों का वक्र सामान्य संभावना वक्र है। SEm का मान सभी Factor में 1.96 से कम है । अतः Factor का प्राप्त मध्यमान अपने Group को Represent करताहै । Ku का मान भी सभी Factors में 0.263 से कम है । अतः वक्र Lepto Kurtic (शिखरीय) होंगे ।

तालिका 2.29

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंर्तगत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 20

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	5.90	5.80	6.10	1.62	0.36	-0.18	0.04	5.10	6.50
2.	B	7.50	8.50	10.50	2.44	0.54	-1.22	0.11	5.83	9.50
3.	C	4.40	3.00	0.20	3.12	0.69	1.34	0.19	1.30	7.50
4.	E	3.40	3.10	4.00	2.04	0.45	-0.44	0.06	2.10	4.10
5.	F	3.60	3.33	4.14	1.94	0.43	-0.41	0.05	2.50	4.1
6.	G	2.60	2.50	2.30	1.17	0.26	0.76	0.06	1.40	3.60
7.	H	8.00	8.50	9.50	1.39	0.34	-1.07	0.07	7.25	9.50
8.	I	6.70	7.38	5.34	2.52	0.56	0.80	0.06	4.50	6.50
9.	L	7.90	7.95	7.80	1.48	0.33	0.10	0.06	7.04	9.07
10.	M	3.30	2.90	4.10	2.08	0.46	-0.57	0.07	1.75	4.05
11.	N	5.80	5.83	5.74	1.44	0.32	0.06	0.04	5.16	6.50
12.	O	7.00	7.50	6.00	2.26	0.50	0.66	0.06	6.50	8.50
13.	Q.1	6.30	7.16	4.58	2.02	0.49	1.16	0.04	6.50	7.80
14.	Q.2	5.30	5.40	5.40	1.06	0.23	-0.28	0.03	4.85	6.02
15.	Q.3	4.90	4.00	6.70	2.60	0.58	-1.03	0.13	2.94	7.16
16.	Q.4	5.30	5.50	4.90	1.88	0.42	0.31	0.07	7.10	7.10

उपरोक्त तालिका 2.29 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के 16. PF.Test के प्राप्तांकों में Factor A.B.E.F.H.N. Q2 एवं Q3 में ऋणात्मक विषमता है एवं factor C.G. I. L. N. O. Q1 व Q4 में धनात्मक विषमता है । इन सभी factor में Sk का मान ± 3 से कम है । अतः वितरणों में विषमता कम है। SEm भी 1.96 से कमहे । अतः वितरणों का मध्यमान समूह की प्रतिनिध्यात्मकता को इंगित करता हैं। Ku का मान भी 0.263 से कम है । अतःवक्र Lepto Kurtic होंगे।

तालिका - 2.30

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=20

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	3.50	2.16	0.51	2.96	0.66	0.45	0.09	1.33	4.50
2.	B	5.80	5.66	5.38	1.44	0.32	0.87	0.05	4.80	6.50
3.	C	4.50	3.70	2.10	2.72	0.60	0.88	0.08	2.70	5.50
4.	E	4.60	3.95	2.65	2.04	0.45	0.91	0.11	3.04	6.80
5.	F	5.30	5.40	5.60	1.24	0.27	-0.24	0.04	4.76	6.10
6.	G	7.20	7.40	7.80	2.20	0.49	-0.27	0.05	6.50	8.30
7.	H	7.30	9.77	13.71	2.89	0.64	-2.04	0.15	4.50	9.59
8.	I	3.30	2.94	2.22	2.08	0.46	0.51	0.07	1.75	4.05
9.	L	8.50	9.16	10.48	1.94	0.43	-1.02	0.04	8.50	9.83
10.	M	2.00	1.75	1.25	1.07	0.23	0.70	0.13	1.12	2.37
11.	N	3.80	3.50	2.90	1.92	0.43	0.46	0.06	2.50	4.50
12.	O	6.70	7.26	8.38	2.02	0.45	0.87	0.04	6.50	8.03
13.	Q.1	7.20	7.38	7.76	0.94	0.21	-0.57	0.03	6.83	7.94
14.	Q.2	6.30	5.83	4.89	2.18	0.48	0.63	0.10	5.00	8.50
15.	Q.3	5.30	5.44	5.72	1.04	0.23	-0.39	0.03	4.80	6.02
16.	Q.4	4.50	5.04	6.12	1.90	0.42	-0.85	0.10	2.50	5.95

उपरोक्त तालिका 2.30 में Factor F.G.H.L.Q1.Q3.Q4. में ऋणात्मक विषमता है। एवं Factor A.B.C.E.I.M.N.O.Q2. में धनात्मक विषमता है। इन सभी 16 Factors में Sk का मान ± 3 से कम है अतः सभी Factors में विषमता है पर न्यून हैं। SEm 1.96 से कम है अतः सभी वितरणों के mean अपने-अपने Group को प्रतिनिध्यात्मकता को इंगित करते हैं। Ku का मान 0.263 से सभी Factors में कम है अतः सभी वक्र Lepto kurtic होंगें।

तालिका - 2.31

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=20

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	5.30	5.37	5.16	0.86	0.19	0.24	0.03	4.75	6.00
2.	B	6.70	7.04	6.02	1.82	0.40	0.56	0.07	5.70	7.95
3.	C	3.60	3.40	4.00	1.72	0.38	0.34	0.05	2.50	4.31
4.	E	4.80	5.10	4.20	1.44	0.32	0.60	0.05	4.00	5.88
5.	F	4.60	4.00	5.80	1.84	0.41	0.97	0.10	3.16	6.50
6.	G	6.00	6.75	4.50	2.48	0.55	0.90	0.09	3.80	6.75
7.	H	5.10	5.30	4.70	1.20	0.26	0.48	0.04	4.63	5.96
8.	I	8.10	9.50	5.30	1.56	0.34	2.10	0.08	6.80	9.50
9.	L	6.60	7.10	8.10	2.10	0.46	- 0.69	0.07	5.50	8.00
10.	M	5.30	7.43	1.04	1.66	0.37	3.84	0.04	4.76	6.10
11.	N	6.70	7.10	7.90	2.22	0.49	- 0.54	0.09	5.10	8.20
12.	O	4.60	3.75	2.05	2.86	0.03	0.87	0.12	2.50	6.50
13.	Q.1	5.50	4.30	1.90	2.68	0.59	1.32	0.16	3.30	8.50
14.	Q.2	5.20	5.30	5.50	1.70	0.38	- 0.17	0.04	4.64	6.07
15.	Q.3	6.80	7.30	8.30	2.30	0.51	0.63	0.07	5.80	8.30
16.	Q.4	5.30	5.44	5.72	1.06	0.23	- 0.39	0.03	4.80	6.00

उपरोक्त तालिका 2.31 में Factor A.B.C.E.F.G.H.I.M.O. Q_1 व Q_3 में धनात्मक विषमता है। इन सभी का Sk मान ± 3 से कम है। अतः वितरणों में विषमता है परंतु कम है। SEm का मान भी 1.96 से कम है। अतः सभी समूहों के मध्यमान mean अपने समूह के प्रतिनिधित्वता को Show कर रहे हैं। Ku का मान 0.263 से कम हैं। अतः सभी Factors के वितरण Lepto Kurtic (शिखरीय) होंगे।

तालिका - 2.32

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंतर्गत व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

व्यक्तित्वशीलगुण 'OUTGOING' (EXTROVERT) बर्हिमुखी और 'RESERVED' (INTROVERT) अंर्तमुखी (FACTOR-A) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=120

क्रमांक S.N.	कारक Factor	समूह Group	आवृत्ति Frequency	मध्यमान mean	प्रमाणिक विचलन S.D.	"टी" - मूल्य "T" Value	सार्थकता Significance
1.	वात प्रकृति	छात्राएँ	20	5.30	2.60	2.40	Significant
		छात्र	20	4.00	2.34		
2.	पित्त प्रकृति	छात्राएँ	20	5.40	0.99	1.17	Non Significant
		छात्र	20	5.90	1.62		
3.	कफ प्रकृति	छात्राएँ	20	3.50	2.96	2.61	Significant
		छात्र	20	5.30	0.86		

स्वतंत्रता के अंश df. = (20-1) + (20-1) = 38

0.05 = 2.02

0.01= 2.71

उपरोक्त तालिका 2.32 में (16P.F.) न्यादर्श में तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र व छात्राएँ हैं। इन्हें पथप्रर्दशी अध्ययन के लिये चयनित किया गया है। एवं छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व मापन के लिए व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16P.F.) परीक्षण द्वारा सोलह कारकों में प्राप्त अंकों के मध्यमान व प्रामाणिक विचलन के आधार पर Factor "A" के लिये "टी" मूल्य ज्ञात किया गया है। छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों में अंतर आने पर उनके अलग व्यक्तित्व का पता चलता है। इसका वर्णन निम्नानुसार है -

वात प्रकृति प्रधान छात्राओं एवं छात्रों के मध्यमान के आधार पर T. Value 2.40 प्राप्त हुआ जो 0.5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर को प्रदर्शित कर रहा है। वात प्रंकृति प्रधान छात्राओं में उभयमुरवी अर्थात अंर्तमुरवी एवं बहिर्मुरवी दोनों गुण पाये जाते हैं।

से कम है। पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं का मध्यमान औसत आया है। इनके प्राप्तांको के मध्यमान के आधार पर T. Value 1.17 प्राप्त हुआ जो छात्र एवं छात्राओं में सार्थक अंतर को प्रकट नहीं करता। अतः यह कहा जा सकता है कि पित्त प्रकृति प्रधान छात्र व छात्राओं में उभयमुरवी अर्थात अंर्तमुरवता व बर्हिमुरवता दोनों ही गुण परिस्थितीनुसार प्रदर्शित होते हैं।

कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया जिसमें ज्ञात होता है कि कफ प्रकृति छात्राएँ अंर्तमुरवी हैं एवं छात्रों में अंर्तमुरवी व बर्हिमुरवी दोनों ही गुण प्राप्त होते हैं। अर्थात छात्र उभयमुरवी पाये गये।

अंर्तमुरवी व्यक्ति अलग रहने वाला, शान्त, आलोचनात्मक, बहिर्मुरवी व्यक्ति मिलनसार उदार, सक्रिय होता है। इस कारक की विस्तृत विवेचना अध्याय 4 में की गई है। पथप्रदर्शी अध्ययन में संक्षिप्त व्यारव्या की जा रही है।

तालिका - 2.33

व्यक्तित्वशीलगुण 'MORE INTELLIGENTE ' अधिक बुद्धिमान और 'LESS INTELLIGENTE ' कम बुद्धिमान (FACTOR-B) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=120

क्रमांक S.N.	कारक Factor	समूह Group	आवृत्ति Frequency	मध्यमान mean	प्रमाणिक विचलन S.D.	"टी" - मूल्य "T" Value	सार्थकता Significance
1.	वात प्रकृति	छात्राएँ	20	3.20	1.70	0.19	Non Significant
		छात्र	20	3.10	1.48		
2.	पित्त प्रकृति	छात्राएँ	20	4.50	2.64	3.73	Significant
		छात्र	20	7.50	2.44		
3.	कफ प्रकृति	छात्राएँ	20	5.80	1.44	1.73	NonSignificant
		छात्र	20	6.70	1.82		

स्वतंत्रता के अंश df. = (20-1) + (20-1) = 38 — 0.05 = 2.02

0.01= 2.71

उपरोक्त तालिका 2.33 के अवलोकन से स्पष्ट है कि इसमें वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के व्यक्तित्व निर्धारण के लिये सोलह कारक मापनी के Factor B जो कि व्यक्ति की Intelligence को बताता है इसका वर्णन है। प्राप्त परिणामों से ज्ञात होता है कि वात प्रकृति प्रधान छात्राएँ एवं छात्र दोनों ही कम बुद्धिमान पाये गये क्योंकि 16P.F.Test में Factor "B" में छात्र-छात्राओं का मध्यमान औसत से कम आया है एवं सार्थक अंतर नहीं है। यह कहा जा सकता है कि वात प्रकृति के व्यक्ति कम बुद्धिमान एवं धीमी गति से सीरवने वाले होते है। पैतिक प्रकृति के छात्र छात्राओं में सार्थक अंतर प्राप्त होता है एवं छात्राओं का मध्यमान औसत है एवं छात्रों का औसत से अधिक है। इस आधार पर पैत्तिक प्रकृति की छात्राएँ औसत बुद्धि की पाई गई एवं पित्त प्रकृति के छात्र अधिक बुद्दिमान पाये गये। अधिक बुद्दिमान व्यक्ति तेजी से सीरवने वाले व विचारों को तुरंत ग्रहण करने वाले होते हैं। Factor B के लिये कफ प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के जो परिणाम प्राप्त हुए हैं उस के आधार पर छात्राएँ औसत बुद्दि की पाई गई एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र अधिक बुद्दिमान पाये गये इनमें बुद्दि की तीव्रता के कारण सीरवने की गति अधिक होती है ।

तालिका - 2.34

व्यक्तित्वशीलगुण 'EMOTIONALLY STABLE ' संवेगात्मक रूप से स्थिर और 'AFFECTED BY FELLINGS' भावनात्मक रूप से प्रभावित (FACTOR-C) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=120

क्रमांक S.N.	कारक Factor	समूह Group	आवृत्ति Frequency	मध्यमान mean	प्रमाणिक विचलन S.D.	"टी"- मूल्य "T" Value	सार्थकता Significance
1.	वात प्रकृति	छात्राएँ	20	5.30	1.53	0.58	Non Significant
		छात्र	20	5.00	1.70		
2.	पित्त प्रकृति	छात्राएँ	20	6.10	2.10	2.02	Significant
		छात्र	20	4.40	3.12		
3.	कफ प्रकृति	छात्राएँ	20	4.50	2.72	1.25	Non Significant
		छात्र	20	3.60	1.72		

स्वतंत्रता के अंश df. = (20-1) + (20-1) = 38

0.05 = 2.02

0.01= 2.71

उपरोक्त तालिका 2.34 में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व से संबंधित Factor C के परिणाम दर्शाये गये हैं। Factor C जो कि व्यक्ति के संवेगों के बारे में जानकारी देता है। वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वात प्रकृति के छात्र छात्राएँ संवेगों से शीघ्र प्रभावित होने वाले जटिल संवेगात्मक परिस्थितियों का सामना करने वाले व अल्प निद्रांलु होते है।

पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं में मध्यमान औसत आया है जबकि पित्त प्रकृति के छात्रों का मध्यमान औसत से कम आया है । अतः कहा जा सकता है कि पित्त प्रकृति के छात्र संवेगों में शीघ्र प्रभावित होने वाले व अह्म का विस्तार कम व जटिल कुंठाओं को न सहने वाले होते है।

कफ प्रकृति के छात्रों एवं छात्राओं के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है । परंतु कफ छात्राओं का मध्यमान औसत है एवं छात्रों का औसत से कम है। अतः कफ प्रकृति की छात्राओं के व्यक्तित्व के बारे में यह कहा जा सकता है। कि ऐसे व्यक्ति (person) संवेगों से शीघ्र

प्रभावित होने वाले परंतु यथार्थता का सामना करने वाले होते हैं। इनके संवेगों में स्थिरता भी पाई जाती है। इनका अहं विस्तार उच्च (Higher Ego Strenth) होता है। कफ प्रकृति के छात्रों में अहं विस्तार कम पाया गया एवं ऐसे व्यक्ति जिऩके प्राप्तांकों का मध्यमान 16 P.F.Test में कम (औसत 5 से कम) आता है उनके व्यक्तित्व की व्यारव्या में यह कहा गया है कि ऐसे व्यक्ति संवेगों में शीघ्र प्रभावित होते हैं।

वात प्रकृति प्रधान छात्र- छात्राओं, पित्त प्रकृति के छात्राएँ एवं कफ प्रकृति के छात्राओं का मध्यमान औसत है अतः उपरोक्त सभी गुण इन समूहों में औसत मात्रा में पाये जावेंगे ।

तालिका - 2.35

व्यक्तित्वशीलगुण 'ASSERITIVE ' प्रभुत्वशाली और 'HUMBLE' उदार (FACTOR-E) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=120

क्रमांक S.N.	कारक Factor	समूह Group	आवृत्ति Frequency	मध्यमान mean	प्रमाणिक विचलन S.D.	"टी" - मूल्य "T" Value	सार्थकता Significance
1.	वात प्रकृति	छात्राएँ	20	8.40	1.61	4.00	Significant
		छात्र	20	6.10	2.00		
2.	पित्त प्रकृति	छात्राएँ	20	4.40	2.32	1.44	Non Significant
		छात्र	20	3.40	2.04		
3.	कफ प्रकृति	छात्राएँ	20	4.60	2.04	0.35	Non Significant
		छात्र	20	4.80	1.44		

स्वतंत्रता के अंश df. = (20-1) + (20-1) = 38 0.05 = 2.02

0.01= 2.71

उपरोक्त तालिका 2.35 में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व मूल्यांकन में Factor E से संबधित परिणामों का दर्शाया गया है। वात प्रकृति के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में Factor E में सार्थक अंतर प्राप्त हो रहा है। वात प्रकृति की छात्राएँ प्रभुत्व शाली व्यक्तित्व की पाई गई जबकि वात प्रकृति के छात्रों में प्रभुत्व जमाने के साथ-साथ उदारता का भी गुण प्राप्त हुआ । वात प्रकृति को छात्राएँ उग्र जिद्दी व स्वतंत्र विचारों वाली पाई गई।

इसी प्रकार पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र छात्राओं में सार्थक अंतर नहीं है दोनों ही समूहों के छात्र-छात्राओं का मध्यमान औसत से कम आया है। अतः परिणामों के आधार पर पाया गया कि पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं में उदारता एवं आज्ञाकारिता व दूसरों पर निर्भरता एवं आलसीपन के गुण पाये गये।

कफ प्रकृति के छात्र छात्राओं में मध्यमान औसत ज्ञात हुआ है अतः इस प्रकार के व्यक्तियों में उदारता, प्रभुत्वता, उग्रता, आज्ञाकारिता दूसरों पर निर्भरता स्वतंत्रता एवं अपने ही सिद्धातों पर चलना इत्यादि गुण दोष औसत मात्रा में पाये जाते हैं।

तालिका - 2.36

व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) द्वारा समस्त वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

व्यक्तित्वशीलगुण 'HAPPY GO LUCKY' उत्साही और 'SOBER' शालीन (FACTOR-F) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=120

क्रमांक S.N.	कारक Factor	समूह Group	आवृत्ति Frequency	मध्यमान mean	प्रमाणिक विचलन S.D.	"टी"-मूल्य "T" Value	सार्थकता Significance
1.	वात प्रकृति	छात्राएँ	20	7.10	2.65	2.65	Significant
		छात्र	20	4.90	2.60		
2.	पित्त प्रकृति	छात्राएँ	20	7.90	1.85	7.17	Significant
		छात्र	20	3.60	1.94		
3.	कफ प्रकृति	छात्राएँ	20	5.30	1.24	1.41	Non Significant
		छात्र	20	4.60	1.84		

स्वतंत्रता के अंश df. = (20-1) + (20-1) = 38 0.05 = 2.02

0.01= 2.71

उपरोक्त तालिका 2.36 में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान द्वारा छात्राओं के व्यक्तित्व का निर्धारण Factor F के अंतर्गत आने वाले गुण दोषों के आधार पर किया गया है।

वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान औसत से अधिक एवं छात्रों का औसत आया है। अतः छात्र छात्राओं के प्राप्तांकों में "T" Value के आधार पर कहा जा सकता है कि इनमें सार्थक अंतर है। वात प्रकृति की छात्राएँ उत्साही सक्रिय बातूनी पाई गईं। एवं इनमें नेतृत्व का गुण पाया गया जबकि वात प्रकृति के छात्रों में उपरोक्त गुणों के अलावा शालीनता, गंभीरता एवं निराशावादी आदि गुण भी पाये गये।

पित्त प्रकृति की छात्राओं में भी नेतृत्व क्रियाशीलता, उत्साह एवं सक्रिय आदि गुण पाये गये। जबकि पित्त प्रकृति के छात्रों में शालीनता, गंभीरता एवं विश्वसनीयता आदि गुण पाये गये।

कफ प्रकृति के छात्र छात्राओं में भी सार्थक अंतर नहीं पाया गया क्योंकि दोनों ही समूहों

को मध्यमान औसत प्राप्त हुआ है। अतः एवं समूहों में उपरोक्त सभी गुण औसत मात्रा में पाये गये।

पथप्रदर्शी अध्ययन के अंर्तगत व्यक्तित्व मापन के 16 कारकों में से केवल पाँच कारकों द्वारा छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्य तुलना एवं व्यक्तित्व विश्लेषण की व्यारव्या की गई है ।

पूर्वगामी अध्ययन का मुरव्य रुप से उद्‌देश्य आंकड़ों को संकलन, विश्लेषण एवं सांरिव्यकीय गणना में होने वाली कठिनाईयों की जानकारी प्राप्त करना था । इस प्रकार के लघु अध्ययन से यह पता चलता है कि व्यक्तियों की प्रकृति (वात, पित्त, कफ) एवं इनका व्यक्तित्व परीक्षण के द्वारा व्यक्तित्व मूल्यांकन करने में किसी भी प्रकार की कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा। आंकड़ों के संकलन में लोगों ने पूरा सहयोग दिया ।

इस पूर्वगामी अध्ययन के परिणामों से यह ज्ञात होता है कि वात, पित्त एवं कफ प्रकृति का व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। अतः स्पष्ट है कि इसका प्रयोग अनुसंधान कार्य हेतु किया जा सकता है।

2.5 परीक्षण प्रशासन

1. हस्तगत नाड़ी परीक्षण *(Nerve Test)*

छात्र एवं छात्राओं का नाड़ी परीक्षण करने के लिये सर्वप्रथम उन्हें आरामपूर्वक बैठने को कहा और नाड़ी परीक्षण के संबंध में जानकारी एवं निर्देश दिए। एवं छात्र - छात्राओं का अलग अलग समय में नाड़ी परीक्षण किया गया उन्हें इस बारे में बतलाया गया कि -

1. मैं एक Project Work के रूप में Research (Ph.D.) कर रही हूँ। इसके लिये मुझे आप लोगों के सहयोग की आवश्यकता है। आप लोगों के हाथ की नाड़ी परीक्षा की जावेगी एवं जानकारी एकत्र की जावेगी कि आप आयुर्वेद के अनुसार किस प्रकृति के व्यक्ति हैं।

   (वात प्रकृति, पित्त प्रकृति एवं कफ प्रकृति के संबंध में जानकारी दी।)

2. नाड़ी परीक्षण संबंधी आंकड़े लिरवने के बाद में आप लोगों को एक शाब्दिक प्रश्नावली दूँगी जिसमें 84 प्रश्न हैं जो आपके व्यक्तित्व व प्रकृति से संबंध रखते हैं इन दोनों के फलांकन के माध्यम से आयुर्वेद के अनुसार आपकी प्रकृति (व्यक्तित्व) का निर्धारण होगा।

3. नाड़ी परीक्षण से पहले मैं कुछ आवश्यक जानकारी हेतु कुछ प्रश्न पूछूंगी जिनका आप सही जबाव देंगे तभी कार्य में सफलता प्राप्त हो सकेगी। ये प्रश्न है जैसे -

   1. इस समय आपको भूरव या प्यास तो नहीं लगी ?
   2. क्या आपने अभी भोजन किया है ?
   3. क्या अभी - अभी आप धूप से आ रहे हैं ?
   4. क्या आपने अभी - अभी व्यायाम किया है ?
   5. क्या आपको कोई बीमारी है ? यदि है तो उस संबंध में जानकारी देवें। बीमारी जैसे सर्दी, पेट की तकलीफ , सिर दर्द, अन्य प्रकार के दर्द इत्यादि।
   6. उपरोक्त प्रकार के प्रश्नों की जानकारी प्राप्त होने के बाद ही नाड़ी परीक्षण किया जायेगा क्योंकि उपरोक्त प्रकार की परिस्थितियां पाई जाने पर नाड़ी परीक्षण में त्रुटि की संभावना है अतः आप सही जानकारी दें।
   7. किसी को कुछ पूछना हो तो अभी पूछ लीजिये और एक - एक करके मेरे पास आकर कुर्सी पर आरामपूर्व बैठकर कार्य शुरु करने दीजिये ।

2. वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली

सर्वप्रथम न्यादर्श के चयन के लिये Class 12th के छात्र - छात्राओं को इस अनुसंधान कार्य के बारे में जानकारी दी एवं इसके उद्देश्य व महत्व को बताया । तत्पश्चात उनसे सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करके उन्हें प्रश्नावली दी व निम्न निर्देश दिये -

1. आपको एक प्रश्नावली दी जा रही है जिसमें 84 प्रश्न हैं। प्रश्नावली में प्रश्न आपके शारीरिक रूपरंग, मानसिक एवं सामाजिक लक्षणों के बारे मे जानकारी हेतु हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिये 3 संभावित जवाब हैं उसमें से किसी एक में आपको सही (✓) का निशान लगाना है। जो आप पर लागू होता है। कोई भी जवाब सही या गलत नहीं है। आपका जवाब आपके व्यक्तित्व के गुणों से संबंधित हैं।

2. इस प्रश्नावली के माध्यम से आयुर्वेद के अनुसार आपके व्यक्तित्व का (प्रकृति का) पता चलेगा कि आप वात प्रकृति प्रधान हैं कि पित्त प्रकृति प्रधान हैं कि कफ प्रकृति प्रधान हैं। (छात्र - छात्राओं को वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान व्यक्तित्व के बारे में जानकारी दी)।

3. प्रश्नावली को पूरा करने के लिये समय सीमा निश्चित नहीं है फिर भी 30 में 40 मिनिट के अंदर पूरा करने की कोशिश कीजिये । सभी प्रश्नों का जवाब आपको देना है। कोई प्रश्न छोड़ना नहीं है।

4. प्रश्नावली के ऊपर मांगी गई जानकारी अच्छी तरह से भर दीजिये जैसे नाम, आयु, शिक्षा इत्यादि ।

5. किसी को कुछ समझ में न आया हो तो पूछ सकते हैं। प्रश्नावली में उदाहरण सहित निर्देश दिये गये हैं। उन्हें पूरा पढ़ने के बाद कार्य शुरु करना है। इस प्रकार 35 मिनट में कार्य पूरा करवाया ।

   वात पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली को छात्र - छात्राओं को भरवाकर फलांकन किया गया एवं वात पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान 40- 40 छात्र - छात्राओं के तीन समूह किये तत्पश्चात न्यादर्श के लिये चयनित इन छात्र - छात्राओं को 16 P.F. Test दिया।

3. व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.)

1. आपको 187 प्रश्नों की एक पुस्तिका (प्रश्नावली) दी जा रही है। प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक व्यक्तिगत परीक्षण हैं जिसके द्वारा आपके व्यक्तित्व का निर्धारण होगा

2. इस परीक्षण के माध्यम से व्यक्तित्व के 16 कारकों जैसे अंर्तमुरवी, बहिर्मुरवी, उदार, प्रभुत्वशाली, कम बुद्धिमान, अधिक बुद्धिमान इत्यादि कारकों के आधार पर आपके व्यक्तित्व का मूल्यांकन होगा ।

3. इस पुस्तिका के साथ आपको एक Answer sheet दी जा रही है। पुस्तिका में कोई भी निशान नहीं लगाना है सभी उत्तर उत्तर पत्र में देना है।

4. प्रत्येक प्रश्न के तीन संभावित उत्तर है जो उत्तर आपसे आपके ऊपर लागू होता है उसे (x) के निशान के रुप में उत्तर पत्र में बने डिब्बे में भरना है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने के लिए Answer sheet में प्रश्न क्रमांक के आगे 3 बॉक्स बने हैं आप अपना उत्तर a वाले उत्तर के लिये चुनते हैं तो बाएं वाले रवाने में बॉक्स के अन्दर (x) क्रास का निशान लगाइये। यदि आपका उत्तर b वाला है तो बीच वाले रवानें ने निशान लगाइये । इसी तरह से आपका उत्तर c वाला है तो दाहिने वाले रवाने के अंदर निशान लगा दीजिये ।

5. उत्तर प्रपत्र में पूछी गई पूरी जानकारी पूरी तरह से भर दीजिये जैसे नाम आदि।

6. सभी प्रश्नों का उत्तर 40 मिनिट में आपको देना है। कोई भी प्रश्न छोड़ना नहीं है।

7. पुस्तिका के ऊपर दी गई जानकारी एवं निर्देशों को अच्छी तरह से पढ़ने के बाद उत्तर देना शुरु करिये । 40 मिनिट में परीक्षण के उत्तर प्रपत्र भरवाकर प्राप्त किये ।

अध्याय-3

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

3.1 समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

3.2 समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधीप्राप्तांको का आवृत्ति वितरण एवं आवृत्ति प्रतिशत

3.3 समस्त छात्राओं एवं समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

3.4 व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूहों का क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

3.5 व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

3.6 व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सात्विक, राजसिक एवं तामसिक प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरण शीलता

3.7 समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं व छात्रों के प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

3.8 समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं व छात्रों के सात्विक, राजसिक एवं तामसिक प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम



अध्याय-3

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

3.1 समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

3.2 समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधीप्राप्तांको का आवृत्ति वितरण एवं आवृत्ति प्रतिशत

3.3 समस्त छात्राओं एवं समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

3.4 व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूहों का क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

3.5 व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

3.6 व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सात्विक, राजसिक एवं तामसिक प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरण शीलता

3.7 समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं व छात्रों के प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

3.8 समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं व छात्रों के सात्विक, राजसिक एवं तामसिक प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

किसी भी शोध कार्य में आंकड़ों का एकत्रीकरण (Date Collection) एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। बिना यथायोग्य आंकड़ों के शोध का विषय प्रतिपादन, विश्लेषण एवं प्रस्तुतिकरण तथ्यहीन होने के साथ ही अविश्वसनीय माना जाता है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य में आवश्यक स्थलों पर उचित आंकड़े प्रस्तुत प्रस्तुत किये गये हैं जो रोचक व पूर्ण प्रामाणिक हैं। यद्यपि आंकड़ों की संख्या अनन्त है तथापि शोधकार्य में परिश्रमपूर्वक यथा स्थानों पर आवश्यक आंकड़े दिये हैं जो भावी शोध जिज्ञासुओं के लिये सहायक सिद्ध होंगे। शोध कार्य के अंतर्गत यह प्रयत्न किया गया है कि हर प्रस्तुति के साथ सूचनार्थ आंकड़े उसके प्रमाणीकरण हेतु अवश्य दिये जावें । और इस विश्वास के साथ कि आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण विषय को समझने एवं उसकी गहराई तक पहुँचने में अवश्य सहायक होगा ।

जितना महत्वपूर्ण आंकड़ों का संकलन है उतना ही महत्वपूर्ण है उसको व्यवस्थित करना । यह व्यवस्था वर्गीकरण व सारणीयन के द्वारा होती है। यह केवल महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि आवश्यक भी है क्योंकि व्यवस्थित एवं वर्गीकृत करने पर समंक स्पष्ट एवं सरल हो जाते हैं । एवं व्याख्यात्मक विवेचना के कार्य को सुगमता प्रदान करते हैं। जिससे निष्कर्ष पर आसानी से पहुंचा जा सकता है।

पारिभाषित रूप में 'सारणीयन वह पद्धति है जिसके द्वारा प्राप्त विश्लेषण को स्थायी रूप से लेखबद्ध किया जाता है तथा सामान्य बातों को यथायोग्य स्थिति में रखकर उसे तुलना के योग्य बनाया जाता है।'

(सेक्रिस्ट)

प्रस्तुत शोधकार्य के लिये स्वयं शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श में चयनित जबलपुर क्षेत्र के स्कूली छात्र - छात्राओं (Class 12th) का वात, पित्त एवं कफ प्रकृति का मापन प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली एवं नाड़ी परीक्षण द्वारा किया गया। सर्वप्रथम प्रश्नावली में दिये गये निर्देशानुसार प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली का प्रशासन 200 छात्राओं एवं 200 छात्रों पर किया गया जिसमें से कुल 120 छात्राओं एवं 120 छात्रों को न्यादर्श के लिये चयनित किया गया । फिर इन 120 छात्राओं एवं 120 छात्रों को 40 -40 के तीन समूहों में समूहबद्ध किया गया । 120 छात्रों को 40 -40 के तीन - तीन समूहों में समूहबद्ध किया गया 120 छात्रों के 3 समूह 40 वात प्रकृति प्रधान, 40 पित्त प्रकृति प्रधान, 40 कफ प्रकृति प्रधान । इसी प्रकार छात्रों को भी समूहबद्ध कर दिया गया । परीक्षण प्राप्तांक एवं फलांकन के आधार पर ही समूहीकरण किया गया । तत्पश्चात इन्ही समूहों पर व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) परीक्षण (Psychlogical Test)

का प्रशासन करके प्राप्तांक प्राप्त किये । संपूर्ण न्यादर्श के वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली के समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के प्राप्तांकों का आवृति वितरण एवं केन्द्रीय वितरण आगे तालिकाओं में रेखाचित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

वर्गीकरण एवं सारणीयन के पश्चात समंकों का चित्रों द्वारा प्रदर्शन भी महत्वपूर्ण कार्य है क्योंकि चित्र किसी जटिल स्थिति के स्वरूप को दिरवने में हमारी मदद करते हैं । जिस प्रकार एक मानचित्र हमें एक विशाल देश का विहंगम दृश्य प्रदान करता है ठीक उसी प्रकार चित्र एक दृष्टि मे संरव्यात्मक जटिल तथ्यों का संपूर्ण अर्थ समझने में हमारे लिये सहायक होते हैं।

(मोरोन)

प्रस्तुत अध्याय 3 में संकलित आंकड़ों का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है एवं इनका रेखाचित्रों द्वारा प्रदर्शन किया गया है।

तालिका 3.37

3.1 समस्त छात्र- छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

समस्त छात्र - छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=240 (छात्र - छात्राएँ)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0.66	0.27
40-44	2	0.83	240	100	1.33	0.55
35-39	2	0.83	238	99.16	4.33	1.80
30-34	9	3.75	236	98.33	17.66	7.35
25-29	42	17.50	227	94.58	33.33	13.88
20-24	49	20.41	185	77.08	58.66	24.44
15-19	85	35.41	136	56.66	61.33	25.55
10-14	50	20.83	51.00	21.25	45.33	18.88
5-9	1	0.41	1.00	0.41	17.00	7.08
0-4	0	0	0	0	0	0
	N = 240	100%				

उपरोक्त तालिका 3.37 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि संपूर्ण न्यादर्श में सर्वाधिक आवृति 85 है जो कि 15-19 वर्गान्तर के मध्य में है । सबसे न्यूनतम आवृत्ति 1 है जो 5-9 वर्गान्तर के मध्य में है । उच्चतम वर्गान्तर 40-44 है जिसकी आवृति 2 है इस प्रकार अन्य वर्गान्तरों में प्रसमान्य वितरण की उन्मुखीकृत आवृत्तियाँ हैं। इस वर्गान्तर में मध्य से 1 वर्गान्तर नीचे की ओर सर्वाधिक आवृति पाई गई यह आवृत्ति 85 है जो 15-19 वर्गान्तर में है। एवं इसके दोनों छोर (उच्च निम्न) मे आवृत्तियां क्रमशः कम होती गई हैं ।

रेखाचित्र 1 में समस्त छात्र - छात्राओंके वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेखाचित्र से भी स्पष्ट है कि वक्र में वात संबधी प्राप्तांकों की सर्वाधिक आवृति 85 है । यह आवृति मध्य के वर्गान्तर से एक वर्गान्तर नीचे की ओर है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

रेखाचित्र 2 में समस्त छात्र - छात्राओंके वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों की सरलित आवृति (Smooth Frequency) को दर्शाया गया है।

तालिका 3.38

समस्त छात्र - छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=240 (छात्र - छात्राएँ)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
19.62	20.61	22.59	6.19	0.39	- 0.47	0.02	15.02	23.98

संपूर्ण न्यादर्श में समस्त छात्र-छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के माप में मध्यमान (Mean) 19.62, मध्यांक (Mdn) 20.61, बहुलांक (Mode) 22.59 आया है। केन्द्रीय प्रवृत्ति के इन मापों में अन्तर है चूंकि मध्यामान का मूल्य सबसे कम एवं बहुलांक का मध्यमान से अधिक है । अतः यह वितरण ऋणात्मक विषम वितरण है । Sk -0.47 है जो ± 3 से कम है अतः वितरण में विषमता है पर कम है । इसके उपरांत SEm 0.39 आया जो 1.96 से कम है अतः वितरण का मध्यमान पूरे समूह का प्रतिनिधित्व कर रहा है। एवं Ku का मान 0.02 आया है। जो कि 0.263 से कम है अतः ये वक्र Lepto Kurtic Type का है। अर्थात सामान्य संभावना वक्र अधिक शिखरीय (Peaked) है।

रेखाचित्र 15 में समस्त छात्र - छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान छात्र-छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का मान (21.87) है ।

तालिका 3.39

समस्त छात्र - छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=240 (छात्र - छात्राएँ)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0.33	0.13
35-39	1	0.41	240	100	1.66	0.69
30-34	4	1.66	239	99.58	20.00	8.33
25-29	55	22.91	235	97.91	58.66	24.66
20-24	117	48.75	180	75.00	75.66	31.52
15-19	55	22.91	63	26.25	59.66	24.85
10-14	7	2.91	8	3.33	21.00	8.75
5-9	1	0.41	1	0.41	2.66	1.10
0-4	0	0	0	0	0.33	0.13
	N = 240	100%				

उपरोक्त तालिका 3.39 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि संपूर्ण न्यादर्श में सर्वाधिक आवृति 117 है जो 20-24 वर्गान्तर के मध्य में है । सबसे न्यूनतम आवृत्ति 1 है जो दो वर्गान्तरों 35-39 एवं 5-9 के मध्य में है । उच्चतम वर्गान्तर 35-.39 है जिसकी अवृति 1 है । इसी प्रकार अन्य वर्गान्तरों से प्रसमान्य वितरण की उन्मुरवीकृत आवृतियाँ हैं।

इस वर्गान्तर के मध्य में सर्वाधिक आवृति है एवं इसके दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्तियां क्रमशः कम होती गई हैं। जिससे ज्ञात होता है कि उक्त वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेरवाचित्र 1 में समस्त छात्र - छात्राओंके वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेरवाचित्र सेभी स्पष्ट हैकि वक्र में पित्त संबंधी प्राप्तांकों की सर्वाधिक आवृति 117 है जो मध्य में है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

रेरवाचित्र 2 में समस्त छात्र - छात्राओंके वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों की सरलित आवृति (Smooth Frequency) को दर्शाया गया है।

तालिका 3.40

समस्त छात्र - छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=240 (छात्र - छात्राएँ)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
21.87	21.93	22.05	4.23	-0.04	- 0.27	0.02	19.22	30.13

संपूर्ण न्यादर्श में समस्त छात्र - छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण मापों में मध्यमान (Mean) 21.87, मध्यांक (Mdn) 21.93 एवं बहुलांक 22.05 आया है इन तीनों में विशेष अंतर नहीं हैं परंतु बहुलांक मध्यमान से ज्यादा है अर्थात वितरण ऋणात्मक विषम वितरण है । Sk के मान - 0.27 है जो I ± 3 से कम है अर्थात वितरण में विषमता है परंतु कम है । SEm 0.04 है जो 1.96 से कम है जो सिद्ध करता है मध्यमान पूरे समूह की प्रतिनिध्यात्मकता को इंगित कर रहा है एवं हमारा वक्र सामान्य संभावना वक्र (Normal Probability Curve) की ओर है । Ku का मान 0.02 है। 0.263 से कम है अर्थात यह वक्र भी Lepto Kurtic (शिखरीय) है।

रेखाचित्र 15 में समस्त छात्र - छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान छात्र- छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का (21.87) है ।

तालिका 3.41

समस्त छात्र - छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=240 (छात्र - छात्राएँ)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0	0
35-39	0	0	0	0	0	0
30-34	16	6.66	2.40	100	5.33	2.22
25-29	51	21.25	224	93.33	22.33	9.30
20-24	91	37.91	173	72.08	52.66	21.94
15-19	68	28.33	82.00	34.16	70.00	29.16
10-14	12	5.00	14.00	5.83	57.00	23.75
5-9	2	0.83	2.00	0.83	27.33	11.38
0-4	0	0	0	0	4.66	1.94
	N = 240	100%				

उपरोक्त तालिका 3.41 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि संपूर्ण न्यादर्श में सर्वाधिक आवृति 91 है जो 20-24 वर्गान्तर के मध्य में है। सबसे न्यूनतम आवृति 2 है जो 5-9 वर्गान्तर के मध्य में है। उच्चतम वर्गान्तर 30-34 है जिसमें आवृत्ति 16 है। इसी प्रकार अन्य वर्गान्तरों में प्रसमान्य वितरण की उन्मुरवीकृत आवृत्तियाँ हैं। इस वर्गान्तर के मध्य में सर्वाधिक आवृति 91 पाई गई जो 20-24 वर्गान्तर के मध्य में है। एवं इसके दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्तियां क्रमशः कम होती गई है। इससे यह ज्ञात होता है कि वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेरवाचित्र 1 में समस्त छात्र - छात्राओंके वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों को आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेरवाचित्र सेभी स्पष्ट हैकि वक्र में कफ संबंधी प्राप्तांकों की सर्वाधिक आवृति 91 है जो मध्य में है। अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेरवाचित्र 2 में समस्त छात्र - छात्राओंके वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों की सरलित आवृति (Smooth Frequency) को दर्शाया गया है।

तालिका 3.42

समस्त छात्र - छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=240 (छात्र - छात्राएँ)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
21.68	21.58	21.40	5.08	0.32	0.05	0.01	17.88	25.18

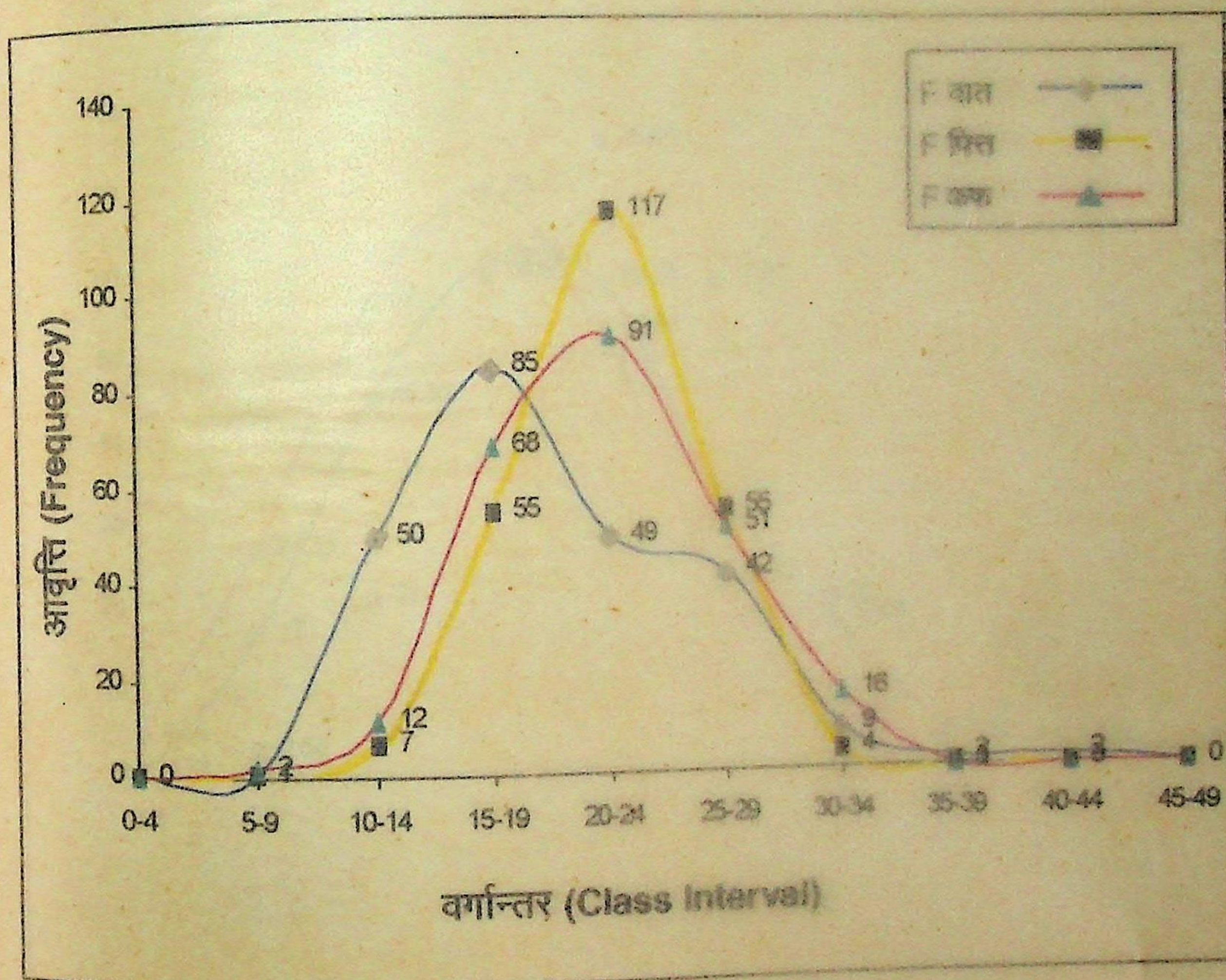
संपूर्ण न्यादर्श में समस्त छात्र-छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (Mean) 21.68, मध्यांक (Mdn) 21.58 एवं बहुलांक (Mode) 21.40 आया है। इन तीनों के मध्य में कोई विशेष अंतर नहीं है । लेकिन मध्यमान, मध्यांक से अधिक है अतः वितरण मे धनात्मक विषमता है। यह कहा जा सकता है कि उक्त वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है । Sk 0.05 है अर्थात वितरण में विषमता है क्योंकि यह मान ± 3 से कम है इसलिए विषमता कम है । SEm 0.32 है जो 1.96 से कम है। Ku 0.01 है इसका मान भी 0.263 से कम है अर्थात वक्र शिखरीय है एवं Lepto Kurtic है ।

रेखाचित्र 15 में न्यादर्श के समस्त छात्र - छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्र-छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान छात्र- छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का (21.87) है ।

रेखाचित्र – 1

समस्त छात्र–छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 240



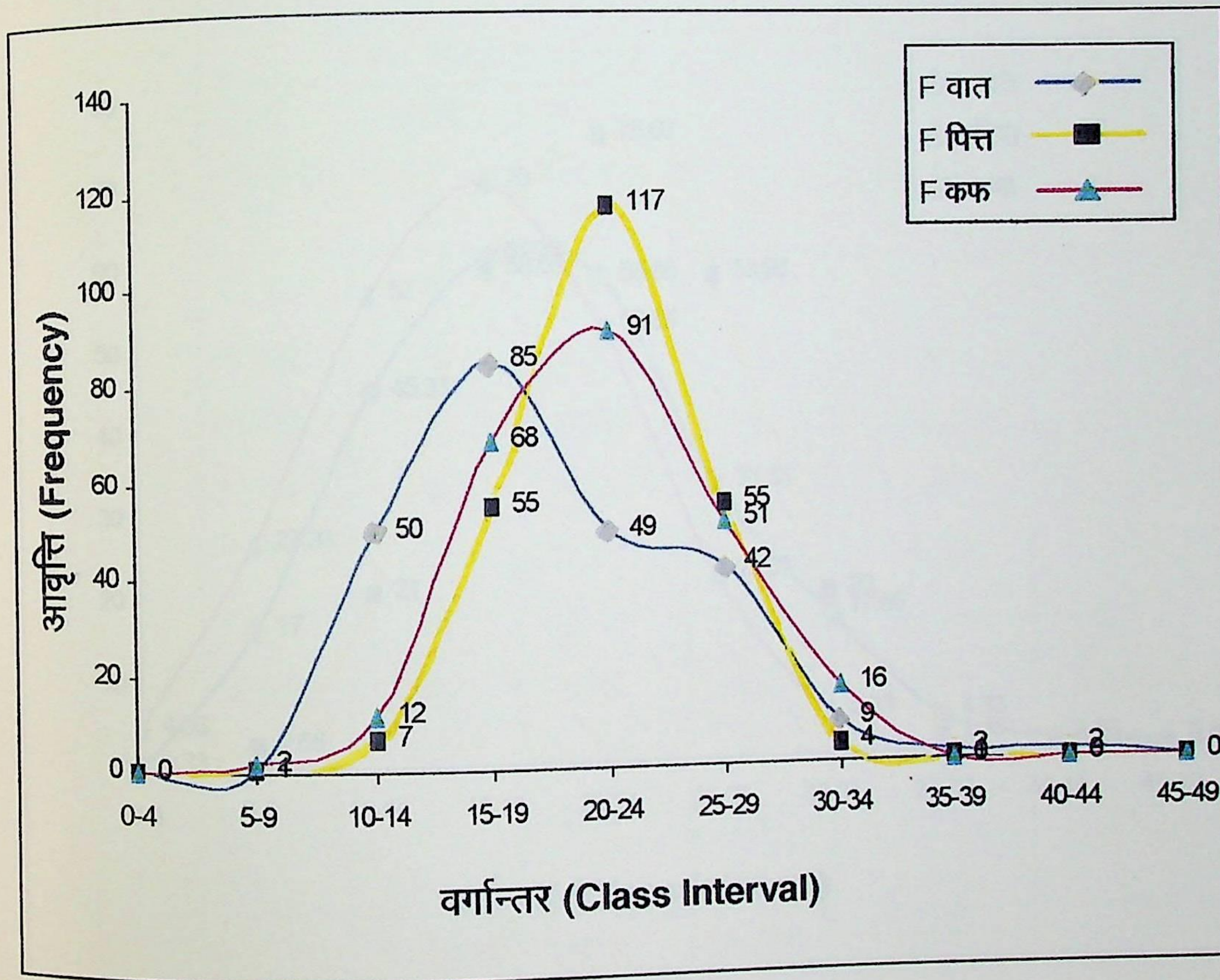
तालिका 3.37, 3.39 एवं 3.41 से संबंधित आवृत्ति वितरण



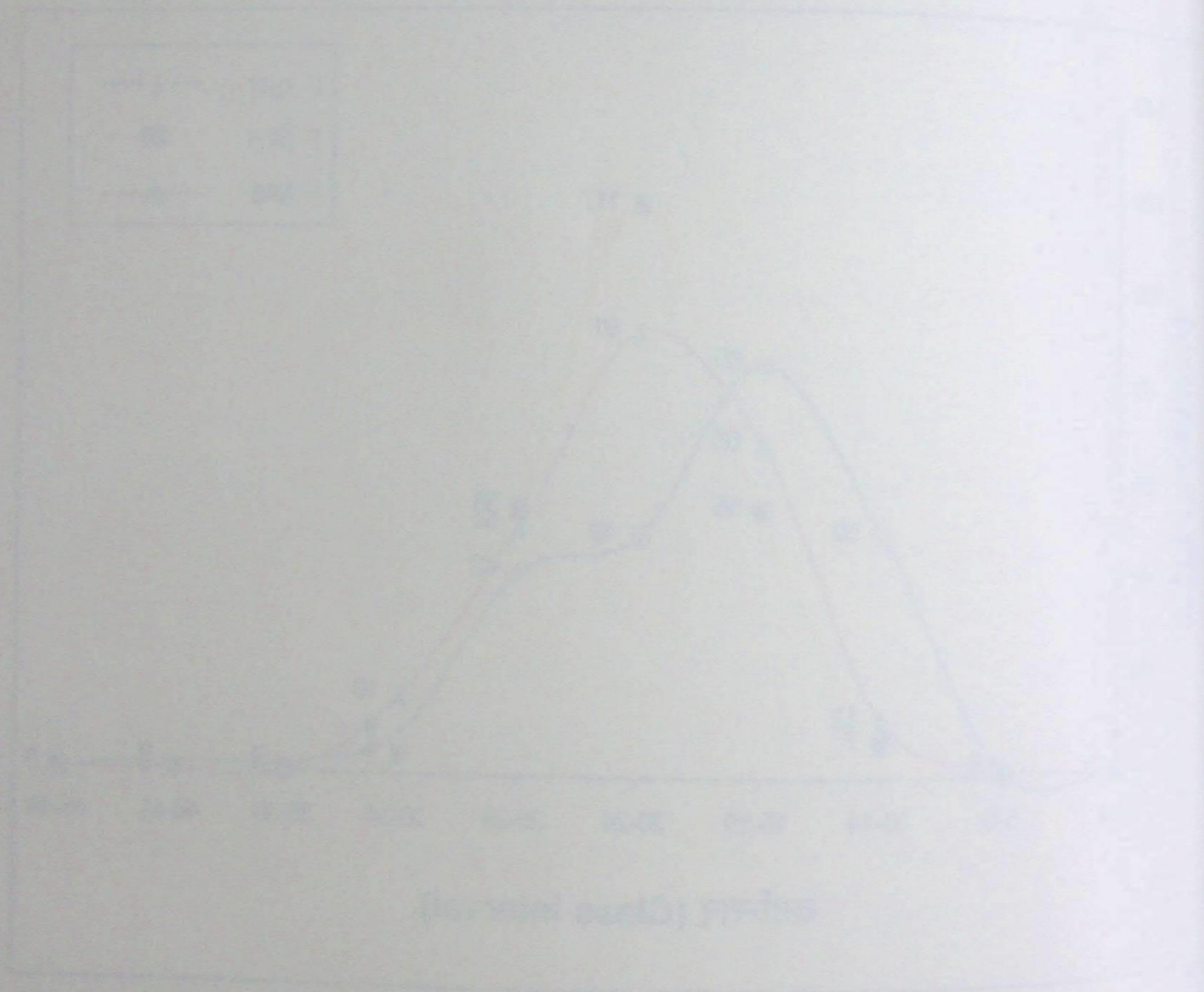
रेखाचित्र – 1

समस्त छात्र–छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 240



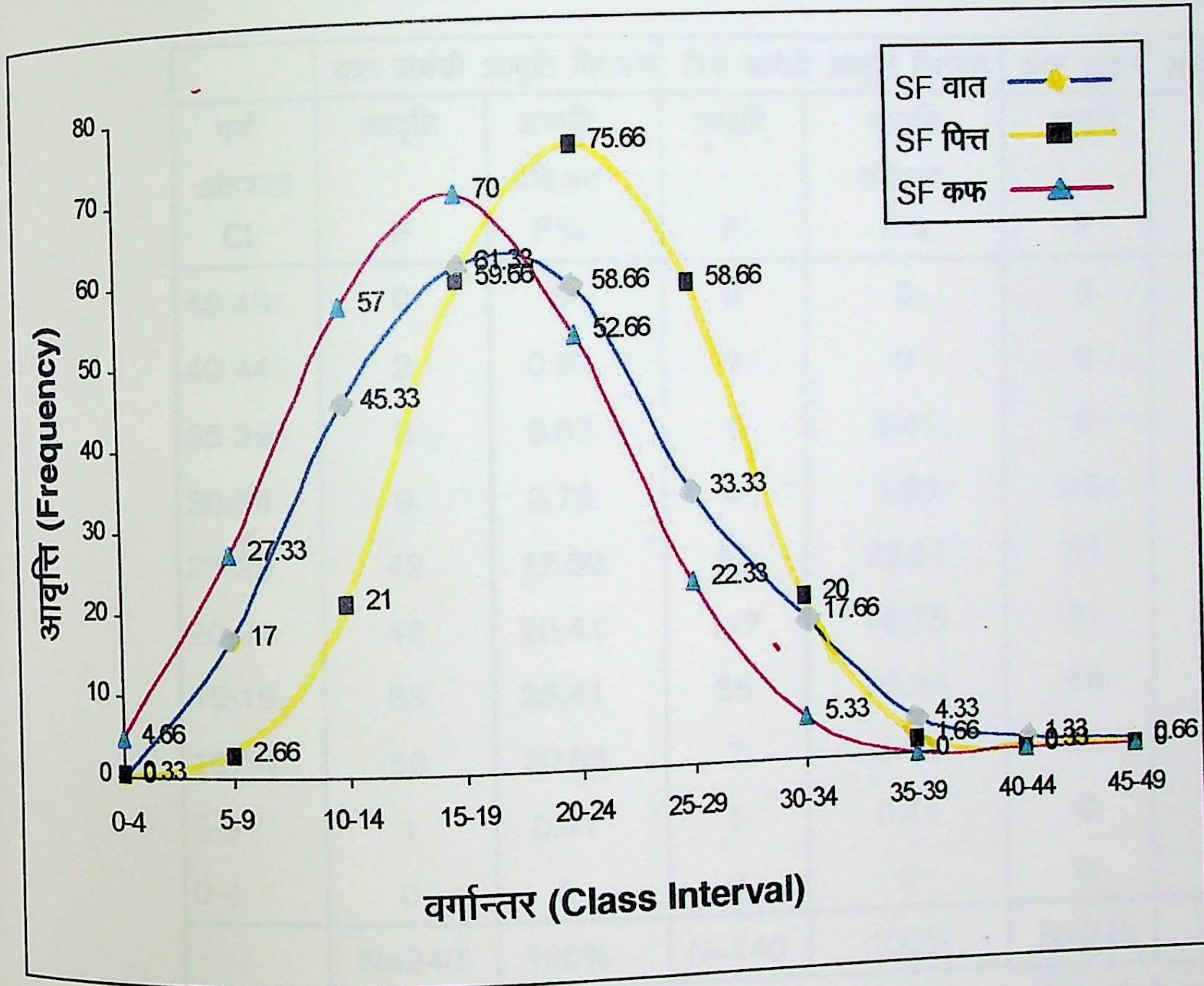
तालिका 3.37, 3.39 एवं 3.41 से संबंधित आवृत्ति वितरण



रेखाचित्र – 2

समस्त छात्र–छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों की सरलित आवृत्ति का रेखाचित्र

N = 240



तालिका 3.37, 3.39 एवं 3.41 से संबंधित सरलित आवृत्ति

तालिका 3.43

3.2 समस्त छात्र- छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण एवं आवृति प्रतिशत

N=240 (छात्र - छात्राएँ)

	वात संबंधी आवृति वितरण		पित्त संबंधी आवृति वितरण		कफ संबंधी आवृति वितरण	
वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	2	0.83	0	0	0	0
35-39	2	0.83	1	0.41	0	0
30-34	9	3.75	4	1.66	16	6.66
25-29	42	17.50	55	22.91	51	21.25
20-24	49	20.41	117	48.75	91	37.91
15-19	85	35.41	55	22.91	68	28.33
10-14	50	20.83	7	2.91	12	5.00
5-9	1	0.41	1	0.41	2	0.83
0-4	0	0	0	0	0	0
	N=240	100%	N=240	100%	N=240	100%

उपरोक्त तालिका 3.43 में न्यादर्श में लिये गये संपूर्ण छात्र - छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण एवं आवृति प्रतिशत दर्शाया गया है ।

वात संबंधी प्राप्तांकों में सर्वाधिक आवृति 85 है जो 15-19 वर्गान्तर के मध्य में है । इस आवृत्ति का प्रतिशत 35.41 है । पित्त संबंधी प्राप्तांकों में सर्वाधिक आवृति 117 है जो 20-24 वर्गान्तर के मध्य में है । इस आवृत्ति का प्रतिशत 48.75 है । कफ संबंधी प्राप्तांकों में सर्वाधिक आवृति 91 है जो 21-24 वर्गान्तर के मध्य में है । इस आवृत्ति का प्रतिशत 37.91 है ।

तालिका 3.44

3.3 समस्त छात्राओं एवं समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

समस्त छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=120 (छात्राएँ)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	2	1.66	120	100	0.66	0.55
35-39	1	0.83	118	98.33	1.00	0.83
30-34	4	3.33	117	97.50	2.33	1.94
25-29	22	18.33	113	94.16	9.00	7.50
20-24	17	14.16	91	75.83	14.33	11.94
15-19	41	34.16	74	61.66	26.66	22.21
10-14	33	27.50	33	27.50	30.33	25.27
5-9	0	0	0	0	11	9.16
0-4	0	0	0	0	0	0
	N = 120	100%				

उपरोक्त तालिका 3.44 से स्पष्ट होता है कि न्यादर्श में संपूर्ण छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों की सर्वाधिक आवृत्ति 41 है जो मध्य से कुछ नीचे की ओर वाले आवृत्ति वितरण 15-19 के बीच में है । न्यूनतम आवृत्ति 1 है जो 35-39 वर्गान्तर के मध्य में स्थित है । उच्चतम वर्गान्तर 40-44 है जिसकी आवृत्ति 2 है इसी प्रकार अन्य वर्गान्तरों में प्रसमान्य वितरण की उन्मुरवीकृत आवृत्तियाँ है । दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्तियों क्रमशः कंम है उच्चतम छोर की ओर आवृत्तियाँ अधिक है।

रेरवाचित्र 3 में समस्त छात्राओं एवं समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेरवाचित्र सेभी स्पष्ट हैकि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य के वर्गान्तर से एक वर्गान्तर नीचे की ओर (41) है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.45

समस्त छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=120 (छात्राएँ)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
14.75	17.79	23.87	6.70	0.61	-1.36	0.06	14.50	26.31

संपूर्ण न्यादर्श में समस्त छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान 14.75, मध्यांक (mdn) 17.79, बहुलांक (mode) 23.87 है। तीनों में अंतर पारिलक्षित हो रहा है । अतः यह कहा जा सकता है कि वितरण में विषमता है क्योंकि मध्यमान का मूल्य सबसे कम एवं बहुलांक का मूल्य अधिक है। अतः वितरण में ऋणात्मक विषमता है। Sk का मान - 1.36 है जो ± 3 से कम है अर्थात वितरण में विषमता कम है । SEm का मान 0.61 है जो 1.96 से कम है । Ku का मान 0.05 है एवं इसका मान 0.263 से कम है अर्थात वक्र शिखरीय है एवं Lepto Kurtik type का है।

रेखाचित्र 16 में न्यादर्श के समस्त छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का (21.92) है ।

तालिका 3.46

समस्त छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=120 (छात्र)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0.33	0.27
35-39	1	0.83	1.20	100	2.00	1.66
30-34	5	4.16	119	99.15	8.66	7.21
25-29	20	16.66	114	95.00	18.66	15.55
20-24	31	25.83	94	78.33	31.00	25.83
15-19	42	35.00	63	52.50	31.00	28.83
10-14	20	16.66	21	17.50	21.00	17.50
5-9	1	0.83	1	0.83	7.00	5.83
0-4	0	0	0	0	0.33	0.27
	N = 120	100%				

उपरोक्त तालिका 3.46 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि संपूर्ण न्यादर्श में संपूर्ण छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों की सर्वाधिक आवृत्ति 42 है जो 15-19 वर्गान्तर के मध्य में है सबसे न्यूनतम आवृत्ति 1 है जो 35-39 एवं 5-9 के मध्य में हैं । उच्चतम वर्गान्तर 35-39 है जिसमें आवृत्ति 1 है उसी प्रकार अन्य वर्गान्तरों में प्रसामान्य वितरण की उन्मुरवीकरण आवृत्तियाँ हैं ।

इस वर्गान्तर के मध्य से वर्गान्तर के नीचे की ओर आवृत्ति सर्वाधिक है एवं दोनों छोर (उच्चतम एवं निम्न) में से ऊपर की ओर आवृत्तियां अधिक है परंतु दोनों छोर में आवृत्तियाँ क्रमशः कम होती गई हैं। इसलिये ऐसा कहा जा सकता है वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेरवाचित्र 4 में समस्त छात्राओं एवं समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेरवाचित्र सेभी स्पष्ट हैकि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य के वर्गान्तर से एक वर्गान्तर नीचे की ओर (42) है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.47

समस्त छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=120 (छात्र)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
19.83	19.14	17.76	5.72	0.52	0.36	0.04	15.57	23.85

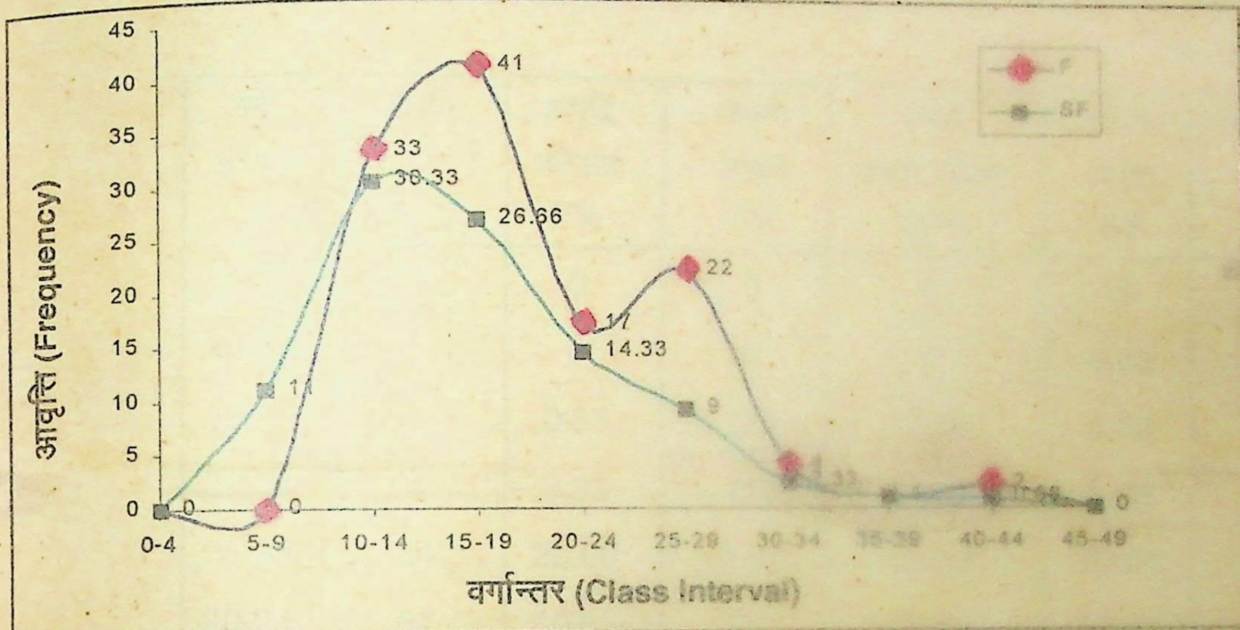
संपूर्ण न्यादर्श में समस्त छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (Mean) 19.83, मध्यांक 19.14 एवं बहुलांक 17.76 है। इन तीनों मापों में कोई विशेष अंतर नहीं है लेकिन मध्यमान ,मध्यांक से अधिक है अतः यह कहना उचित होगा कि यह वितरण धनात्मक है । Sk का मान 0.04 है जो ± 3 से कम है अर्थात वितरण में विषमता कम है । SEm का मान 0.52 है जो 1.96 से कम है । Ku का मान 0.04 है एवं इसका मान 0.263 से कम है अर्थात वक्र शिखरीय है एवं Lepto Kurtik type का है। अतः यह वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

रेखाचित्र 17 में न्यादर्श के समस्त छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का (21.84) है ।

रेखाचित्र – 3

समस्त छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120

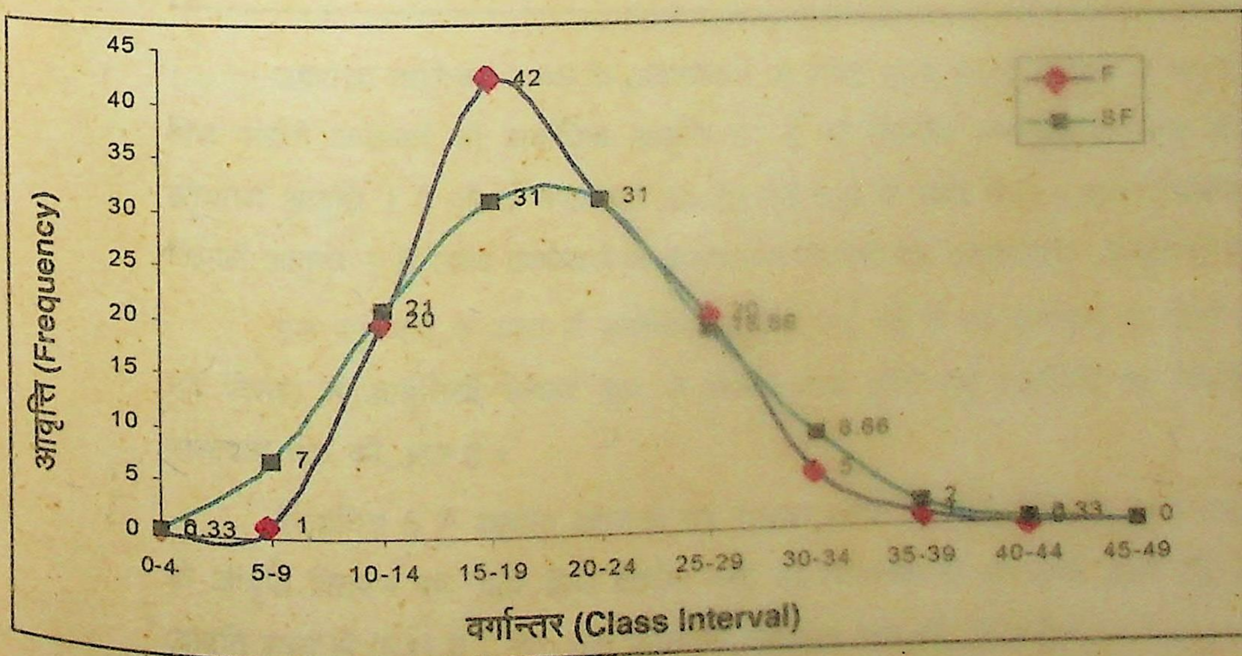


तालिका 3.44 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 4

समस्त छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120

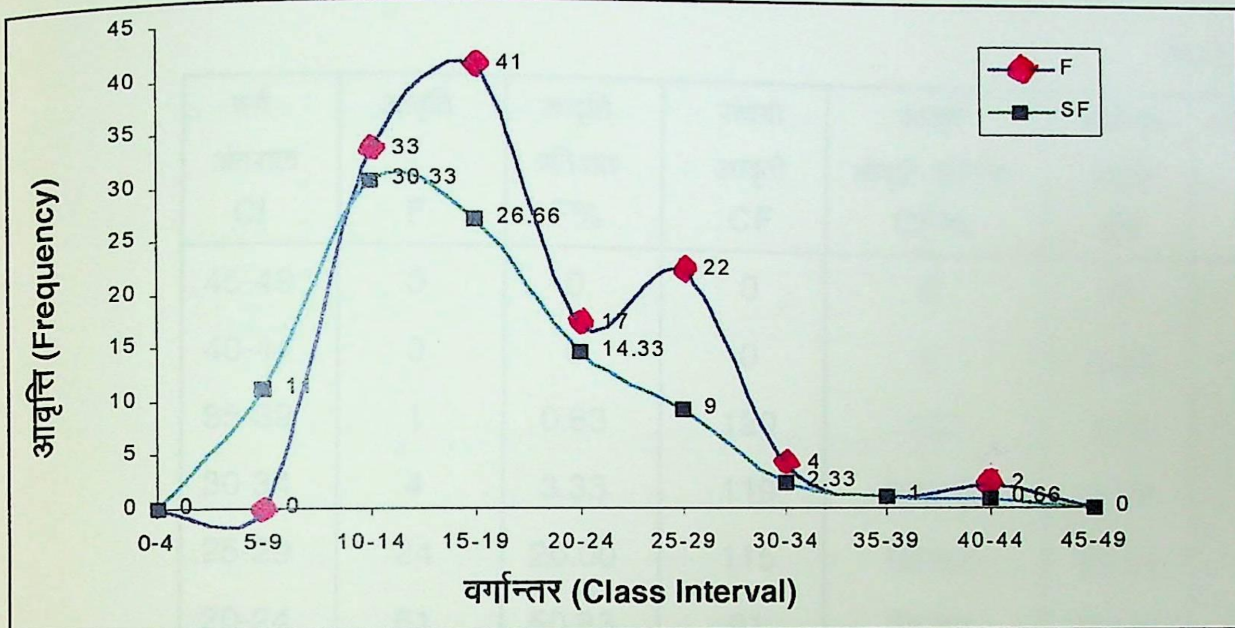


तालिका 3.46 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 3

समस्त छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120

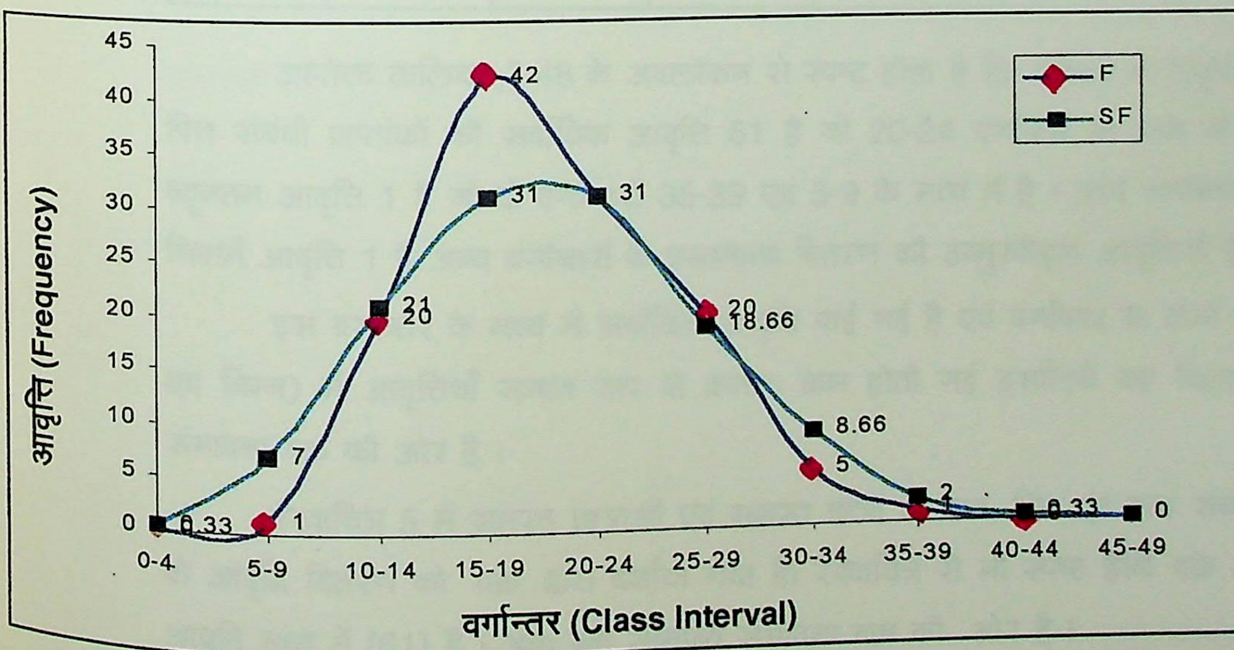


तालिका 3.44 से संबंधित आवृत्ति वितरण

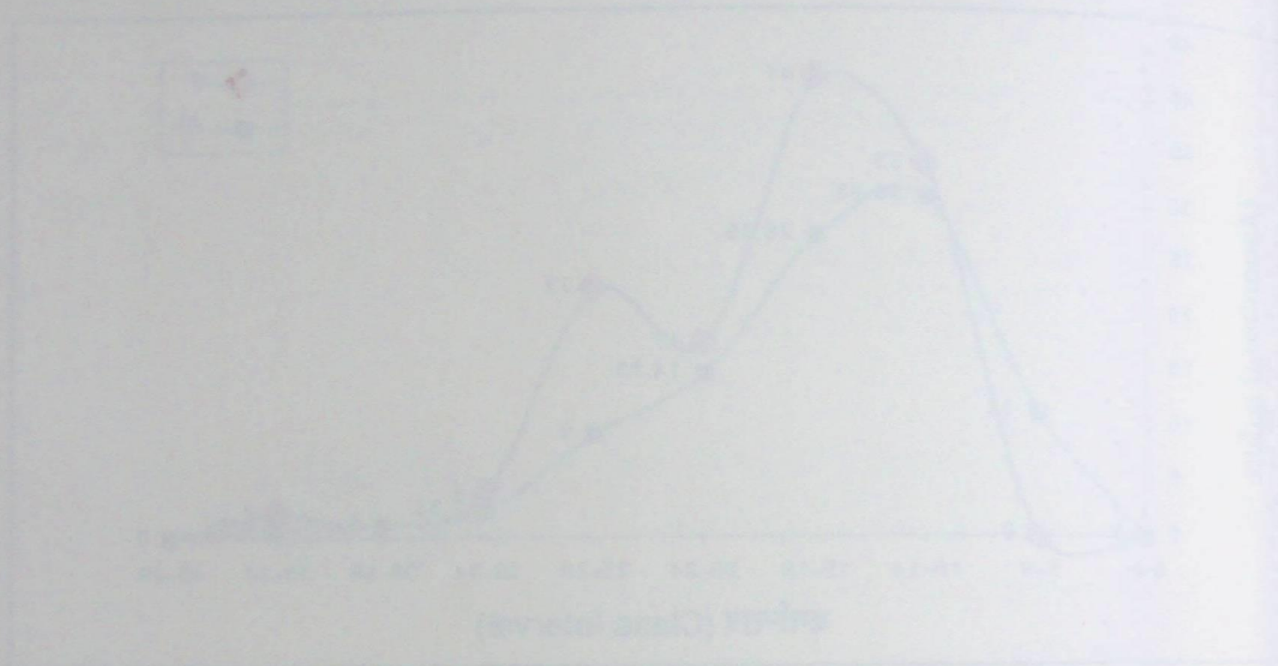
रेखाचित्र – 4

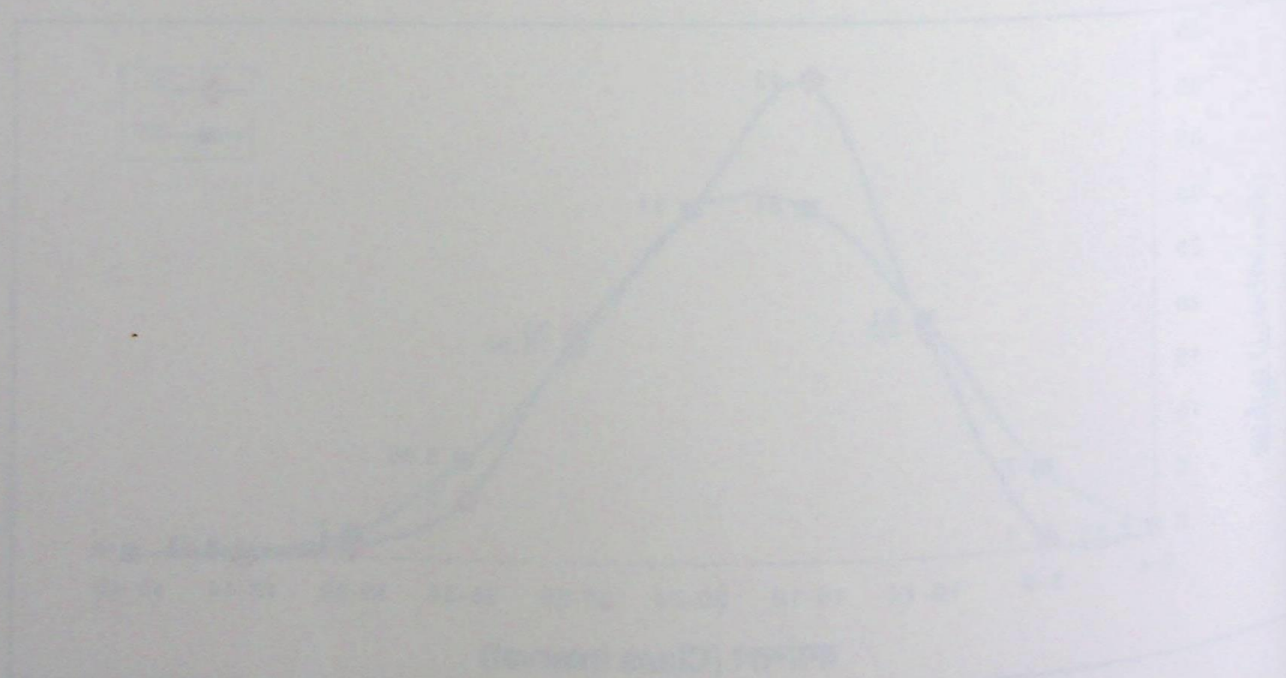
समस्त छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120



तालिका 3.46 से संबंधित आवृत्ति वितरण





तालिका 3.48

समस्त छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=120 (छात्राएँ)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0.33	0.27
35-39	1	0.83	120	100	1.66	1.38
30-34	4	3.33	119	99.16	9.66	8.05
25-29	24	20.00	115	95.83	29.66	24.71
20-24	61	50.83	91	75.83	36.33	30.27
15-19	24	20.00	30	25.00	30.00	25.00
10-14	5	4.16	6	5.00	10.00	8.33
5-9	1	0.83	1	0.83	2.00	1.66
0-4	0	0	0	0	0.33	0.27
	N=120	100%				

उपरोक्त तालिका 3.48 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि न्यादर्श में संपूर्ण छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों की सर्वाधिक आवृत्ति 61 है जो 20-24 वर्गान्तर के मध्य में हैं । सबसे न्यूनतम आवृत्ति 1 है जो दो वर्गान्तरों 35-39 एवं 5-9 के मध्य में है । उच्च वर्गान्तर 35-39 है जिसमें आवृत्ति 1 है अन्य वर्गान्तरों के प्रसामान्य वितरण की उन्मुरवीकृत आवृत्तियाँ हैं ।

इस वर्गान्तर के मध्य में सर्वाधिक आवृत्ति पाई गई है एवं वर्गान्तर के दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्तियाँ समान रूप से क्रमशः कम होती गई इसलिये यह वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

रेखाचित्र 5 में समस्त छात्राओं एवं समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेखाचित्र से भी स्पष्ट हैकि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य में (61) है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.49

समस्त छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=120 (छात्राएँ)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
21.92	21.95	22.01	4.60	0.42	-0.01	0.06	19.50	32.00

संपूर्ण न्यादर्श में समस्त छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में (Mean) मध्यमान 21.92, मध्यांक (Mdh) 21.95 एवं बहुलांक (Mode) 22.01 है। इन तीनों में कोई भी विशेष अंतर नहीं पर बहुलांक मध्यमान से अधिक है अतः वितरण में विषमता ऋणात्मक है। Sk - 0.03 है जो ± 3 से कम है अर्थात विषमता ऋणात्मक है पर बहुत कम है। एवं SEm का मान 0.42 जो 1.96 से कम है इससे इस बात की पुष्टि होती है कि वितरण संभावना वक्र की ओर है। Ku 0.06 आया जो 0.263 से कम है अर्थात वक्र Lepto Kurtic Type का (शिखरीय) है।

रेखाचित्र 16 में न्यादर्श की समस्त छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का (21.92) है।

तालिका 3.50

समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=120 (छात्र)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0	0
34-39	0	0	0	0	0	0
30-34	0	0	0	0	10.33	8.60
25-29	31	25.83	120	100	29.00	24.16
20-24	56	46.66	89	74.16	39.33	21.77
15-19	31	25.83	33	27.50	29.66	24.71
10-14	2	1.66	2	1.66	11.00	9.16
5-9	0	0	0	0	0.66	0.55
0-4	0	0	0	0	0	0
	N = 120	100 %				

उपरोक्त तालिका 3.50 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि न्यादर्श में संपूर्ण छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों में सर्वाधिक आवृति 56 है जो 20-24 वर्गान्तर के मध्य में है। सबसे न्यूनतम आवृत्ति 2 है जो 10-14 वर्गान्तर के मध्य में है । उच्चतम वर्गान्तर 25-29 है जिसकी आवृत्ति 31 है । इसी प्रकार अन्य वर्गान्तरों में प्रसामान्य वितरण की उन्मुखीकृत आवृत्तियाँ हैं। मध्य में सर्वाधिक आवृत्ति है एवं इस वर्गान्तर के दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्तियाँ क्रमशः कम होती गई है यह वितरण भी सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेखाचित्र 6 में समस्त छात्राओं एवं समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेखाचित्र सेभी स्पष्ट हैकि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य में (56) है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.51

समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=120 (छात्र)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
21.84	21.91	22.05	3.80	0.34	- 0.05	0.02	19.01	24.66

संपूर्ण न्यादर्श में समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के मापों में मध्यमान (mean) 21.84, मध्यांक (mdn) 21.91, बहुलांक (mode) 22.05 है। केन्द्रीय प्रवृत्ति के इन तीनों मापों में कोई विशेष अंतर परिलक्षित नहीं होता है परंतु मध्यमान बहुलांक से कम है । Sk का मान 0.02 है जो 1.96 कम है ± 3 से कम है अतः वितरण में ऋणात्मक विषमता है। अतः कहा जा सकता है कि वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है। SEm 0.34 है जो 1.96 कम है अर्थात हमारा मध्यमान समूह का प्रतिनिधित्व करता है Ku 0.02 है जो 0.263 से कम है । अतः कहा जा सकता है कि यह वक्र शिखरीय है एवं Lepto Kurtic Type का है।

रेखाचित्र 17 में के समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का (21.84) है ।

तालिका 3.51

समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=120 (छात्र)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
21.84	21.91	22.05	3.80	0.34	- 0.05	0.02	19.01	24.66

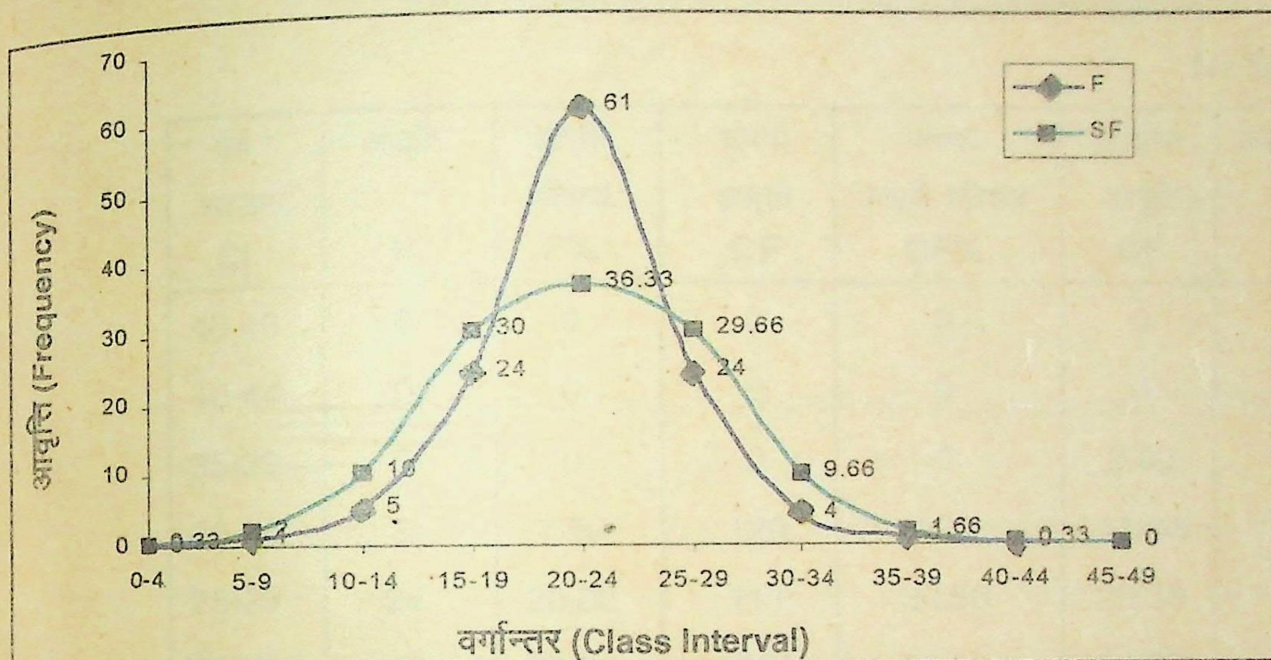
संपूर्ण न्यादर्श में समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के मापों में मध्यमान (mean) 21.84, मध्यांक (mdn) 21.91, बहुलांक (mode) 22.05 है। केन्द्रीय प्रवृत्ति के इन तीनों मापों में कोई विशेष अंतर परिलक्षित नहीं होता है परंतु मध्यमान बहुलांक से कम है । Sk का मान 0.02 है जो 1.96 कम है ± 3 से कम है अतः वितरण में ऋणात्मक विषमता है। अतः कहा जा सकता है कि वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है। SEm 0.34 है जो 1.96 कम है अर्थात हमारा मध्यमान समूह का प्रतिनिधित्व करता है Ku 0.02 है जो 0.263 से कम है । अतः कहा जा सकता है कि यह वक्र शिखरीय है एवं Lepto Kurtic Type का है।

रेखाचित्र 17 में के समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का (21.84) है ।

रेखाचित्र – 5

समस्त छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120

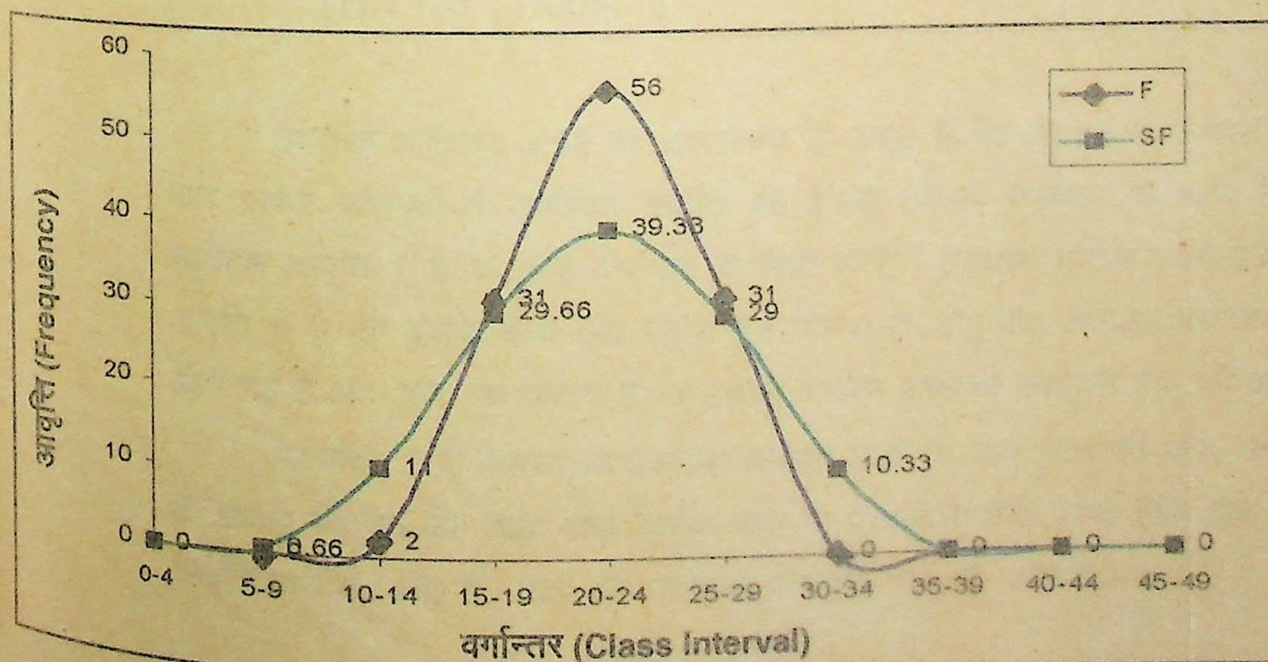


तालिका 3.48 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 6

समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120

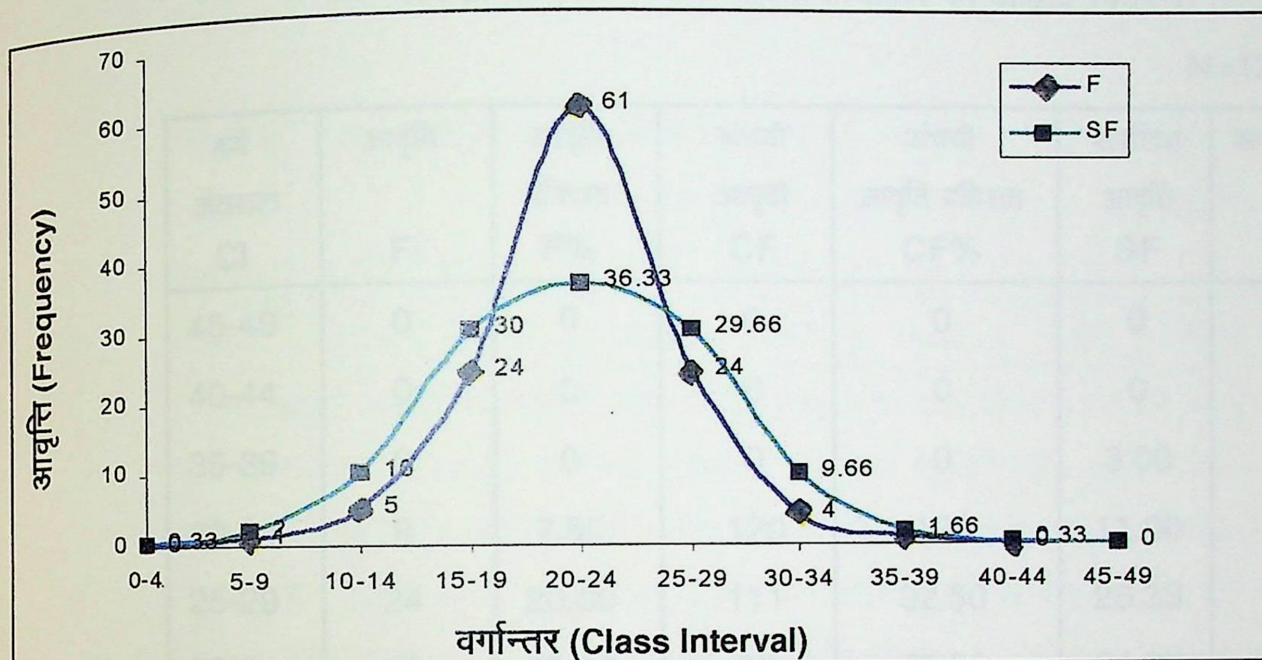


तालिका 3.50 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 5

समस्त छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120

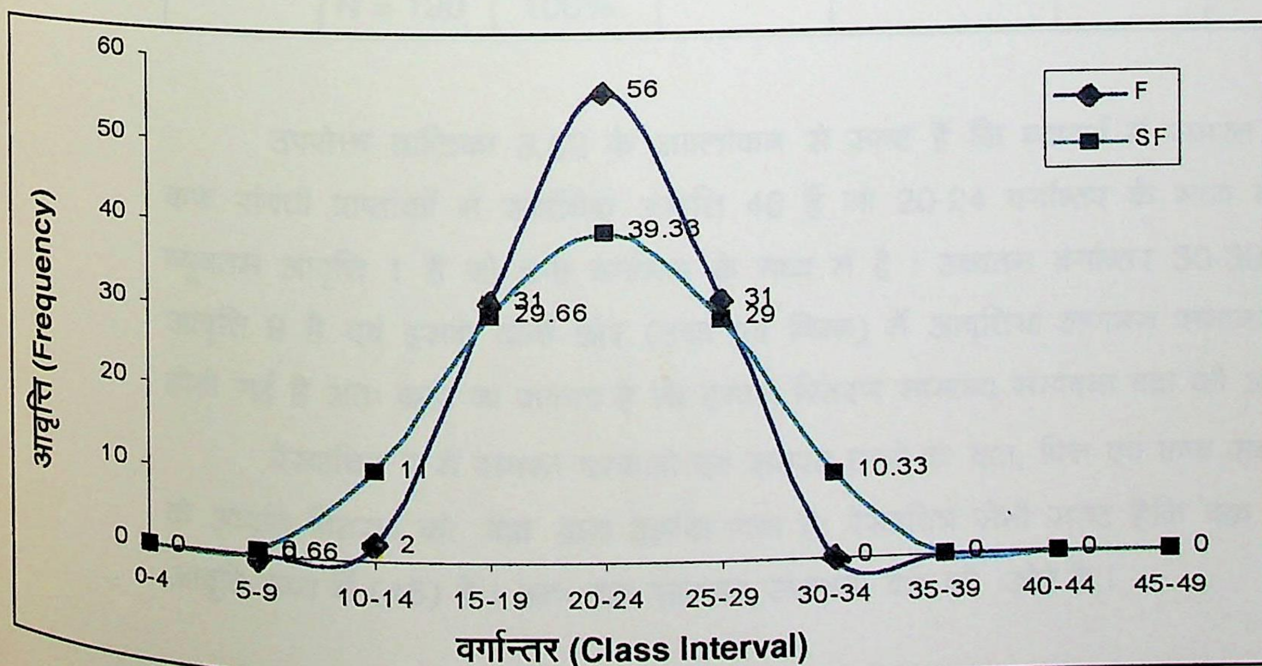


तालिका 3.48 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 6

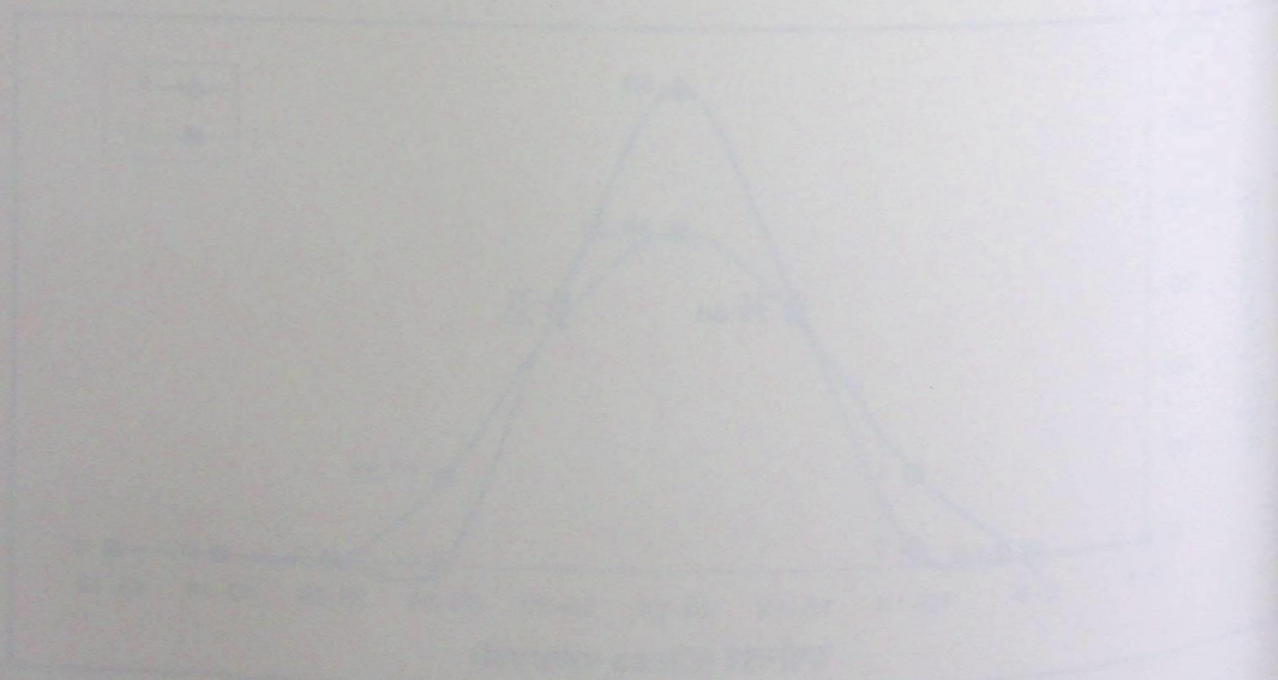
समस्त छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120



तालिका 3.50 से संबंधित आवृत्ति वितरण





तालिका 3.52

समस्त छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=120 (छात्राएँ)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0	0
35-39	0	0	0	0	3.00	2.50
30-34	9	7.50	120	120	11.00	9.16
25-29	24	20.00	111	92.50	26.33	21.94
20-24	46	38.33	87	72.50	34.00	28.33
15-19	32	26.66	41	34.16	28.66	23.88
10-14	8	6.66	9	7.50	13.66	11.38
5-9	1	0.83	1	0.83	3.00	2.50
0-4	0	0	0	0	0	0.27
	N = 120	100%				

उपरोक्त तालिका 3.52 के अवलोकन से स्पष्ट हैं कि न्यादर्श में समस्त छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों में सर्वाधिक आवृत्ति 46 है जो 20-24 वर्गान्तर के मध्य में है। सबसे न्यूनतम आवृत्ति 1 है जो 5-9 वर्गान्तर के मध्य में है । उच्चतम वर्गान्तर 30-39 है जिसकी आवृत्ति 9 है एवं इसके दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्तियां लगभग समानरूप से कम होती गई है अतः कहा जा सकता है कि हमारा वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेखाचित्र 7 में समस्त छात्राओं एवं समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेखाचित्र सेभी स्पष्ट हैकि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य में (46) है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.53

समस्त छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=120 (छात्राएँ)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
21.63	21.56	21.42	5.25	0.47	0.30	0.03	17.78	25.12

संपूर्ण न्यादर्श में समस्त छात्राओं के छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण मापों में मध्यमान (Mean) 21.63, मध्यांक 21.56 एवं बहुलांक 21.42 (Mode) है। इन तीनों मापों में भी कोई विशेष अंतर नहीं है । अतः वितरण सामान्य संभान्य वक्र (Normal Probabilily) की ओर है । SEm 0.47 आया है जो 1.96 से कम है अर्थात मध्यमान समूह को Represent कर रहा है। SK 0.30 है जो ± 3 से कम है अर्थात वितरण में धनात्मक विषमता कम है । Ku 0.03 है जो 0.263 के मान से कम है । अतः वितरण का वक्र Lepto Kurtic (शिखरीय) है ।

रेखाचित्र 16 में न्यादर्श की समस्त छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्राओं के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का (21.92) है ।

तालिका 3.54

समस्त छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=120 (छात्र)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0	0
35-39	0	0	0	0	2.33	1.94
30-34	7	5.83	120	100	11.33	9.44
25-29	27	22.50	113	94.60	26.33	21.94
20-24	45	37.50	86	71.66	35.66	29.71
15-19	35	29.16	41	34.16	28.33	23.60
10-14	5	4.16	6	5.00	13.66	11.38
5-9	1	0.83	1	0.83	2.00	1.66
0-4	0	0	0	0	0.33	0.27
	N = 120	100%				

उपरोक्त तालिका 3.54 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि न्यादर्श में समस्त छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण में सर्वाधिक आवृत्ति 45 है जो 20-24 वर्गान्तर के मध्य में है । सबसे न्यूनतम आवृत्ति 1 है जो 5-9 वर्गान्तर के मध्य में है। उच्चतम वर्गान्तर 30-34 है जिसमें आवृत्ति 7 है एवं इसके दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्तियां लगभग समान रूप से क्रमशः कम होती गई है। अतः यहां भी यह कहा जा सकता है कि उक्त वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेरवाचित्र 8 में समस्त छात्राओं एवं समस्त छात्रों वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेरवाचित्र सेभी स्पष्ट हैकि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य में (45) है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.55

समस्त छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=120 (छात्र)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
21.71	21.61	21.41	4.96	0.45	0.06	0.03	17.92	25.24

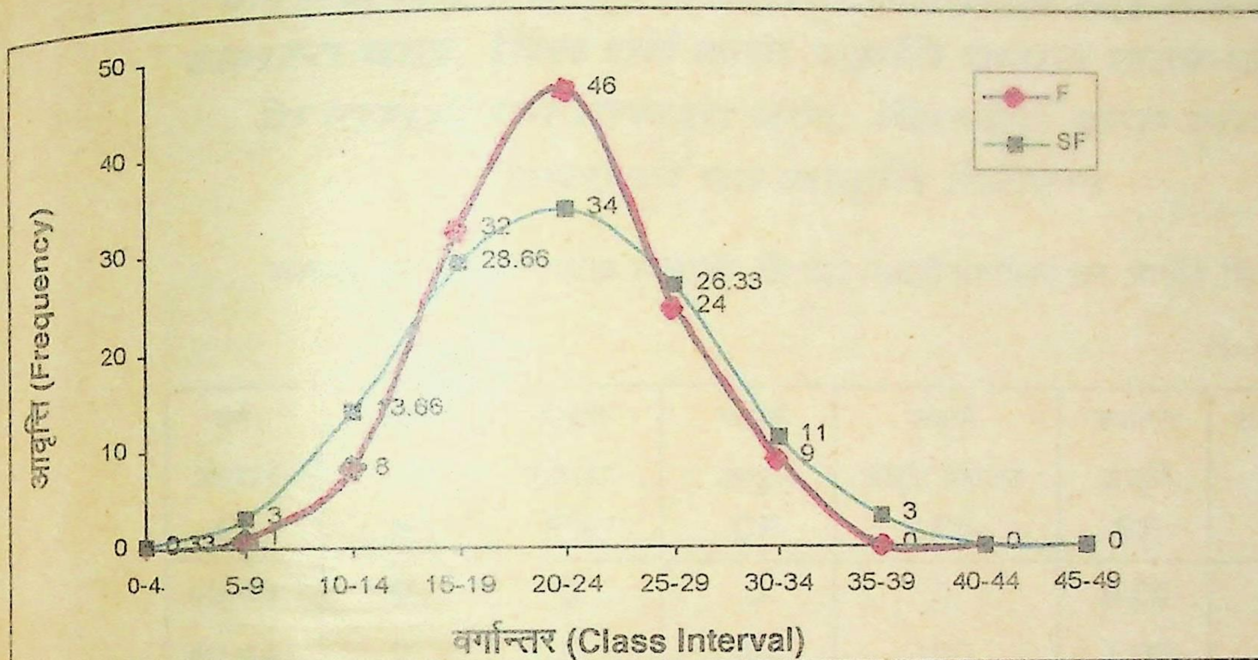
संपूर्ण न्यादर्श में समस्त छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण मापों में मध्यमान (Mean) 21.71, मध्यांक (Mdn) 21.61 एवं बहुलांक (Mode) 21.41 आया है। इन केन्द्रीय वृत्ति के तीन मापों में विशेष अंतर नहीं है जो यह इंगित करता है कि वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है। Sk का मान 0.06 है जो ± 3 से कम है अर्थात वितरण में न्यून मात्रा में धनात्मक विषमता है । SEm का मान 0.45 के द्वारा भी उक्त तथ्य की पुष्टि होती है। क्योंकि यह मान 1.96 से कम है । Ku 0.03 है जो 0.263 से कम हैं अर्थात वक्र Lepto Kurtic Type का (शिखरीय) है ।

रेखाचित्र 17 में समस्त छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्रों के वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का (21.84) है।

रेखाचित्र – 7

समस्त छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120

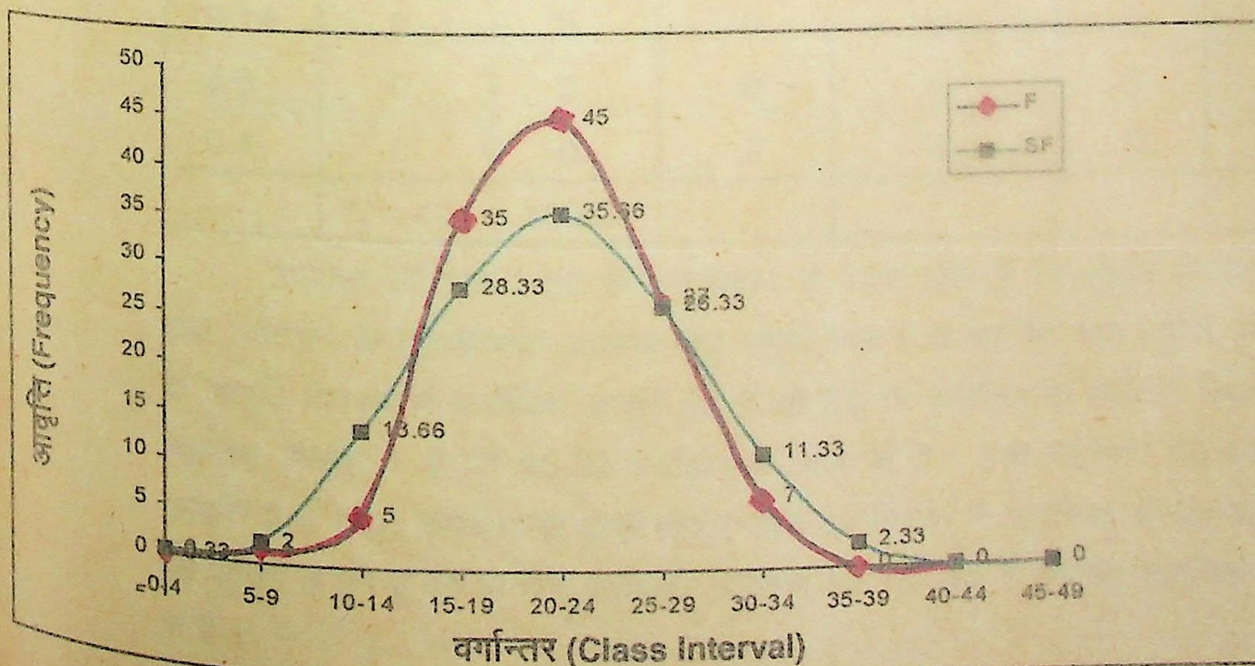


तालिका 3.52 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 8

समस्त छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120

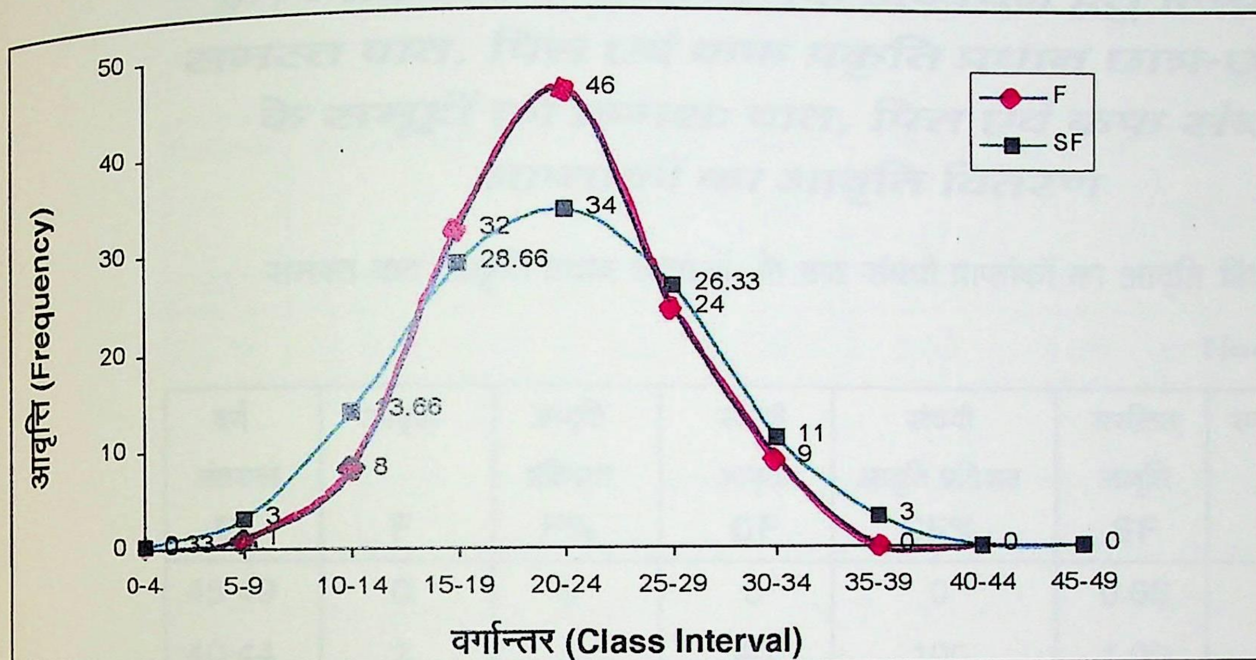


तालिका 3.54 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 7

समस्त छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120

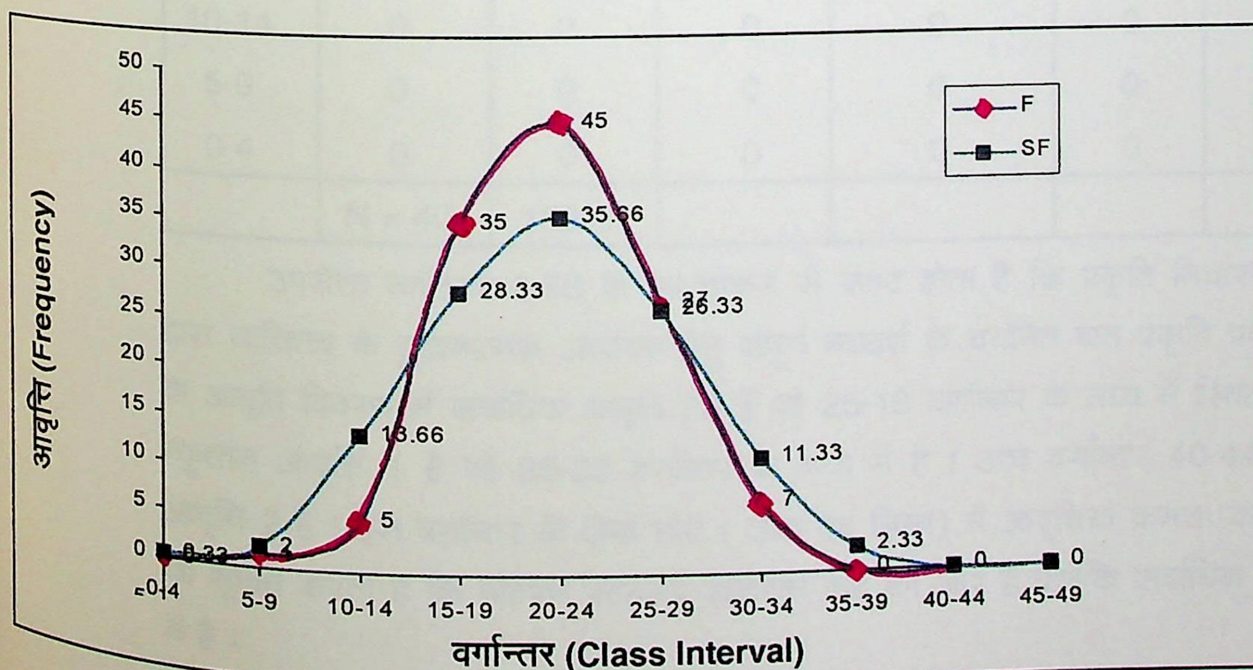


तालिका 3.52 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 8

समस्त छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 120



तालिका 3.54 से संबंधित आवृत्ति वितरण

तालिका 3.56

3.4 व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों का क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=40 (छात्राएँ)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0.66	1.65
40-44	2	5	40	100	1.00	2.50
35-39	1	2.50	38	95	2.33	5.82
30-34	4	10.00	37	92.50	9.33	23.32
25-29	23	57.50	33	82.50	12.33	30.82
20-24	10	25.00	10	25.00	11.00	27.50
15-19	0	0	0	0	3.33	8.32
10-14	0	0	0	0	0	0
5-9	0	0	0	0	0	0
0-4	0	0	0	0	0	0
	N = 40	100%				

उपरोक्त तालिका 3.56 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु संपूर्ण न्यादर्श के चयनित वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के आवृति वितरण में सर्वाधिक आवृति 23 हैं जो 25-18 वर्गान्तर के मध्य में स्थित है । सबसे न्यूनतम आवृत्ति 1 है जो 35-39 वर्गान्तर के मध्य में है । उच्च वर्गान्तर 40-44 है जिसकी आवृत्ति 2 है । इस वर्गान्तर के दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्तियां क्रमशः कम हो गई है जो सूचित करती है कि वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है क्योंकि सर्वाधिक आवृति मध्य में है ।

रेखाचित्र 9 में समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेखाचित्र से भी स्पष्ट हैकि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य में (23) है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.57

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्राएँ)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
26.75	26.60	26.30	4.02	0.63	0.03	0.06	24. 5	28.84

संपूर्ण न्यादर्श में व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के समूह के वात संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean) 26.75, मध्यांक (mdn) 26.60 एवं बहुलांक 26.30 आया है । इन तीनों में कोई विशेष अंतर नहीं है जो यह सूचित करता है कि वक्र सामान्य संभावना वक्र है लेकिन मध्यमान, मध्यांक से अधिक है अतः वितरण में धनात्मक विषमता है। Sk 0.03 है जो ± 3 से कम है अर्थात वितरण में विषमता है परंतु अत्याधिक न्यून मात्रा की विषमता है । SEm 0.63 है जो 1.96 से कम है एवं उक्त तथ्य की पुष्टि करता है । Ku का मान 0.06 आया है जो 0.263 से कम है अर्थात यहां भी वक्र Lepto Kurtic Type (शिखरीय) है।

रेखाचित्र 18 में व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गयी समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्रों के वात प्रकृति प्रधान, पित्त प्रकृति प्रधान एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं का (27.12) है।

तालिका 3.58

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=40 (छात्र)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0.33	0.82
35-39	1	2.50	40	100	2.00	5.00
30-34	5	12.50	39	97.50	9.00	22.50
25-29	21	52.50	34	85.00	13.00	32.50
20-24	13	32.50	13	32.50	11.33	28.32
15-19	0	0	0	0	4.33	10.82
10-14	0	0	0	0	0	0
5-9	0	0	0	0	0	0
0-4	0	0	0	0	0	0
	N = 40	100%				

उपरोक्त तालिका 3.58 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु संपूर्ण न्यादर्श में चयनित वात प्रकृति छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण में सर्वाधिक आवृत्ति 21 है जो 25-29 वर्गान्तर के मध्य में है। न्यूनतम आवृति 1 है जो 35-39 वर्गान्तर के मध्य में है। उच्चतम वर्गान्तर भी 35-39 है। इसकी आवृति 1 है। इस वर्गान्तर के मध्य में सर्वाधिक आवृति है एवं इसके दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्तियाँ क्रमशः कम होती गई है जिससे यह कहा जा सकता है कि वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेखाचित्र 10 में समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेखाचित्र से भी स्पष्ट हैकि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य में (21) है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.59

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
26.25	26.16	25.98	2.87	0.45	0.09	0.08	23.34	28.54

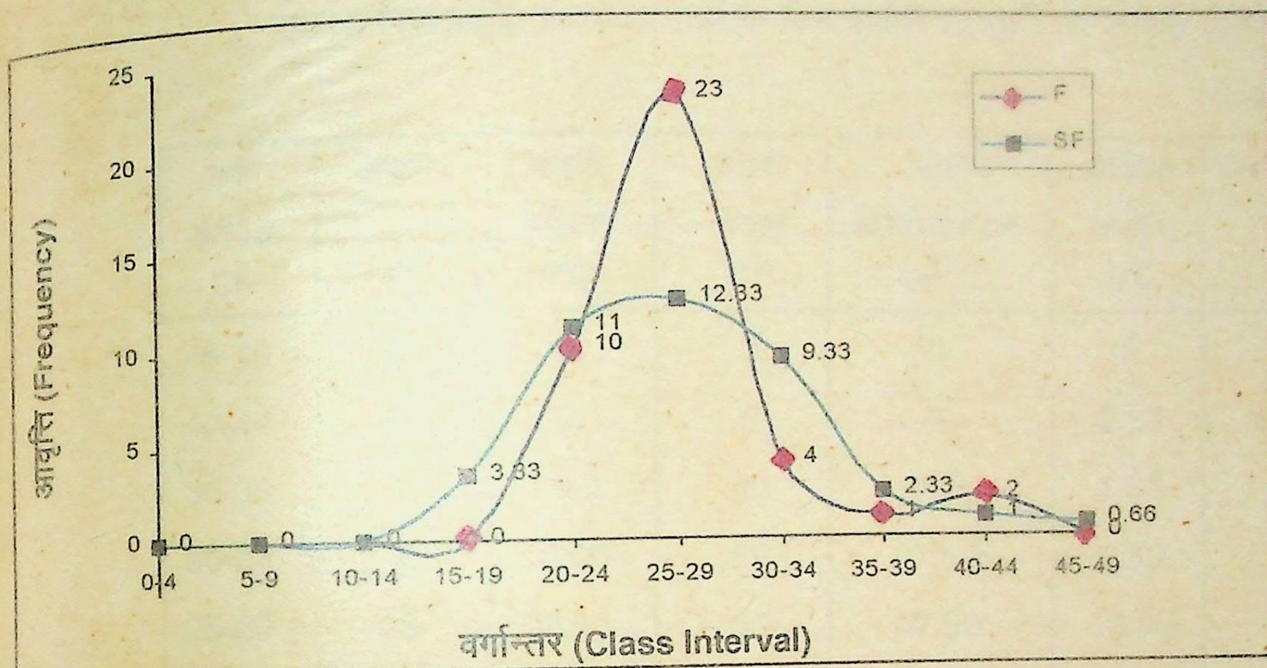
संपूर्ण न्यादर्श में व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये वात प्रकृति प्रधान छात्रों के समूह में वात संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (Mean) 26.25 मध्यांक (Mdn) 26.16 एवं बहुलांक (Mode) 25.58 आया है। चूंकि मध्यमान सर्वाधिक एवं मध्यमान से कम है इसलिये वितरण संभावना वक्र की ओर तो है परंतु वितरण में न्यून मात्रा में धनात्मक विषमता है। यह विषमता Sk के मान 0.09 (जोकि ± 3 से कम है) से भी प्रदर्शित हो रही है। SEm 0.45 जो 1.96 से कम है प्रदर्शित करता है कि वक्र में सामान्य संभावना वक्र है । Ku 0.08 है जो 0.263 से कम है । अतः वक्र Lepto Kurtic (शिखरीय) होगा ।

रेखाचित्र 13 में व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्रों के वात प्रकृति प्रधान, पित्त प्रकृति प्रधान एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान कफ प्रकृति प्रधान छात्रों का (26.63) है।

रेखाचित्र – 9

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 40

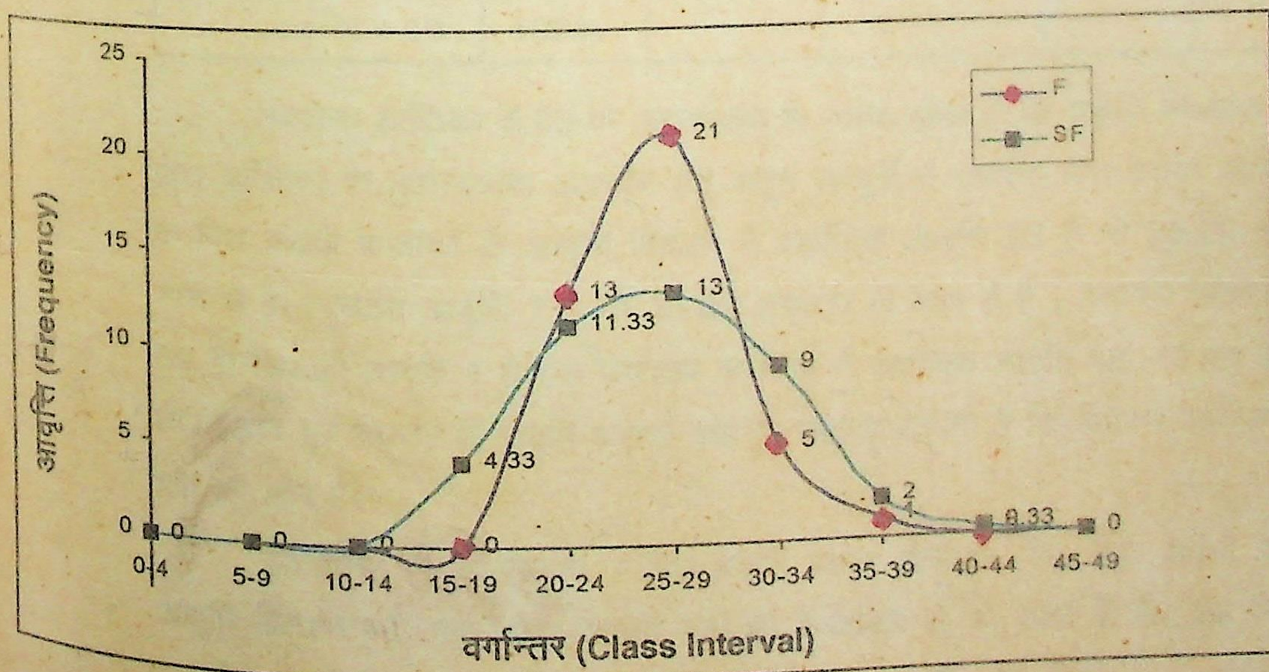


तालिका 3.56 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 10

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 40

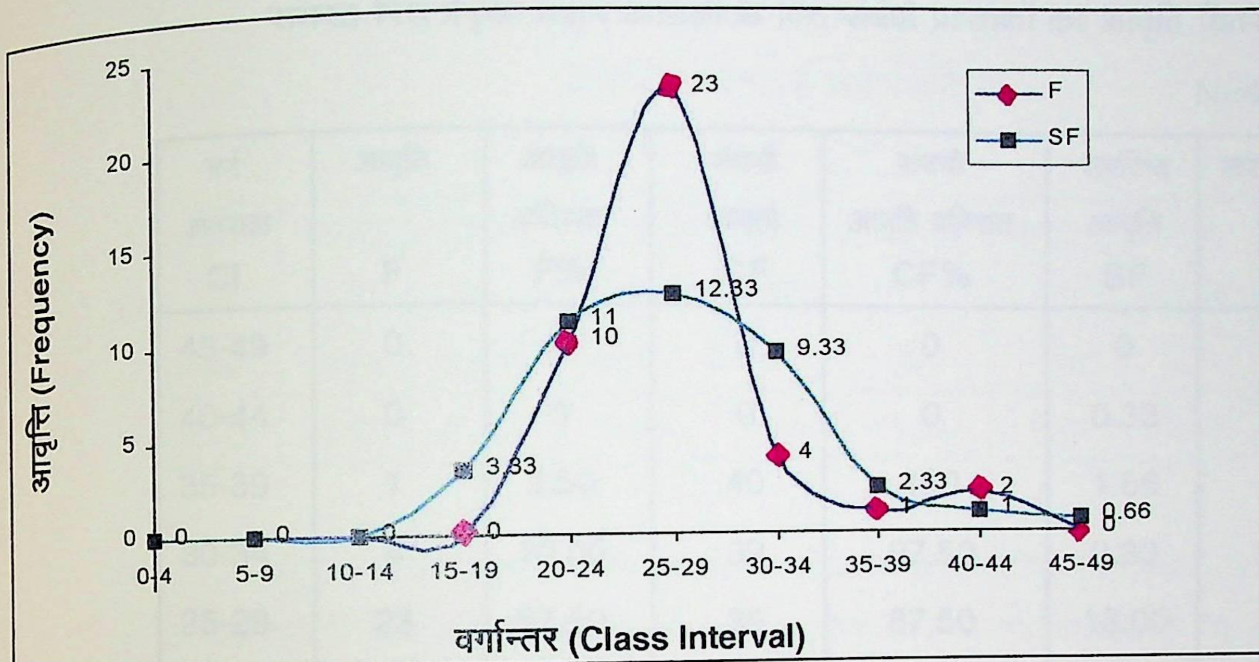


तालिका 3.58 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 9

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 40

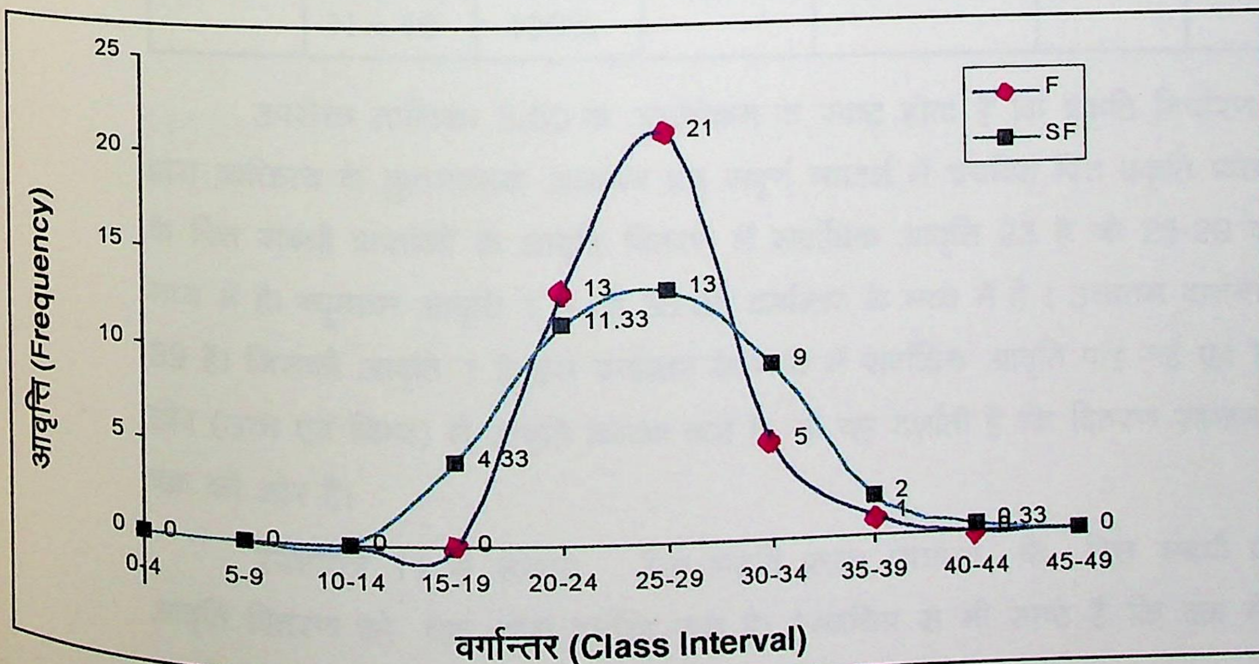


तालिका 3.56 से संबंधित आवृत्ति वितरण

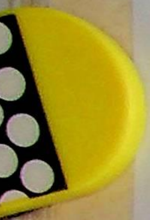
रेखाचित्र – 10

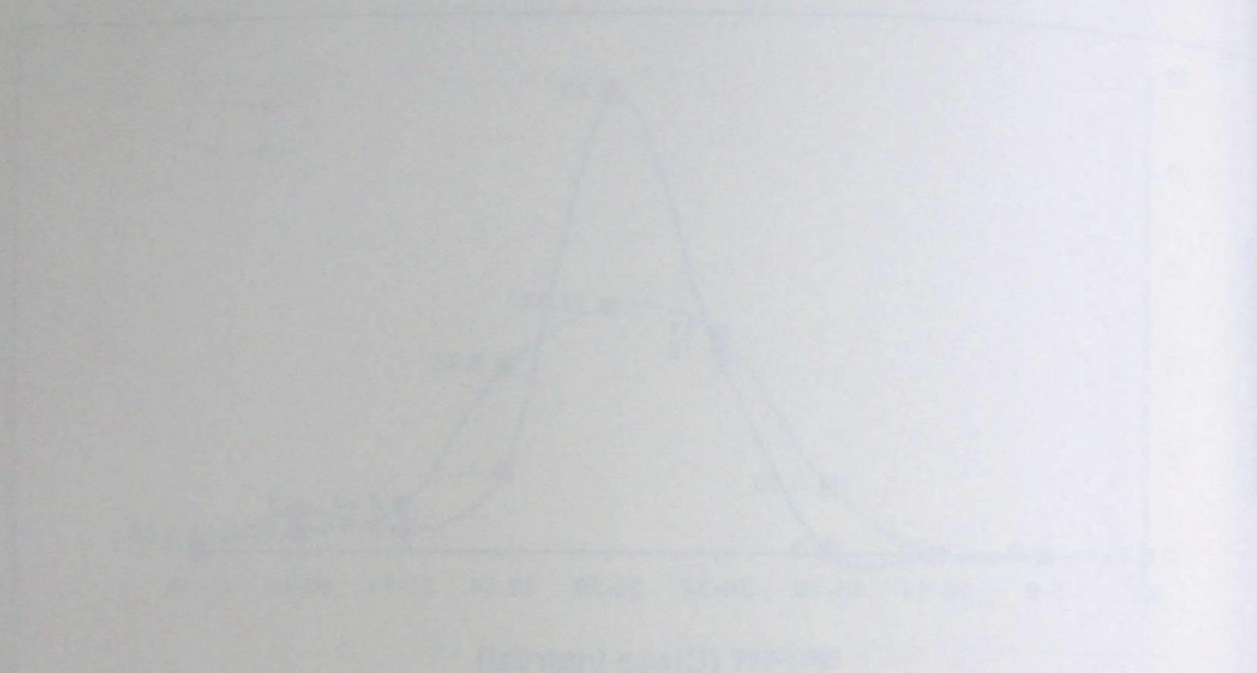
समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

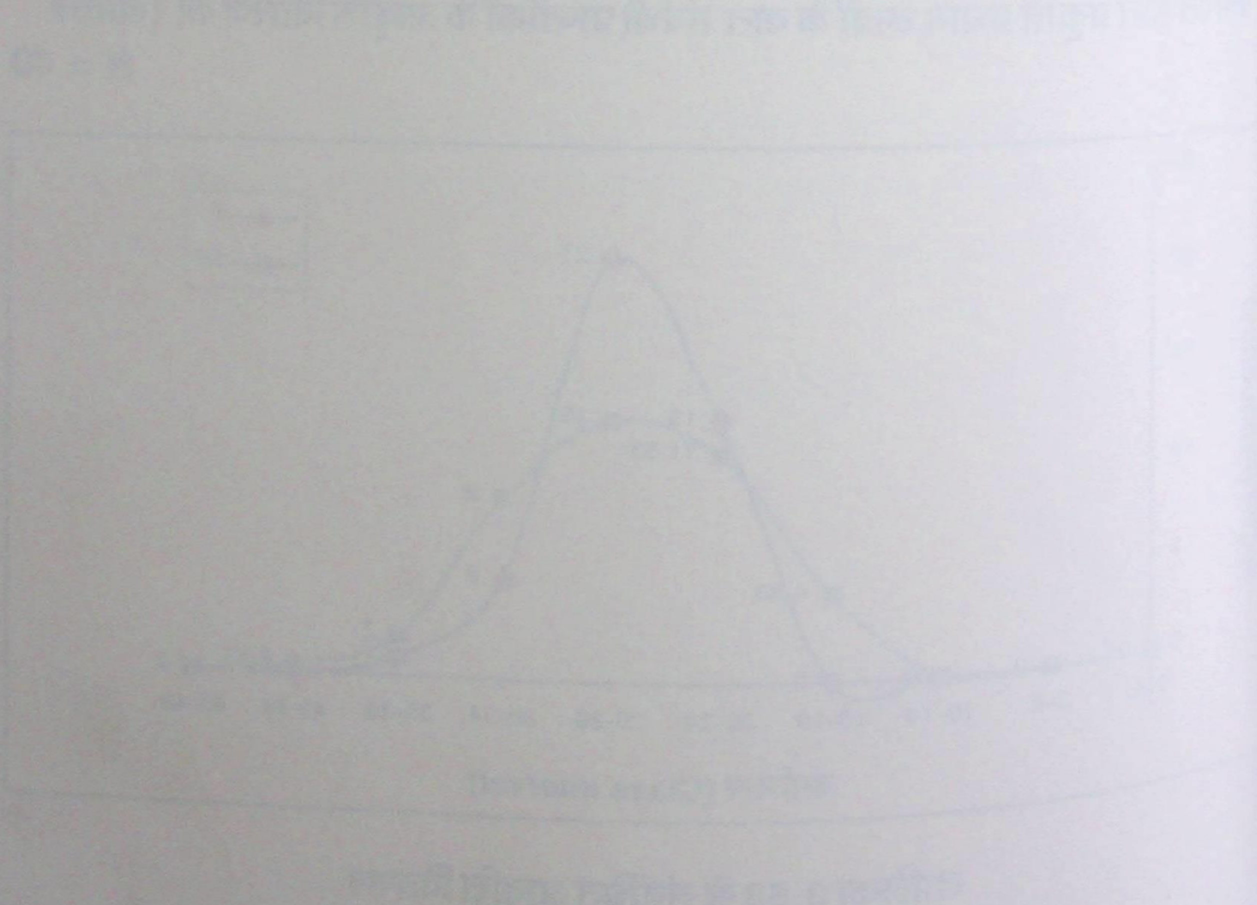
N = 40



तालिका 3.58 से संबंधित आवृत्ति वितरण







तालिका 3.60

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=40 (छात्राएँ)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0.33	0.82
35-39	1	2.50	40	100	1.66	4.15
30-34	4	10.00	39	97.50	9.33	23.32
25-29	23	57.50	35	87.50	13.00	32.50
20.24	12	30.00	12	30.00	11.66	29.15
15-19	0	0	0	0	4.00	10.00
10-14	0	0	0	0	0	0
5-9	0	0	0	0	0	0
0-4	0	0	0	0	0	0
	N = 40	100%				

उपरोक्त तालिका 3.60 के अवलोकन के स्पष्ट होता है कि प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु संपूर्ण न्यादर्श में चयमित पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण में सर्वाधिक आवृत्ति 23 है जो 25-29 वर्गान्तर के मध्य में है। न्यूनतम आवृत्ति 1 है जो 35-39 वर्गान्तर के मध्य में है । उच्चतम वर्गान्तर भी 35-39 है। जिसकी आवृति 1 है इस वर्गान्तर के मध्य में सर्वाधिक आवृति पाई गई एवं इसके दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृति क्रमशः कम है। जो यह दर्शाती है कि वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेखाचित्र 11 में समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेखाचित्र से भी स्पष्ट है कि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य में (23) है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.61

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्राएँ)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
26.25	26.23	26.19	3.45	0.54	0.01	0.07	23.66	28.41

संपूर्ण न्यादर्श में व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (Mean) 26.25, मध्यांक (Mdn) 26.23 एवं बहुलांक (Mode) 26.19 है । इन तीनों में विशेष अंतर नहीं है । Sk 0.01 आया है जो ± 3 से कम है अर्थात वितरण में बहुत कम मात्रा में धनात्मक विषमता है। SEm 0.54 है जो 1.96 से कम है । अतः वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है । Ku 0.07 आया है जो 0.263 से कम है अर्थात वक्र Lepto Kurtic type (शिखरीय) का है ।

रेखाचित्र 18 में प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों की केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्राओं के वात प्रकृति प्रधान, पित्त प्रकृति प्रधान एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान कफप्रकृति प्रधान छात्राओं का (27.12) है।

तालिका 3.62

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=40 (छात्र)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0	0
35-39	0	0	0	0	0	0
35-34	0	0	0	0	10	25.00
25-29	30	75	40	100	13.33	33.32
20-24	10	25	10	25	3.33	8.32
15-19	0	0	0	0	0	0
10-14	0	0	0	0	0	0
5-9	0	0	0	0	0	0
0-4	0	0	0	0	0	0
	N = 40	100%				

उपरोक्त तालिका 3.62 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु संपूर्ण न्यादर्श में चयनित पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण में सर्वाधिक आवृति 30 है जो 25-29 वर्गान्तर के मध्य में है। न्यूनतम आवृति 10 जो 20-24 वर्गान्तर के मध्य है। उच्चतम वर्गान्तर 25-29 है जिससे आवृति 30 है। इस वर्गान्तर के मध्य में सर्वाधिक आवृति पाई गई एवं इसके दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में से निम्न छोर में आवृत्ति का फैलाव नहीं है परन्तु मध्य में आवृत्ति अधिक है अतः वक्र वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेखाचित्र 12 में समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेखाचित्र से भी स्पष्ट है कि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य में (30) है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.63

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
25.75	26.16	26.99	2.17	0.34	-0.56	0.01	24.5	25.16

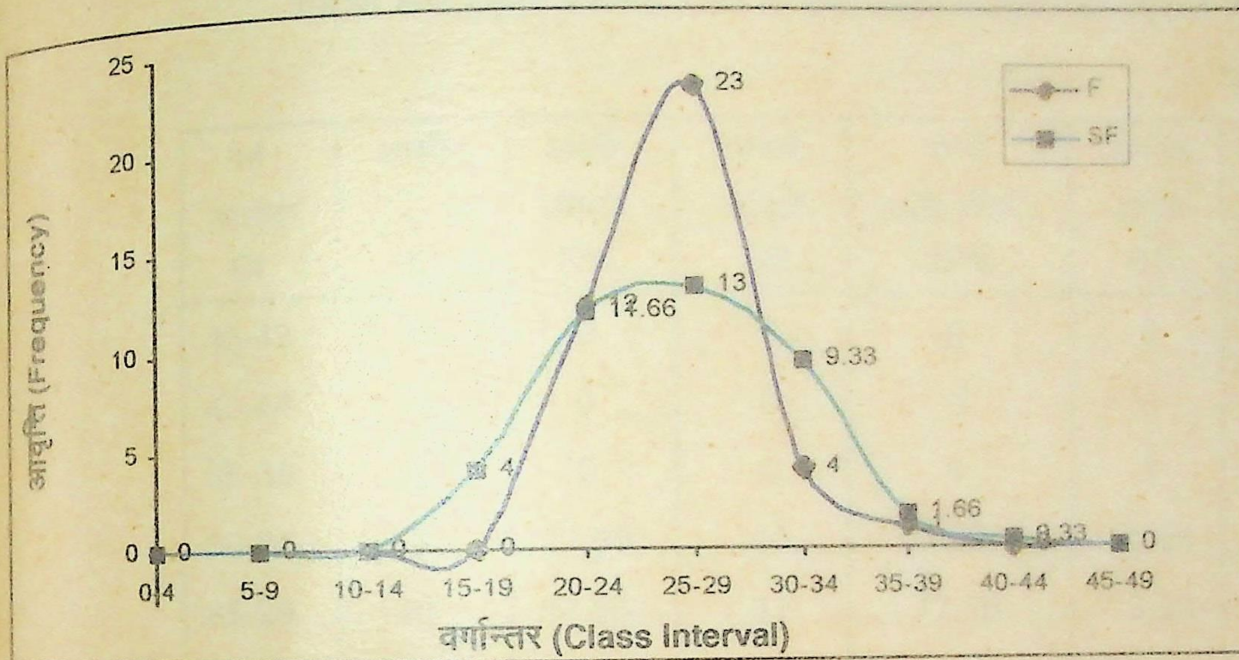
संपूर्ण न्यादर्श में व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन के लिये गये न्यादर्श में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (Mean) 25.75, मध्यांक (mdn) 26.16 एवं बहुलांक (Mode) 26.99 आया है। इन तीनों में कोई विशेष अंतर नहीं है मध्यांक, मध्यमान से अधिक है। अतः वितरण में ऋणात्मक विषमता है। Sk 0.56 है जो ± 3 से कम है अर्थात वितरण में विषमता तो है परंतु न्यून मात्रा में है । SEm 0.34 है जो 1.96 से कम है जो यह सूचित करता है कि वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है । Ku 0.01 है जो 0.263 से कम है अर्थात यहां भी वक्र Lepto Kurtic (शिखरीय) है ।

रेखाचित्र 19 में प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों की केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्रों के वात प्रकृति प्रधान, पित्त प्रकृति प्रधान एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के क्रमशः वात, पिंत्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान कफ प्रकृति प्रधान छात्रों का (26.63) है।

रेखाचित्र – 11

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 40

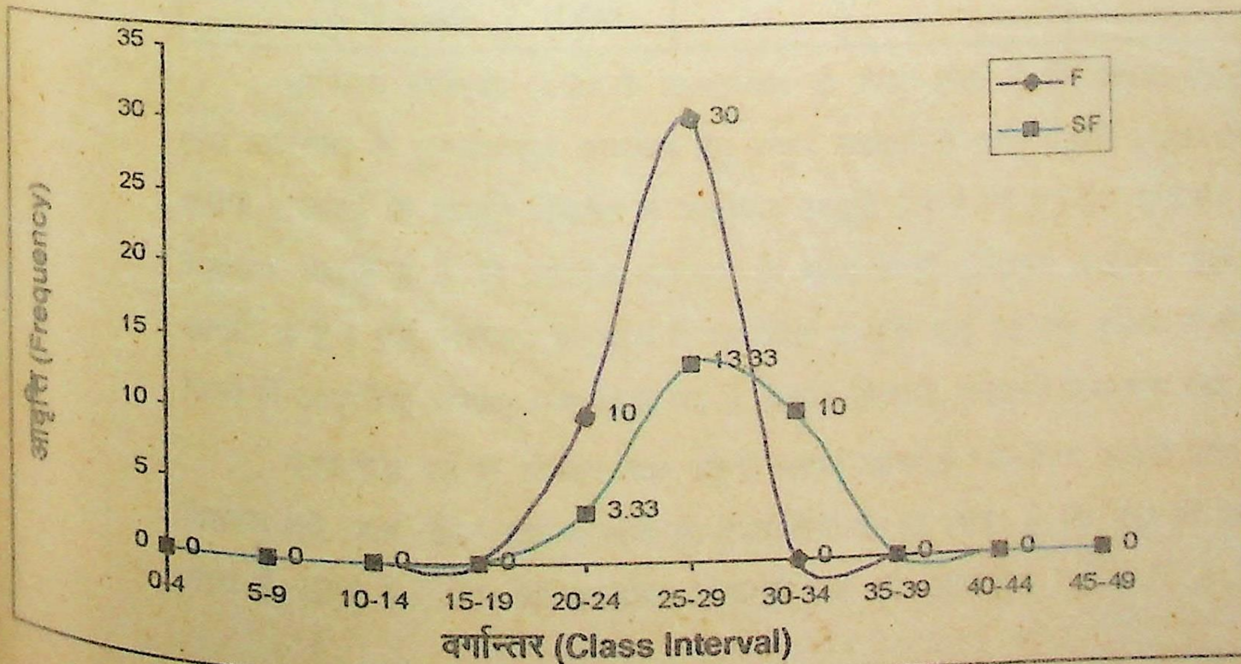


तालिका 3.60 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 12

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 40

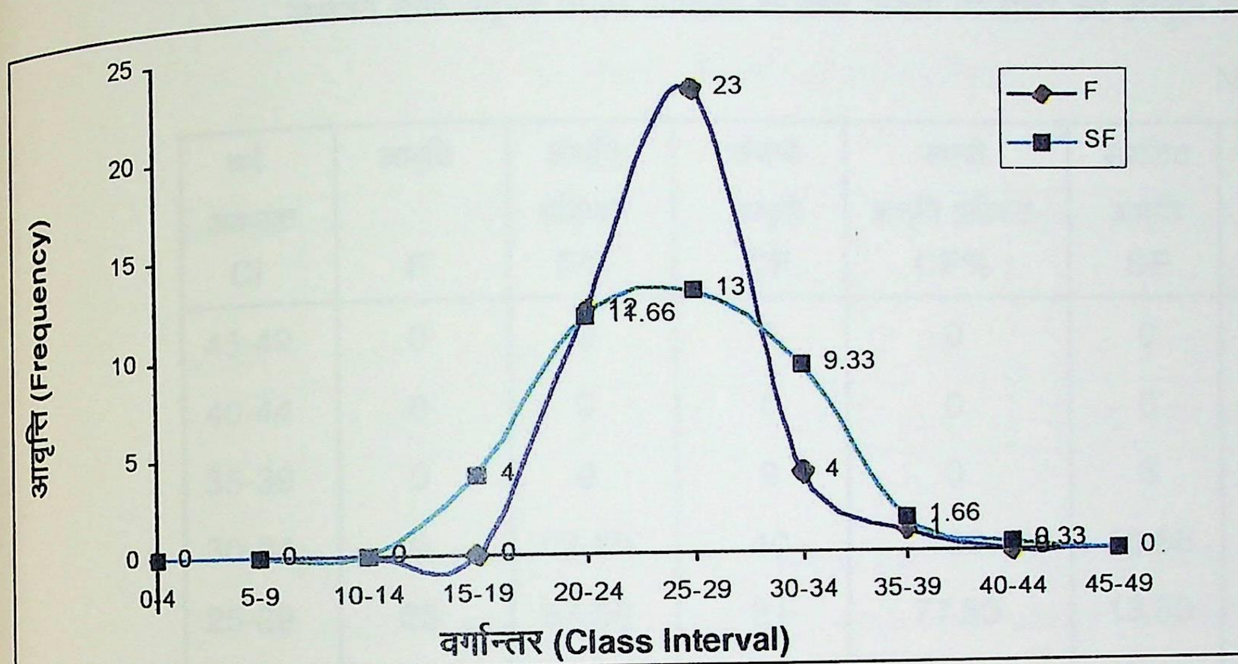


तालिका 3.62 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 11

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 40

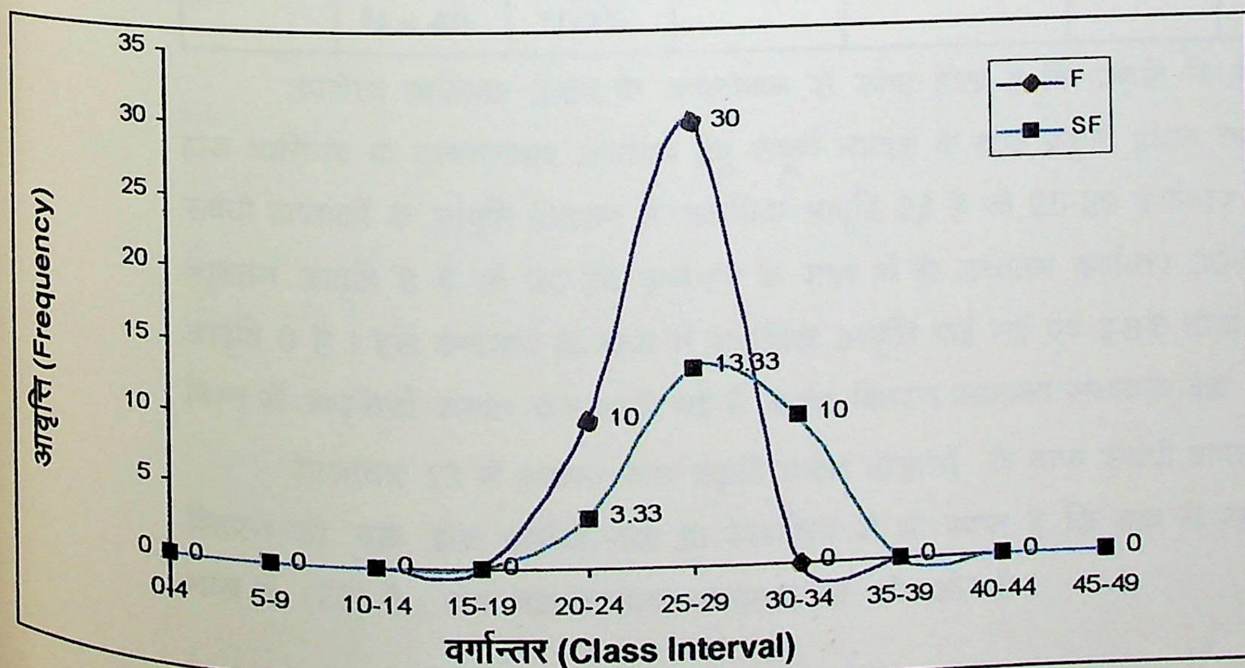


तालिका 3.60 से संबंधित आवृत्ति वितरण

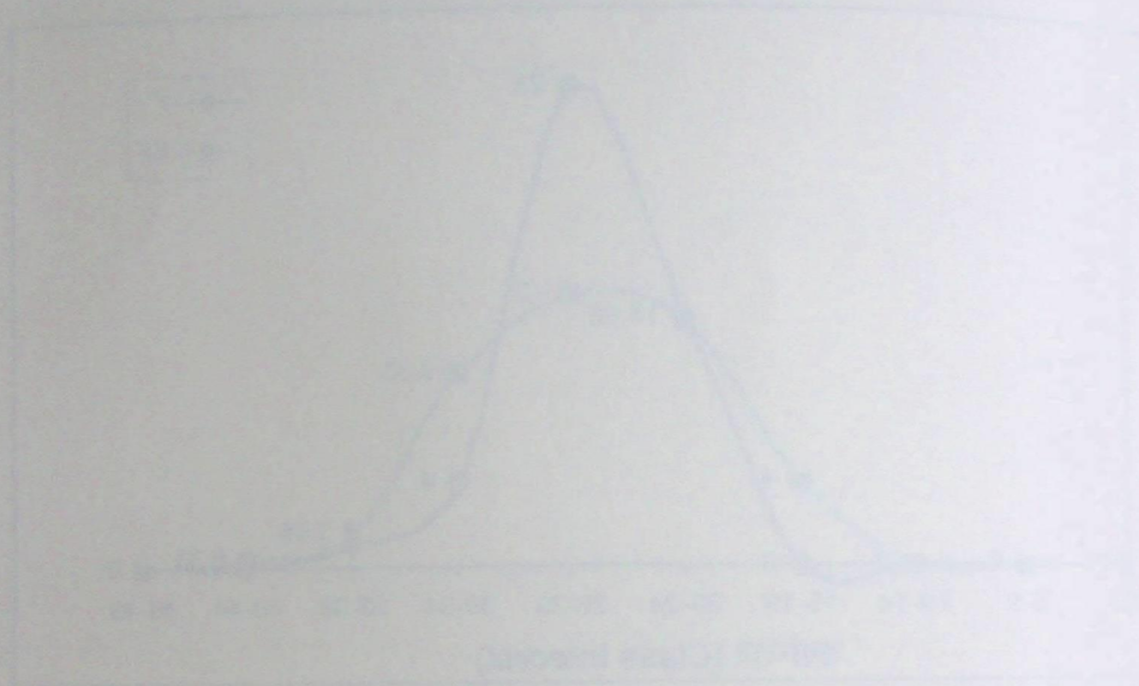
रेखाचित्र – 12

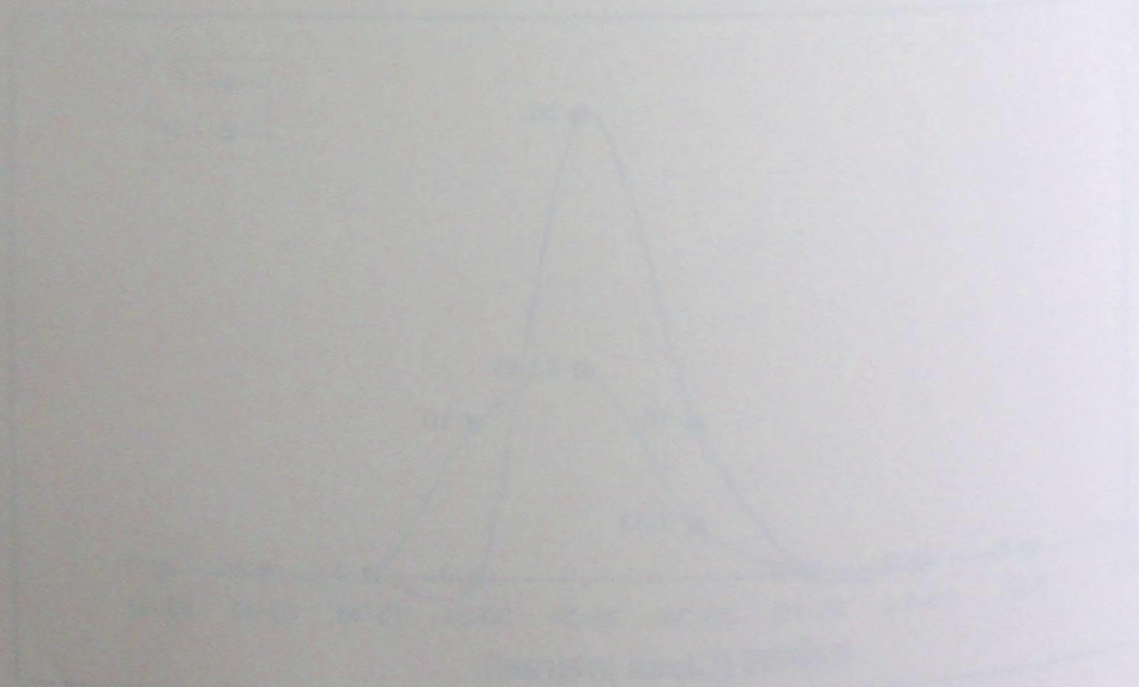
समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 40



तालिका 3.62 से संबंधित आवृत्ति वितरण





तालिका 3.64

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=40 (छात्राएँ)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0	0
35-39	0	0	0	0	3	7.50
30-34	9	22.50	40	100	10.66	26.65
25-29	23	57.50	31	77.50	13.33	33.32
20-24	8	20.00	8	20.00	10.33	25.82
15-19	0	0	0	0	2.66	6.65
10-14	0	0	0	0	0	0
5-9	0	0	0	0	0	0
0-4	0	0	0	0	0	0
	N = 40	100%				

उपरोक्त तालिका 3.64 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु संपूर्ण न्यादर्श के कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण में सर्वाधिक आवृति 23 है जो 25-29 वर्गान्तर के मध्य में है। न्यूनतम आवृति 8 है जो 20-24 वर्गान्तर के मध्य में है। उच्चतम वर्गान्तर 30-34 है जिसकी आवृति 9 है । इस वर्गान्तर के मध्य में सर्वाधिक आवृत्ति पाई गई एवं इसके दोनों छोर उच्च एवं निम्न में आवृत्तियाँ क्रमशः कम होती गई है अर्थात वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेखाचित्र 13 में समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेखाचित्र से भी स्पष्ट है कि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य में (23) है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.65

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्राएँ)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
27.12	27.10	27.06	3.25	0.51	0.01	0.06	24.93	29.28

संपूर्ण न्यादर्श में प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये न्यादर्श में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण मापों में मध्यमान (Mean) 27.12, मध्यांक (Mdn) 27.10 एवं बहुलांक (mode) 27.06 आया है। इन तीनों में विशेष अन्तर नहीं है। SK 0.01 है जो ± 3 से कम है व मध्यमान, मध्यांक से अधिक है। इसका अर्थ यह हुआ कि वितरण में धनात्मक विषमता तो है परंतु अत्याधिक न्यून मात्रा में है। एवं SEm 0.51 आया है जो 1.96 से कम है अर्थात वितरण का Mean मध्यमान पूरे समूह का प्रतिनिधित्व कर रहा है इसलिये वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है। Ku 0.06 है जो उसे 0.263 से कम है अर्थात वक्र Lepto Kurtic शिखरवीय है।

रेखाचित्र 18 में प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों की केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्राओं के वात प्रकृति प्रधान, पित्त प्रकृति प्रधान एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं का (27.12) है।

तालिका 3.66

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों का आवृति वितरण

N=40 (छात्र)

वर्ग अंतराल CI	आवृति F	आवृति प्रतिशत F%	संचयी आवृती CF	संचयी आवृति प्रतिशत CF%	सरलित आवृति SF	सरलित आवृति प्रतिशत SF%
45-49	0	0	0	0	0	0
40-44	0	0	0	0	0	0
35-39	0	0	0	0	2.33	5.82
30-34	7	17.50	40	100	10.00	25.00
25-29	23	57.50	33	82.50	14.33	35.82
20-24	10	25.00	10	25.00	11.00	27.50
15-19	0	0	0	0	3.33	8.32
10-14	0	0	0	0	0	0
5-9	0	0	0	0	0	0
0-4	0	0	0	0	0	0
	N = 40	100%				

उपरोक्त तालिका 3.66 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्रकृति प्रधान प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु संपूर्ण न्यादर्श के कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण में सर्वाधिक वृत्ति 23 है जो 25-29 वर्गान्तर के मध्य में है न्यूनतम आवृत्ति 7 है जो 30-34 वर्गान्तर के मध्य में है उच्चतम वर्गान्तर 30-34 है इसकी आवृत्ति 7 है । इस वर्गान्तर के मध्य में सर्वाधिक आवृत्ति पाई गई एवं इसके दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्ति क्रमशः कम है जो यह प्रकट करती है कि वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है।

रेरवाचित्र 14 में समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृति वितरण को वक्र द्वारा दर्शाया गया है। रेरवाचित्र से भी स्पष्ट है कि वक्र में सर्वाधिक आवृति मध्य में 23 है । अतः वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

तालिका 3.67

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
26.63	26.67	26.75	3.23	0.51	-0.03	0.06	24.50	28.84

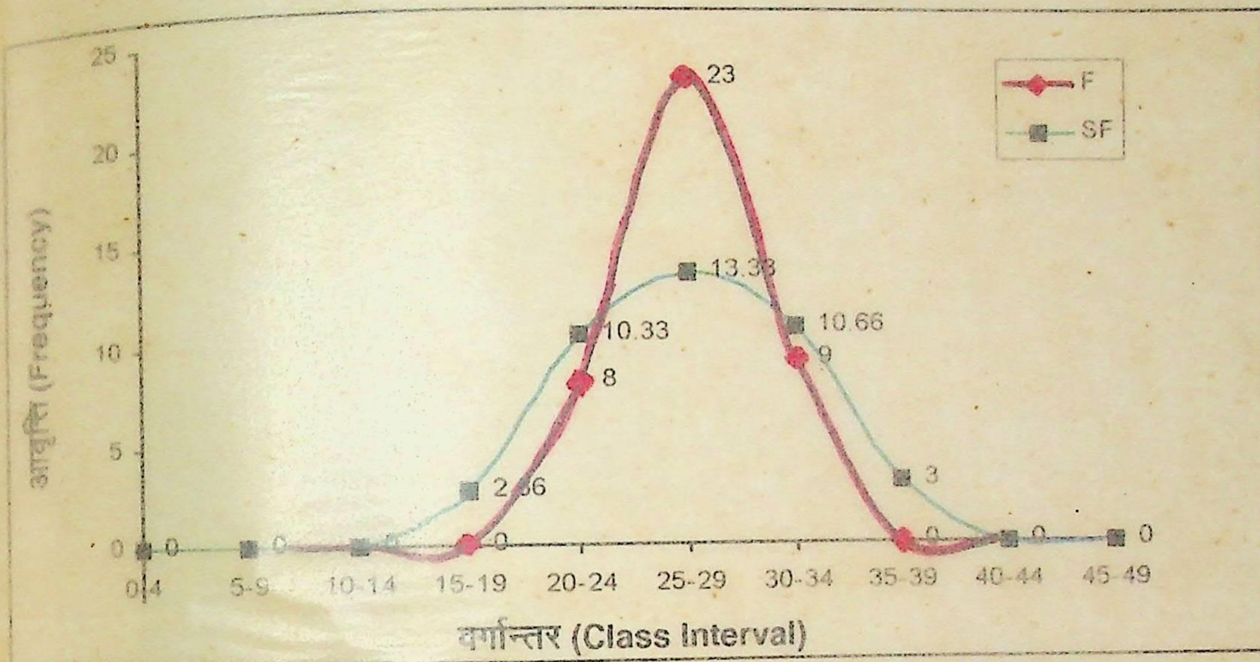
संपूर्ण न्यादर्श में प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण मापों में केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (Mean) 26.63, मध्यांक (Mdn) 26.67 एवं बहुलांक 26.75 है। इन तीनों मापों में विशेष अन्तर नहीं है। Sk 0.03 है जो ± 3 से कम है और मध्यमान का मान मध्यांक से कम है। अतः वितरण मे ऋणात्मक विषमता है परंतु अत्याधिक न्यून मात्रा की है। SEm 63 का मान 0.51 है जो 1.96 से कम अतः यह कहना उचित होगा कि हमारा वितरण संभावना वक्र की ओर है। Ku 0.06 है जो 0.263 से कम है अर्थात यहां भी वक्र Lepto Kurtic Type का (शिरवरीय) है।

रेखाचित्र 19 में प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों की केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरणशीलता को दर्शाया गया है। रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि समस्त छात्रों के वात प्रकृति प्रधान, पित्त प्रकृति प्रधान एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान में सर्वाधिक मान कफ प्रकृति प्रधान छात्रों का (26.63) है।

रेखाचित्र – 13

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 40

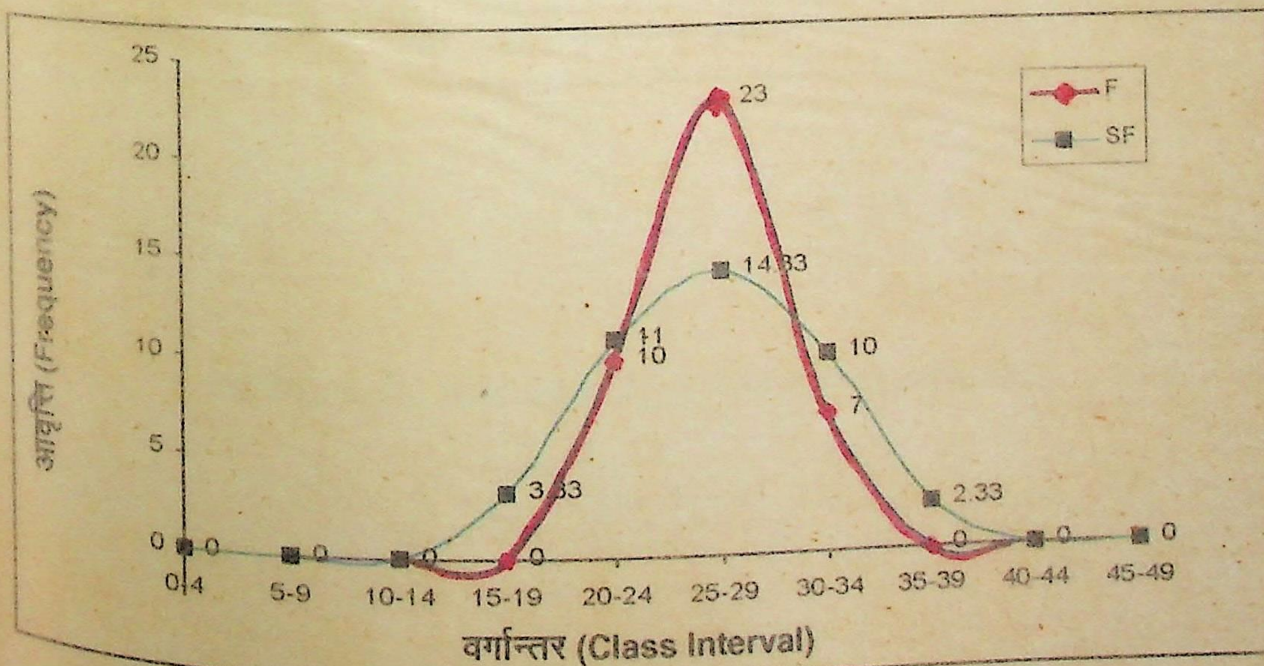


तालिका 3.64 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 14

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 40



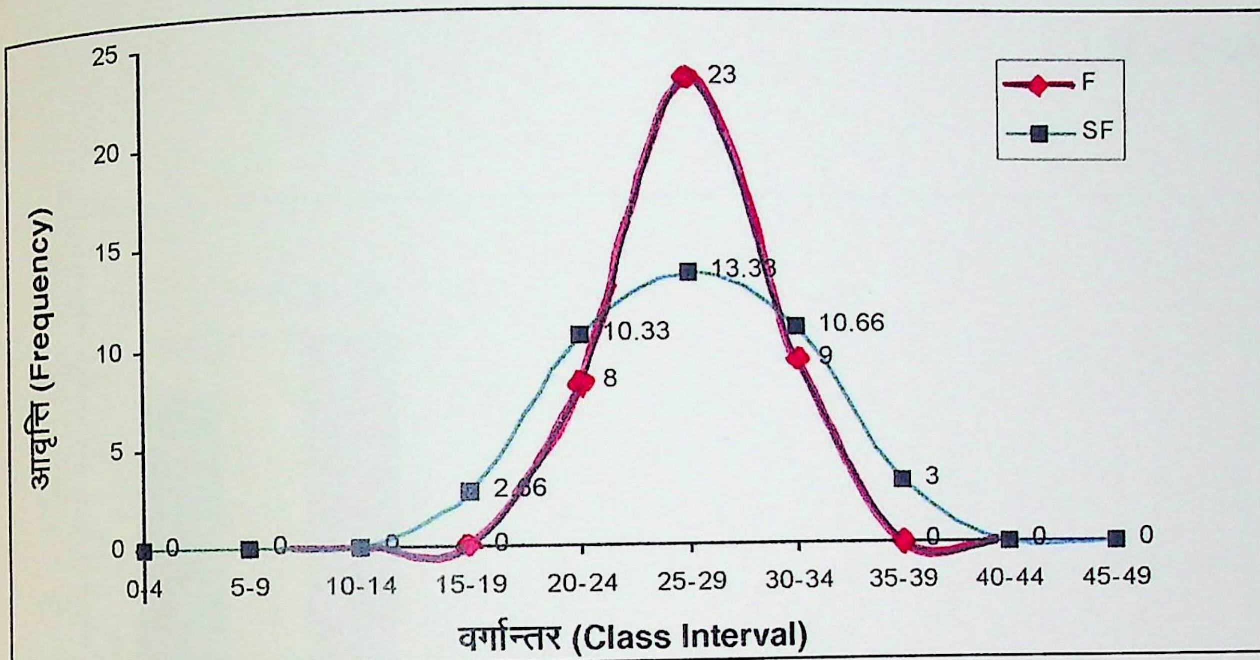
तालिका 3.66 से संबंधित आवृत्ति वितरण



रेखाचित्र – 13

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

N = 40

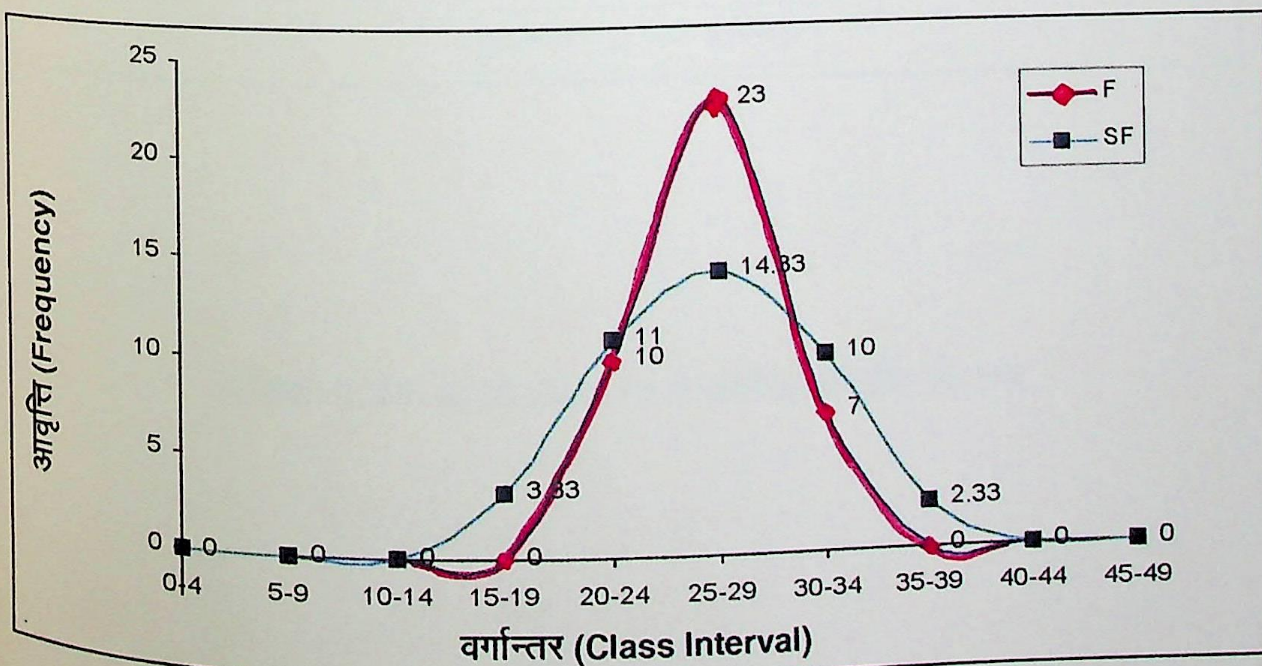


तालिका 3.64 से संबंधित आवृत्ति वितरण

रेखाचित्र – 14

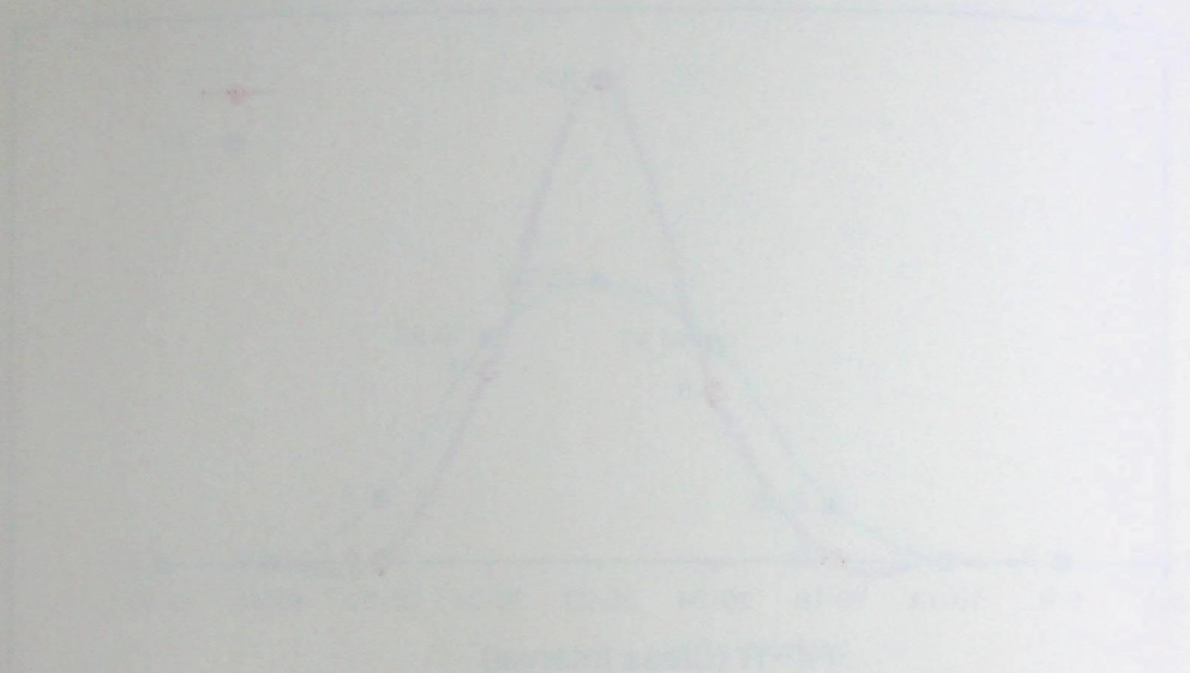
समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के आवृत्ति वितरण का रेखाचित्र

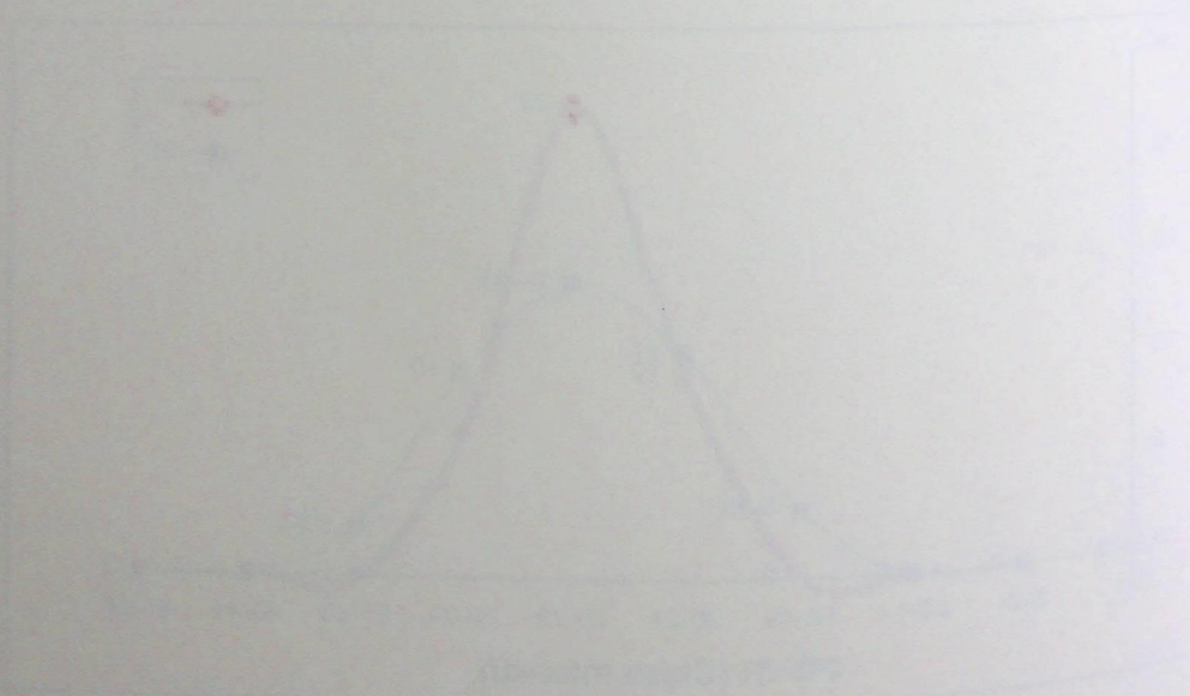
N = 40



तालिका 3.66 से संबंधित आवृत्ति वितरण



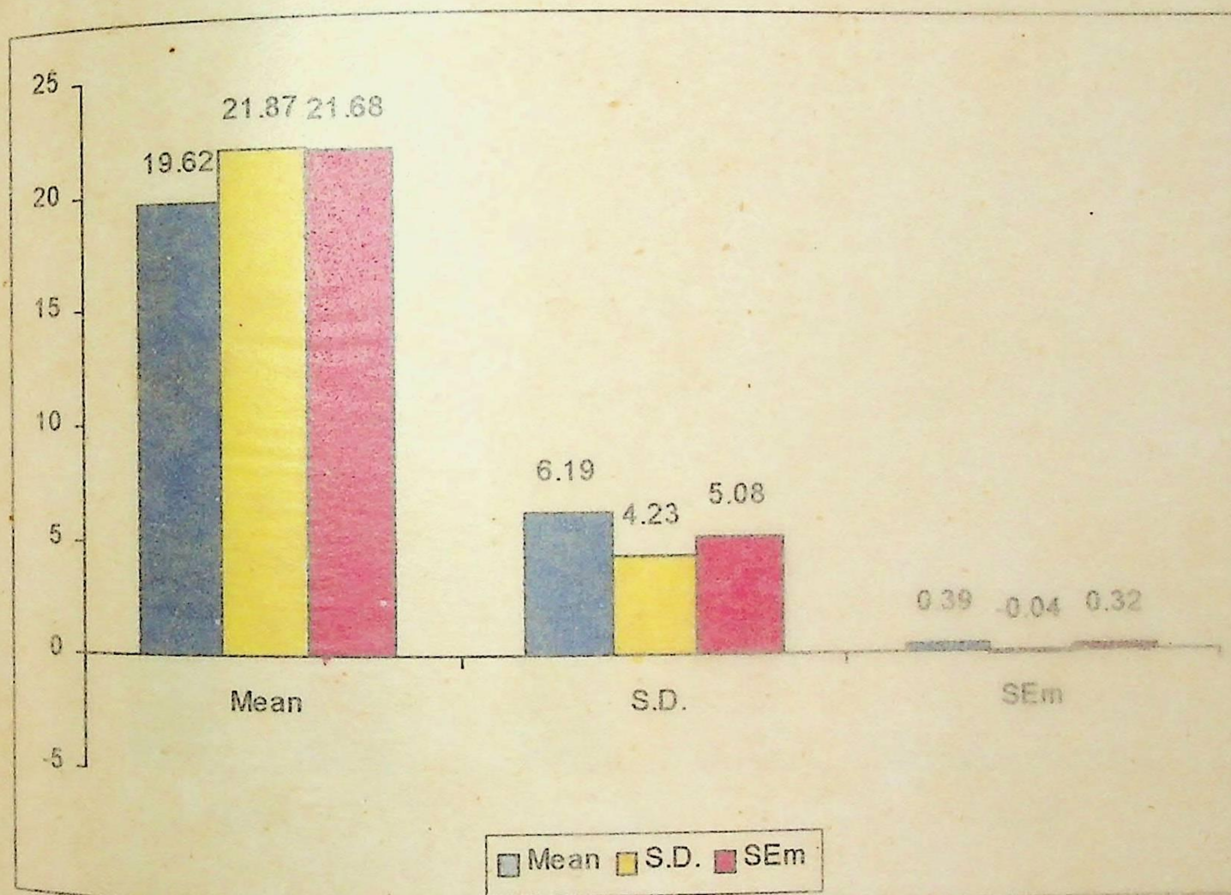




रेखाचित्र – 15

समस्त छात्र–छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 240

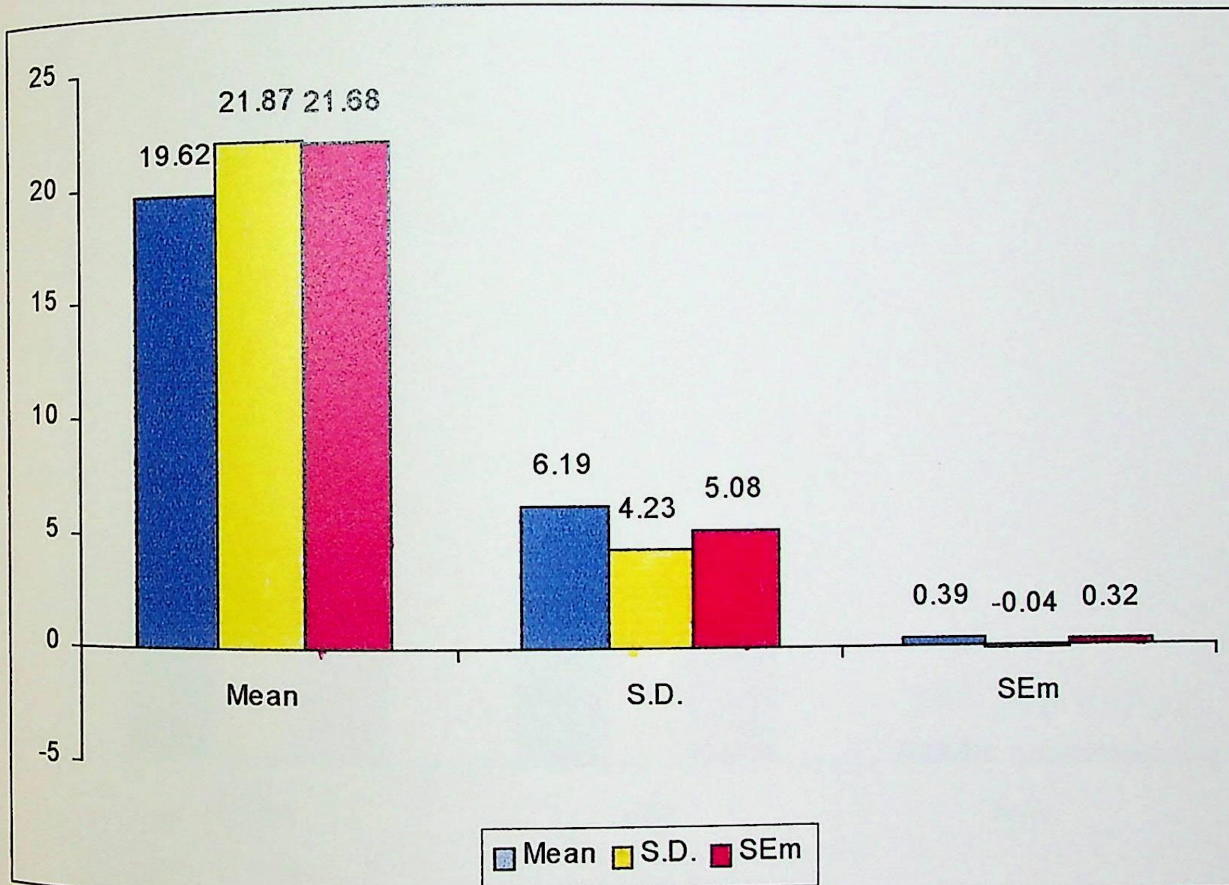


तालिका 3.38, 3.40 एवं 3.42 से संबंधित केन्द्रीय वितरण

रेखाचित्र – 15

समस्त छात्र–छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 240



तालिका 3.38, 3.40 एवं 3.42 से संबंधित केन्द्रीय वितरण

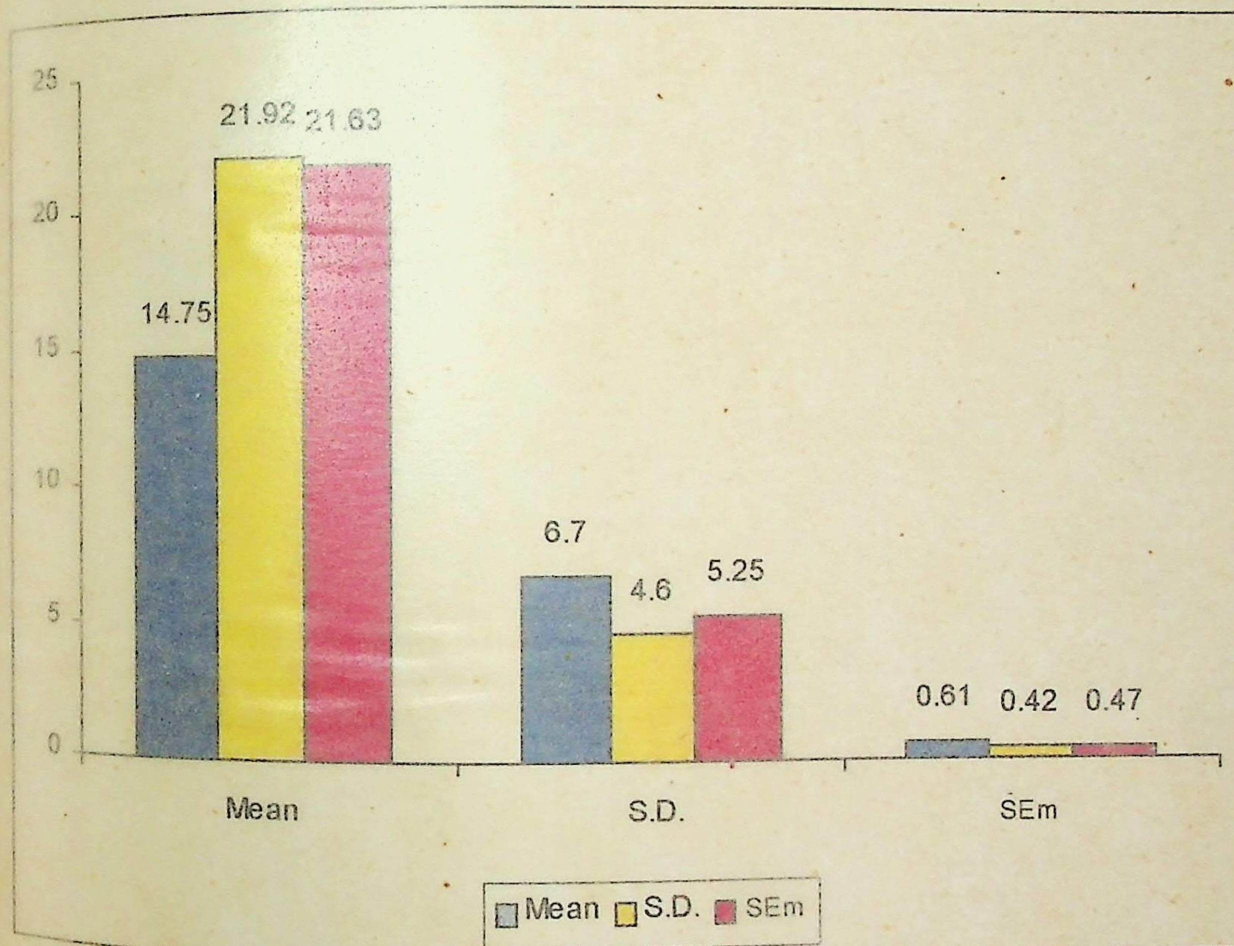




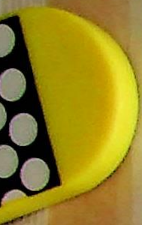
रेखाचित्र – 16

समस्त छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 120



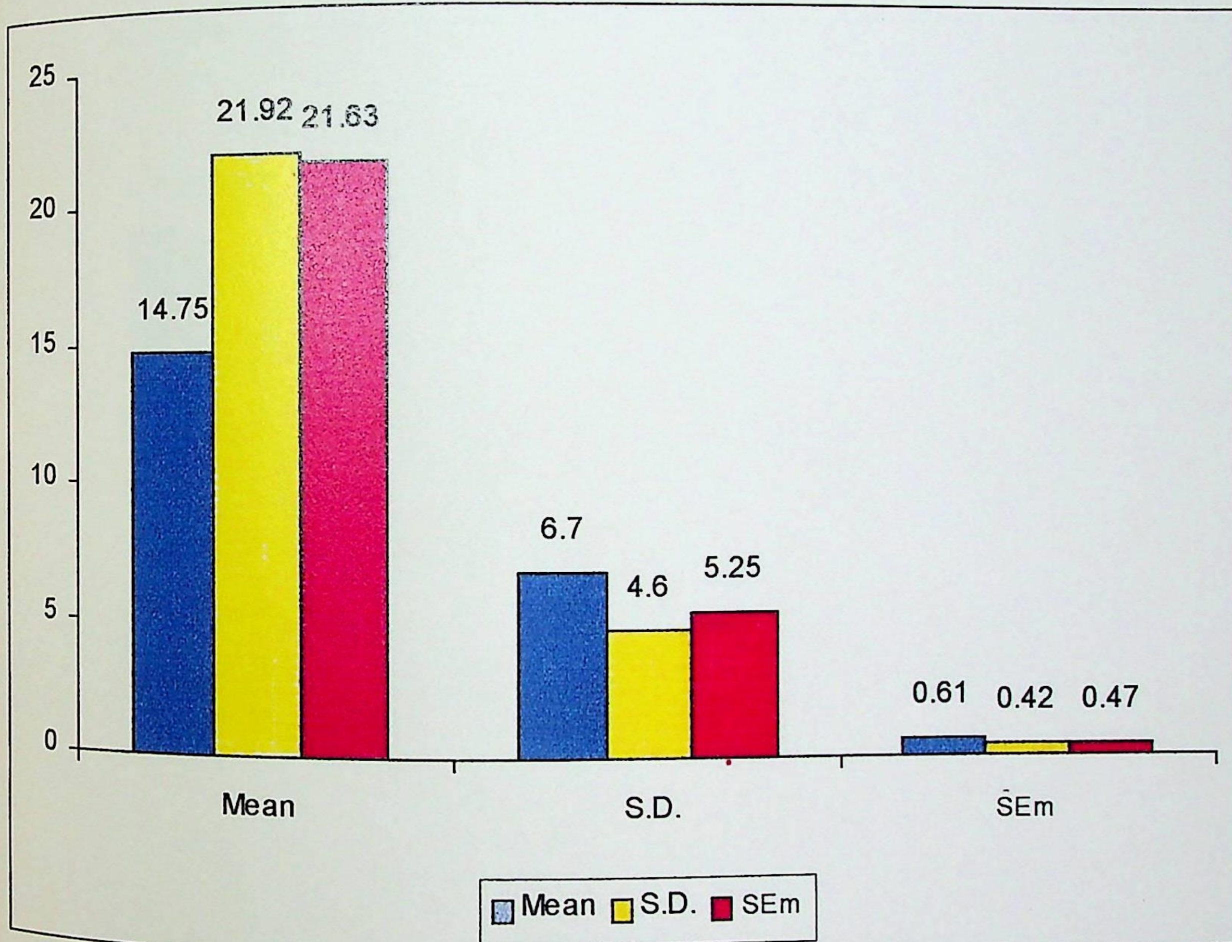
तालिका 3.45, 3.49 एवं 3.53 से संबंधित केन्द्रीय वितरण



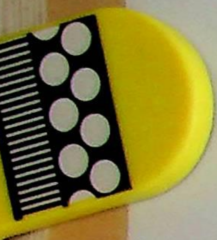
रेखाचित्र – 16

समस्त छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 120



तालिका 3.45, 3.49 एवं 3.53 से संबंधित केन्द्रीय वितरण

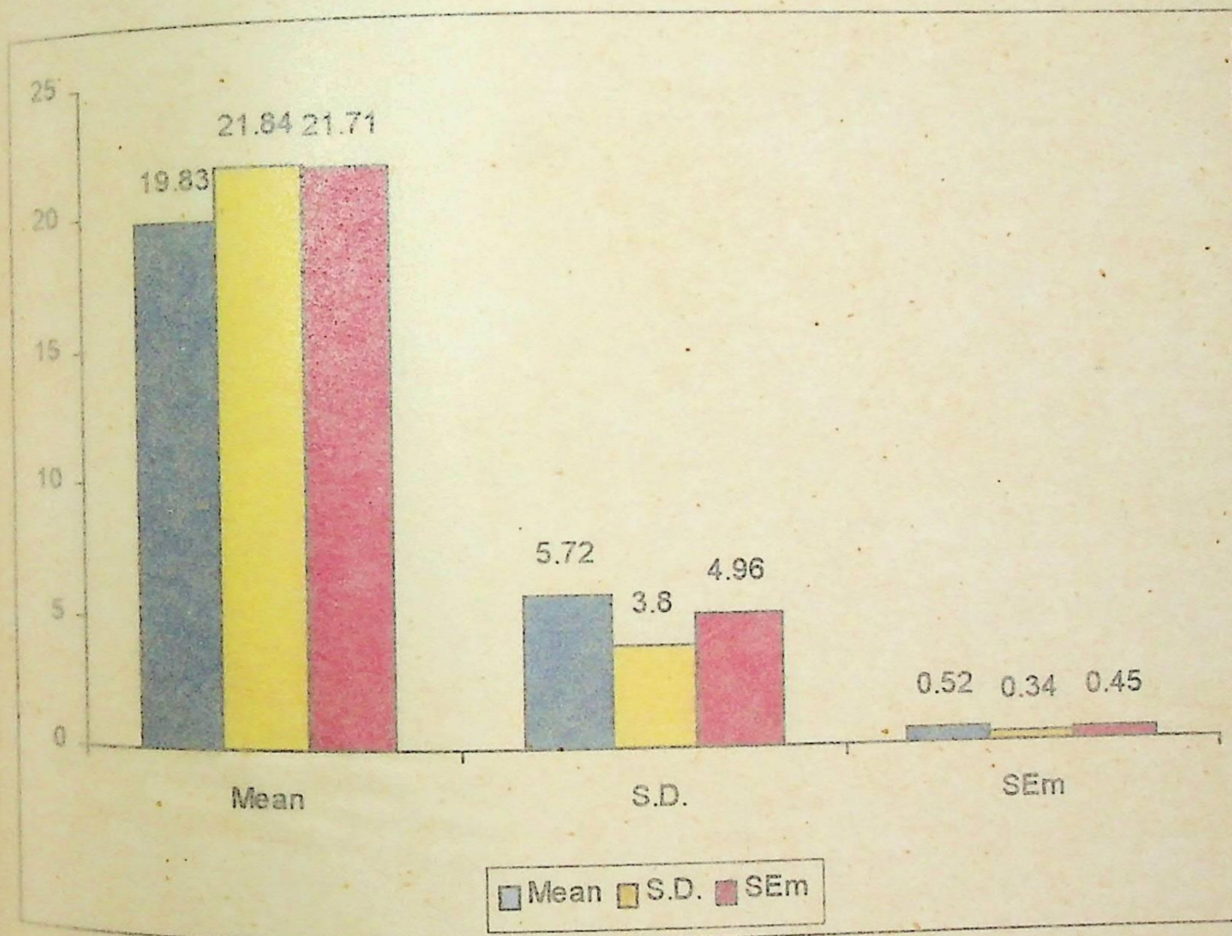




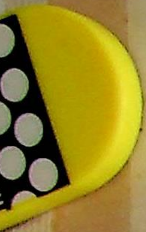
रेखाचित्र – 17

समस्त छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 120



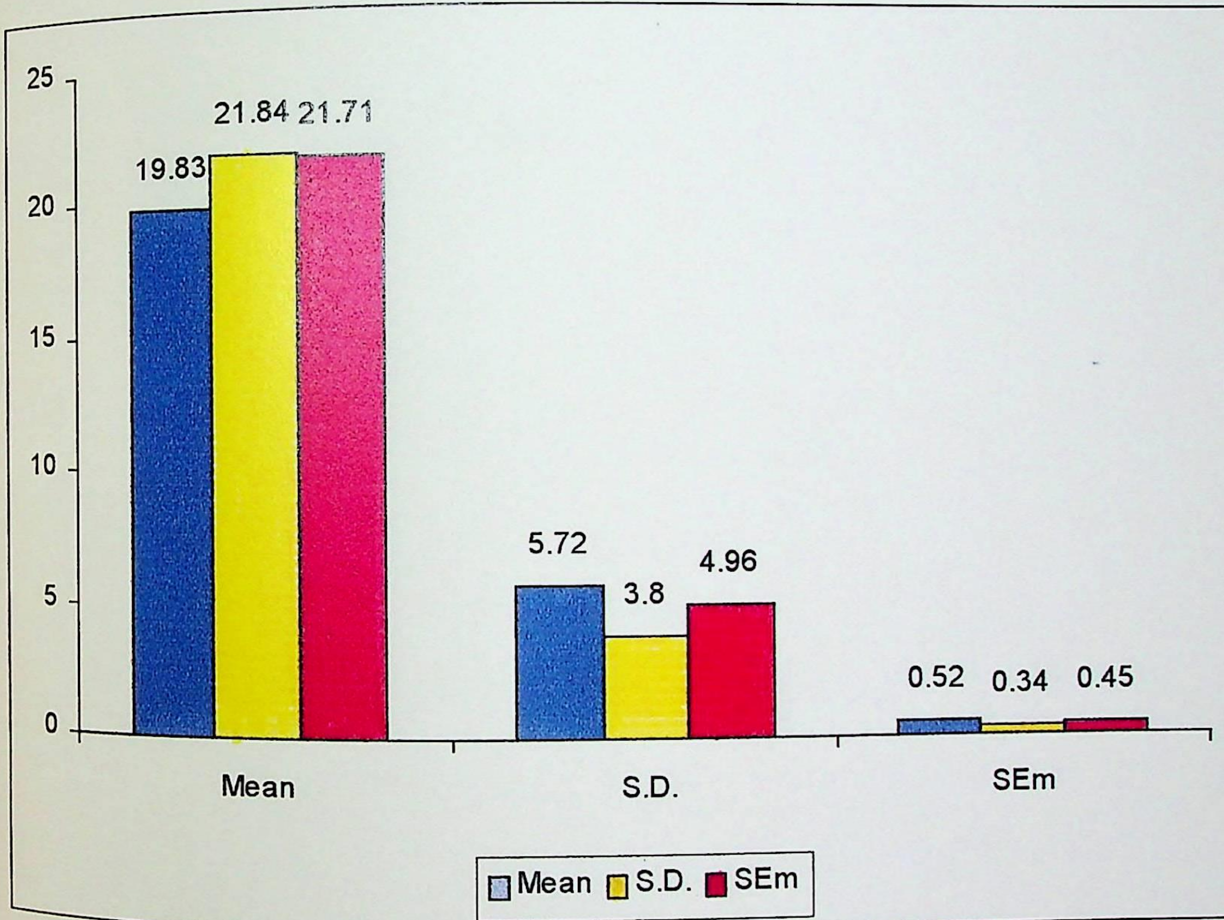
तालिका 3.47, 3.51 एवं 3.55 से संबंधित केन्द्रीय वितरण



रेखाचित्र – 17

समस्त छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 120



तालिका 3.47, 3.51 एवं 3.55 से संबंधित केन्द्रीय वितरण



रेखाचित्र – 13

समस्त वात, पित्त, कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

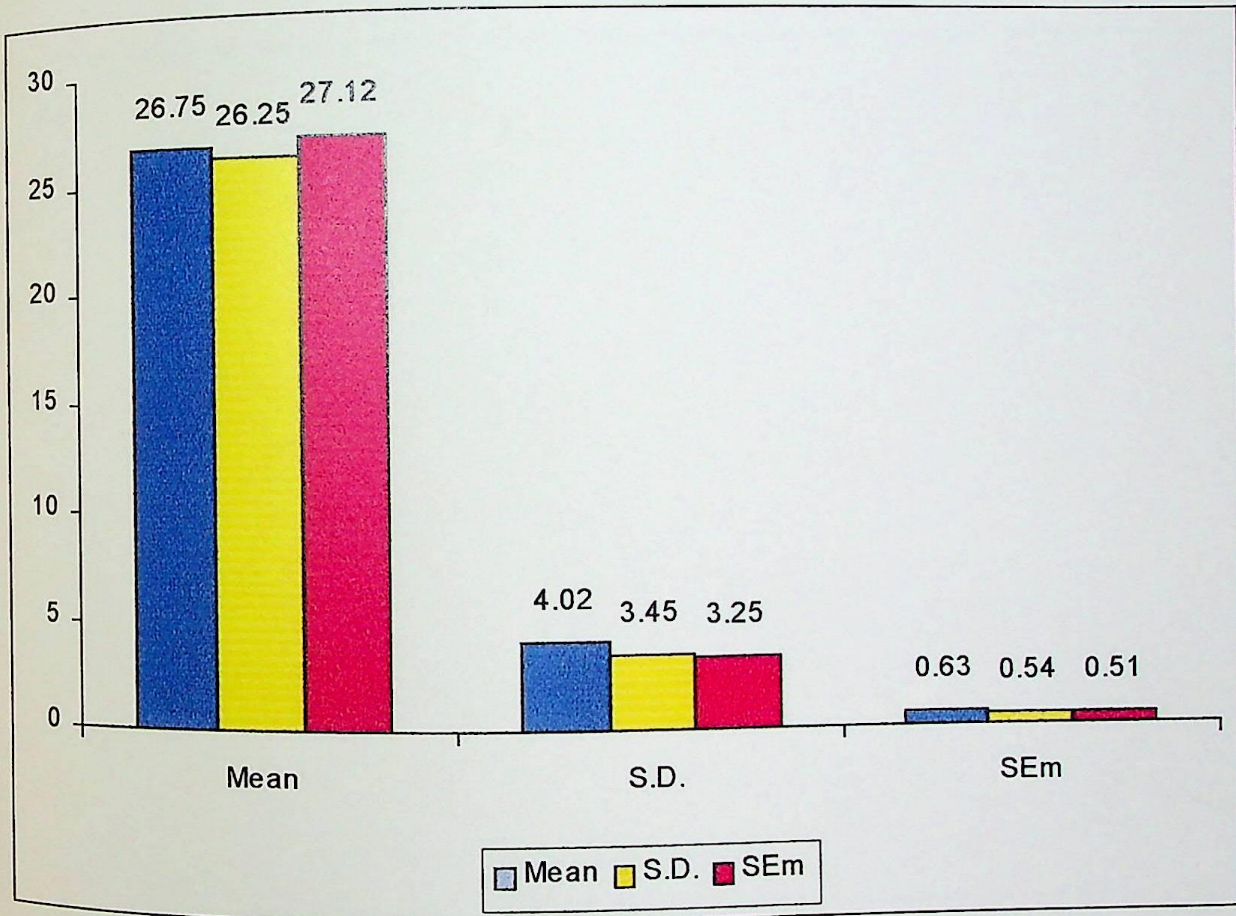


तालिका 3.57, 3.61 एवं 3.65 से संबंधित केन्द्रीय वितरण

रेखाचित्र – 18

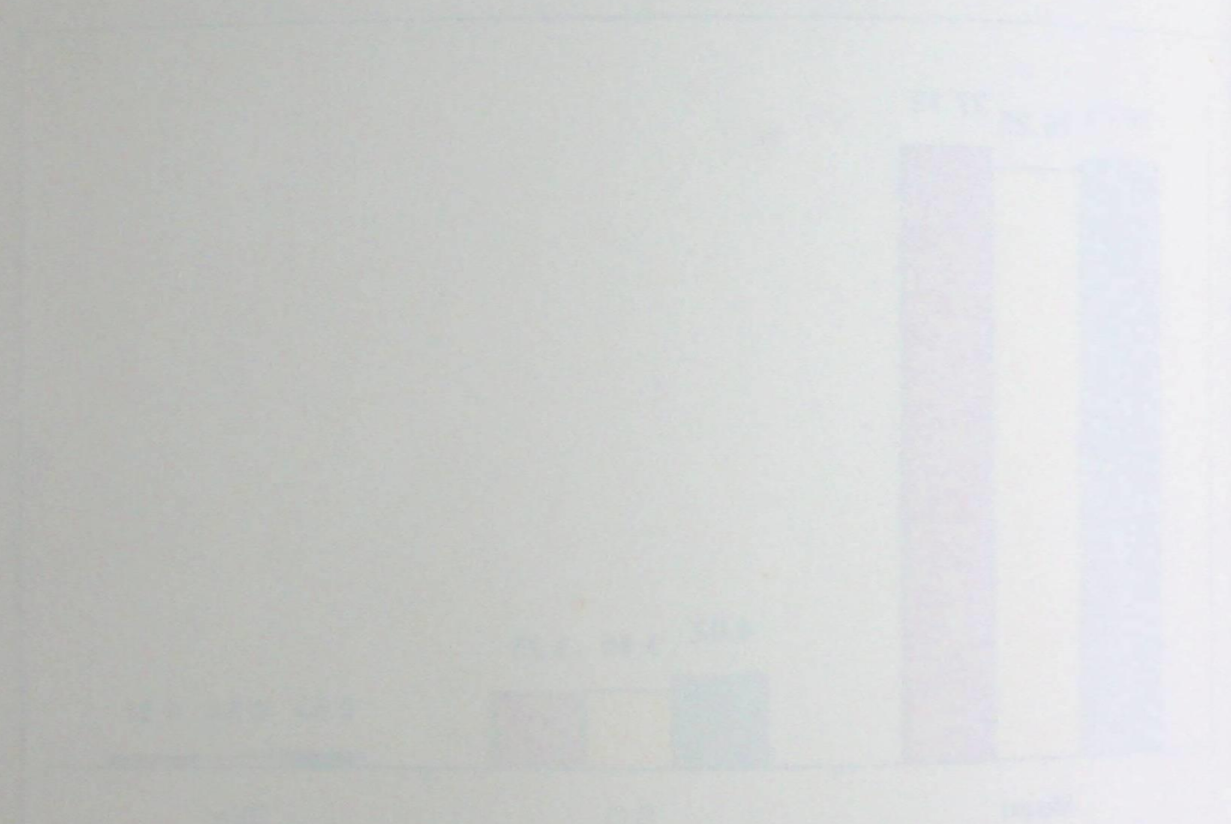
समस्त वात, पित्त, कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40



तालिका 3.57, 3.61 एवं 3.65 से संबंधित केन्द्रीय वितरण

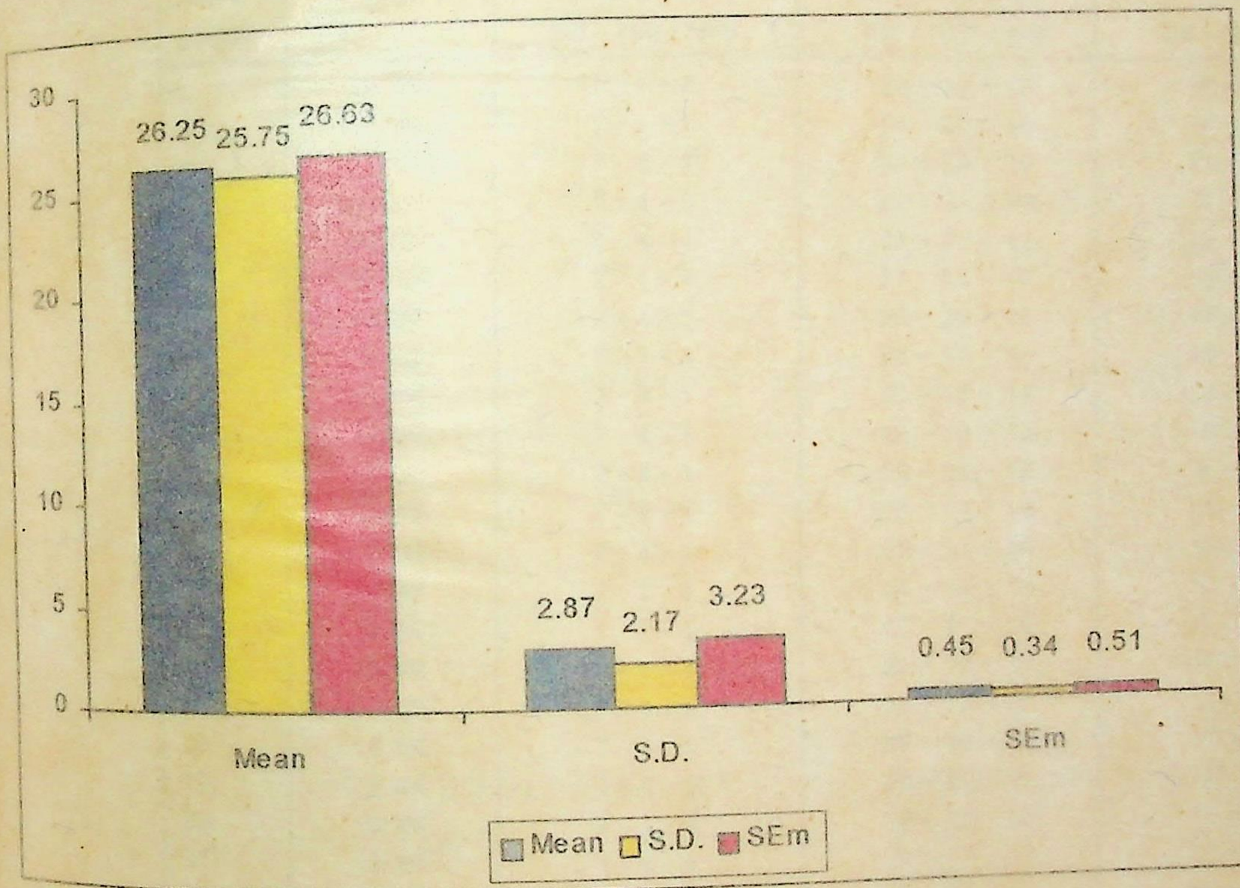




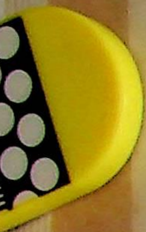
रेखाचित्र – 19

समस्त वात, पित्त, कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40



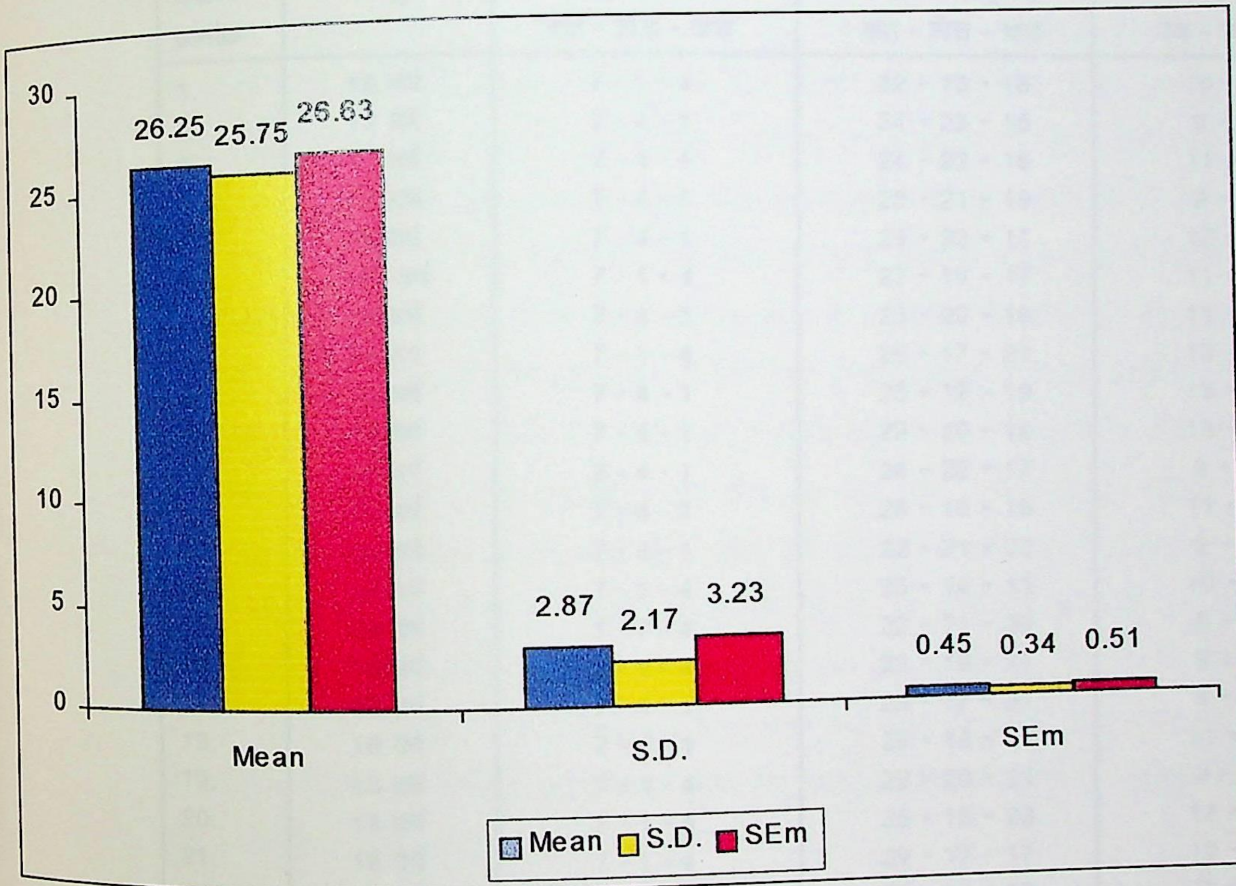
तालिका 3.59, 3.63 एवं 3.67 से संबंधित केन्द्रीय वितरण



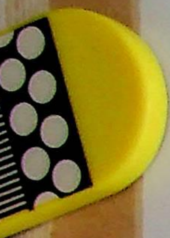
रेखाचित्र – 19

समस्त वात, पित्त, कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के क्रमशः वात, पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40



तालिका 3.59, 3.63 एवं 3.67 से संबंधित केन्द्रीय वितरण





तालिका 3.68

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक

वात प्रकृति प्रधान छात्राएँ

Class 12th N = 40

प्रयोज्य क्रमांक	आयु	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	32 - 13 - 18	10 - 3 - 8
2.	17 वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 23 - 16	9 - 5 - 7
3.	17 वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 23 - 16	11 - 3 - 7
4.	17 वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 21 - 19	9 - 6 - 6
5.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	29 - 23 - 11	12 - 2 - 7
6.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	27 - 19 - 17	11 - 2 - 8
7.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 22 - 18	11 - 1 - 9
8.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 17 - 21	10 - 5 - 6
9.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 19 - 19	13 - 3 - 5
10.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	29 - 20 - 14	13 - 3 - 5
11.	17 वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 22 - 17	9 - 7 - 5
12.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	26 - 18 - 19	11 - 4 - 7
13.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	22 - 21 - 20	9 - 5 - 7
14.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	36 - 14 - 13	10 - 6 - 5
15.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	22 - 21 - 20	8 - 6 - 7
16.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	23 - 19 - 21	9 - 8 - 4
17.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 17 - 21	9 - 3 - 9
18.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	29 - 16 - 18	11 - 4 - 6
19.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	22 - 20 - 21	9 - 4 - 8
20.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 15 - 23	12 - 4 - 5
21.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	29 - 17 - 17	10 - 3 - 8
22.	18 वर्ष	4 - 1 - 7	28 - 16 - 19	9 - 5 - 7
23.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 23 - 16	8 - 7 - 6
24.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	32 - 13 - 18	10 - 4 - 7
25.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	26 - 13 - 14	9 - 4 - 8
26.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	41 - 13 - 9	10 - 3 - 8
27.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	33 - 8 - 22	9 - 5 - 7
28.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	34 - 16 - 13	12 - 2 - 7
29.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 23 - 15	8 - 6 - 7
30.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	26 - 21 - 16	8 - 5 - 8
31.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	26 - 19 - 18	11 - 4 - 6
32.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 24 - 14	9 - 4 - 8
33.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	24 - 19 - 20	10 - 5 - 6
34.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	25 - 22 - 16	7 - 8 - 6
35.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 23 - 15	8 - 8 - 5
36.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	25 - 18 - 20	9 - 5 - 7
37.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	29 - 16 - 18	11 - 2 - 8
38.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 19 - 19	9 - 3 - 9
39.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 18 - 20	12 - 1 - 8
40.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	41 - 11 - 11	10 - 4 - 7

तालिका 3.68 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इस तालिका में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के नाड़ी परीक्षण द्वारा वात, पित्त, कफ की क्रमशः स्थिति, प्रयोज्य के प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांक, त्रिगुण रज, तम एवं सत्व संबंधी प्राप्तांक, एवं इन तीनों में सर्वाधिक प्राप्तांक, नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली के प्राप्तांकों की आपस में साम्यता, त्रिदोषों का त्रिगुण से संबंधित अंकों को दर्शाया गया है।

प्रयोज्य क्रमांक 1 को नाड़ी परीक्षण में प्राप्त स्पन्दनों को क्रमशः वात , पित्त, कफ से 7-1-4 अंक प्रदान किये गये क्योंकि प्रयोज्य की वात प्रकृति पाई गई , कफ का स्पन्दन दूसरे नंबर पर प्राप्त हुआ इसलिये उसको 4 अंक एवं पित्त तीसरे नंबर पर प्राप्त हुआ अतः उसको 1 अंक प्रदान किया। यह अंक स्पन्दनों को क्रमशः स्पष्टता प्रदान करने के लिये दिये गये हैं। तत्पश्चात प्रकृति निर्धारण मापनी द्वारा वात पित्त एवं कफ के प्राप्तांकों में 63 अंकों में से 32 अंक वात को मिले, 12 कफ को एवं 13 पित्त को। ये अंक भी उसी क्रम में प्राप्त हुये है जिस क्रम मे नाड़ी का स्पन्दन मिला है। दोनों में ही वात की प्रधानता है। त्रिदोषों के प्राप्तांकों के बाद रज तम एवं सत्व की स्थिति देखते हैं तो ज्ञात होता है कि इसी प्रयोज्य क्रमांक 1 को प्रकृति निर्धारण मापनी के फलांकन के दूसरे चरण में 21 नंबरों में रजगुण को सबसे अधिक नंबर 10, तम को 3 एवं सत्व को 8 नंबर मिले हैं। वात पित्त एवं कफ का रज, तम, एवं सत्व से संबंध होता है। यह संबंध जानने का प्रयास किया गया है। वात को रज गुण की प्रचुरता वाला कहा गया है। सांख्य दर्शन मे कहा गया है पैत्तिक प्रकृति के मनुष्य भी रजोगुणी होते हैं एवं कफ सतोगुणी होता है परंतु मलिन कफ तामसिक हो जाता है इस कारण कफ - प्रकृति के मनुष्य को नींद अधिक आती है। लेकिन यहां परीक्षण में वात, पित्त एवं कफ का रज, तम, सत्व से संबंध जानने का प्रयास किया था जिससे यह पाया गया कि वात प्रकृति की छात्राएँ सतोगुणी हैं और वात प्रकृति के छात्र रजोगुणी हैं।

ये सभी छात्राएँ अलग अलग विषय एवं अलग अलग आर्थिक परिस्थितियों की है उपरोक्त स्थिति वात प्रकृति प्रधान सभी छात्राओं प्रयोज्य क्रमांक 2 से प्रयोज्य क्रमांक 40 में नहीं पाई गई है। प्रयोज्य क्रमांक 15, 22, 28, 30, 34, 37, 40 में प्रकृति नाड़ी परीक्षण द्वारा प्राप्त नहीं हुई है। प्रयोज्य क्रमांक 17, 18, 38 में उनकी वात प्रकृति ज्ञात हुई है परन्तु पित्त एवं कफ की स्थिति क्रमशः प्रपत्र के प्राप्तांकों के अनुसार नहीं ज्ञात हुई है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं। जैसे वातावरण जन्य कारक, प्रयोज्य की मानसिक स्थिति प्रयोगकर्ता की स्थिति इत्यादि। इन छात्राओं का व्यक्तित्व के 16 कारक मापनी परीक्षण द्वारा व्यक्तित्व का निर्धारण किया जावेगा एवं व्याख्या द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों से तुलना की जावेगी कि दोनों में समानता है अथवा भिन्नता है।

तालिका 3.69

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक

पित्त प्रकृति प्रधान छात्राएँ

Class 12th N = 40

प्रयोज्य क्रमांक	आयु	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	17 वर्ष	1 - 7 - 4	18 - 23 - 22	7 - 4 - 10
2.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	13 - 32 - 18	8 - 9 - 4
3.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	17 - 23 - 23	7 - 8 - 6
4.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	20 - 27 - 16	7 - 9 - 5
5.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	16 - 36 - 11	8 - 7 - 6
6.	17 वर्ष	4 - 7 - 1	14 - 26 - 23	4 - 10 - 7
7.	17 वर्ष	1 - 7 - 4	15 - 26 - 22	5 - 2 - 14
8.	17 वर्ष	7 - 1 - 4	20 - 24 - 19	10 - 2 - 9
9.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 25 - 21	7 - 8 - 6
10.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	13 - 26 - 24	7 - 8 - 6
11.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 25 - 24	9 - 4 - 8
12.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	11 - 27 - 25	9 - 4 - 8
13.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	15 - 25 - 23	8 - 3 - 10
14.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	12 - 34 - 17	8 - 3 - 10
15.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	19 - 23 - 21	8 - 6 - 10
16.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	20 - 24 - 19	6 - 8 - 7
17.	17 वर्ष	4 - 7 - 1	18 - 23 - 22	8 - 4 - 9
18.	17 वर्ष	1 - 7 - 4	12 - 28 - 23	9 - 7 - 5
19.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	14 - 26 - 23	10 - 5 - 6
20.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	20 - 22 - 21	10 - 3 - 8
21.	17 वर्ष	1 - 7 - 4	14 - 25 - 24	7 - 8 - 6
22.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 27 - 22	7 - 7 - 7
23.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	15 - 26 - 22	11 - 4 - 7
24.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	15 - 27 - 21	9 - 4 - 8
25.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	14 - 25 - 24	6 - 8 - 7
26.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	19 - 24 - 20	9 - 5 - 7
27.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	18 - 25 - 20	6 - 8 - 7
28.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	17 - 29 - 17	8 - 8 - 5
29.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	17 - 27 - 19	7 - 8 - 6
30.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 27 - 19	7 - 8 - 6
31.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	19 - 23 - 21	7 - 8 - 6
32.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	21 - 23 - 19	7 - 8 - 6
33.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 24 - 22	13 - 3 - 5
34.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	13 - 28 - 22	6 - 9 - 6
35.	17 वर्ष	7 - 4 - 1	17 - 29 - 17	9 - 4 - 8
36.	17 वर्ष	1 - 7 - 4	10 - 32 - 21	9 - 3 - 9
37.	17 वर्ष	4 - 7 - 1	19 - 25 - 19	4 - 11 - 6
38.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	13 - 30 - 20	6 - 8 - 7
39.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	16 - 25 - 22	8 - 2 - 11
40.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	18 - 24 - 21	10 - 2 - 9

उपरोक्त तालिका 3.69 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं का नाड़ी परीक्षण द्वारा प्राप्तांक प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात, पित्त एवं कफ एवं रज तम सत्व के प्राप्तांकों का वर्णन है।

प्रयोज्य क्रमांक 1 की प्रकृति नाड़ी परीक्षण द्वारा पित्त प्रकृति पाई गई है, कफ नाड़ी द्वितीय स्थान पर प्राप्त हुई एवं वात नाड़ी तीसरे स्थान पर प्राप्त हुई। प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली में भी इसी क्रम में अंक प्राप्त हुये । ये अंक हैं पित्त को 23, कफ के 22 एवं वात के 18 । अर्थात नाड़ी एवं प्रश्नावली के निष्कर्षों से भिन्नता नहीं है । परंतु इस प्रयोज्य का रज तम सत्व में से सत्व गुण प्रधान पाया गया क्योंकि 21 अंकों मे से 10 सर्वाधिक सत्व को प्राप्त हुये हैं । प्रयोज्य क्रमांक 3, 8, 11, 14, 15, 16, 22, 23, 33 व 35 में प्रकृति संबंधी स्पन्दन प्रपत्र के अनुसार प्राप्त नहीं हुयें है ।

पैत्तिक प्रकृति की छात्राओं में से कुछ छात्राएँ सतोगुणी पाई गई एवं कुछ तमोगुणी भी पाई गई । अधिकांश छात्राएँ रजोगुणी पाई गई । प्रयोज्य क्रमांक 2 नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा पैत्तिक प्रकृति की है । परंतु उसको तम गुण में सर्वाधिक अंक 9 प्राप्त हुये । यही स्थिति प्रयोज्य क्रमांक 3, 4, 6, 9, 10, 16, 21, 25 व 27, 28, 29, 30, 31, 32, 34, 37, 38 की है। परंतु औसत ज्ञात करने पर छात्राएँ रजोगुणी की श्रेणी में आती है।

इन छात्राओं का 16 P.F. Test के द्वारा परीक्षण करके पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन किया जावेगा ।

तालिका 3.70

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक

कफ प्रकृति प्रधान छात्राएँ

Class 12th N = 40

प्रयोज्य	आयु क्रमांक	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	18वर्ष	1 - 4 - 7	12 - 21 - 30	9 - 2 - 10
2.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 23 - 25	6 - 3 - 12
3.	18वर्ष	1 - 7 - 4	18 - 22 - 23	9 - 2 - 10
4.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 23 - 24	8 - 4 - 9
5.	18वर्ष	1 - 4 - 7	12 - 25 - 26	6 - 3 - 12
6.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 22 - 28	7 - 4 - 10
7.	18वर्ष	1 - 7 - 4	15 15 - 33	7 - 5 - 10
8.	18वर्ष	1 - 4 - 7	12 - 24 - 27	8 - 4 - 9
9.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 22 - 26	7 - 5 - 9
10.	18वर्ष	7 - 4 - 1	13 - 17 - 33	4 - 2 - 15
11.	18वर्ष	4 - 1 - 7	11 - 21 - 31	6 - 4 - 11
12.	18वर्ष	4 - 1 - 7	14 - 18 - 31	8 - 2 - 11
13.	18वर्ष	7 - 4 - 1	14 - 20 - 29	5 - 3 - 13
14.	18वर्ष	4 - 7 - 1	13 - 22 - 28	5 - 6 - 10
15.	18वर्ष	1 - 4 - 7	12 - 20 - 31	5 - 4 - 12
16.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 23 - 25	6 - 7 - 8
17.	17वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 24 - 26	6 - 2 - 13
18.	17वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 21 - 27	9 - 2 - 10
19.	17वर्ष	1 - 4 - 7	18 - 21 - 24	7 - 6 - 8
20.	17वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 22 - 26	9 - 2 - 10
21.	17वर्ष	1 - 7 - 4	15 - 23 - 25	7 - 4 - 10
22.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 23 - 25	6 - 2 - 13
23.	18वर्ष	1 - 7 - 4	11 - 22 - 30	7 - 4 - 10
24.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 23 - 25	9 - 3 - 9
25.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 20 - 29	7 - 5 - 9
26.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 21 - 26	8 - 4 - 9
27.	18वर्ष	4 - 1 - 7	12 - 23 - 28	6 - 4 - 11
28.	18वर्ष	1 - 4 - 7	19 - 20 - 24	8 - 3 - 10
29.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 20 - 29	9 - 1 - 11
30.	18वर्ष	4 - 1 - 7	20 - 17 - 26	6 - 6 - 9
31.	18वर्ष	1 - 4 - 7	18 - 22 - 23	8 - 4 - 9
32.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 19 - 31	5 - 4 - 12
33.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 23 - 24	9 - 2 - 10
34.	18वर्ष	7 - 1 - 4	17 - 22 - 23	7 - 5 - 9
35.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 19 - 27	6 - 4 - 11
36.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 20 - 27	8 - 2 - 11
37.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 20 - 29	11 - 3 - 7
38.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 19 - 31	4 - 4 - 13
39.	18वर्ष	4 - 7 - 1	15 - 22 - 26	4 - 6 - 8
40.	18वर्ष	1 - 4 - 7	18 - 22 - 23	9 - 2 - 10

तालिका 3.70 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ये सभी छात्राएँ कफ प्रकृति प्रधान है। क्योंकि प्रकृति निर्धारण मापनी में सभी छात्राओं को कफ संबधी प्राप्तांक सबसे अधिक प्राप्त हैं लेकिन नाड़ी परीक्षण द्वारा सभी छात्राओं की कफ प्रकृति नहीं पाई गई है। परंतु अधिकांश छात्राओं के नाड़ी परीक्षण में भी उनकी कफ प्रकृति पाई गई । जिन छात्राओं के नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली के प्राप्तांकों में भिन्नता है । उसके अनेक कारण हो सकते है। जैसे छात्राओं की मानसिक स्थिति, स्वास्थ्य की अवस्था, भूख, प्यास, एवं वातावरण जन्य अनेक कारण ऐसे हैं जो नाड़ी परीक्षण में बाधा उत्पन्न करते हैं। इसलिये नाड़ी की सही स्थिति का ज्ञान नहीं हो पाता हैं एवं उसके अनुभव में त्रुटि आ जाती है ।

प्रयोज्य क्रमांक 3, 7, 10, 13, 14, 21, 23, 27, 34 एवं 39 में प्रकृति व प्राप्तांकों की स्थिति में भिन्नता है । प्रयोज्य क्रमांक 26, 27 में प्रकृति पाई गई है ।

कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं में सभी छात्राएँ सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा औसत ज्ञात करने पर सतो गुणी पाई गई। इन छात्राओं का 16.P.F. Test द्वारा व्यक्तित्व परीक्षण करके कफ प्रकृति प्रधान छात्रों से तुलनात्मक अध्ययन कर विवेचना की जायेगी।

तालिका 3.71

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक

वात प्रकृति प्रधान छात्र

Class 12th N = 40

प्रयोज्य क्रमांक	आयु	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	18वर्ष	7 - 1 - 4	22 - 20 - 21	7 - 6 - 8
2.	18वर्ष	7 - 4 - 1	30 - 18 - 15	14 - 2 - 5
3.	18वर्ष	7 - 4 - 1	30 - 16 - 17	6 - 3 - 12
4.	18वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 16 - 23	12 - 3 - 6
5.	18वर्ष	1 - 4 - 7	33 - 18 - 22	8 - 1 - 12
6.	18वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 22 - 17	9 - 6 - 6
7.	18वर्ष	7 - 1 - 4	28 - 17 - 18	7 - 8 - 6
8.	18वर्ष	7 - 1 - 4	22 - 20 - 21	4 - 4 - 13
9.	18वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 18 - 22	4 - 15 - 2
10.	19वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 20 - 16	6 - 6 - 9
11.	18वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 18 - 22	7 - 3 - 11
12.	16वर्ष	7 - 1 - 4	23 - 17 - 23	9 - 4 - 8
13.	16वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 22 - 17	8 - 5 - 8
14.	17वर्ष	7 - 1 - 4	39 - 17 - 7	13 - 2 - 6
15.	17वर्ष	4 - 7 - 1	28 - 17 - 18	9 - 2 - 10
16.	18वर्ष	4 - 7 - 1	26 - 16 - 21	8 - 3 - 10
17.	18वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 15 - 21	10 - 5 - 6
18.	18वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 22 - 17	3 - 9 - 9
19.	18वर्ष	4 - 1 - 7	32 - 21 - 10	8 - 2 - 11
20.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	23 - 20 - 20	11 - 3 - 7
21.	18वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 22 - 18	9 - 8 - 4
22.	18वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 19 - 19	8 - 5 - 8
23.	18वर्ष	1 - 7 - 4	26 - 20 - 17	5 - 5 - 11
24.	18वर्ष	1 - 7 - 4	26 - 18 - 19	9 - 5 - 7
25.	18वर्ष	7 - 4 - 1	30 - 23 - 10	6 - 4 - 11
26.	18वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 20 - 18	10 - 7 - 4
27.	18वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 18 - 18	9 - 8 - 4
28.	18वर्ष	7 - 4 - 1	26 - 21 - 16	6 - 6 - 9
29.	18वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 22 - 18	8 - 6 - 7
30.	18वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 19 - 17	8 - 6 - 7
31.	18वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 18 - 20	11 - 3 - 7
32.	18वर्ष	7 - 4 - 1	26 - 20 - 17	9 - 8 - 4
33.	18वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 20 - 18	6 - 4 - 11
34.	18वर्ष	7 - 4 - 1	28 - 25 - 10	11 - 3 - 7
35.	18वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 19 - 17	10 - 8 - 3
36.	18वर्ष	7 - 1 - 4	23 - 18 - 22	6 - 3 - 12
37.	18वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 20 - 16	8 - 6 - 7
38.	18वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 21 - 18	9 - 8 - 4
39.	18वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 21 - 17	9 - 8 - 4
40.	18वर्ष	7 - 4 - 1	29 - 24 - 10	12 - 2 - 7

तालिका 3.71 में वात प्रकृति प्रधान छात्रों की है। इन सभी छात्रों को प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात में सर्वाधिक अंक मिले हैं। एवं अधिकांश छात्रों के नाड़ी परीक्षण द्वारा भी वात प्रकृति ही पाई गई। पित्त एवं कफ दोषानुसार क्रमशः प्रश्नावली एवं नाड़ी परीक्षण द्वारा पाये गये। कुछ छात्र सतोगुणी व कुछ तमोगुणी भी पाये गये। किन्तु अधिकांश छात्र रजोगुणी की श्रेणी में आते हैं। औसत द्वारा भी यही निष्कर्ष निकलता है कि वात प्रकृति प्रधान छात्र भी रजोगुणी पाये गये हैं। प्रयोज्य क्रमांक 1 को प्रश्नावली में वात संबंधी अंक 22 हैं, कफ संबंधी 21 एवं पित्त संबंधी 20 हैं।

नाड़ी स्पंदन का यही क्रम प्राप्त हुआ है। वात प्रकृति पाई गई इसलिये अंक 7, कफ दूसरे नंबर पर प्राप्त हुआ हैं इसलिये 4 अंक एवं पित्त का स्पन्दन तीसरे स्थान पर प्राप्त हुआ इसलिये 1 अंक प्रदान किया । लेकिन प्रयोज्य क्रमांक 5-9-10, 11-15, 16-17, 19, 20, 23, 24 में प्राप्तांकों की स्थिति प्रपत्र से भिन्न है ।

प्रयोज्य क्रमांक 1, 3, 5, 8, 10, 11, 15, 16, 19, 23, 25, 28, 33 एवं 36 में सत्व गुण की प्रधानता पाई गई। प्रयोज्य क्रमांक 7, 9 तमो गुणी पाये गये। अधिकांश छात्र रजोगुणी पाये गये। प्रयोज्य क्रमांक 18 में तम एवं सत्व गुण दोनों प्रधान प्राप्त होते हैं ।

सत्व गुण एवं रज गुण के औसत में विशेष अंतर नहीं है, लेकिन रजगुण ही प्रधान है।

तालिका 3.72

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त कफ एवं सत्व रज तम संबंधी प्राप्तांक

पित्त प्रकृति प्रधान छात्र

Class 12th N = 40

प्रयोज्य क्रमांक	आयु	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	17वर्ष	1 - 7 - 4	16 - 26 - 21	11 - 4 - 6
2.	18वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 25 - 21	7 - 3 - 11
3.	17वर्ष	4 - 7 - 1	15 - 26 - 22	8 - 4 - 9
4.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	15 - 26 - 22	9 - 8 - 4
5.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 23 - 23	9 - 4 - 8
6.	18वर्ष	7 - 1 - 4	15 - 26 - 22	7 - 3 - 11
7.	17वर्ष	7 - 4 - 1	11 - 25 - 17	8 - 5 - 8
8.	17वर्ष	4 - 7 - 1	13 - 27 - 23	10 - 6 - 5
9.	18वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 28 - 18	9 - 3 - 9
10.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	15 - 25 - 23	8 - 5 - 9
11.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	16 - 27 - 20	11 - 3 - 7
12.	18वर्ष	4 - 7 - 1	16 - 27 - 20	9 - 5 - 7
13.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	12 - 26 - 25	8 - 4 - 9
14.	18वर्ष	1 - 7 - 4	12 - 26 - 25	9 - 6 - 6
15.	18वर्ष	7 - 4 - 1	17 - 23 - 23	7 - 2 - 12
16.	18वर्ष	7 - 1 - 4	17 - 23 - 23	8 - 7 - 6
17.	18वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 28 - 18	6 - 6 - 9
18.	18वर्ष	1 - 7 - 4	12 - 26 - 25	8 - 4 - 9
19.	18वर्ष	1 - 7 - 4	14 - 27 - 22	7 - 8 - 6
20.	18वर्ष	4 - 7 - 1	19 - 22 - 22	9 - 5 - 7
21.	18वर्ष	1 - 4 - 7	20 - 22 - 21	6 - 7 - 8
22.	18वर्ष	1 - 7 - 4	17 - 25 - 21	10 - 6 - 5
23.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 28 - 18	7 - 13 - 11
24.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 26 - 20	8 - 5 - 9
25.	18वर्ष	1 - 7 - 4	16 - 25 - 22	12 - 5 - 4
26.	18वर्ष	1 - 7 - 4	14 - 28 - 21	7 - 12 - 2
27.	18वर्ष	4 - 7 - 1	20 - 24 - 19	7 - 11 - 3
28.	18वर्ष	4 - 1 - 7	13 - 26 - 24	9 - 6 - 6
29.	17वर्ष	4 - 7 - 1	19 - 27 - 17	11 - 2 - 8
30.	17वर्ष	1 - 7 - 4	19 - 28 - 26	4 - 5 - 12
31.	17वर्ष	4 - 7 - 1	22 - 25 - 16	5 - 8 - 8
32.	17वर्ष	4 - 7 - 1	22 - 26 - 15	12 - 5 - 4
33.	18वर्ष	4 - 7 - 1	21 - 23 - 19	3 - 5 - 13
34.	18वर्ष	1 - 7 - 4	18 - 27 - 18	4 - 8 - 9
35.	18वर्ष	7 - 4 - 1	20 - 24 - 19	8 - 8 - 5
36.	18वर्ष	7 - 4 - 1	21 - 26 - 16	8 - 6 - 7
37.	18वर्ष	7 - 4 - 1	20 - 23 - 20	8 - 5 - 8
38.	18वर्ष	1 - 7 - 4	14 - 25 - 24	8 - 5 - 8
39.	18वर्ष	1 - 7 - 4	9 - 27 - 27	6 - 6 - 9
40.	17वर्ष	1 - 7 - 4	17 - 24 - 22	12 - 6 - 3

तालिका 3.72 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात, पित्त, कफ एवं रज, तम,एवं सत्व संबंधी प्राप्तांकों का विवरण हैं। इन छात्रों को प्रश्नावली के द्वारा पित्त में ही सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए हैं। नाड़ी परीक्षण भी अधिकांश छात्रों की पित्त प्रकृति पाई गई है। इन छात्रों के भी वात एवं कफ दोषानुसार क्रमशः पाये गये।

प्रयोज्य क्रमांक 1 को प्रश्नावली से पित्त संबंधी अंक 26 कफ में 21 एवं वात में 16 क्रमशः प्राप्त हुए हैं। इसी क्रम में नाड़ी स्पंदन भी प्राप्त हुआ है। प्रयोज्य क्रमांक 6, 7, 10, 11, 15, 16, 21, 23, 24, 28, 35, 36, 37 में प्रपत्र व नाड़ी परीक्षण के प्राप्तांकों में भिन्नता है।

न्यादर्श में पैत्तिक प्रकृति के छात्र रजोगुणी ही पाये गये। कुछ छात्रों में सत्व गुण की प्रधानता पाई जैसे- प्रयोज्य क्रमांक 2, 3, 6, 10, 13, 15, 17, 18, 21, 24, 30, 33, 39 । इसी प्रकार प्रयोज्य क्रमांक 19, 23, 26, 27 में तमो गुण की प्रधानता पाई। लेकिन औसत ज्ञात करने पर पैत्तिक प्रकृति के छात्र रजोगुणी पाये गये। सांख्यदर्शन में भी यही कहा गया है कि पैत्तिक प्रकृति के मनुष्य रजोगुणी होते हैं।

तालिका 3.73

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त कफ एवं सत्व रज तम संबंधी प्राप्तांक

कफ प्रकृति प्रधान छात्र

Class 12th N = 40

प्रयोज्य क्रमांक	आयु	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 24 - 25	10 - 6 - 5
2.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 22 - 28	6 - 2 - 13
3.	18वर्ष	4 - 7 - 1	20 - 21 - 22	10 - 4 - 7
4.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 20 - 30	13 - 4 - 4
5.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 20 - 26	7 - 5 - 9
6.	18वर्ष	1 - 4 - 7	19 - 20 - 24	5 - 9 - 7
7.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 21 - 26	11 - 6 - 4
8.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 22 - 25	5 - 2 - 14
9.	18वर्ष	4 - 1 - 7	13 - 24 - 26	9 - 6 - 6
10.	18वर्ष	4 - 1 - 7	20 - 25 - 28	7 - 4 - 10
11.	18वर्ष	1 - 7 - 4	22 - 17 - 24	4 - 1 - 16
12.	18वर्ष	4 - 1 - 7	20 - 18 - 25	7 - 5 - 9
13.	18वर्ष	4 - 1 - 7	17 - 14 - 32	7 - 1 - 13
14.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 15 - 32	9 - 4 - 8
15.	18वर्ष	1 - 4 - 7	22 - 13 - 28	11 - 5 - 5
16.	18वर्ष	1 - 4 - 7	21 - 19 - 23	7 - 4 - 10
17.	17वर्ष	1 - 7 - 4	14 - 23 - 25	9 - 2 - 10
18.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 22 - 25	6 - 3 - 12
19.	18वर्ष	1 - 4 - 7	18 - 18 - 27	4 - 6 - 11
20.	18वर्ष	4 - 1 - 7	13 - 18 - 32	10 - 2 - 9
21.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 15 - 34	9 - 2 - 10
22.	18वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 20 - 26	8 - 4 - 9
23.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 22 - 27	8 - 1 - 12
24.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 22 - 25	4 - 4 - 13
25.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 23 - 24	8 - 2 - 11
26.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 21 - 26	9 - 3 - 9
27.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 18 - 32	6 - 2 - 13
28.	18वर्ष	1 - 7 - 4	13 - 24 - 26	6 - 3 - 12
29.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 23 - 24	5 - 2 - 14
30.	18वर्ष	7 - 4 - 1	17 - 21 - 25	9 - 6 - 6
31.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 22 - 26	6 - 4 - 11
32.	18वर्ष	7 - 4 - 1	15 - 20 - 28	8 - 4 - 9
33.	18वर्ष	7 - 4 - 1	12 - 22 - 28	9 - 5 - 7
34.	18वर्ष	1 - 4 - 7	18 - 22 - 23	6 - 4 - 11
35.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 22 - 24	9 - 3 - 9
36.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 17 - 31	6 - 5 - 10
37.	18वर्ष	1 - 4 - 7	21 - 17 - 25	8 - 4 - 7
38.	18वर्ष	1 - 4 - 7	20 - 20 - 23	7 - 4 - 10
39.	18वर्ष	4 - 7 - 1	16 - 19 - 28	5 - 4 - 12
40.	18वर्ष	1 - 4 - 7	20 - 20 - 23	5 - 2 - 14

तालिका 3.73 में कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के नाड़ी परीक्षण से प्राप्त स्पन्दनों को दिये गये अंकों एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात, पित्त, कफ व रज, तम, व सत्व गुण संबंधी प्राप्तांकों का विवरण हैं। ये सभी छात्र कफ प्रकृति हैं। क्योंकि प्रश्नावली द्वारा इन छात्रों को कफ में सबसे अधिक अंक मिले हैं। नाड़ी परीक्षण द्वारा भी अधिकांश द्वारा कफ प्रकृति के पाये गये हैं। इन छात्रों के वात, एवं पित्त संबंधी प्राप्तांक दोषानुसार दूसरे अथवा तीसरे नंबर पर प्राप्त हुए हैं।

प्रयोज्य क्रमांक 1 को प्रश्नावली में कफ संबंधी अंक 25 मिले हैं पित्त में 24 एवं वात में 14 क्रमशः प्राप्त हुए हैं। इसी क्रम में नाड़ी स्पन्दन भी प्राप्त हुआ है। लेकिन प्रयोज्य क्रमांक 3, 11, 17, 22, 28, 30, 32, 33 व 39 में नाड़ी परीक्षण एवं प्रपत्र के प्राप्तांकों में साम्यता नहीं पाई गई।

कफ प्रकृति प्रधान छात्रों में अधिकांश छात्र सतोगुणी पाये गये कुछ छात्र रजोगुणी भी पाये गये जैसे प्रयोज्य क्रमांक 1, 3, 4, 7, 9, 14, 15, 20, 30 एवं 33। इसी प्रकार प्रयोज्य क्रमांक 6 तमोगुणी पाया गया। औसत ज्ञात करने पर निष्कर्ष रूप में कफ प्रकृति प्रधान सभी छात्र सतोगुणी पाये गये।

तालिका 3.74

3.5 व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का
केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्राएँ)

वात प्रकृति प्रधान छात्राएँ	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	26.75	27.44	28.82	5.40	0.85	-0.38	0.20	24.34	30.80
पित्त	14.50	14.92	15.76	3.22	0.51	-0.39	0.09	15.50	21.86
कफ	17.30	18.90	22.10	3.34	0.52	-1.43	0.07	15.03	19.90

तालिका 3.75

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का
केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

वात प्रकृति प्रधान छात्र	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	26.10	25.59	24.57	3.59	0.56	0.42	0.05	23.69	27.50
पित्त	19.20	19.26	19.38	2.43	0.38	-0.07	0.06	17.00	21.16
कफ	13.70	14.00	14.60	3.78	0.59	-0.23	0.08	15.03	20.50

तालिका 3.74 के अवलोकन से स्पष्ट हैं कि तुलनात्मक अध्ययन के लिये न्यादर्श के 40 वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान (mean) 26.75, मध्यांक (mdn) 27.44 एवं बहुलांक (mode) 28.82 आया है इन तीनों में अंतर है। मध्यमान का मान मध्यांक से कम है। अतः वितरण में ऋणात्मक विषमता है। Sk 0.38 आया है जो ± 3 से कम है अर्थात वितरण में विषमता है पर कम है। SEm 0.85 जो कि 1.96 से कम है अर्थात वक्र संभावना वक्र की ओर है। Ku 0.20 है जो 0.263 से कम है अतः वक्र Leptokurtic

(शिखरीय) है।

तालिका 3.75 में तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये न्यादर्श के 40 वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean) 26.10, मध्यांक (mdn) 25.59 एवं बहुलांक (mode) 24.57 है इन तीनों में अंतर है परंतु मध्यमान सर्वाधिक एवं बहुलांक सबसे कम है अतः वितरण में धनात्मक विषमता है। Sk का मान .0.42 है जो ± 3 से कम है अतः विषमता बहुत न्यून मात्रा की है। SEm 0.56 है जो 1.96 से कम है एवं सूचित करता है कि वितरण वक्र संभावना वक्र की ओर है। Ku 0.05 है जो 0.263 से कम है अतः यह कहना उचित होगा कि वितरण Leptokurtic Type (शिखरीय) है। छात्र एवं छात्राओं के तुलनात्मक अध्ययन की व्याख्या आगे अध्याय में की गई है।

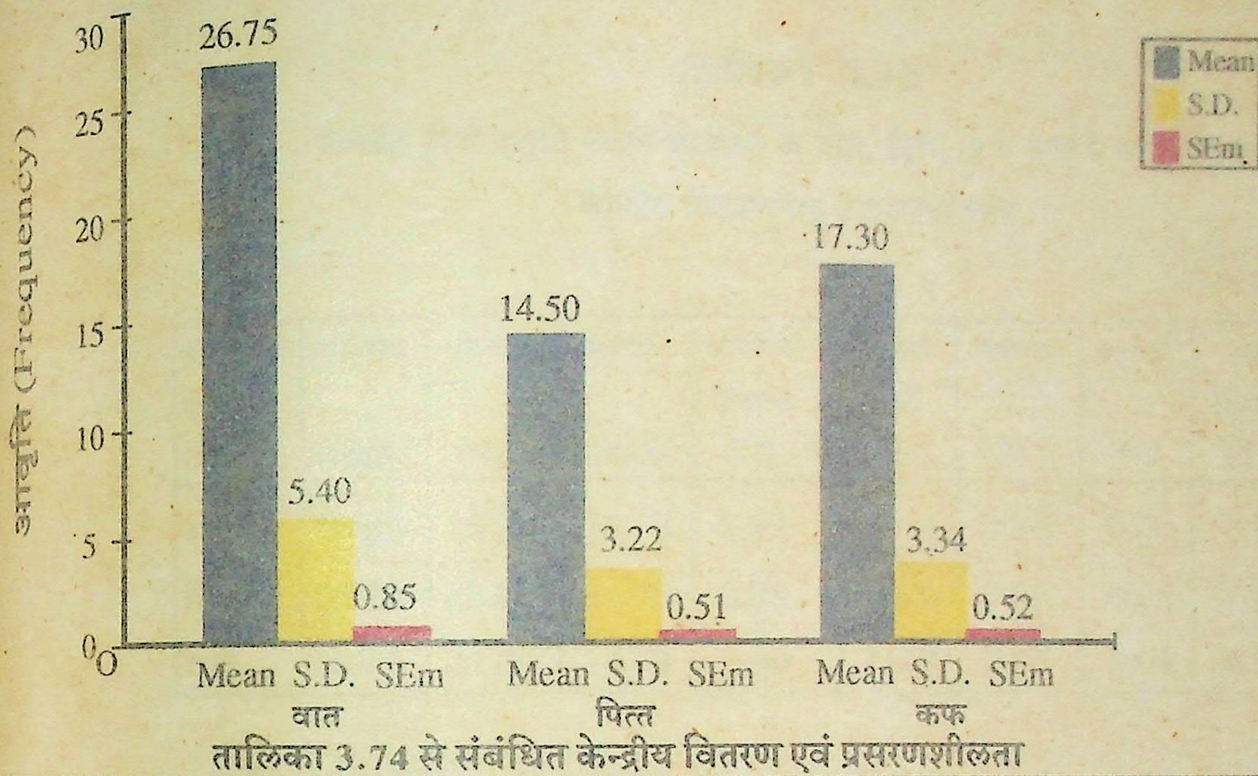
रेखाचित्र 20 में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वृत्ति के मापों में मध्यमान (mean) एवं प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) को Bar daigram द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

रेखाचित्र 21 में वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय प्रवृति के मापों में मध्यमान (mean) एवं प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) को प्रदर्शित किया गया है।

रेखाचित्र - 30

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

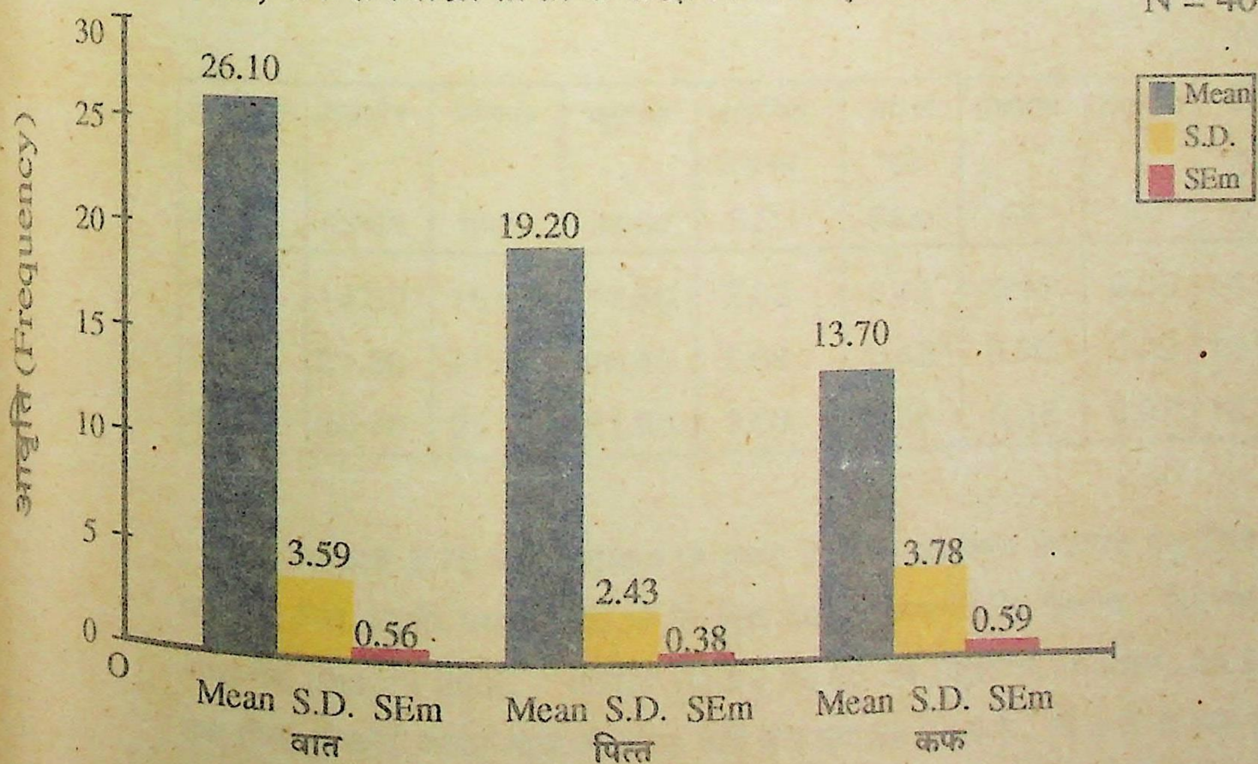


तालिका 3.74 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 21

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

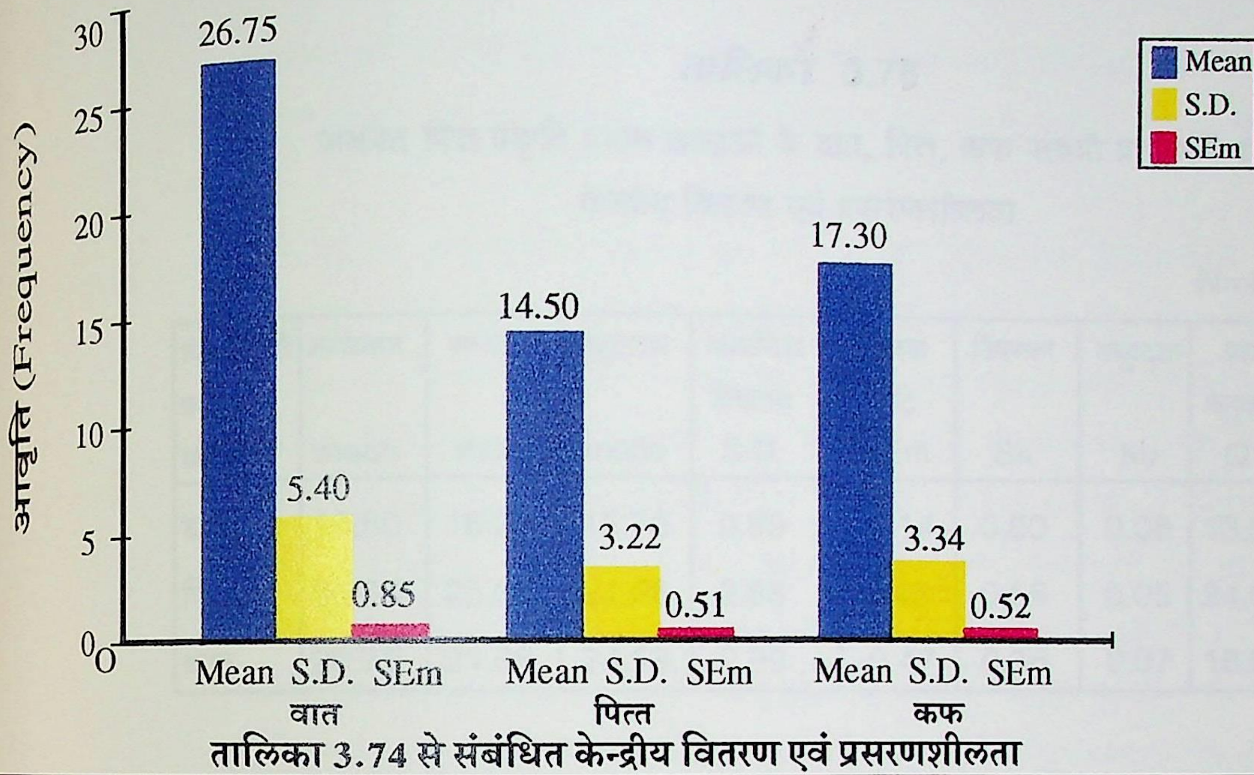


तालिका 3.75 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 20

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

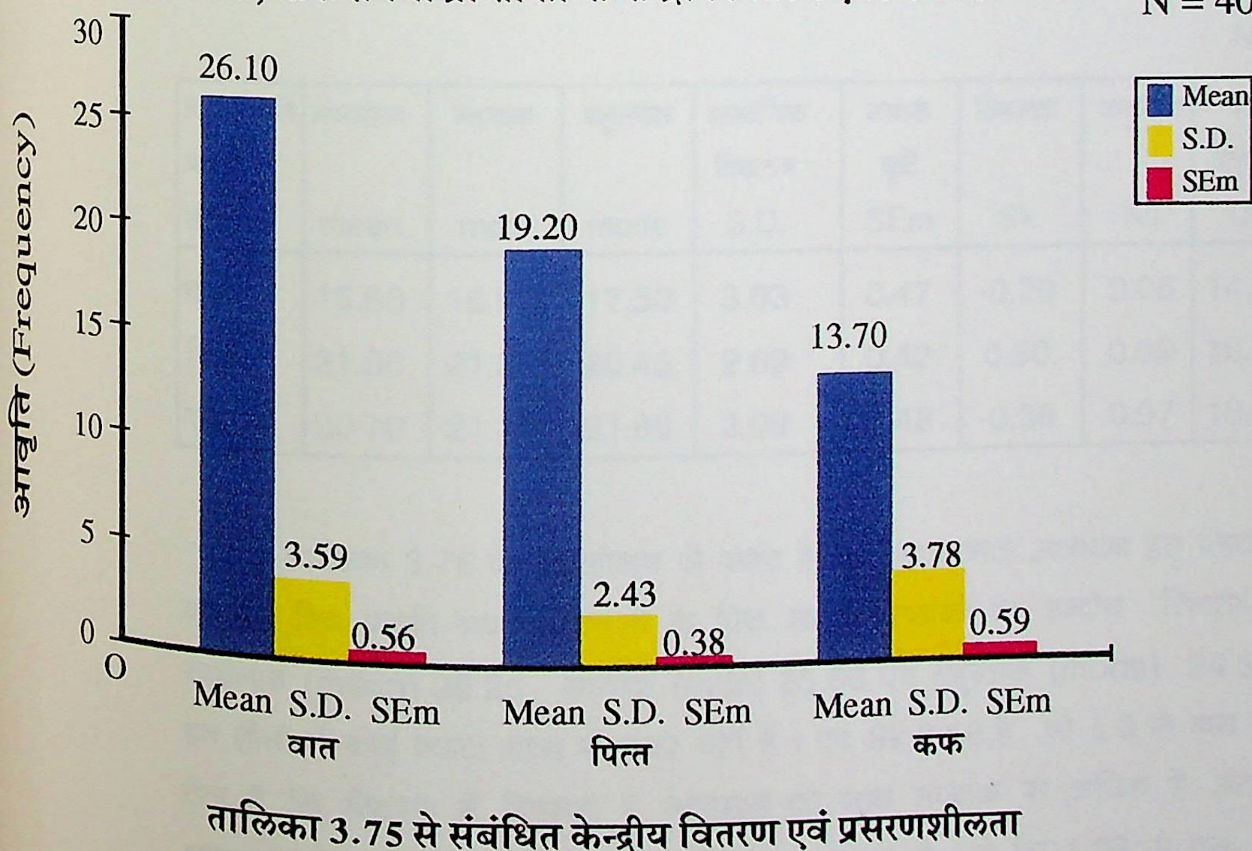


तालिका 3.74 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

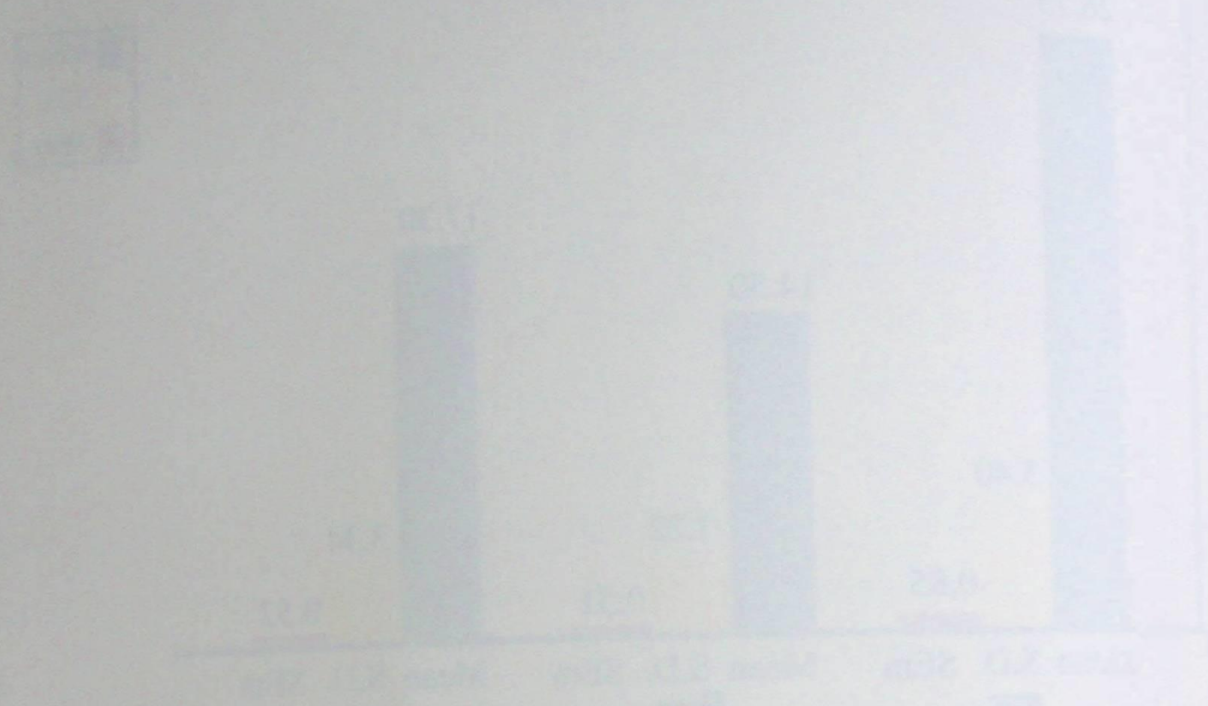
रेखाचित्र - 21

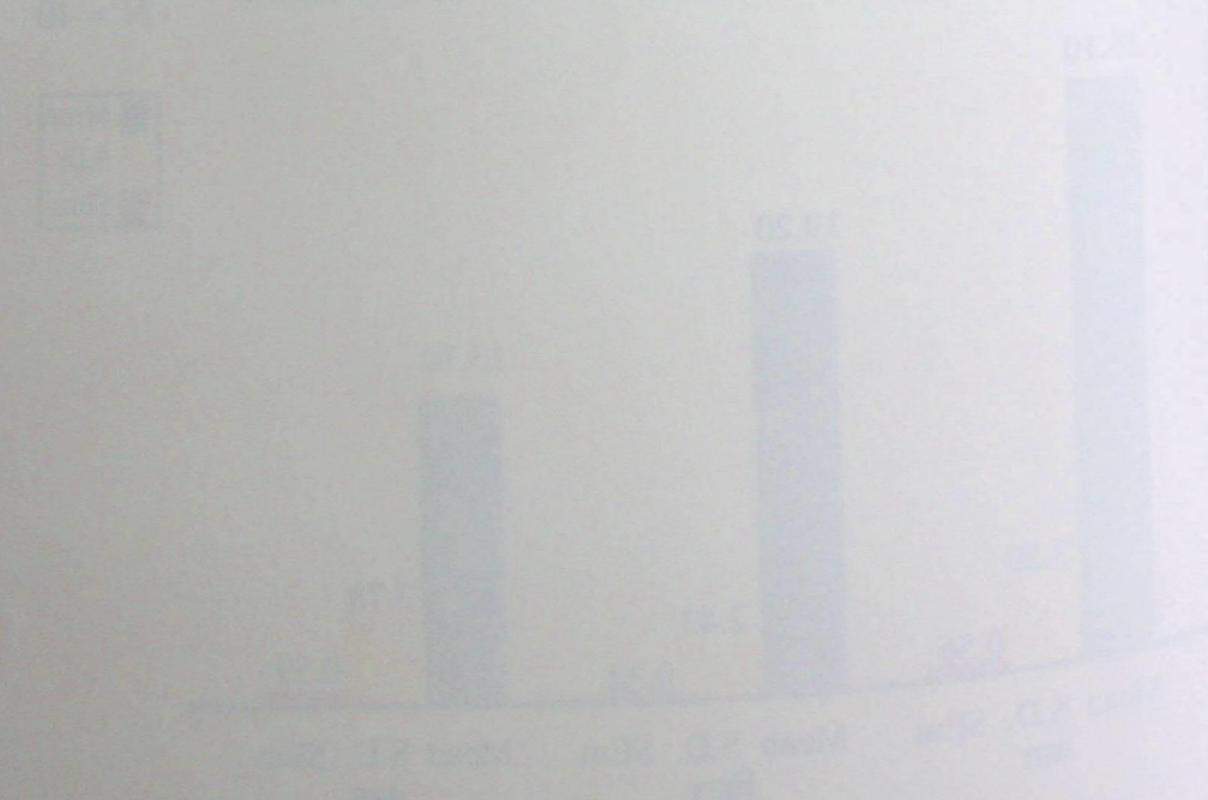
व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40



तालिका 3.75 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता





तालिका 3.76

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्राएँ)

पित्त प्रकृति प्रधान छात्राएँ	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	16.50	16.26	15.78	0.89	-0.14	0.80	0.08	13.91	19.07
पित्त	26.20	25.66	24.58	2.88	0.45	0.56	0.05	24.00	27.33
कफ	20.70	21.06	24.58	2.99	-0.47	0.36	0.07	18.67	23.27

तालिका 3.77

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

पित्त प्रकृति प्रधान छात्र	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	16.60	16.90	17.50	3.03	0.47	-0.29	0.06	14.70	18.86
पित्त	21.80	21.35	20.45	2.69	0.42	0.50	0.09	19.92	22.78
कफ	20.70	21.10	21.90	3.09	0.48	-0.38	0.07	18.34	23.10

तालिका 3.76 के अवलोकन से स्पष्ट है कि तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये न्यादर्श की 40 पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के पित्त सबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean) 26.20, मध्यांक (mdn) 25.66 एवं बहुलांक (mode) 24.58 आया है। इन तीनों में कोई ज्यादा मात्रा में अंतर नहीं है। एवं Sk 0.56 है जो ± 3 से कम है एवं सूचना देता है कि वितरण में विषमता है मध्यमान का मान मध्यांक से अधिक है अतः वितरण में धनात्मक विषमता है पर कम मात्रा में है।SEm 0.45 है जो कि 1.96 से कम है अतः यह कहा जा सकता है कि वितरण संभावना वक्र की ओर है। Ku 0.05 है जो 0.263 से कम है अर्थात वक्र Leptokurtic (शिखरीय) है ।

रेखाचित्र 22 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय प्रवृति के मापों में मध्यमान (mean) प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) प्रदर्शित किया गया है।

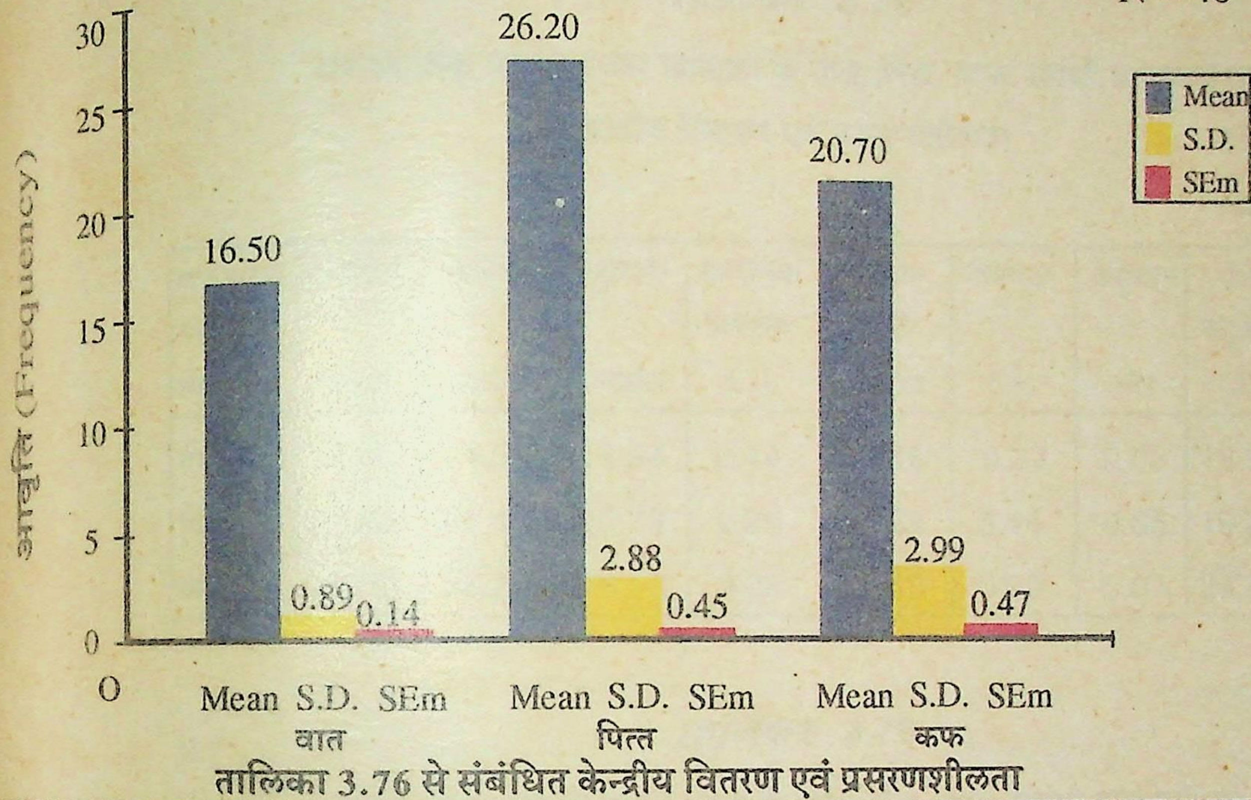
3.88 के अवलोकन के आधार पर स्पष्ट है कि तुलनात्मक अध्ययन के लिये न्यादर्श के 40 पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त सबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean) 21.80, मध्यांक (mdn) 21.35 एवं बहुलांक (mode) 20.45 ,SEm 0.42 आया है 1.96 से कम है जिसके आधार पर स्पष्ट होता है कि समूह का मध्यमान समूह का प्रतिनिधित्व कर रहा है एवं वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है। Sk 0.50 जो ± 3 से कम है और mean का मान mode से अधिक है अतः वितरण में धनात्मक विषमता है, पर कम है। Ku 0.04 है जो 0.263 से कम है अतः वितरण का वक्र Leptokurtic Type का (शिखरीय) है। छात्र एवं छात्राओं के तुलनात्मक अध्ययन की व्याख्या आगे के अध्याय में की गई है।

रेखाचित्र 23 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के पित्त संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय प्रवृति के मापों में मध्यमान (mean) एवं प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) को प्रदर्शित किया गया है।

रेखाचित्र - 22

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

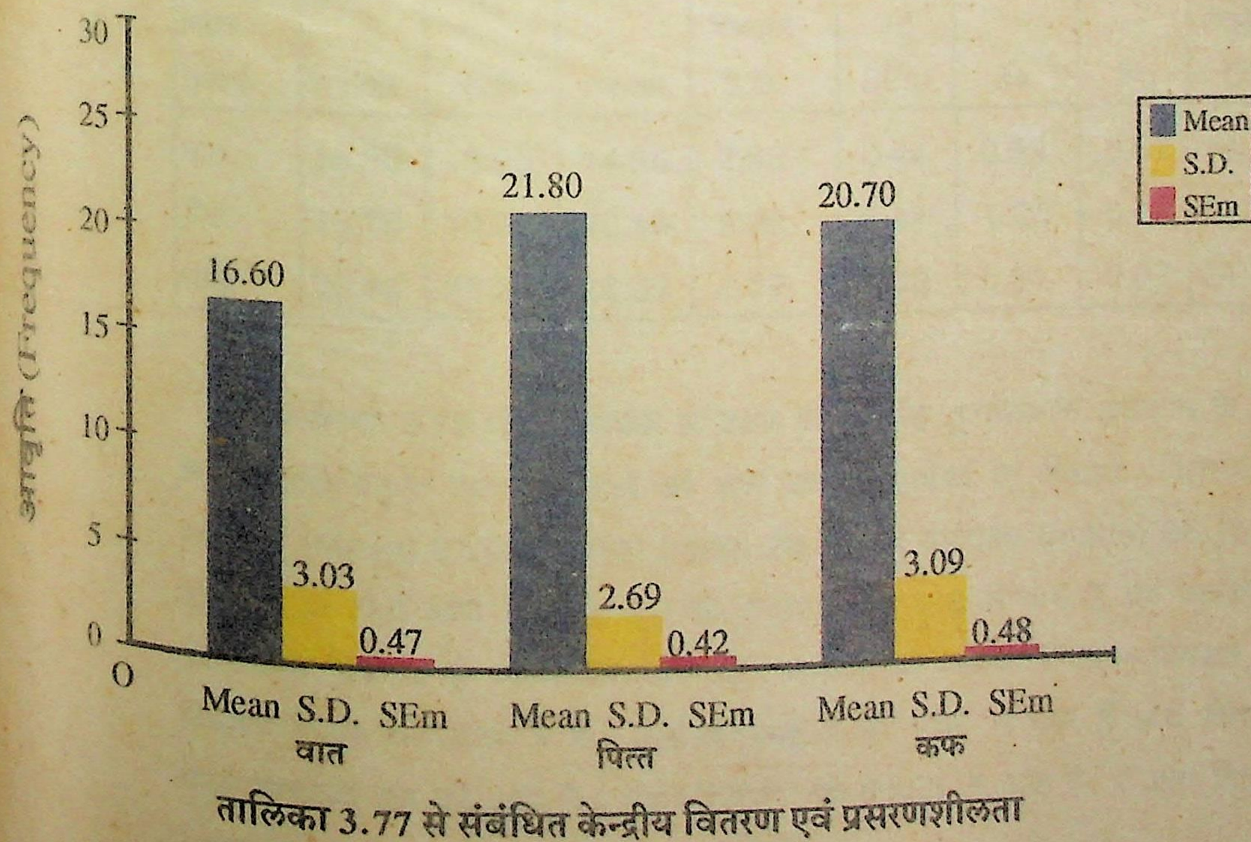


तालिका 3.76 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 23

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

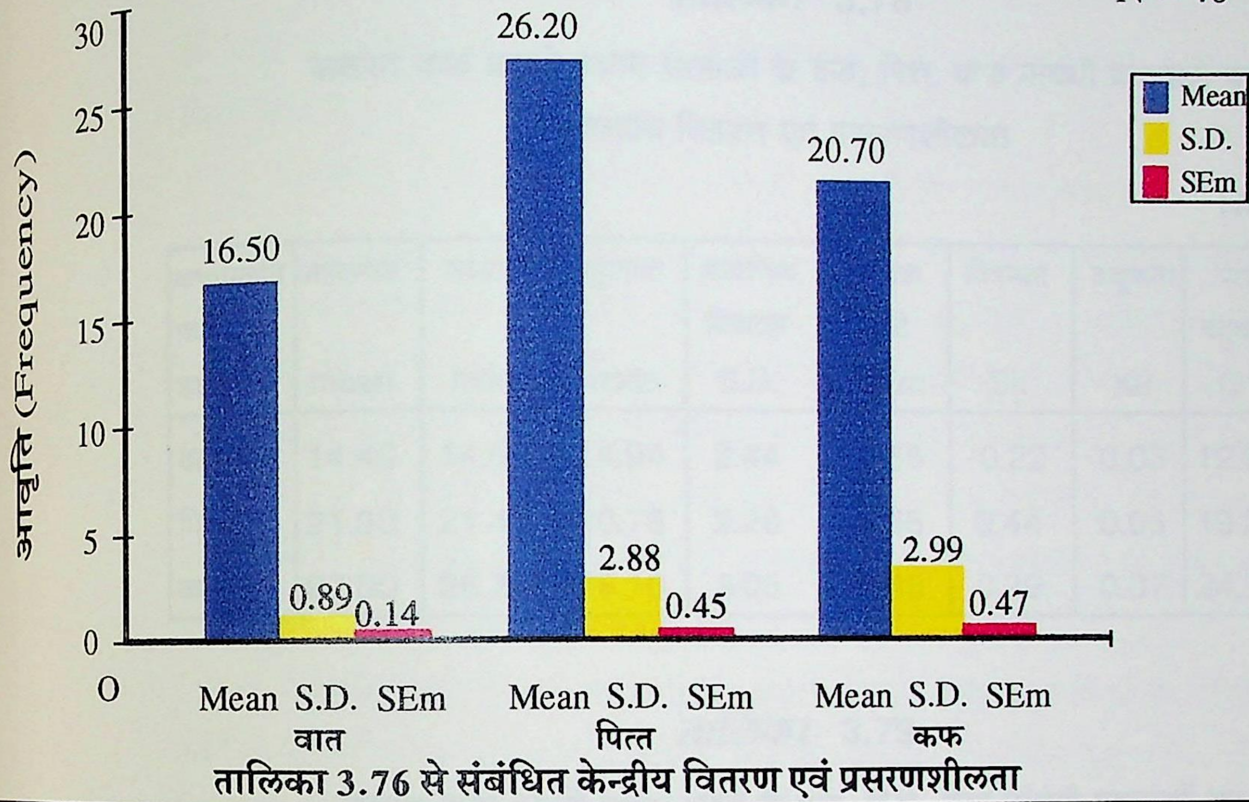
N = 40



तालिका 3.77 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 22

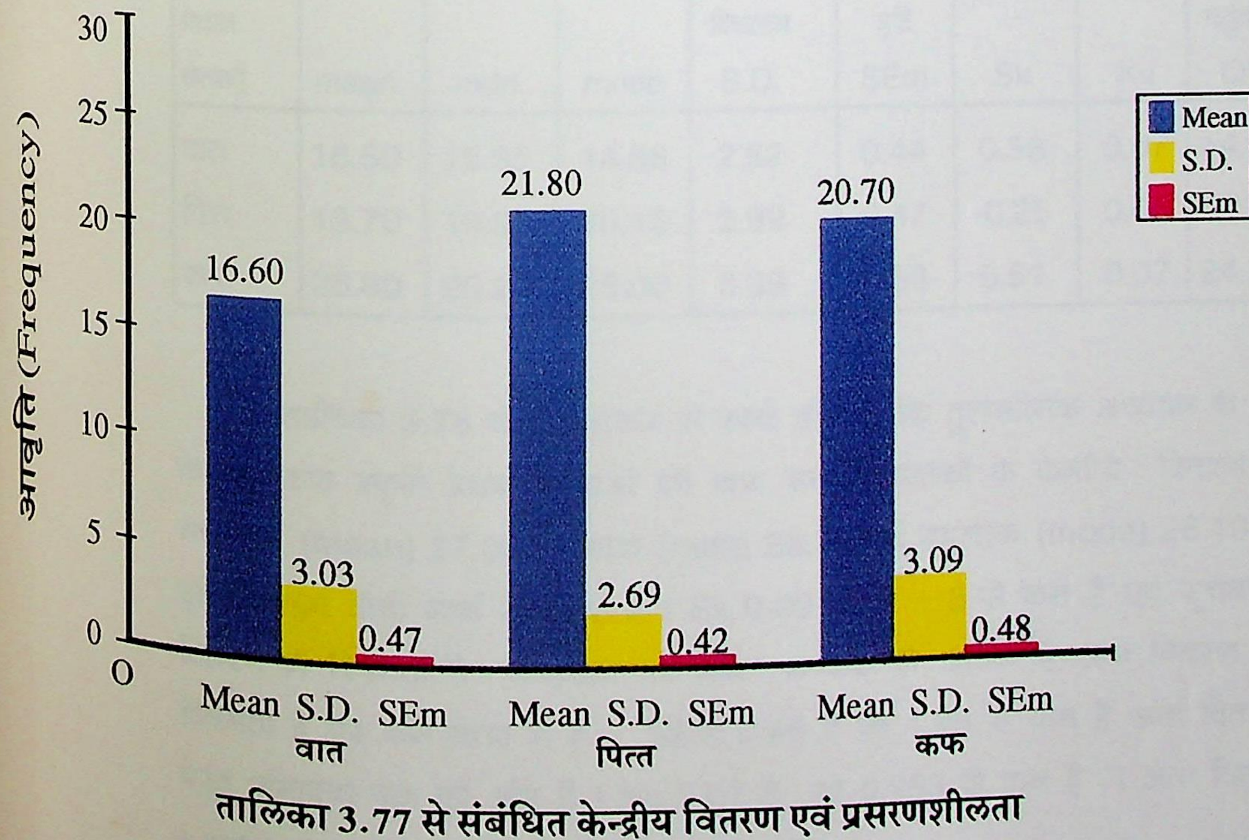
व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता



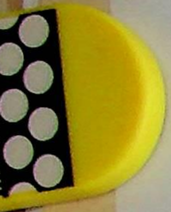
तालिका 3.76 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

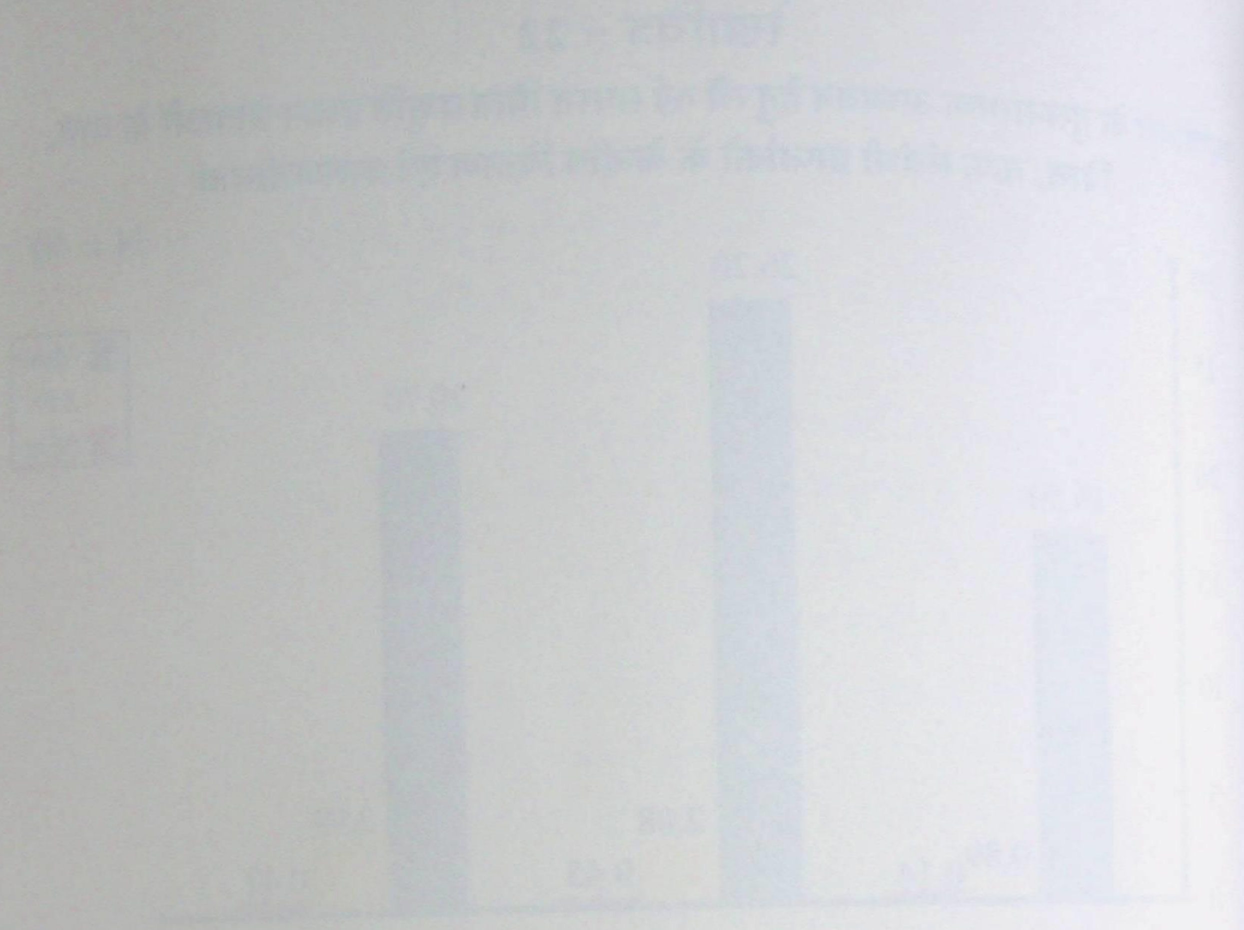
रेखाचित्र - 23

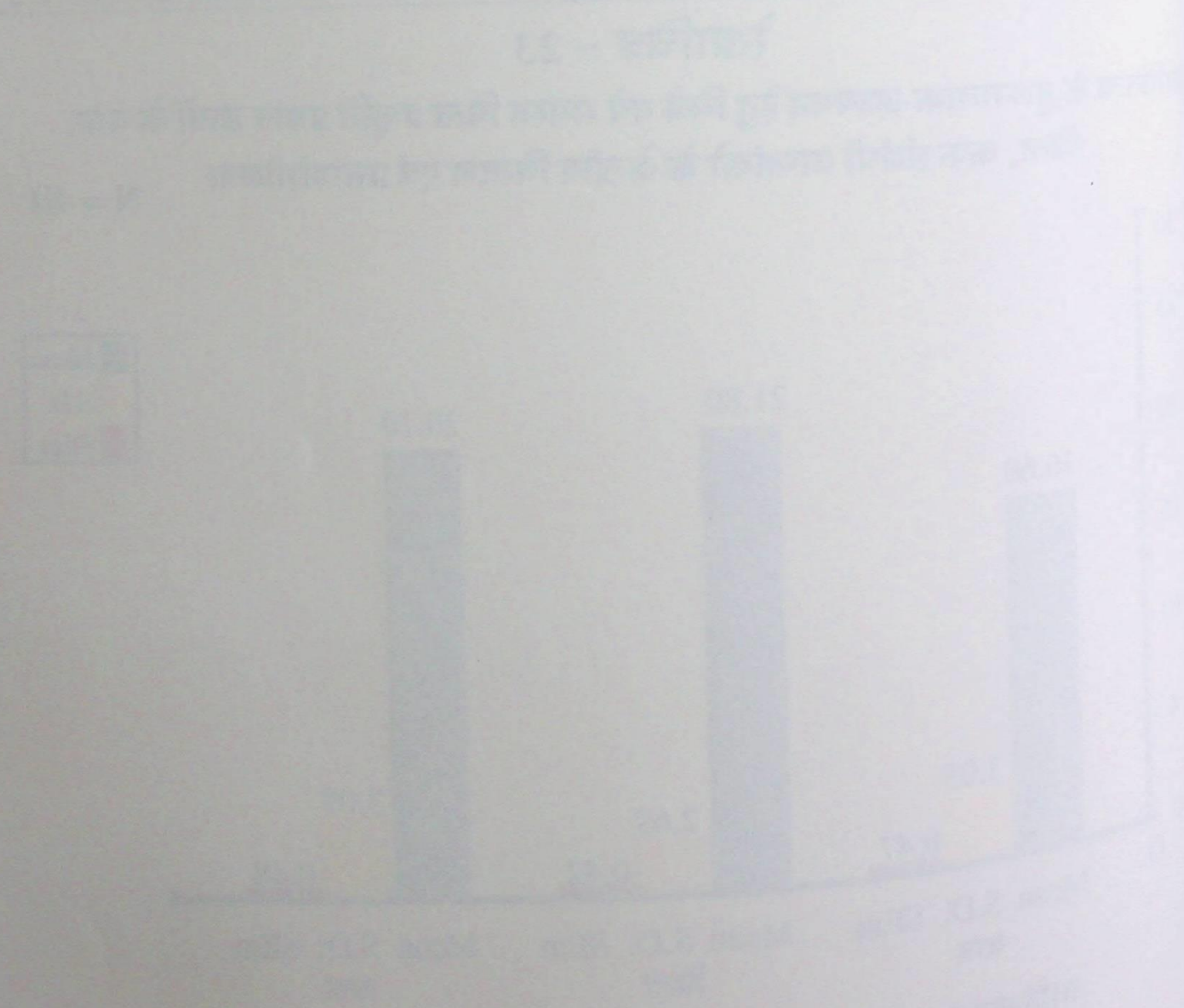
व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता



तालिका 3.77 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता







तालिका 3.78

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

कफ प्रकृति प्रधान छात्राएँ	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	14.40	14.58	14.94	2.44	0.38	-0.22	0.03	12.98	15.50
पित्त	21.80	21.46	20.78	2.28	0.36	0.44	0.05	19.26	23.06
कफ	27.00	26.70	26.10	3.05	0.48	0.29	0.07	24.70	29.34

तालिका 3.79

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

कफ प्रकृति प्रधान छात्राएँ	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
वात	16.50	15.95	14.86	2.82	0.44	0.58	0.07	14.13	18.65
पित्त	19.70	19.95	20.45	2.99	0.47	-0.25	0.06	17.70	21.77
कफ	26.80	26.22	25.06	3.39	0.53	0.51	0.07	24.40	29.00

तालिका 3.78 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि तुलनात्मक अध्ययन के लिये न्यादर्श के 40 कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं की कफ सबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (Mean) 27.00, मध्यांक (mdn) 26.70 एवं बहुलांक (mode) 26.10 है। केन्द्रीय वृत्ति के इन तीनों मापों में अंतर है। Sk 0.29 है जो ± 3 से कम है एवं सूचना देता है कि वितरण में विषमता है मध्यमान का मान मध्यांक से अधिक है अतः वितरण में धनात्मक विषमता है पर कम मात्रा में है। SEm 0.48 हैं जो 1.96 से कम हैं अतः वितरण विषम है परंतु संभावना वक्र की ओर है। Ku 0.07 है जो 0.263 से कम है। अतः वितरण का वक्र Leptokurtic Type (शिखरीय) है।

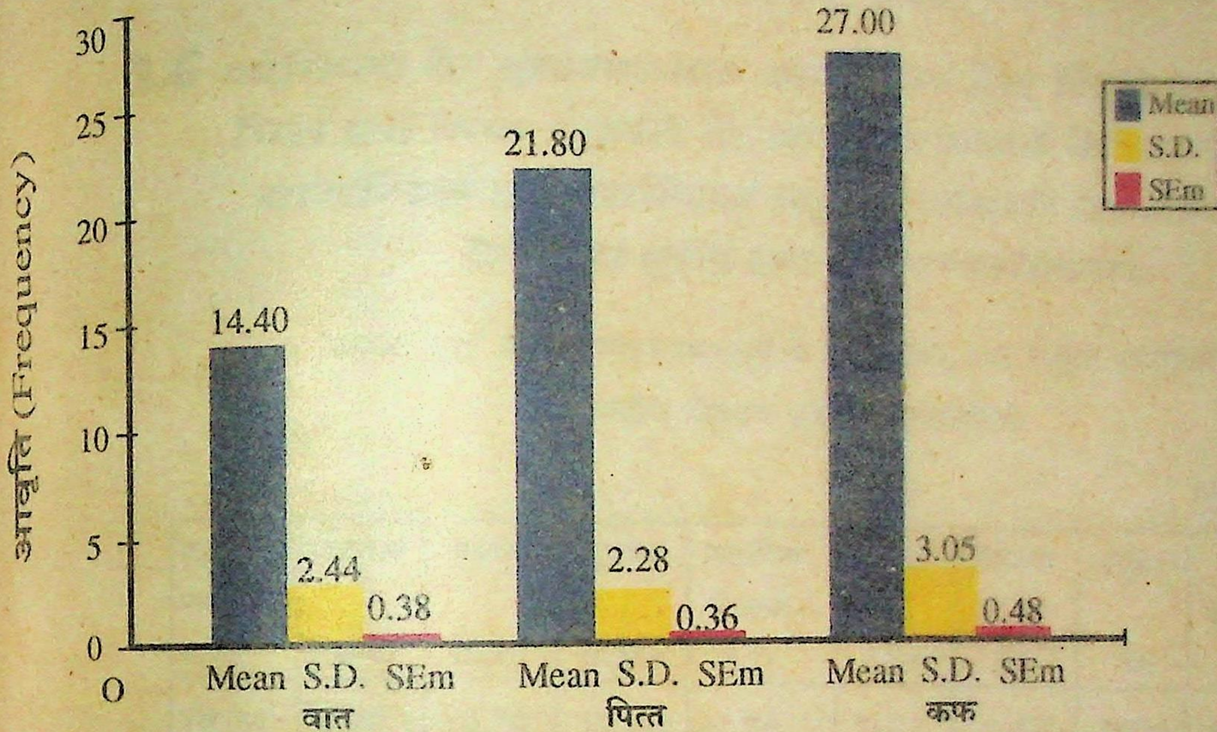
रेखाचित्र 24 में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean), प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) को प्रदर्शित किया गया है ।

तालिका 3.79 के अवलोकन से स्पष्ट होता हैं कि तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये न्यादर्श के 40 कफ प्रकृति प्रधान छात्रों की कफ संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय प्रवृति के मापों में मध्यमान (Mean) 26.80 मध्यांक, (mdn) 26.22 एवं बहुलांक (mode) 25.06 है । SK 0.51 है जो ± 3 से कम है अर्थात वितरण में धनात्मक विषमता बहुत कम है । SEm 0.53 आया है जो 1.96 से कम है अर्थात वितरण का मध्यमान समूह का प्रतिनिधित्व करता है एवं वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है । Ku 0.07 है जो 0.263 से कम है अर्थात वितरण Leptokurtic (शिखरीय या तुंगककुदीय) है । छात्र-छात्राओं के तुलनात्मक अध्ययन की व्याख्या आगे अध्याय में की गई है ।

रेखाचित्र 25 में कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के कफ संबंधी प्राप्तांकों के केन्द्रीय प्रवृति के मापों में मध्यमान (mean) एवं प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) को प्रदर्शित किया गया है ।

रेखाचित्र - 24

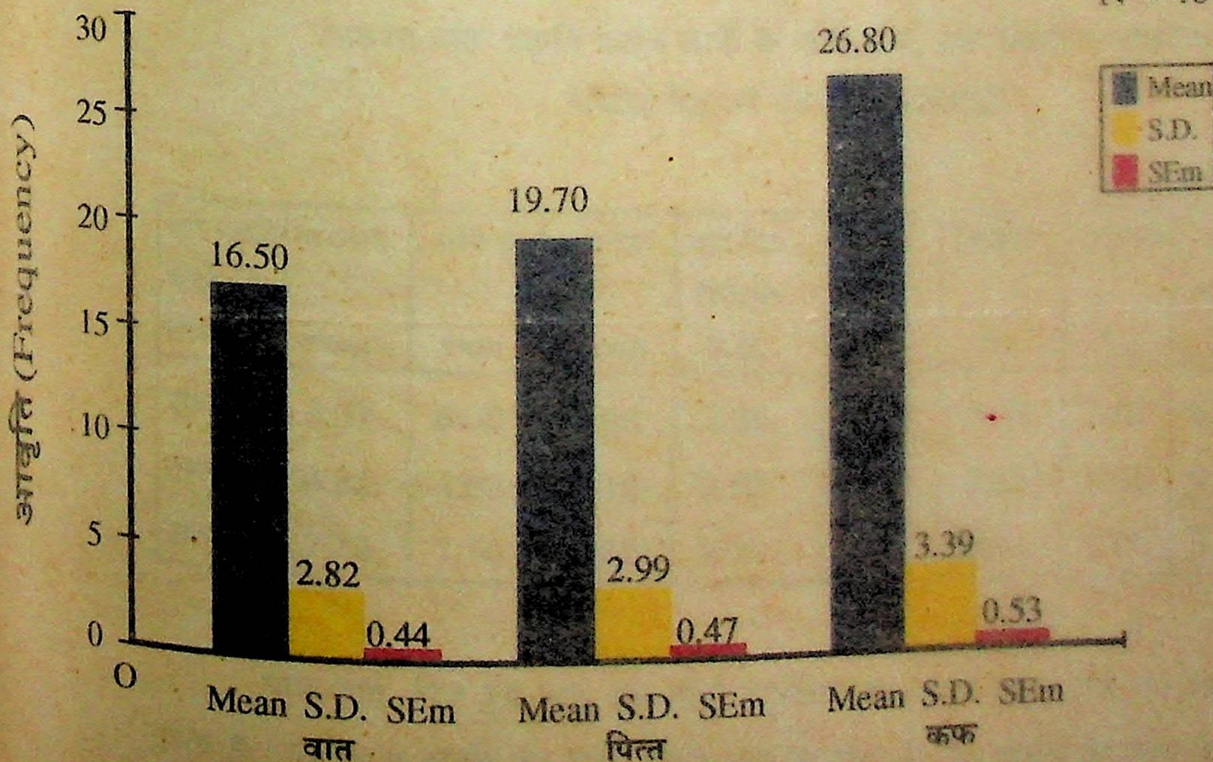
व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता



तालिका 3.78 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 25

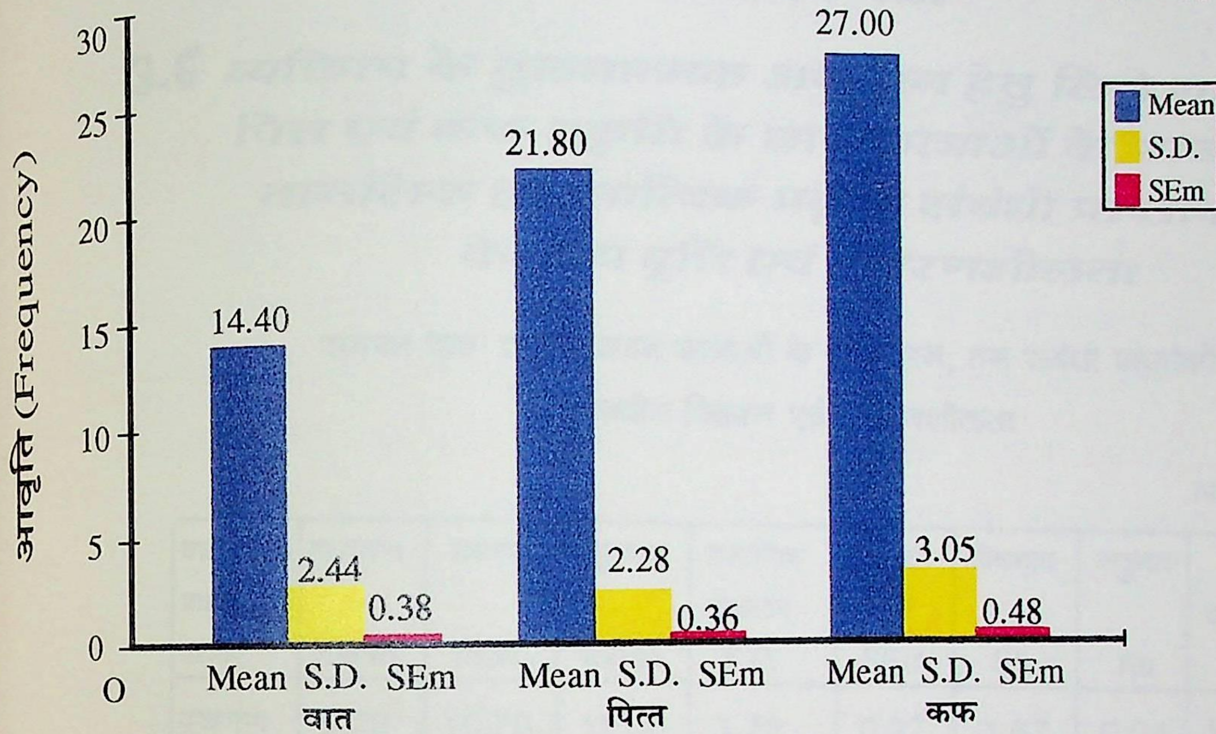
व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता



तालिका 3.79 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 24

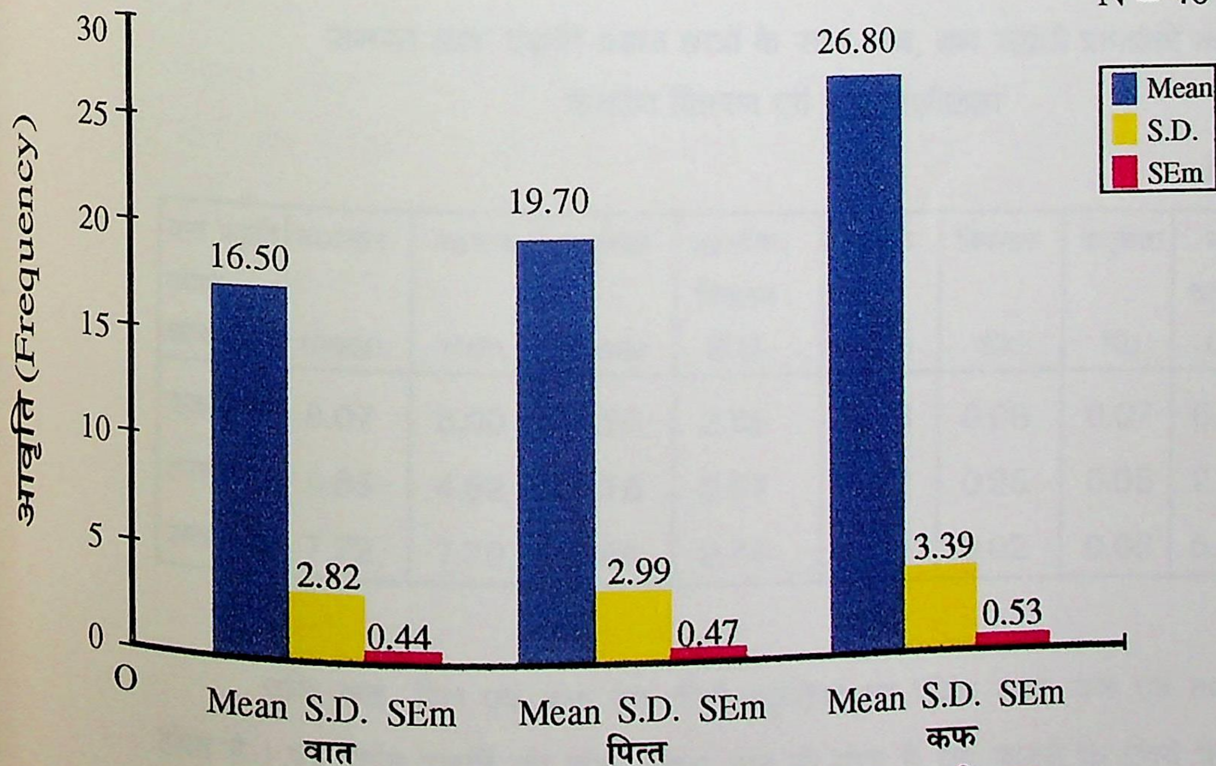
व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता



तालिका 3.78 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

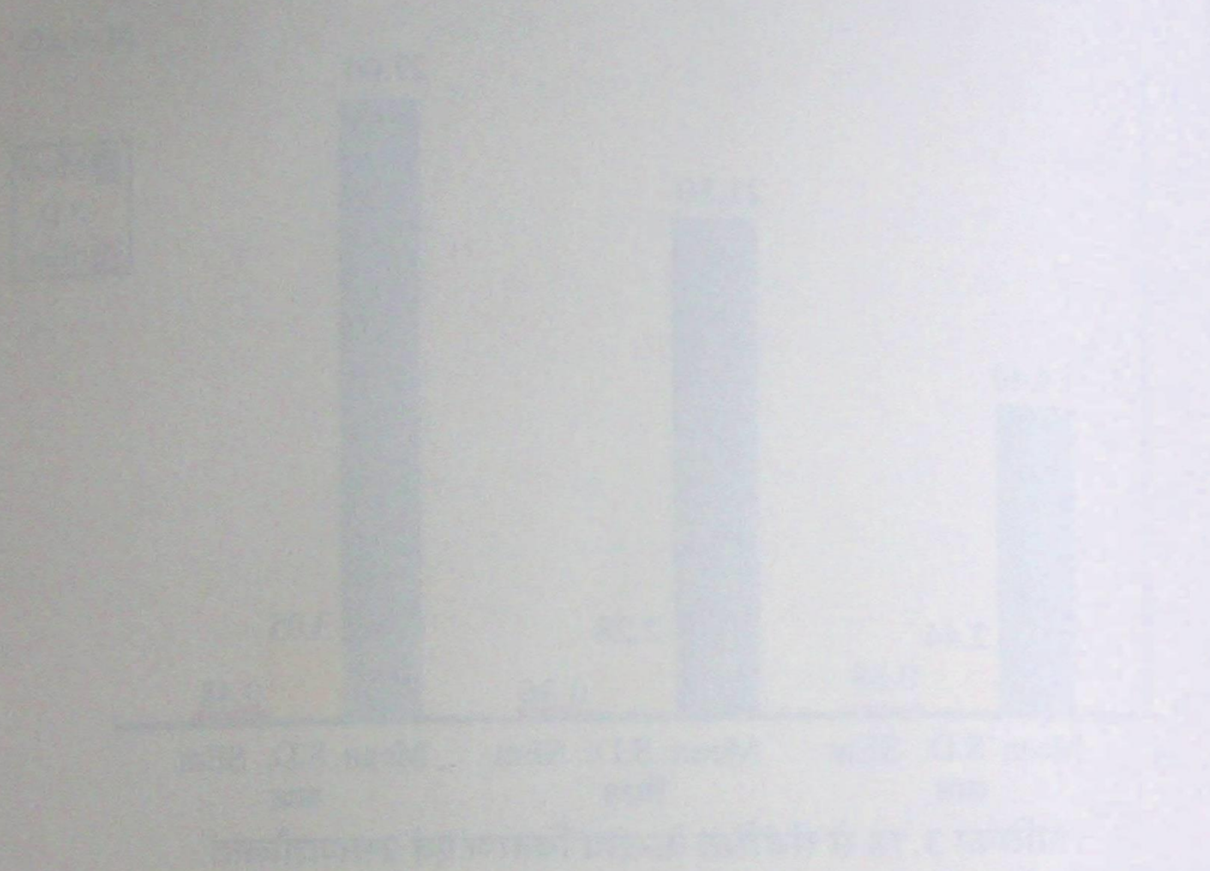
रेखाचित्र - 25

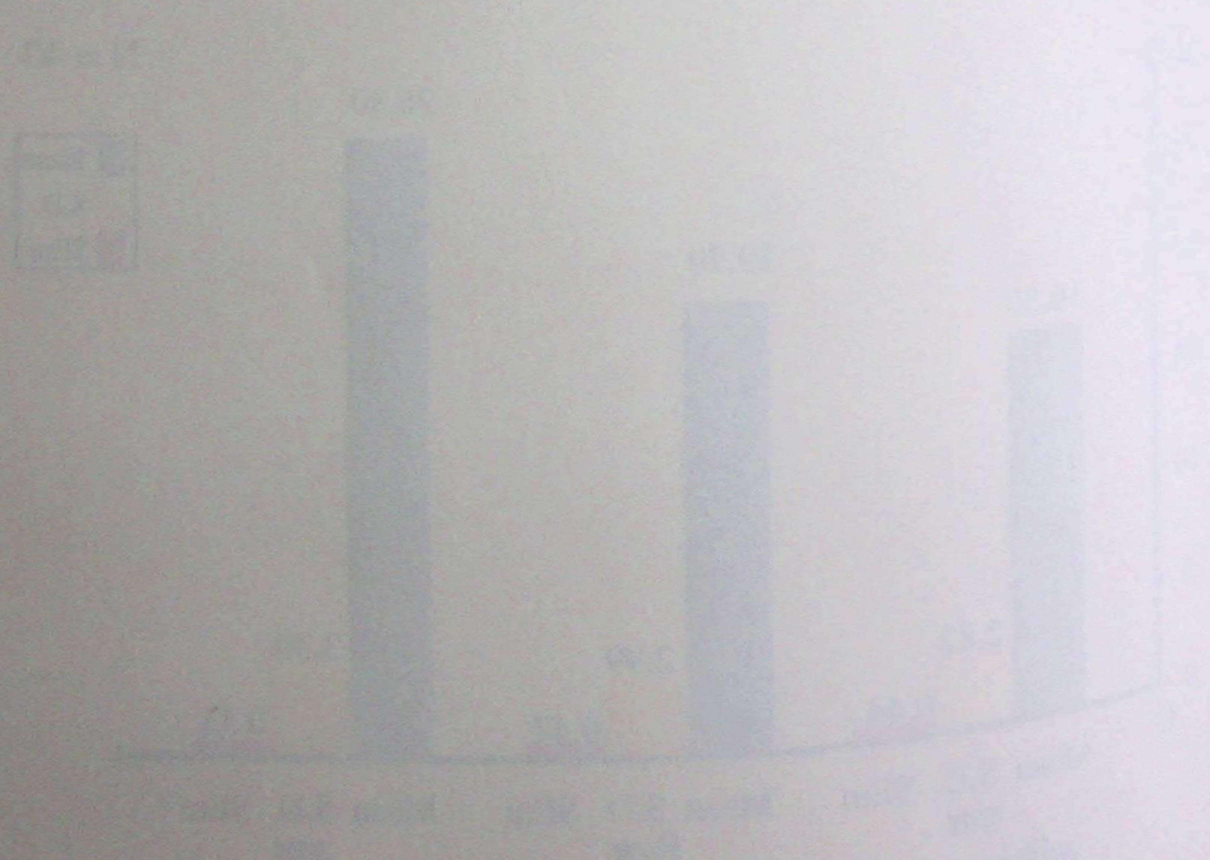
व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता



तालिका 3.79 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता







तालिका 3.80

3.6 व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के राजसिक, तामसिक एवं सात्विक प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों की केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरणशीलता

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्राएँ)

वात प्रकृति प्रधान छात्राएँ	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रजगुण	9.72	10.70	12.66	1.76	0.27	-1.67	0.04	8.07	11.23
तमगुण	4.32	4.35	3.41	1.95	0.30	0.04	0.03	2.64	0.50
सत्वगुण	10.10	10.28	10.64	1.92	0.30	-0.28	0.04	8.57	11.58

तालिका 3.81

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

वात प्रकृति प्रधान छात्र	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रजगुण	8.07	8.00	7.86	2.55	0.40	0.08	0.07	6.50	9.50
तमगुण	4.85	4.62	4.16	2.67	0.42	0.25	0.06	2.64	6.50
सत्वगुण	7.72	7.70	7.66	2.74	0.43	0.02	0.06	5.49	0.06

चूंकि वात, पित्त एवं कफ इन तीनों प्रकृतियो का संबंध सत्व, रज एवं तम गुण से भी होता है। पर किस प्रकृति का संबंध किस गुण से होता है यह जानने के लिये प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा प्राप्तांकों के आधार पर केन्द्रीय वृत्ति के मापों की व्यारव्या की जावेगी जिससे यह

ज्ञात होगा कि (वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान) छात्र एवं छात्राओं में सत्व, रज एवं तमोगुण में से किस गुण की ज्यादा प्रधानता है ।

तालिका 3.80 के अवलोकन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वात प्रकृति प्रधान छात्राओं में सत्वगुण की प्रधानता है । क्योंकि सत्वगुण संबंधी केन्द्रीय वृत्ति के माप मे मध्यमान (mean) 10.10 है जो रज गुण एवं तम गुण के मध्यमान से अधिक है एवं इसका मध्यांक 10.28 एवं बहुलांक 10.64 है । केन्द्रीय वृत्ति के इन तीनों मापों मे ज्यादा अंतर नहीं है Sk 0.28 है जो ± 3 से कम है, मध्यमान का मान मध्यांक से कम है, अर्थात वितरण में ऋणात्मक विषमता कम है । SEm 0.30 आया है । जो 1.96 से कम है । अर्थात मध्यमान समूह की प्रतिनिधित्यात्मकता को प्रकट करता है एवं वक्र के सामान्य संभावना वक्र होने की पुष्टि करता है। Ku 0.04 है जो 0.263 से कम है अर्थात वितरण का वक्र Leptokurtic है।

रेखाचित्र 26 में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के रजगुण, तमगुण एवं सत्वगुण प्रकृति के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean), प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) को प्रदर्शित किया गया है ।

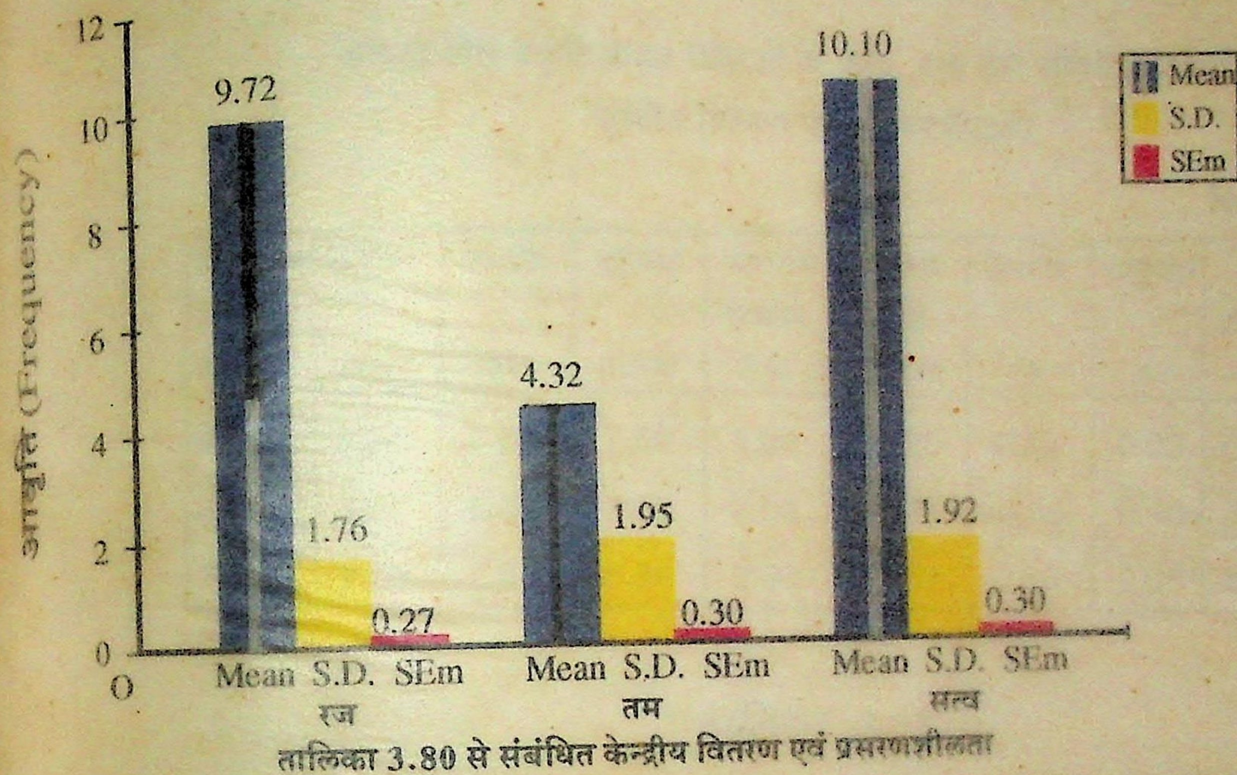
तालिका 3.81 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वात प्रकृति प्रधान छात्रों में रज गुण की प्रधानता है क्योंकि रजोगुण संबंधी केन्द्रीय वृत्ति के माप में मध्यमान (mean) सर्वाधिक 8.07 है एवं जो तमो गुण एवं सतोगुण के मध्यमान से अधिक है । मध्यांक 8 एवं बहुलांक 7.86 है इन तीनों में कोई विशेष अंतर नहीं है Sk 0.08 है जो ± 3 से कम है और mean का मान mode से अधिक है अतः वितरण में धनात्मक विषमता है, पर कम है। SEm 0.40 है जो 1.96 से कम है अतः कहा जा सकता है कि मध्यमान संपूर्ण समूह का प्रतिनिधित्व कर रहा है। एवं वितरण संभावना वक्र की ओर है । Ku 0.07 है जो 0.263 से कम है अतः वितरण का वक्र Leptokurtic है ।

रेखाचित्र 27 में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के रजगुण, तमगुण एवं सत्वगुण प्रकृति के प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean), प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) को प्रदर्शित किया गया है ।

रेखाचित्र - 26

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

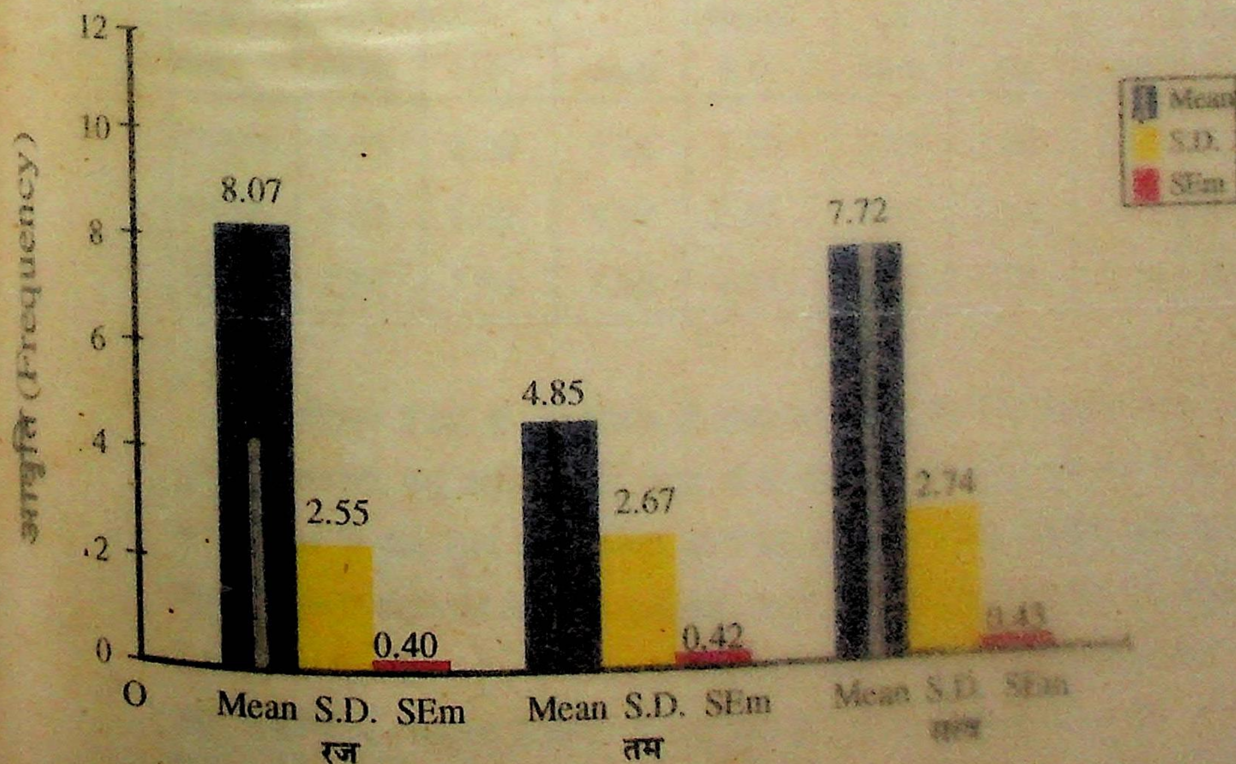
N = 40



तालिका 3.80 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 27

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांको का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता N = 40

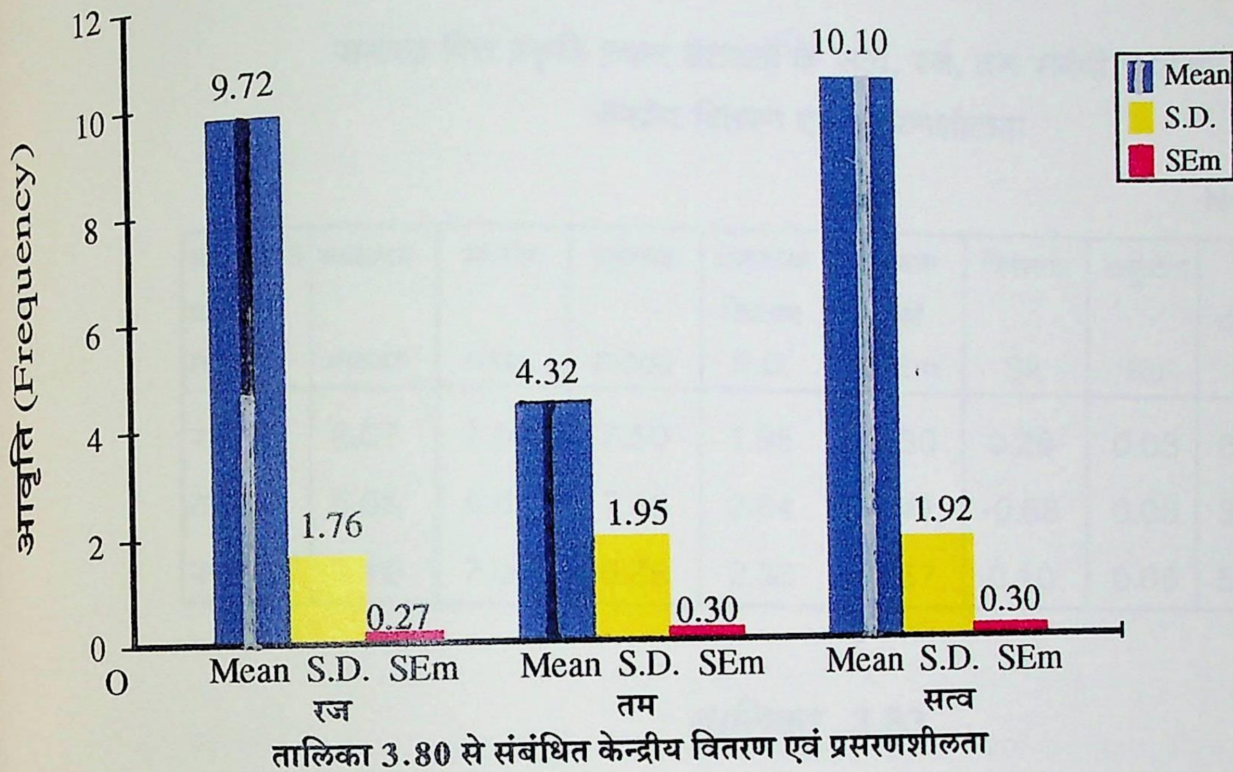


तालिका 3.81 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 26

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांको के केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

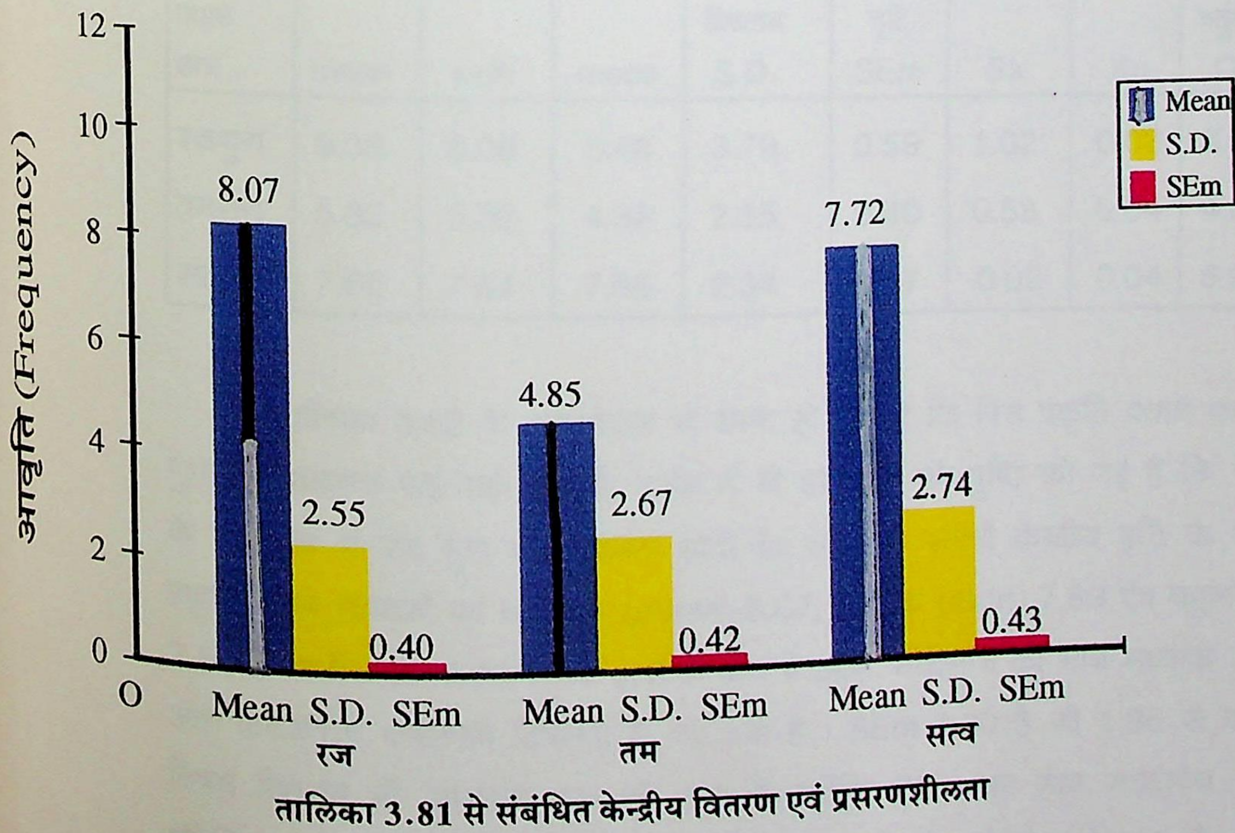


तालिका 3.80 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 27

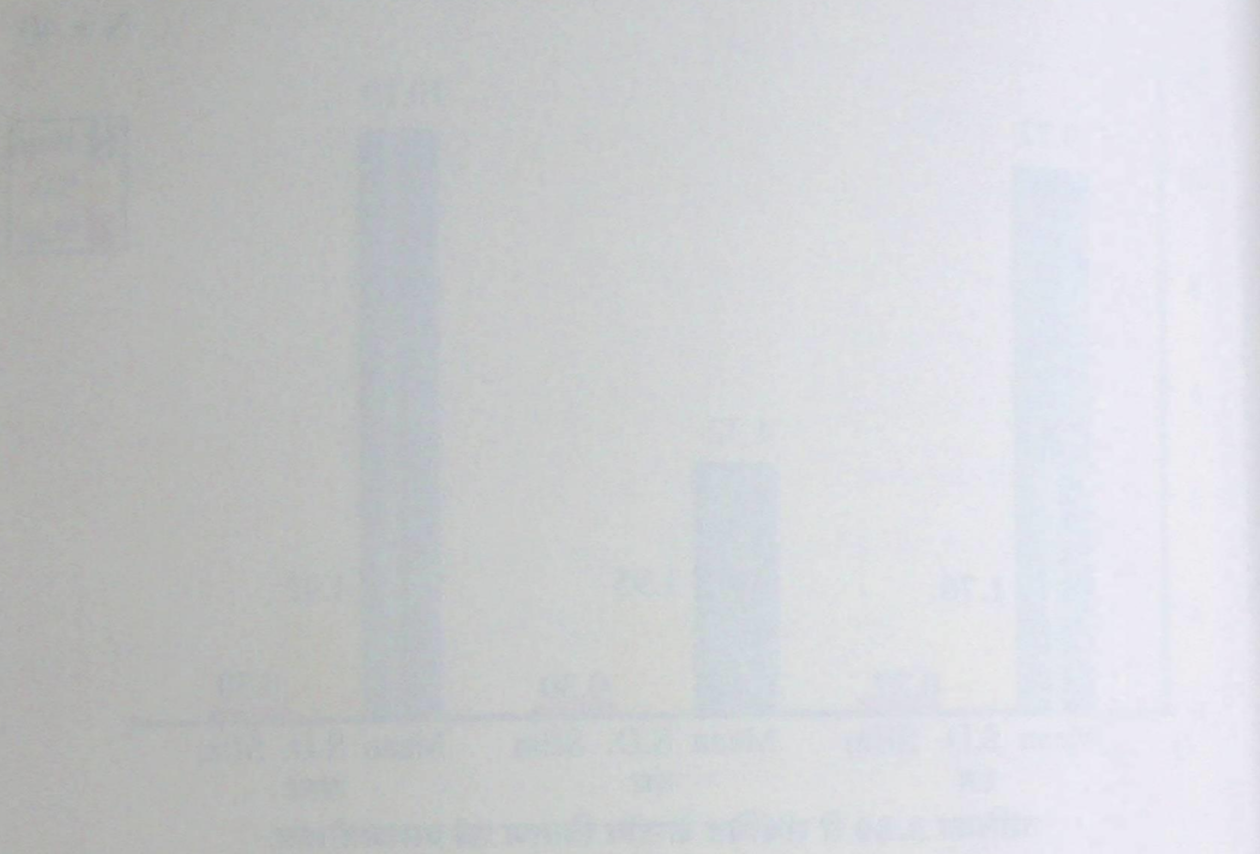
व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांको का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

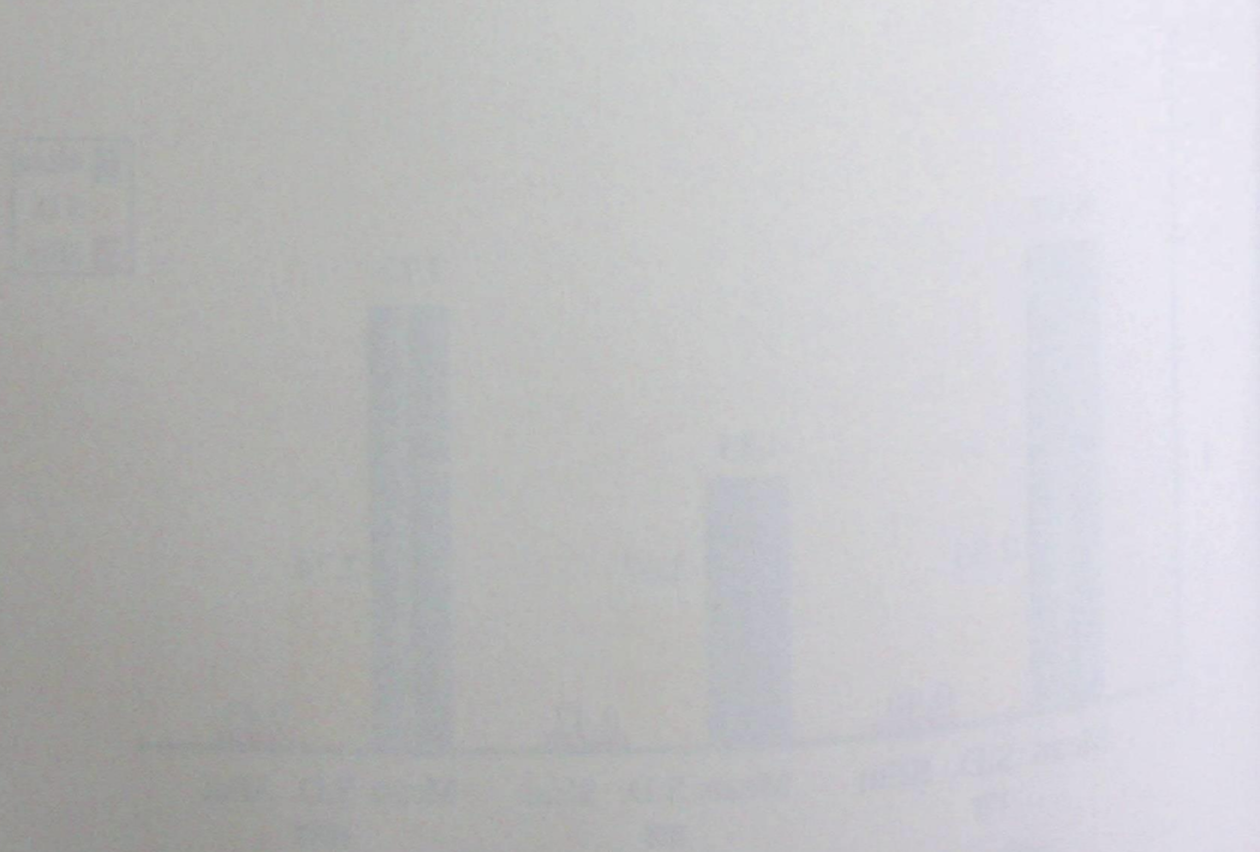
N = 40



तालिका 3.81 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता







तालिका 3.82

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्राएँ)

पित्त प्रकृति प्रधान छात्राएँ	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रजगुण	8.07	7.88	7.50	1.95	0.30	0.29	0.03	6.73	9.03
तमगुण	6.05	6.65	7.85	2.64	0.41	-0.68	0.06	3.80	8.23
सत्वगुण	7.10	7.02	6.86	2.36	0.37	0.10	0.05	5.08	8.61

तालिका 3.83

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

पित्त प्रकृति प्रधान छात्र	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रजगुण	9.35	8.06	5.48	3.79	0.59	1.02	0.03	6.86	9.26
तमगुण	5.82	5.32	4.32	2.55	0.40	0.58	0.04	4.02	6.87
सत्वगुण	7.62	7.64	7.68	2.34	0.37	-0.02	0.04	5.95	9.07

तालिका 3.82 के अवलोकन से स्पष्ट हो रहा है कि पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं में रज गुण की प्रधानता पाई गई। आयुर्वेद दर्शन में भी इस बात की पुष्टि की गई है कि पैत्तिक प्रकृति के व्यक्तित्व में रज गुण की प्रधानता होती है। रज गुण संबंधी केन्द्रीय वृत्ति के मापों में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं का मध्यमान (mean) 8.07, मध्यांक (mdn) 7.89 एंव बहुलांक (mode) 7.50 आया है । Sk 0.29 है जो ± 3 से कम है और मध्यमान का मान मध्यांक से अधिक है अतः वितरण में धनात्मक विषमता है, पर कम है । SEm 0.30 है जो 1.96 से कम है अर्थात विषम वितरण भी संभावना वक्र की ओर है क्योंकि SEm का मान मध्यमान (mean) के प्रतिनिध्यात्मक स्वरूप को बताता है । Ku 0.03 है जो कि 0.263 से कम है । अर्थात वक्र

Leptokurtic है ।

रेखाचित्र 28 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के रजगुण, तमगुण एवं सत्वगुण प्रकृति के प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean), प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) को प्रदर्शित किया गया है ।

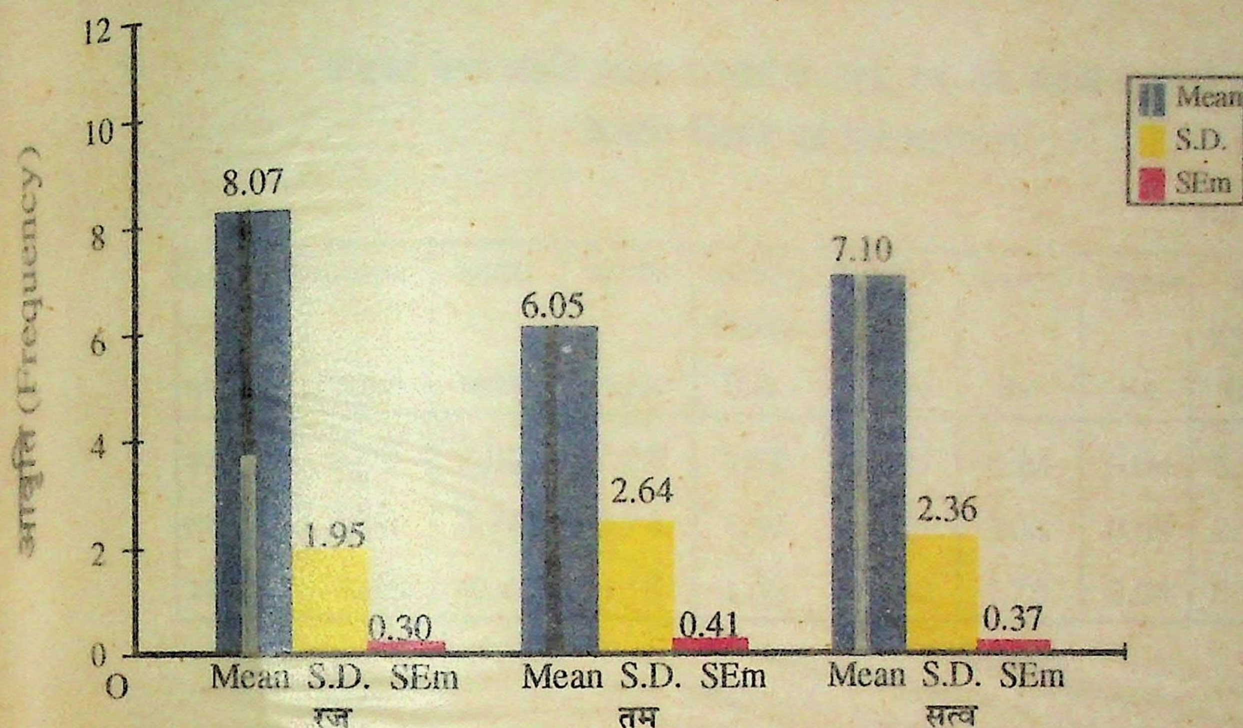
तालिका 3.83 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों में रज गुण की प्रधानता स्पष्ट हो रही है । रजगुण संबंधी केन्द्रीय वृत्ति के मापो में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांकों की आवृत्ति का मध्यमान (mean) 9.35, मध्यांक (mdn) 8.06 एवं बहुलांक (mode) 5.48 आया है जो यह प्रदर्शित कर रहा है कि तीनों में ज्यादा मात्रा में अंतर है । Sk का मान भी 1.02 है जो ± 3 से ज्यादा है । मध्यमान का मान मध्यांक से अधिक है अतः वितरण में धनात्मक विषमता है, पर कम है । SEm 0.59 है जो 1.96 से कम है जिससे यह ज्ञात होता है कि वितरण संभावना वक्र की ओर है । Ku 0.03 है जो 0.263 से कम है अतः वितरण Leptokurtic है

रेखाचित्र 29 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के रजगुण, तमगुण एवं सत्वगुण प्रकृति के प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean), प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) को प्रदर्शित किया गया है ।

रेखाचित्र - 28

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांको का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

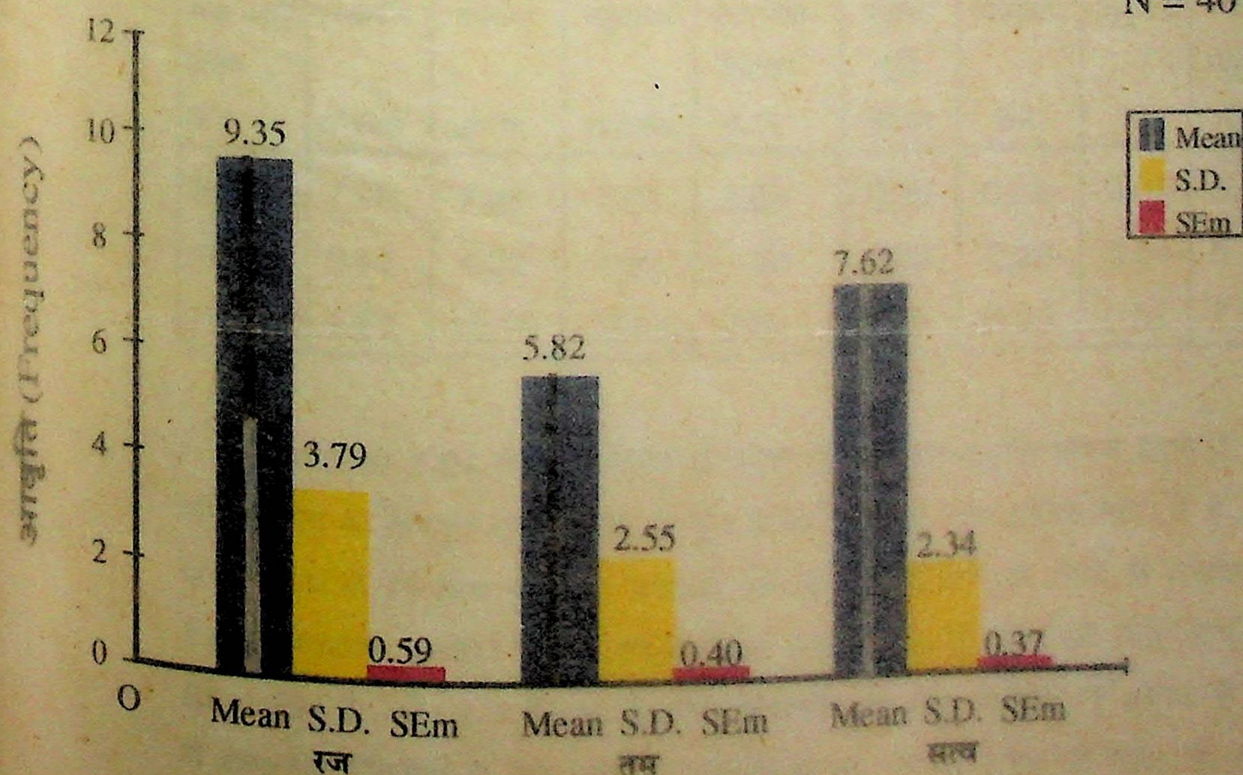


तालिका 3.82 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 29

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांको का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

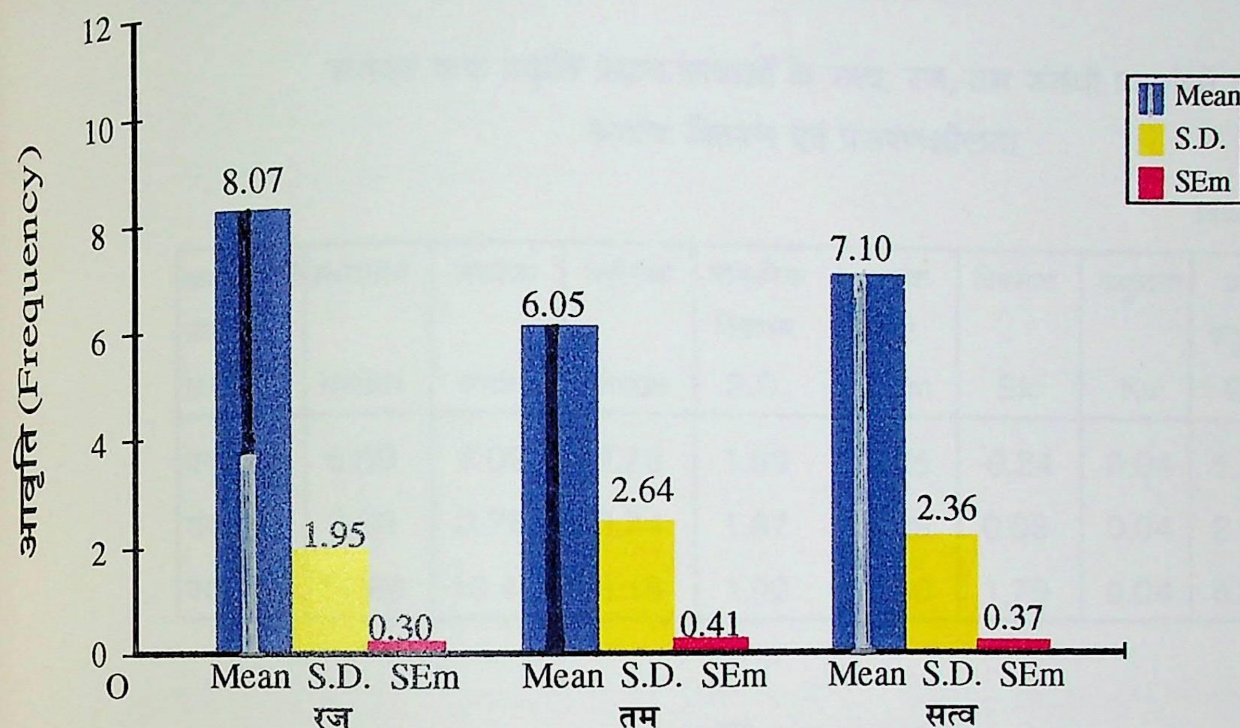


तालिका 3.83 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 28

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांको का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

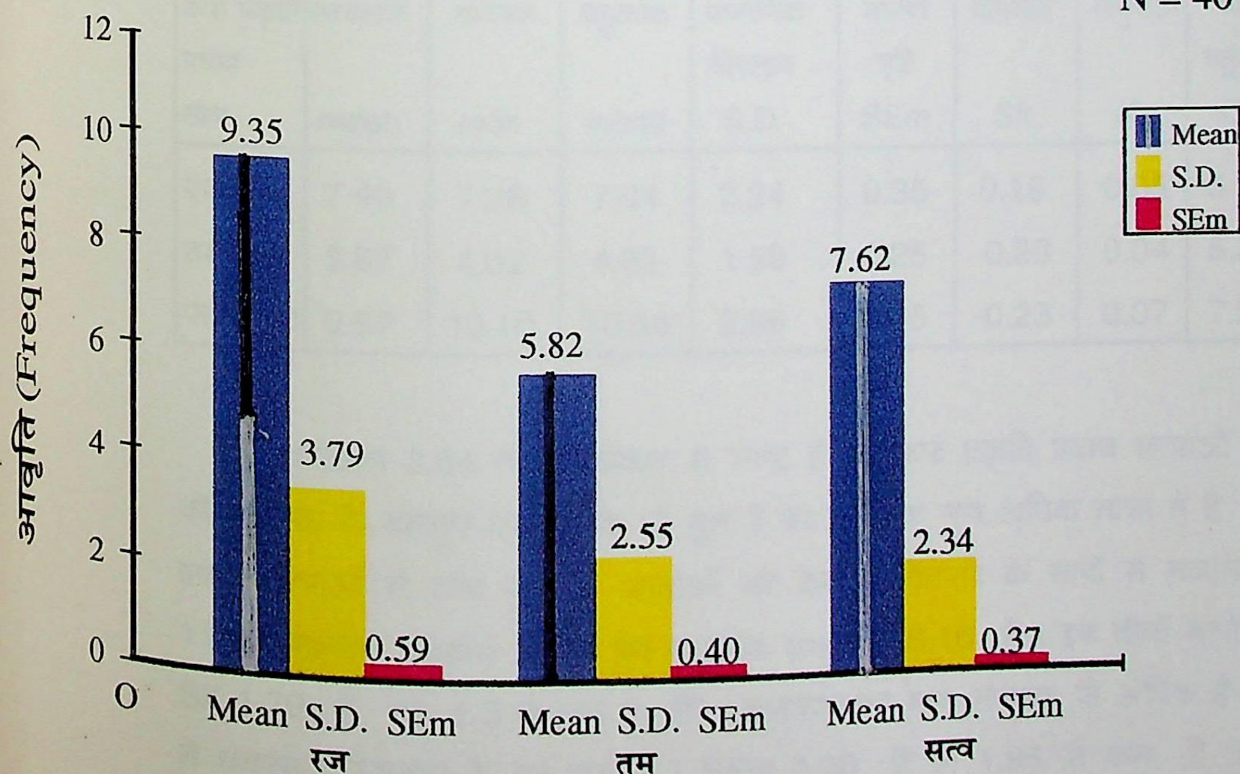


तालिका 3.82 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 29

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांको का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40



तालिका 3.83 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

तालिका 3.84

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्राएँ)

कफ प्रकृति प्रधान छात्राएँ	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रजगुण	6.89	7.02	7.28	1.59	0.25	-0.24	0.04	5.37	8.32
तमगुण	3.80	3.78	3.74	1.87	0.29	0.03	0.04	2.16	5.21
सत्वगुण	11.60	10.45	8.16	1.92	0.30	1.79	0.04	8.80	11.81

तालिका 3.85

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

कफ प्रकृति प्रधान छात्र	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रृटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
रज गुण	7.40	7.28	7.04	2.24	0.35	0.16	0.05	5.49	8.86
तम गुण	3.87	4.02	4.32	1.59	0.25	-0.28	0.04	5.37	8.32
सत्व गुण	9.87	10.10	10.56	2.89	0.45	-0.23	0.07	7.59	12.09

तालिका 3.84 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं में सत्व गुण की प्रधानता है। तमगुण एवं रज के भी गुण है पर सात्विक गुण अधिक मात्रा में है कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं में सत्व गुण के प्राप्तांकों की केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean) 11.60, मध्यांक (mdn) 10.45 एवं बहुलांक (mode) 8.16 है। इन तीनों मापों में अंतर है SK 1.79 है जो ± 3 से कम है और मध्यमान का मान मध्यांक से अधिक है अतः वितरण में धनात्मक विषमता है, पर कम है। SEm 0.30 है जो 1.96 से कम है अर्थात वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है। Ku 0.04 है जो 0.263 से कम है अर्थात वितरण का

वक्र Leptokurtic Type का है।

रेखाचित्र 30 में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के रजगुण, तमगुण एवं सत्वगुण प्रकृति के प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean), प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) का प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 3.85 में स्पष्ट हो रहा है कि कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं में भी सत्व गुण की अधिकता पाई गयी है। क्योंकि कफ प्रकृति प्रधान छात्रों में सत्व गुण के प्राप्तांकों की केन्द्रीय वृत्ति के माप में मध्यमान (mean) 9.87, मध्यांक (mdn) 10.10 एवं बहुलांक (mode) 10.56 है। इन तीनों में भी विशेष अंतर नहीं है। Sk 0.23 आया हैं ± 3 से कम है मध्यमान का मान मध्यांक से कम है अतः वितरण में ऋणात्मक विषमता है पर कम है। SEm 0.45 है जो 1.96 से कम है। अतः वितरण का वक्र सामान्य संभावना वक्र की ओर है। Ku 0.07 है जो 0.263 से कम है अतः वक्र Lepto kurtic है।

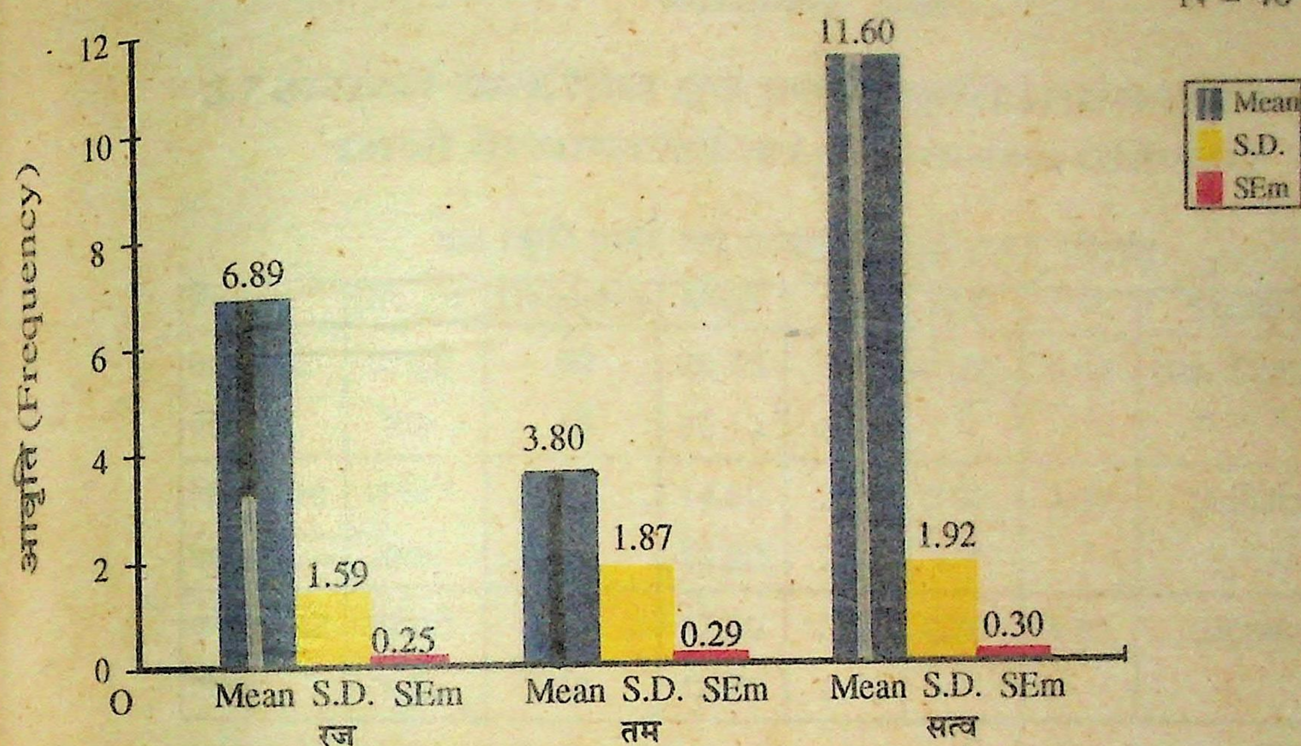
रेखाचित्र 31 में कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के रजगुण, तमगुण एवं सत्वगुण प्रकृति के प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के मापों में मध्यमान (mean), प्रमाणिक विचलन (S.D) एवं मानक त्रुटि (SEm) को प्रदर्शित किया गया है।

समस्त वात पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व एवं उसमें सत्व,रज, तम गुणों की स्थिति की व्याख्यात्मक विवेचना अध्याय - 4 में की गई है।

रेखाचित्र - 30

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांको का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

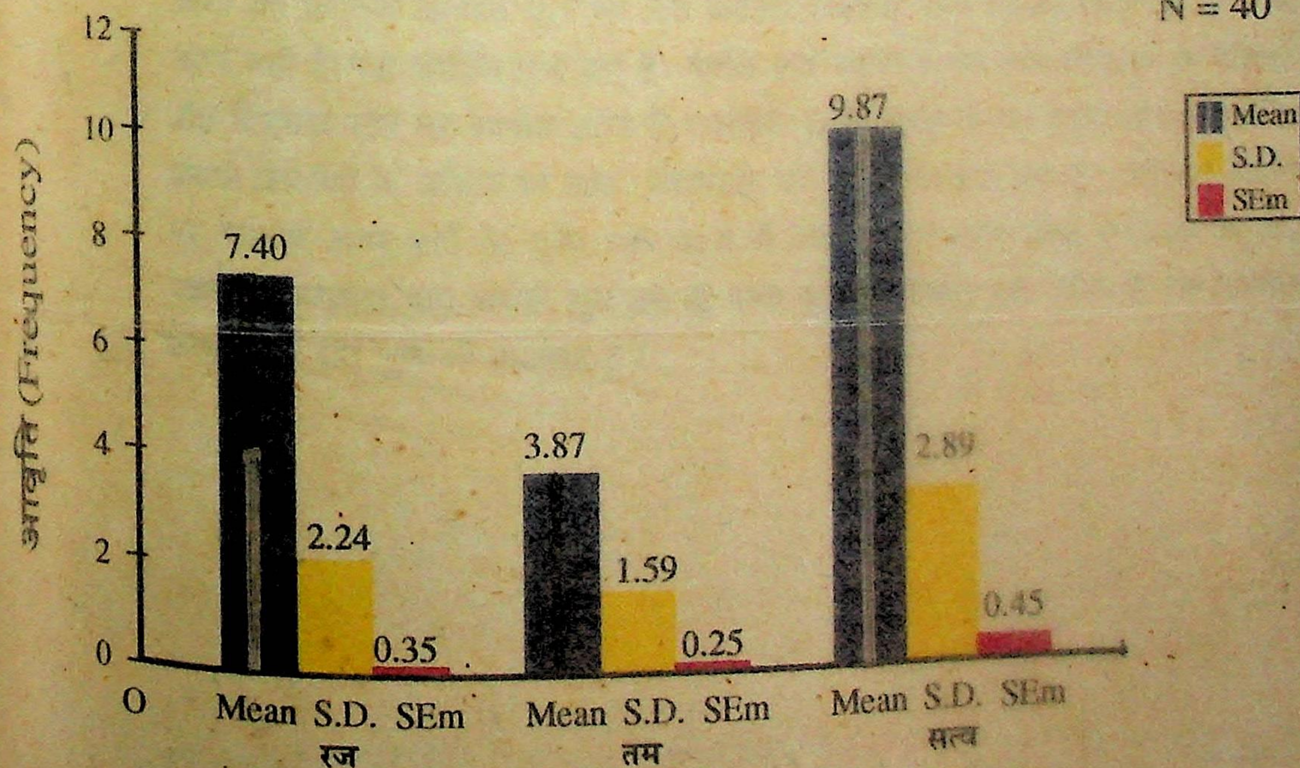


तालिका 3.84 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 31

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के रज, तम, सत्व संबंधी प्राप्तांको का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

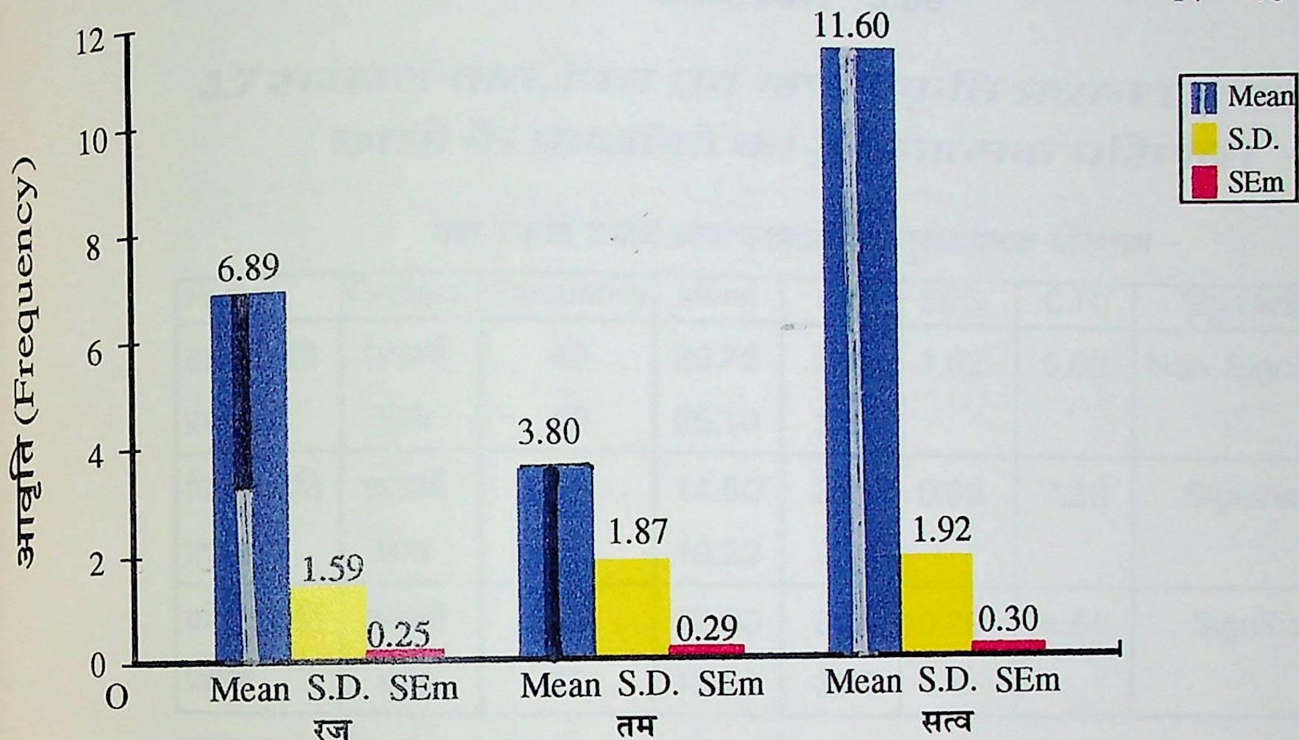


तालिका 3.85 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

रेखाचित्र - 30

व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ली गई समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के रज, तम, सत्व गुणों संबंधी प्राप्तांको का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40

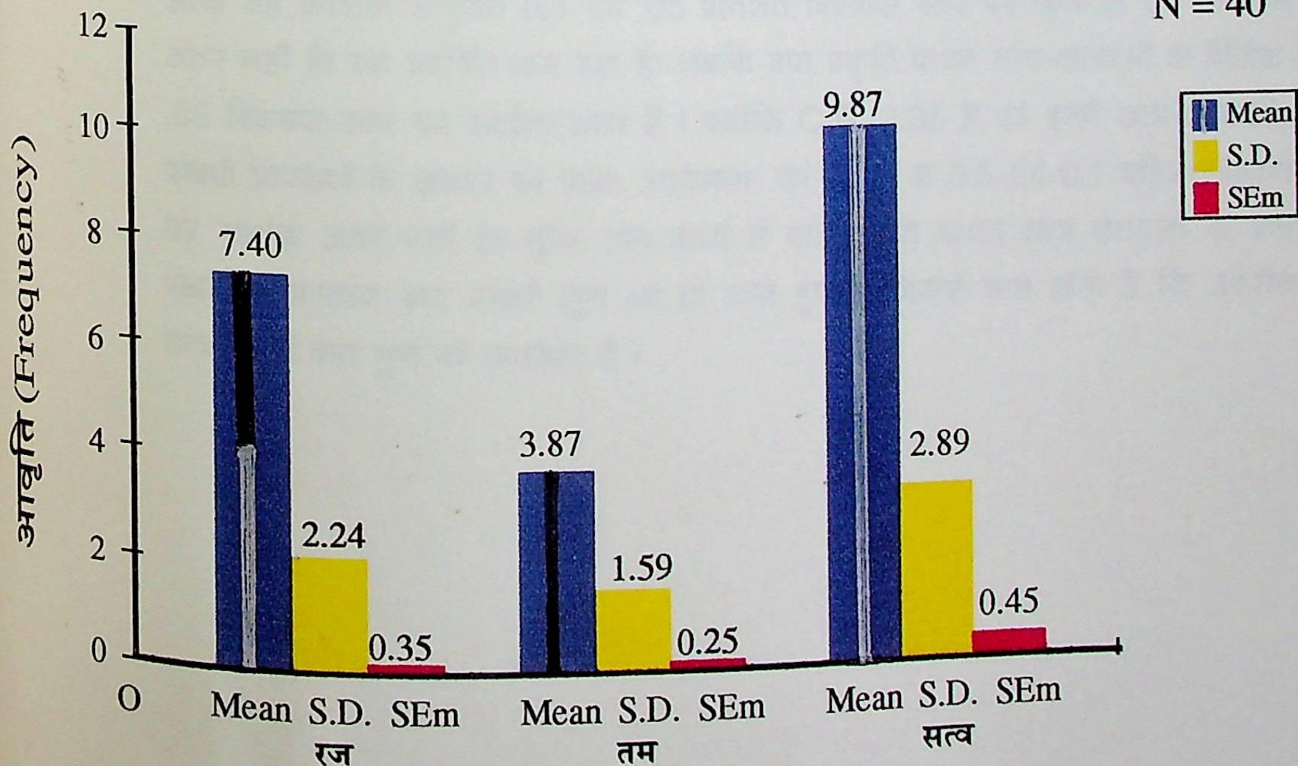


तालिका 3.84 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

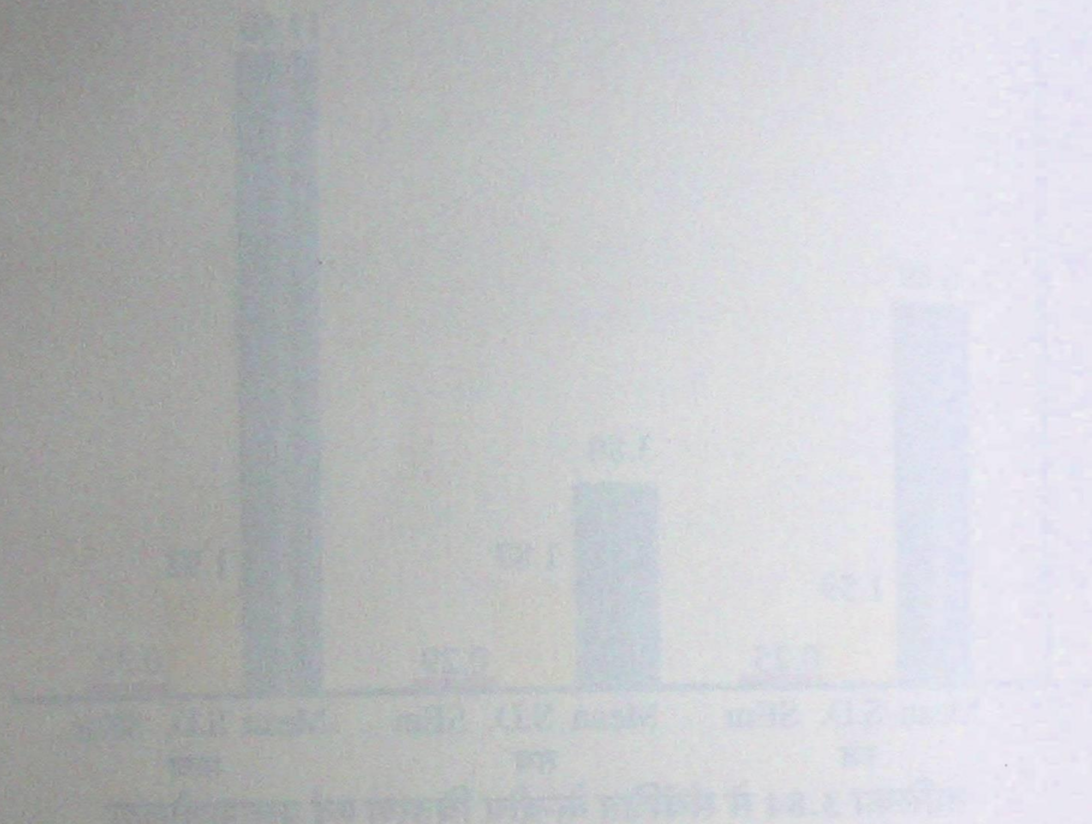
रेखाचित्र - 31

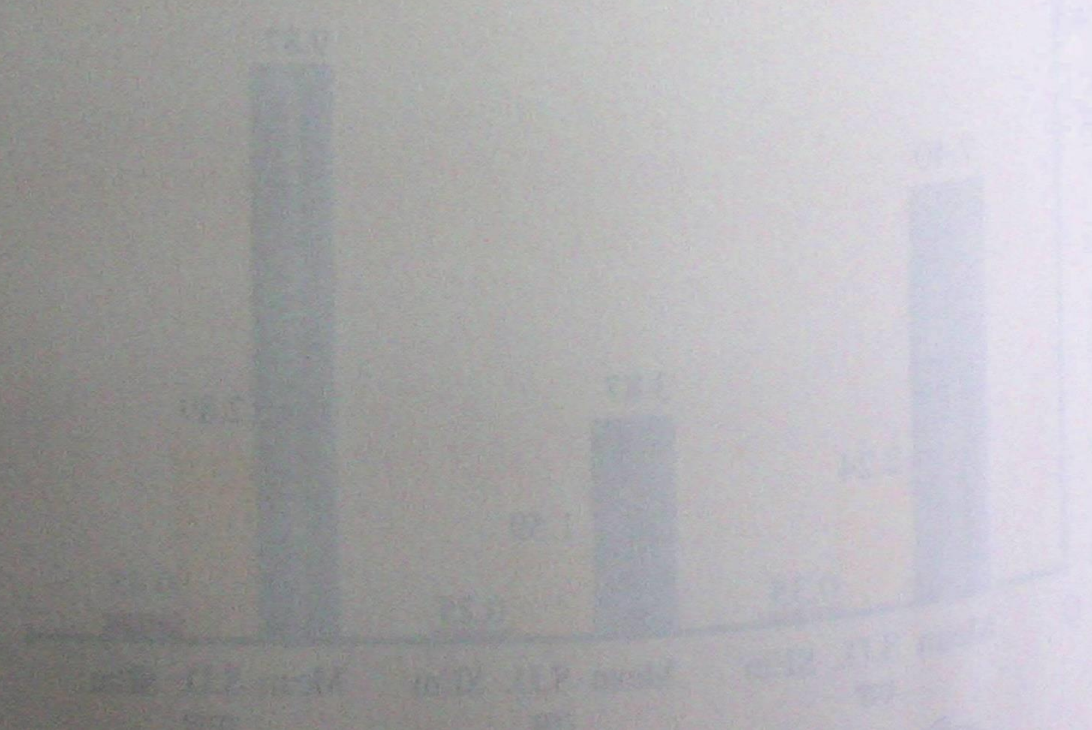
व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लिये गये समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के रज, तम, सत्व संबंधी प्राप्तांको का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N = 40



तालिका 3.85 से संबंधित केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता





तालिका 3.86

3.7 समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं व छात्रों के प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

वात प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं का तुलनात्मक परिणाम

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	26.75	5.40	1.02	0.63	Non Significant
प्रधान	छात्र	40	26.10	3.59			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	14.50	3.22	0.63	7.36	Significant
प्रधान	छात्र	40	19.20	2.43			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	17.30	3.34	0.79	4.51	Significant
प्रधान	छात्र	40	13.70	3.78			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 3.86 से स्पष्ट है कि वात प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों में छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान (mean) 26.75 एवं छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान (mean) 26.10 है। इन दोनों मध्यमान के आधार पर C.R. ज्ञात किया जो 0.63 आया यह क्रांतिक अनुपात 0.1 एवं .05 प्रतिशत विश्वास स्तर पर छात्राओं एवं छात्रों में सार्थक अंतर नहीं है। यह प्रदर्शित कर रहा है। जबकि वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के पैत्तिक गुणों में .05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। क्योंकि C.R. 2.35 है एवं इन्ही छात्र-छात्राओं के कफ संबधी प्राप्तांकों के आधार पर प्राप्त मध्यमान एवं C.R. के 0.5 एवं 0.1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। चूंकि शोध कार्य में वात प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के प्राप्तांकों में सर्वाधिक प्राप्तांक वात संबंधी गुण को ही प्राप्त हुए है जिससे ज्ञात होता है कि उपरोक्त छात्र-छात्राओं में वात गुण की प्रधानता है।

तालिका 3.87

पित्त प्रकृति प्रधान छात्र - छात्राओं का तुलनात्मक परिणाम

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	16.50	0.89	0.49	0.20	Non Significant
प्रधान	छात्र	40	16.60	3.03			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	26.20	2.88	0.62	7.06	Significant
प्रधान	छात्र	40	21.80	2.69			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	20.70	2.99	0.67	0	Non Significant
प्रधान	छात्र	40	20.70	3.09			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 3.87 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों को मध्यमान छात्राओं का 26.20 एवं छात्रों में प्राप्तांकों का मध्यमान का मान मध्यांक 21.80है । क्रांतिक अनुपात 7.06 है जो प्राप्तांको में सार्थक अंतर को प्रदर्शित कर रहा है । परंतु इन्हीं छात्र-छात्राओं के वात एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान से पित्त संबंधी मध्यमान अधिक है। पैत्तिक प्रकृति के इन छात्र- छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों में छात्र-छात्राओं के मध्यमान के आधार पर C.R. 0.20 आया है जो प्रदर्शित कर रहा है कि सार्थक अंतर नहीं है एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों में छात्र-छात्राओं के मध्यमान के आधार पर प्राप्त C.R. 0 आया है जिससे ज्ञात होता है कि इसमें भी सार्थक अंतर नहीं है । चूंकि शोध कार्य के लिये पैत्तिक प्रकृति के छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों में सर्वाधिक प्राप्तांक पित्त संबंधी है अतः ज्ञात होता है कि उपरोक्त छात्र-छात्राएँ पित्त प्रकृति के हैं या इनमें पित्त गुण की प्रधानता है।

तालिका 3.88

कफ प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं का तुलनात्मक परिणाम

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात	छात्राएँ	40	14.40	2.44			
	छात्र	40	16.50	2.82	0.58	3.56	significante
पित्त	छात्राएँ	40	21.80	2.28			
	छात्र	40	19.70	2.99	0.59	3.53	Significante
कफ	छात्राएँ	40	27.00	3.05			
	छात्र	40	26.80	3.39	0.72	0.27	Non significante

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 3.88 में कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान छात्राओं का 27.00 एवं छात्रों का 26.80 है। क्रांतिक अनुपात 0.27 है जिससे ज्ञात होता है कि प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है। इन्हीं छात्र-छात्राओं के वात एवं पित्त संबंधी प्राप्तांको के मध्यमान से कफ संबंधी मध्यमान अधिक है । कफ प्रकृति के इन छात्र-छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान के आधार पर C.R.3.56 आया है जो सार्थक अंतर प्रदर्शित कर रहा है। पित्त संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान का C.R. 3.53 आया है जिससे ज्ञात होता है इसमें भी सार्थक अंतर है। चूंकि शोध कार्य के लिये कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों में सर्वाधिक प्राप्तांक कफ संबंधी है अतः उपरोक्त छात्र-छात्राएँ कफ प्रकृति प्रधान हैं ।

तालिका 3.89

3.8 समस्त वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के सात्विक, राजसिक एवं तामसिक प्रकृति संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

वात प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
रजगुण	छात्राएँ	40	9.72	1.76	0.48	3.36	Significante
	छात्र	40	8.07	2.55			
तमगुण	छात्राएँ	40	4.32	1.95	0.52	1.01	Non significante
	छात्र	40	4.85	2.67			
सत्व गुण	छात्राएँ	40	10.10	1.92	0.52	4.49	Significante
	छात्र	40	7.72	2.74			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 3.89 में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं को सत्व, रज एवं तम गुण में से सर्वाधिक प्राप्तांक सत्व गुण को प्राप्त हुए हैं। क्योंकि प्राप्तांकों का मध्यमान 10.10 है । यहाँ इसका अर्थ यह हुआ कि वात प्रकृति प्रधान छात्राओं में सत्वगुण की प्रधानता पाई गई एवं छात्रों को सत्व, रज एवं तम गुण में से सर्वाधिक प्राप्तांक रज गुण को प्राप्त हुए हैं क्योंकि प्राप्तांकों का मध्यमान 9.72 है अर्थात वात प्रकृति प्रधान छात्रों में रज गुण की प्रधानता पाई गई। प्राप्त परिणामों में छात्राओं में रज गुण की प्रधानता पाई गई एवं छात्रों मे सत्वगुण की ।

तालिका 3.90

पित्त प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
रजगुण	छात्राएँ	40	8.07	1.95	0.67	1.89	Non-Significante
	छात्र	40	9.35	3.79			
तमगुण	छात्राएँ	40	6.05	2.64	0.58	1.32	Non-Significante
	छात्र	40	5.82	2.55			
सत्वगुण	छात्र	4	7.10	3.79	0.70	0.73	Non-Significante
	छात्र	40	7.62	2.34			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 3.90 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं को सत्व, रज एवं तम गुण में से सर्वाधिक प्राप्तांक रजगुण को प्राप्त हुए हैं । प्राप्तांकों का मध्यमान 8.07 है । अर्थात पित्त प्रकृति की छात्राओं में रज गुण की प्रधानता पाई गई। पित्त प्रकृति के छात्रों को भी सत्व, रज एवं तम गुणों में से सर्वाधिक प्राप्तांक रज गुण को ही प्राप्त हुए हैं। छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान 9.35 है अर्थात पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों में भी रज गुण की प्रधानता पाई गई।

आयुर्वेद दर्शन में पृ. 279 में भी यह कहा गया हैं कि 'पैत्तिक प्रकृति के मनुष्य रजोगुणी होते हैं ।' एवं पित्त को सत्व की प्रधानता वाला मानकर उसमें रज का सम्मिश्रण मानते हैं ।

तालिका 3.91

कफ प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक परिणाम

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
रज गुण	छात्राएँ	40	6.89	1.59	0.43	1.17	Non-Significante
	छात्र	40	7.40	2.24			
तम गुण	छात्राएँ	40	3.80	1.87	0.38	0.18	Non-Significante
	छात्र	40	3.87	1.59			
सत्व गुण	छात्राएँ	40	11.60	1.92	0.54	3.15	Significante
	छात्र	40	9.87	2.89			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 3.91 में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं को सत्व,रज,एवं तम इन तीनों गुणों में से सर्वाधिक प्राप्तांक सत्वगुण में प्राप्त हुए हैं । प्राप्तांकों को मध्यमान 11.60 है अतः कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं में सत्व गुण की अधिकता पाई गई। कफ प्रकृति के छात्रों को भी रज तम गुणों में से सत्व गुण में सर्वाधिक प्राप्तांक प्राप्त हुए हैं । प्राप्तांकों का मध्यमान 9.87 है अर्थात कफ प्रकृति प्रधान छात्रों में भी सत्व गुण की प्रधानता पाई गई ।

कफ में सात्विक व तामसिक दोनों लक्षण आयुर्वेद में मिलते हैं व मलिन (दूषित) कफ तामसिक होता है व निर्मल कफ में सत्व की प्रधानता होती है । छात्र एवं छात्राओं दोनों के प्राप्तांकों का मध्यमान सर्वाधिक सत्व गुण का आया है जो क्रमशः रज एवं तम गुण से अधिक है परंतु छात्र छात्राओं के रज गुण एवं तम गुण में सार्थक अंतर नहीं है और सत्व गुण में सार्थक अंतर प्राप्तांकों में प्राप्त होता है । इन प्राप्तांकों का क्रातिंक अनुपात 3.15 है जो 0.1 प्रतिशत एवं 0.5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थक अंतर को इंगित करता है ।

अध्याय - 4

व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) में निम्न, औसत एवं उच्च प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

4.1 समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों के मध्य व्यक्तित्व परीक्षण के सोलह कारकों के तुलनात्मक परिणाम

4.2 समस्त वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व की व्याख्यात्मक विवेचना

4.2.1 वात प्रकृति (या हीन प्रकृति) प्रधान छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व

4.2.2 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या

4.2.3 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्म्क व्याख्या

4.2.4 पित्त प्रकृति (या मध्यम प्रकृति) प्रधान छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व

4.2.5 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या

4.2.6 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या

4.2.7 कफ प्रकृति (या उत्तम प्रकृति) प्रधान छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व

4.2.8 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या

4.2.9 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या

4.3 उपकल्पनाओं का सत्यापन

अध्याय - 4

व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) में निम्न, औसत एवं उच्च प्राप्तांकों का केंद्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

4.1 समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों के मध्य व्यक्तित्व परीक्षण के सोलह कारकों के तुलनात्मक परिणाम

4.2 समस्त वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व की व्यारव्यात्मक विवेचना

4.2.1 वात प्रकृति (या हीन प्रकृति) प्रधान छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व

4.2.2 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्यारव्या

4.2.3 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्यारव्या

4.2.4 पित्त प्रकृति (या मध्यम प्रकृति) प्रधान छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व

4.2.5 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्यारव्या

4.2.6 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्यारव्या

4.2.7 कफ प्रकृति (या उत्तम प्रकृति) प्रधान छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व

4.2.8 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्यारव्या

4.2.9 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्यारव्या

4.3 उपकल्पनाओं का सत्यापन

अध्याय - 4

व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) में निम्न, औसत एवं उच्च प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

शोध कार्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अध्याय है- प्राप्त परिणामों की व्यारव्यत्मक विवेचना। शोध कार्य के लिए न्यादर्श में चयन किये गये छात्र-छात्राओं पर परीक्षण के प्रशासन के पश्चात प्राप्त प्राप्तांकों का सांरिव्यकीय विश्लेषण किया गया है। सांरिव्यकीय विश्लेषण के लिये जिन मापों का प्रयोग किया गया है वे हैं- मध्यमान (mean), मध्यांक (mdn), बहुलांक (mode), प्रमाणिक विचलन (S.D.), मानक त्रुटि (SEm), विषमता (Sk), व ककुदता (Ku) । न्यादर्श में समूहों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सांरिव्यकीय माप C.R.(critical Ratio) क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है ।

परिणामों का विस्तृत वर्णन एवं विवेचना अग्रलिरिवत है ।

तालिका 4.92

व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) में निम्न , औसत एवं उच्च प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्राएँ)

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक विचलन mode	प्रामाणिक त्रृटि S.D.	मानक SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	5.40	5.44	5.52	0.43	0.06	-0.27	0.01	4.92	5.97
2.	B	2.40	2.16	1.68	1.17	0.18	0.061	0.33	1.33	3.35
3.	C	5.30	5.41	5.63	0.74	0.11	-0.44	0.01	4.87	5.95
4.	E	7.90	7.35	6.25	1.11	0.17	3.23	0.01	6.78	7.92
5.	F	7.25	7.47	7.91	1.42	0.22	-0.15	0.02	6.90	8.61
6.	G	5.55	5.52	5.46	0.31	0.04	0.29	0.01	5.01	6.03
7.	H	5.55	5.47	5.31	0.31	0.04	0.77	0.01	4.96	5.98
8.	I	7.15	7.41	7.93	1.40	0.22	-0.55	0.01	6.84	7.98
9.	L	7.75	7.50	7.00	0.83	0.13	0.89	0.01	6.94	8.05
10	M	3.05	3.11	3.23	1.22	0.19	-0.14	0.02	2.16	3.88
11	N	4.45	3.79	2.47	1.89	0.29	1.04	0.02	3.14	4.43
12.	O	4.15	3.67	2.71	1.67	0.26	0.86	0.02	2.98	4.36
13.	Q.1	7.70	7.71	7.73	1.98	0.31	-0.01	0.01	7.04	8.25
14.	Q.2	7.30	7.44	7.72	1.16	0.18	-0.36	0.01	6.80	8.00
15.	Q.3	5.50	5.50	5.50	0.44	0.06	0.00	0.01	4.97	6.02
16.	Q.4	5.50	5.50	5.50	0.44	0.06	0.00	0.01	4.97	6.02

तालिका 4.92 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इसमें दिये गये आंकड़े वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F. Test) द्वारा प्राप्तांकों के केन्द्रीय वितरण के माप हैं।

Factor A, C, F, I, M, Q.1, Q.2 में प्राप्तांकों का मध्यमान (mean), बहुलांक (mode), से कम है अतः प्राप्तांकों के वितरण में ऋणात्मक विषमता है परतुं Sk का मान ± 3 से कम है अतः विषमता कम है। Factor B, E, G, H, L, N, O मे धनात्मक विषमता है क्योंकि प्राप्तांकों का मध्यमान (mean) , बहुलांक (mode) से अधिक है पर इन सभी factors में Sk का मान

± 3 से कम है अतः धनात्मक विषमता कम है।

Factor Q.3, Q.4, में Sk का मान 0 आया है क्योंकि इन factor के मध्यमान, मध्यांक एवं बहुलांक में कोई अंतर नहीं है अतः इन factors में प्राप्तांकों का वितरण सामान्य संभावना वक्र है। सभी Factors में SEm का मान 1.96 से कम है। अतः यह कहा जायेगा कि सभी factors के प्राप्त मध्यमान अपने-अपने समूह को प्रतिनिधित्व करते हैं। एवं वक्र संभावना वक्र की ओर है यह प्रदर्शित करता है। Ku का मान भी सभी Factors में 0.263 से कम है। अतः सभी वक्र Lepto kurtic बनेंगे केवल Q.3,Q.4 Factor को छोड़कर।

तालिका 4.93

समस्त वात प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक विचलन mode	प्रामाणिक त्रृटि S.D.	मानक SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	3.95	3.62	2.96	2.12	0.33	0.46	0.04	2.31	5.35
2.	B	2.85	2.72	2.46	1.37	0.21	0.28	0.03	1.61	3.91
3.	C	2.60	2.60	2.60	1.09	0.17	0	0.03	1.55	3.60
4.	E	3.15	3.10	3.00	1.47	0.23	0.10	0.03	2.0 3	3.97
5.	F	2.55	2.50	2.40	1.10	0.17	0.13	0.03	1.50	3.55
6.	G	4.60	4.78	5.14	1.41	0.22	-0.12	0.03	3.50	5.73
7.	H	5.35	5.41	5.93	0.69	0.10	-0.26	0.01	4.84	5.98
8.	I	5.45	5.50	5.60	1.20	0.18	-0.12	0.02	4.78	6.21
9.	L	8.10	8.60	9.60	1.47	0.23	-1.00	0.03	6.92	9.44
10.	M	5.40	5.44	5.52	0.43	0.06	-0.27	0.01	4.92	5.97
11.	N	8.55	8.90	9.60	1.34	0.21	-0.78	0.03	7.59	9.70
12.	O	5.75	5.55	5.15	1.20	0.18	0.49	0.01	4.97	6.14
13.	Q.1	7.25	7.30	7.40	1.49	0.23	-0.10	0.03	6.13	8.30
14.	Q.2	5.30	5.58	6.14	0.93	0.14	-0.90	0.01	5.04	6.12
15.	Q.3	7.55	7.56	7.58	1.13	0.17	-0.02	0.02	6.90	8.23
16.	Q.4	7.75	7.68	7.54	1.11	0.17	0.18	0.02	5.94	8.42

तालिका 4.93 में वात प्रकृति प्रधान छात्रों के 16 P.F. Test में 16 कारकों में प्राप्तांकों के केन्द्रीय वृत्ति के माप दिये गये है।

Factor G, H, I, L, M, N, Q.1, Q.2 व Q.3 में प्राप्तांकों के वितरण में ऋणात्मक विषमता है। Factor A, B, E, F, O व Q.4 में धनात्मक विषमता है। लेकिन उपरोक्त सभी factors में Sk का मान ± 3 से कम है अतः धनात्मक, ऋणात्मक विषमताएँ कम हैं। factor c में Sk 0 आया है क्योंकि मध्यमान, मध्यांक एवं बहुलांक में कोई अंतर नहीं है अतः इन factors में प्राप्तांकों का वितरण सामान्य संभावना वक्र है । सभी Factors में SEm का मान 1.96 से कम है । अतः यह कहा जायेगा कि सभी factors के प्राप्त मध्यमान अपने-अपने समूह को प्रतिनिधित्व करते हैं। एवं वक्र संभावना वक्र की ओर है यह प्रदर्शित करता है। Ku का मान सभी factors में 0.263 से कम है अतः सभी प्राप्तांकों के वितरणों के वक्र Lepto kurtic होंगे।

तालिका 4.94

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्राएँ)

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक विचलन mode	प्रामाणिक त्रुटि S.D.	मानक SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	6.70	7.20	8.20	1.53	0.24	-0.98	0.02	6.56	7.85
2.	B	2.75	2.40	2.00	1.59	0.25	0.66	0.03	1.45	3.70
3.	C	6.40	7.87	10.81	2.36	0.37	-1.86	0.02	6.56	0.02
4.	E	3.70	3.56	3.28	1.24	0.19	0.33	0.01	2.93	4.18
5.	F	5.80	6.96	9.28	2.47	0.39	-1.40	0.06	3.50	7.73
6.	G	7.10	7.23	7.49	0.91	0.14	-0.42	0.02	6.56	7.90
7.	H	7.20	7.33	7.59	1.05	0.16	-0.37	0.02	6.69	7.98
8.	I	5.20	5.40	5.80	1.30	0.20	-0.46	0.02	4.75	6.04
9.	L	7.80	7.79	7.77	1.05	0.16	0.02	0.02	4.08	8.37
10.	M	5.30	5.40	5.60	1.08	0.17	-0.27	0.02	4.75	6.04
11.	N	7.40	7.62	8.06	1.84	0.29	0.35	0.02	6.82	8.42
12.	O	4.45	3.87	2.71	1.78	0.28	0.97	0.04	-1.83	4.83
13.	Q.1	7.40	7.44	7.52	0.76	0.12	-0.15	0.01	6.85	8.02
14.	Q.2	3.75	3.59	3.27	1.20	0.18	0.39	0.02	3.95	5.24
15.	Q.3	5.75	5.75	5.75	1.60	0.25	0	0.01	5.12	6.37
16.	Q.4	5.45	5.47	5.51	0.54	0.08	-0.11	0.03	4.93	6.01

उपरोक्त तालिका 4.94 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं को 16 P.F. Test के प्राप्तांकों के केन्द्रीय वृत्ति के मापों को दर्शाया गया है।

Factors A, C, F, G, H, I, M, Q 1, Q 4 में ऋणात्मक विषमता है एवं factor B, E, L, N, O व Q.2 में धनात्मक विषमता है । इन सभी 15 factors में Sk का मान ± 3 से कम आया है। अतः सभी में विषमता है परंतु कम मात्रा में है । factor Q.3 में SK का मान 0 है। क्योकि प्राप्तांकों के वितरण में मध्यमान मध्यांक एवं बहुलांक में कोई अंतर नहीं है। अतः factor Q.3 के प्राप्तांकों के वितरण में वक्र सामान्य संभावना वक्र होगा । SEm का मान 1.96 से कम सभी 16 factors में है। अतः सभी factors का मध्यमान अपने-अपने समूह का प्रतिनिधित्व कर रहा है एवं वक्र संभावना वक्र की ओर है । Ku का मान 0.263 से कम सभी factors में है, अतः सभी वक्र Lepto kurtic होंगे।

तालिका 4.95

समस्त पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक विचलन mode	प्रामाणिक त्रुटि S.D.	मानक SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	5.35	5.42	5.56	1.20	0.18	0.17	0.02	4.71	6.14
2.	B	3.30	3.10	2.70	1.88	0.29	0.31	0.03	1.92	4.10
3.	C	2.60	2.40	2.00	1.26	0.19	0.47	0.06	1.45	3.62
4.	E	3.55	3.58	3.64	1.76	0.27	-0.05	0.04	1.92	5.11
5.	F	2.40	2.16	1.68	1.17	0.18	0.61	0.03	1.33	3.35
6.	G	7.60	7.62	7.66	1.33	0.21	-0.04	0.02	6.82	8.42
7.	H	5.50	5.50	5.50	0.63	0.09	0	0.01	4.94	6.05
8.	I	7.85	7.80	7.70	1.25	0.19	0.12	0.02	6.93	8.83
9.	L	7.80	8.15	8.85	1.97	0.31	-0.53	0.03	6.87	9.32
10.	M	2.75	2.50	2.00	1.46	0.23	0.51	0.03	1.50	3.75
11.	N	8.50	8.76	9.28	1.26	0.19	-0.61	0.03	7.50	9.63
12.	O	8.05	8.02	7.46	1.58	0.25	0.05	0.02	7.70	9.16
13.	Q.1	7.65	7.90	8.40	1.96	0.31	-0.38	0.06	6.90	9.07
14.	Q.2	5.40	5.46	5.58	1.09	0.17	0.16	0.02	4.82	6.11
15.	Q.3	2.75	2.50	2.00	1.65	0.26	0.45	0.06	1.50	3.61
16.	Q.4	5.10	5.31	5.73	1.11	0.17	-0.56	0.01	4.68	5.93

उपरोक्त तालिका 4.95 में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के 16 P.F. Test में प्राप्तांकों के केन्द्रीय वृत्ति के मापों को दर्शाया गया है ।

factor E, G, L, N, Q.1, Q.4 में ऋणात्मक विषमता है। factor A, B, C, F, I, M, O, Q.2, Q.3 में धनात्मक विषमता है । सभी 15 factor में Sk का मान ± 3 से कम है । अतः सभी वितरणों में विषमता है। पर न्यून मात्रा में है। केवल factor H में SK, 0 आया है। क्योंकि मध्यमान, मध्यांक एवं बहुलांक समान है। इस factor के प्राप्तांकों का वक्र सामान्य संभावना वक्र है । SEm का मान सभी factor में 1.96 से कम है। अतः सभी प्राप्तांकों के वक्र संभावना वक्र की ओर है। Ku का मान भी सभी factor में 0.263 से कम है अतः वक्र Lepto kurtic होंगे।

तालिका 4.96

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्राएँ)

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक mode	प्रामाणिक विचलन S.D.	मानक त्रुटि SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	3.00	3.16	3.48	0.86	0.13	-0.55	0.02	2.50	3.83
2.	B	5.00	5.25	5.75	1.32	0.20	-0.56	0.02	4.56	5.94
3.	C	3.25	3.28	3.34	1.27	0.20	-0.07	0.02	2.41	4.15
4.	E	3.65	3.56	3.38	1.03	0.16	0.26	0.01	2.93	4.18
5.	F	2.80	2.91	3.13	1.05	0.11	-0.31	0.03	1.83	3.75
6.	G	5.55	5.52	5.46	0.54	0.08	0.16	0.01	4.98	6.06
7.	H	5.35	5.41	5.53	0.67	0.10	-0.26	0.01	4.84	5.98
8.	I	2.65	2.60	2.50	1.17	0.18	0.12	0.03	1.55	3.65
9.	L	7.90	7.75	7.45	0.80	0.12	0.56	0.01	7.12	8.37
10.	M	3.40	3.20	2.80	1.84	0.29	0.32	0.03	2.03	4.20
11.	N	7.20	7.39	7.77	1.38	0.21	-0.41	0.02	6.70	8.08
12.	O	5.55	5.52	5.46	0.52	0.08	0.17	0.03	4.98	6.06
13.	Q.1	7.40	7.57	7.91	1.54	0.24	-0.33	0.02	6.85	8.28
14.	Q.2	5.50	5.50	5.50	0.89	0.14	0	0.01	4.87	6.12
15.	Q.3	7.15	7.34	7.72	1.08	0.17	-0.52	0.01	6.74	7.95
16.	Q.4	5.70	5.62	5.46	0.87	0.13	0.27	0.01	5.00	6.25

उपरोक्त तालिका 4.96 में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं द्वारा 16 P.F. Test में प्राप्तांकों के केन्द्रीय वृत्ति के मापों को प्रदर्शित किया गया है।

Factor A, B, C, F, H, N, Q.1,व Q.3 में ऋणात्मक विषमता है। factor E, G, I, L, M, O व Q.4 में धनात्मक विषमता है। इन सभी 15 factors में Sk का मान ± 3 से कम है । अतः इन Factors में विषमता है, पर कम मात्रा में है। factor Q.2 में Sk का मान 0 आया है। अर्थात वितरण में विषमता नहीं है इस वितरण का वक्र सामान्य संभावना वक्र है। SEm का मान सभी factor में 1.96 से कम है। अतः सभी प्राप्तांकों के वक्र संभावना वक्र की ओर है। Ku का मान भी सभी factor में 0.263 से कम है अतः वक्र Lepto kurtic होंगे।

तालिका 4.97

समस्त कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) के प्राप्तांकों का केन्द्रीय वितरण एवं प्रसरणशीलता

N=40 (छात्र)

क्र S.N.	कारक Factor	मध्यमान mean	मध्यांक mdn	बहुलांक विचलन mode	प्रामाणिक त्रृटि S.D.	मानक SEm	विषमता Sk	ककुदता Ku	प्रथम चतुर्थांश Q1	तृतीय चतुर्थांश Q3
1.	A	5.35	5.43	5.59	1.02	0.16	-0.23	0.08	0.31	6.06
2.	B	7.60	7.97	8.71	2.14	0.33	-0.51	0.03	6.92	9.16
3.	C	2.85	2.81	2.73	1.29	0.20	0.093	0.03	1.67	3.86
4.	E	5.20	5.35	5.65	0.84	0.13	-0.53	0.01	4.87	5.92
5.	F	2.50	2.50	2.50	1.00	0.15	0	0	1.50	1.50
6.	G	5.45	5.52	5.66	0.30	0.04	-0.69	0.01	5.01	6.03
7.	H	8.15	7.98	7.64	0.93	0.14	0.54	0.02	7.24	8.96
8.	I	5.60	5.55	5.45	0.44	0.06	0.34	0.01	5.02	6.07
9.	L	7.55	7.53	7.49	1.04	0.16	0.05	0.02	6.84	8.22
10.	M	5.50	5.50	5.50	0.44	0.06	0	0.01	4.97	6.02
11.	N	8.35	8.83	9.79	1.67	0.26	-0.86	0.06	7.57	9.66
12.	O	5.40	5.44	5.52	0.44	0.06	-0.27	0.01	5.02	6.07
13.	Q.1	8.05	7.78	7.24	0.89	0.14	0.91	0.02	7.18	8.68
14.	Q.2	8.15	7.98	7.64	0.93	0.14	0.54	0.02	7.24	8.96
15.	Q.3	8.05	7.94	7.72	0.73	0.11	2.45	0.02	7.14	8.96
16.	Q.4	3.10	3.08	3.04	1.42	0.22	0.04	0.02	2.03	3.91

उपरोक्त तालिका 4.97 में कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के 16 P.F. Test में प्राप्तांकों के केन्द्रीय वृत्ति के मापों को प्रदर्शित किया गया है ।

factor A, B, E, G, N, O में ऋणात्मक विषमता है। क्योंकि इन कारकों में प्राप्तांकों का मध्यमान (mean) बहुलांक (mode) सेकम है। factor C, H, I, L, Q.1, Q.2, Q.3, Q.4 मे धनात्मक विषमता है क्योंकि इन factor में प्राप्तांकों का मध्यमान (mean) बहुलांक (mode) से अधिक है। इन सभी factor में SK का मान ± 3 से कम है। अतः सभी वितरणों में विषमता है पर कम है factor F व M के प्राप्तांकों के वितरण में Sk 0 है क्योंकि मध्यमान (mean) मध्यांक (mdn) एवं बहुलांक (mode) बराबर हैं । अतः factor F व M के प्राप्तांकों के वितरण सामान्य संभावना वक्र है । SEm का मान 1.96 से सभी में कम है इसलिये वक्र संभावना वक्र की ओर है। Ku का मान 0.263 से कम है अतः सभी वक्र Lepto kurtic (शिखरीय) होंगे।

तालिका 4.98

4.1 समस्त वात-पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों के मध्य व्यक्तित्व परीक्षण के विभिन्न कारकों (सोलह) के तुलनात्मक परिणाम

व्यक्तित्वशीलगुण 'OUTGOING' (EXTROVERT) बर्हिमुखी और 'RESERVED' (INTROVERT) अंर्तमुखी (FACTOR-A) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	5.40	0.43	0.34	4.23	Significant
प्रधान	छात्र	40	3.95	2.12			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	6.70	1.53	0.30	4.39	Significant
प्रधान	छात्र	40	5.35	1.20			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	3.00	0.86	0.21	11.14	Significant
प्रधान	छात्र	40	5.35	1.02			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

तालिका 4.98 में न्यादर्श द्वारा चयनित समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान तीनों समूहों के 40-40 छात्र-छात्राओं द्वारा व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16.P.F.Test) में Factor A के प्राप्तांकों का मध्यमान (mean), प्रामाणिक विचलन, (S.D.) एवं mean व S.D. के आधार पर छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों के क्रांतिक अनुपात (C.R.) को प्रदर्शित किया गया है।

वात प्रकृति की छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान (mean) 5.40 प्रामाणिक विचलन (S.D.) 0.43 आया है। एवं छात्रों का mean 3.95, S.D. 2.12, आया हैं। इन दोनों mean व S.D. के आधार पर क्रांतिक अनुपात (C.R.) 4.23 आया जो 0.1 एवं 0.5 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर को प्रकट करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि वात,पित्त प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं को Factor A में सार्थक अंतर है।

पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं का mean 6.70 व S.D. 1.53 एवं छात्रों का mean 5.35 एवं S.D. 1.20 आया । क्रातिंक अनुपात (C.R.) 4.39 आया । इस समूह के छात्र-छात्राओं के

प्राप्तांकों में भी सार्थक अंतर है।

कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं का mean 3.00 व S.D. 0.86 छात्रों का mean 5.35 व S.D. 1.02 आया। क्रांतिक अनुपात 11.14 है। इस समूह के छात्र-छात्राओं में भी factor A में सार्थक अंतर पाया गया।

छात्र-छात्राओं के मध्यमान को 16 P.F. Test Profile में बिन्दु आरेख द्वारा दर्शाया गया है। जिसमें मध्यमान बिन्दु 1 से 4 तक की सीमा में आने पर low score को show करता है। 5-6 अंकों के बीच आने वाला मध्यमान औसत प्राप्तांक Average score को show करता है । 7 से 10 अंकों के बीच आने वाला मध्यमान High Score को show करता है। Low Score व High Score अलग-अलग factor के लिये अलग-अलग व्यक्तित्व गुणों की व्याख्या करते हैं। Average Score Low एवं High Score के मिले जुले गुणों के आधार पर शीलगुणों की औसत मात्रा में व्यक्तित्व की व्याख्या करता है।

तालिका 4.98 में Factor A में वात प्रकृति प्रधान छात्रों एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांकों का Score Low आया है। अतः Factor A में जिन व्यक्तियों का Low Score आता है । ऐसे व्यक्तियों का व्यक्तित्व अंतर्मुखी (Introvert) होता है। ऐसे व्यक्ति लोगों से अलग-अलग रहने वाले, आलोचनात्मक, शांत,लोगों की अपेक्षा वस्तुओं को अधिक महत्व देने वाले, अपने वैयक्तिक मानक के साथ चलने वाले, जिददी किस्म के, ठंडे अपने कार्य को सही ढंग से व कठोरता व दृढ़ता से करने वाले होते हैं। कभी-कभी ये व्यक्ति आलोचनात्मक व कठोर हो जाते हैं ।

औसत से अधिक (High Score) प्राप्तांक मिले हैं पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं को।जिन लोगों को 16 P.F. Test के Factor A में औसत से अधिक प्राप्तांक मिलते हैं,ऐसे व्यक्ति बहिर्मुखी (Exfrovert) अर्थात मिलनसार,अच्छे स्वभाव वाले, उदार, अपने संवेगों (emotions) को प्रकट करने वाले, संवेगों से युक्त तथा वस्तुओं की अपेक्षा लोगों के साथ काम करना अधिक पसंद करते हैं । आलोचना से कम घबराते हैं एवं समूह में सक्रिय भाग लेने वाले होते हैं।

वात प्रकृति की छात्राओं, पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्रों के प्राप्तांक औसत हैं। अतः इन समूहों के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व में अर्तमुखी एवं बहिर्मुखी दोनों ही गुण अर्थात उभयमुखी गुण समय-समय परिस्थितिनुसार प्राप्त होते हैं एवं उपरोक्त वर्णित समस्त लक्षण औसत मात्रा में प्राप्त होते हैं ।

तालिका 4.99

व्यक्तित्वशीलगुण 'MORE INTELLIGENTE ' अधिक बुद्धिमान और 'LESS INTELLIGENTE ' कम बुद्धिमान (FACTOR-B) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	2.40	1.17	0.28	1.57	Non Significant
प्रधान	छात्र	40	2.85	1.37			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	2.75	1.59	0.38	1.41	Non Significant
प्रधान	छात्र	40	3.30	1.88			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	5.00	1.32	0.39	6.53	Significant
प्रधान	छात्र	40.	7.60	2.14			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.99 में न्यादर्श में चयनित समस्त वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान तीनों समूहों के 40-40 छात्र-छात्राओं द्वारा व्यक्तित्व के 16 P.F. Test में Factor B के प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रातिंक अनुपात को प्रदर्शित किया गया है।

वात प्रकृति के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन के आधार पर क्रांतिक अनुपात 1.57 आया है। जो यह प्रदर्शित करता है। कि छात्र छात्राओं के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है । पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों के प्राप्तांकों का क्रांतिक अनुपात 1.41 आया है । जिससे ज्ञात होता है कि इन छात्र-छात्राओं से भी सार्थक अंतर नहीं है। कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का क्रांतिक अनुपात 6.53 आया है जो सार्थक अंतर को इंगित करता है ।

तालिका में वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं एवं पित्त प्रकृति प्रधान छात्र के प्राप्तांक Low Score के अंतर्गत आये हैं। ऐसे व्यक्ति जिन्हें Factor B में Low Score मिलते हैं ऐसे व्यक्ति Less Intelligente कम बुद्धिमान (लेकिन पागल नहीं) मूर्त चिन्तन वाले, धीमी गति से सीरवने वाले, शाब्दिक व मूर्त रुप से व्यारव्या करने वाले, कम याद रखने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की सुस्ती उनके Low Intelligence को Show करती हैं। साथ ही उनके मस्तिष्क की कमजोरी

को Refelect करती हैं ।

Factor B में High Score केवल कफ प्रकृति प्रधान छात्रों ने प्राप्त किया है। High Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति अधिक बुद्धिमान (More intelligente) प्रखर बुद्धि के, अमूर्त चिंतन करने वाले, विचारों को तुरंत ग्रहण करने वाले, तेजी से सीखने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की Intelligence उनके calture संस्कृति को show करती है। इनके High Score इनकी अच्छी मानसिक कार्यक्षमता को दर्शाते हैं।

केवल कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं ने औसत अंक प्राप्त किये हैं अतः इन छात्राओं के व्यक्तित्व में उपरोक्त Low एवं High Score के वर्णित सभी गुण औसत मात्रा में प्राप्त होते हैं ।

तालिका 4.100

व्यक्तित्वशीलगुण 'EMOTIONALLY STABLE ' संवेगात्मक रूप से स्थिर और 'AFFECTED BY FELLINGS' भावनात्मक रूप से प्रभावित (FACTOR-C) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	5.30	0.74	0.20	12.96	Significant
प्रधान	छात्र	40	2.60	1.09			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	6.40	2.36	0.42	8.98	Significant
प्रधान	छात्र	40	2.60	1.26			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	3.25	1.27	0.28	1.39	Non Significant
प्रधान	छात्र	40	2.85	1.29			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.100में समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के 16 P.F. Test के Factor C में प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन व क्रातिंक अनुपात दर्शाया गया है ।

वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के समूहो के प्राप्तांकों का (C.R.) 12.96 आया है। इसका अर्थ यह हुआ कि छात्र-छात्राओं में सार्थक अंतर है । पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूह के प्राप्तांकों को C.R. 8.98 आया है अतः इन समूहों में भी सार्थक अंतर है । कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R. 1.39 आया अर्थात इनमें सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका में वात प्रकृति प्रधान छात्रों, पित्त प्रकृति के छात्रों एवं कफ प्रकृति के छात्र छात्राओं दोनों के प्राप्तांकों का मध्यमान औसत से कम अर्थात Score low आये हैं ऐसे व्यक्ति जिनको Factor C में निम्नतम अंक प्राप्त होते हैं ऐसे व्यक्ति संवेगों से शीघ्र प्रभावित होने वाले, इनका अंह (ego) विस्तार कम होता है, ये व्यक्ति जीवन की कुंठाओं को सहन नहीं कर पाते, इन्हें फोबिया (Fobia) होता है, इन्हें नींद न आने की शिकायत होती है।

High Score केवल पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं ने प्राप्त किये हैं। Factor C में High Score प्राप्त करने वाले लोग संवेगात्मक रुप से स्थिर (emotionally stable) मानसिक रुप

से परिपक्व, यथार्थ का सामना करने वाले, इनका अंह विस्तार उच्च (Higher ego Strenth) होता है। ये व्यक्ति जटिल संवेगात्मक परिस्थितियों में भी अपने आपकों अच्छे ढ़ग से समायोजित कर लेते हैं। ये व्यक्ति समूह की नैतिकता को बनाये रखने वाले होते हैं । क्लीनिकल अन्वेषकों ने कहा है कि जिनका 'C' Lever अच्छा होता है। और यदि उनमें मानसिक रुप से विक्षिप्त होने की संभावना है तो भी ऐसे व्यक्ति परिस्थितिनुसार अपने आपको प्रभावपूर्ण ढंग से Adjust कर लेते हैं।

औसत अंक प्राप्त करने वाला समूह केवल वात पित्त प्रक्रति की छात्राएँ हैं। इस समूह में उपरोक्त वर्णित सभी गुण लक्षण औसत मात्रा में प्राप्त होते हैं ।

तालिका 4.101

व्यक्तित्वशीलगुण 'ASSERITIVE ' प्रभुत्वशाली और 'HUMBLE' उदार (FACTOR-E) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	7.90	1.11	0.29	16.30	Significante
प्रधान	छात्र	40	3.15	1.47			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	3.70	1.24	0.34	0.44	Non Significante
प्रधान	छात्र	40	3.55	1.76			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	3.65	1.03	0.21	7.37	Significante
प्रधान	छात्र	40	5.20	0.84			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.101 में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के समूहों द्वारा 16 P.F. Test के चौथे Factor के प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात दर्शाया गया है।

वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R. 16.30 आया है। अतः इन समूहों में सार्थक अंतर है । पित्त प्रकृति प्रधान छात्र -छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R. 0.44 आया है। अतः इस समूह में सार्थक अंतर नहीं है। कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R. 7.37 आया है इन समूहों में सार्थक अंतर है ।

वात प्रकृति के छात्र, पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं एवं कफ प्रकृति की छात्राओं के समूहों को Factor E में Low Score प्राप्त हुए हैं। जिन व्यक्तियों को Factor E में निम्नतम अंक प्राप्त होते हैं, ऐसे व्यक्ति उदार, आज्ञाकारी, दूसरों के लिये रास्ता छोड़ने वाले, दूसरों पर निर्भर रहने वाले, नम्र हृदय के, समायोजनशील, आलसी किस्म के होते हैं । इन व्यक्तियों का जो आलसीपन है या ढीलापन है वो इनके Neurotic System का एक भाग होता हैं।

High Score प्राप्त किये हैं केवल वात प्रकृति प्रधान छात्राओं ने । Factor E में High Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति प्रभुत्वशाली या प्रभुत्व स्थापित करने वाले, अधिकार जताने वाले, क्रोधी, स्वतंत्र, उग्र, प्रतियोगी भावना रखने वाले, जिद्दी, दूसरों को दबाने वाले, (Dominating) अपने आप पर विश्वास रखने वाले, स्वतंत्र विचारों वाले एवं अपने ही सिद्धाँतों पर चलने वाले होते हैं।

औसत प्राप्तांक वाला समूह केवल कफ प्रकृति प्रधान छात्राएँ हैं। इस समूह के व्यक्तित्व में उपरोक्त सभी गुण दोष औसत मात्रा में प्राप्त होते हैं।

तालिका 4.102

व्यक्तित्वशीलगुण 'HAPPY GO LUCKY' उत्साही और 'SOBER' शालीन (FACTOR-F) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	7.25	1.42	0.28	16.54	Significante
प्रधान	छात्र	40	2.55	1.10			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	5.80	2.47	0.43	7.86	Significante
प्रधान	छात्र	40	2.40	1.17			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	2.80	1.05	0.22	1.30	Non Significante
प्रधान	छात्र	40	2.50	1.00			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.102 में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के समूहों द्वारा 16 P.F.Test के Factor F में प्राप्त किये गये अंकों का मध्यमान (Mean) प्रामाणिक विचलन (S.D.) एवं इनका क्रांतिक अनुपात (C.R.) दर्शाया गया है।

वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के मध्यमान व प्रामाणिक विचलन द्वारा क्रांतिक अनुपात 16.54 आया है जो समूहों में सार्थक अंतर बता रहा है। पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का क्रांतिक अनुपात (C.R.) 7.86 आया है। जिससे पता चलता है कि इन समूहों में भी सार्थक अंतर है। लेकिन कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का क्रांतिक अनुपात (C.R.) 1.30 आया है जो यह प्रदर्शित करता है कि कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं में सार्थक अंतर नहीं है।

वात प्रकृति के छात्रों, पित्त प्रकृति के छात्रों एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं को Factor F में Low Score प्राप्त हुए हैं। Factor F में Low Score प्राप्त करने वाले लोग (Sober) शालीन,गंभीर,संयमी,सचेत अपने विचारों व भावनाओं को दबाने वाले, अपनी बात का मूल्यांकन करने वाले ,निराशावादी,जरुरत से ज्यादा सचेत होते हैं। ऐसे व्यक्ति इस बात का प्रदर्शन (show) भी करते हैं कि ये शालीन व विश्वसनीय हैं और ये ऐसे होते भी हैं।

High Score प्राप्त किया हैं केवल वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के समूह ने। Factor F में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व में नेतृत्व की क्षमता पाई जाती है। ये

लोग जल्दी नेता चुन भी लिये जाते हैं। ऐसे व्यक्ति जल्दी ही किसी बात पर क्रियाशील हो जाते हैं ये व्यक्ति बहुत बातूनी होते हैं एवं स्वतंत्रता पूर्वक अपनी अभिव्यक्ति करते हैं।

औसत प्राप्तांक केवल पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं ने प्राप्त किये हैं अतः इन छात्राओं में उपरोक्त Low एवं High Score में व्यक्तित्व में पाये जाने वाले सभी गुणों का सम्मिश्रण परिस्थितिनुसार औसत मात्रा में प्राप्त होता है।

तालिका 4.103

व्यक्तित्वशीलगुण 'CONSCIENTIOUS' शुद्धमति और 'EXPEDIENT' योग्य (FACTOR-G) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	5.55	0.31	0.22	4.16	Significante
प्रधान	छात्र	40	4.60	1.41			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	7.10	0.91	0.25	1.96	Non Significante
प्रधान	छात्र	40	7.60	1.33			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	5.55	0.54	0.09	0.02	Non Significante
प्रधान	छात्र	40	5.45	0.30			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.103 में वात पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं द्वारा 16 P.F. Test के Factor G में प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात को दर्शाया गया है

वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का क्रातिंक अनुपात 4.16 आया जिससे सिद्ध होता है कि इस समूहों के प्राप्तंको में सार्थक अंतर है । लेकिन पित्त प्रकृति के समूह में क्रांतिक अनुपात 1.96 एवं कफ प्रकृति के समूह का क्रांतिक अनुपात 1.02 आया है जिससे ज्ञात होता है कि इन दोनों समूहों में सार्थक अंतर नहीं है।

Factor G में निम्नतम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति योग्य, हितकर कार्य करने वाले होते हैं। ये व्यक्ति अपने उददेश्य हेतु स्थिर मति नहीं होते । इन व्यक्तियों का उद्देश्य निर्धारण बिना सोचे विचारे होता है। ऐसे व्यक्ति अपने कार्य को लगातार नहीं करते बल्कि अस्थिरता से करते हैं। ये व्यक्ति अपनी जिंदगी में Casual (Simple) होते हैं परंतु ये व्यक्ति कभी-कभी बहुत ज्यादा प्रभावशाली हो जाते हैं ऐसे व्यक्ति जब नियमों से बंधे हुए नहीं होते हैं तब ये कम तनावग्रस्त होते हैं अर्थात नियमों का बंधन अनुशासन इनके तनाव का कारण होता है ।

High Score प्राप्त करने वाले समूह में पित्त प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं का समूह आते हैं। Factor G में High Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति (Conscientious) चेतन शुद्धमति ,न्यायशील, निरंतर प्रयत्नशील, शांत किस्म के, स्थिर नियमों से बंधे एवं चरित्रवान होते हैं ऐसे

व्यक्ति अपने कर्त्तव्य के प्रति उत्तरदायित्व पूर्ण भूमिका निभाते हैं। अधिक परिश्रमी लोगों को पसंद करने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपनी ड्यूटी के प्रति वचनबद्ध होते हैं। ये व्यक्ति उत्तरदायित्व पूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण कार्यों को करना पसंद करते हैं। नैतिकता (Moral) इनमें कूट-कूट कर भरी होती है । ये अपने साथ Hard working people रखना पसंद करते हैं। इनमें भी दो प्रकार के व्यक्तित्व होते हैं एक होते हैं वो जिनमें ये सभी गुण प्राप्त होते हैं। एवं एक वे, जो ऐसे लोगों से मिलते जुलते होते हैं।

वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं को औसत प्राप्तांक Factor G में मिले हैं । अतः इन समूहों में उपरोक्त वर्णित सभी गुण दोषो का सम्मिश्रण औसत मात्रा में प्राप्त होता है।

तालिका 4.104

व्यक्तित्वशीलगुण 'VENTURESOME' जोखिम उठानेवाला और 'SHY' शर्मीला (FACTOR-H) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	5.55	0.31	0.11	1.67	Non Significante
प्रधान	छात्र	40	5.35	0.69			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	7.20	1.05	0.19	8.78	Significante
प्रधान	छात्र	40	5.50	0.63			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	5.35	0.67	0.18	15.44	Significante
प्रधान	छात्र	40	8.15	0.93			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.104 में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं द्वारा 16 P.F.Test के Factor H में प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात को दर्शाया गया है ।

वात प्रकृति के छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों को मध्यमान के आधार पर C.R. 1.67 आया है। जिससे ज्ञात होता हैं कि इन समूहों में सार्थक अंतर नहीं है लेकिन पित्त प्रकृति के समूह का क्रांतिक अनुपात 8.78 आया है । जो कफ प्रकृति के समूह का क्रांतिक अनुपात 15.44 आया है। जिससे सिद्ध है कि इन दोनों समूहों में सार्थक अंतर है ।

Factor H में Low Score प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व में शर्मीलापन होता है । ये कहा जाये कि ऐसे व्यक्ति शर्मीले (Shy) होते हैं एवं डरपोक किस्म के पीछे हटने वाले, हीन भावना का शिकार, अपने आपको एवं अपनी बात को कम अभिव्यक्त करने वाले होते हैं। हर वो चीज हर कार्य जो इनके चारों ओर हो रहा है उस पर ये बिल्कुल ध्यान नहीं देते। साथ ही ऐसे व्यक्तियों का संपर्क बड़े समूहों में नही होता बल्कि इनके एक दो अभिन्न मित्र होते हैं। ये व्यक्ति ऐसा व्यवसाय नापसंद करते हैं जिसमें लोगों से संपर्क स्थापित करना हो।

High Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति जोखिम उठाने वाले (Ventursome) उत्साही, नवीन वस्तुओं को प्राप्त करने वाले, बिना किसी थकावट के लोगों से मिलने जुलने वाले, बातूनी किस्म के, सामाजिक व निडर होते हैं। ये व्यक्ति नई चीजों कार्यो के लिये तुरंत तैयार हो

जाते हैं। ये अपना Emotional Responce भरपूर देते हैं। ये व्यक्ति मजबूत किस्म के होते हैं। इसलिये इन्हें मोटी चमड़ी वालों की संज्ञा दी जाती है। लोगों को डील करते समय जो उतार चढ़ाव आते हैं। उन्हें ये बिना थकान के सुलझा लेते हैं। यद्यपि ये व्यक्ति (Detail) विस्तार जानने में असावधान रहते हैं। और बाते करने में अपना समय अधिक खराब करते हैं। ऐसे व्यक्ति Oposite Sex के प्रति Intrested रहते हैं। केवल पित्त व कफ प्रकृति प्रधान छात्रों ने High Score प्राप्त किये हैं।

वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं को औसत प्राप्तांक मिले हैं अतः इन समूहों में उपरोक्त वर्णित सभी गुण दोषो का सम्मिश्रण औसत मात्रा में प्राप्त होता है।

तालिका 4.105

व्यक्तित्वशीलगुण 'TENDER MINDED' मृदुमन वाला और 'TOUGH MINDED' दृढ़निश्चयी (FACTOR-I) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	7.15	1.40	0.29	5.80	Significante
प्रधान	छात्र	40	5.45	1.20			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	5.20	1.30	0.28	9.29	Significante
प्रधान	छात्र	40	7.85	1.25			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	2.65	1.17	0.19	14.92	Sinigicante
प्रधान	छात्र	40	5.60	0.44			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.105 में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं द्वारा 16 P.F. Test के Factor I में प्राप्तांकों का मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात को प्रदर्शित किया गया है।

वात प्रकृति के छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का क्रातिक अनुपात 5.80 , पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं का क्रांतिक अनुपात 9.29 एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूहों का क्रांतिक अनुपात 14.92 आया है। अतः इन तीनों समूहों का प्राप्त C.R. 0.1 एवं 0.5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर को इंगित करता है।

Factor I में Low Score प्राप्त करने वालों का समूह हैं केवल कफ प्रकृति प्रधान छात्राएँ, जिन्हें Factor I में निम्नतम अंक प्राप्त होते हैं। ऐसे व्यक्ति Tough - minded दृढ दिमाग वाले, आत्म निर्भर, व्यवहारिक, यर्थाथवादी, पौरुष युक्त, स्वतंत्र एवं उत्तरदायित्व निभाने वाले होते हैं। ये व्यक्ति सामाजिक कार्य कलापों के प्रति उत्साहित नहीं होते। ये कभी-कभी कठोर एवं जिद्दी किस्म के हो जाते हैं एवं ऐसे व्यक्ति अपने में ही प्रसन्न रहते हैं।

High Score अंक प्राप्त किये हैं वात प्रकृति छात्राओं के एवं पित्त प्रकृति के छात्रों के समूह ने । Factor I में High Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति (Tender minded) मृदुमन वाले ,संवेदनशील, दिव्यस्वप्न देरवने वाले, कलात्मक रुचि रखने वाले, असहिष्णु एवं पर निर्भर होते हैं ऐसे व्यक्ति (person) औरतों (Female) के प्रति अपना झुकाव रखते हैं। अपने प्रति लोगों का झुकाव पसंद करते हैं। ये अधीर होते हैं, खुद अव्यवहारिक होते हैं। बुरे लोगो को ना

पसंद करते हैं। ये लोग कठिन नौकरी पसंद नहीं करते। ये समूह निष्पादन (Group performance) को धीमा करने की कोशिश करते हैं एवं समूह की नैतिकता को भी खत्म करने की कोशिश करते हैं।

औसत प्राप्तांक मिले हैं वात प्रकृति व कफ प्रकृति के छात्रों को एवं पित्त प्रकृति की छात्राओं के समूहों को। इन समूहों के व्यक्तित्व में वे सभी गुण दोष औसत मात्रा में पाये जायेंगे जो Low एवं High Score के लिये उपरोक्त वर्णित हैं।

तालिका 4.106

व्यक्तित्वशीलगुण 'SUSPICIOUS' शंकालु और 'TRUSTING' विश्वासी (FACTOR-L) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	7.75	0.83	0.26	1.31	Non Significante
प्रधान	छात्र	40	8.10	1.47			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	7.80	1.05	0.35	0	Non Significante
प्रधान	छात्र	40	7.80	1.97			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	7.90	0.80	0.20	1.68	Non Significante
प्रधान	छात्र	40	7.55	1.04			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.106 में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं द्वारा 16 P.F.Test के Factor L के परिणामों को दर्शाया गया है।

वात प्रकृति के छात्र छात्राओं के समूह का क्रांतिक अनुपात 1.31,पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों का क्रांतिक अनुपात 0 एवं कफ प्रकृति के छात्र छात्राओं के समूहों का क्रांतिक अनुपात 1.68 आया है । इन तीनों समूहों के C.R. का मान 0.1 एवं 0.5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है । यह प्रदर्शित कर रहा है ।

Factor L में Low Score प्राप्त करने वाले समूह उपरोक्त तालिका में कोई भी नहीं हैं। लेकिन जिन व्यक्तियों को इन Factor में निम्नतम अंक प्राप्त होते हैं ऐसे व्यक्ति विश्वास करने योग्य, अपने आपको समायोजित करने वाले, ये व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनसे आसानी से मिला जा सकता है । प्रतियोगिता न करने वाले दूसरों को पसंद करने वाले व दूसरों का ध्यान रखने वाले होते हैं। ये अच्छे Teem Worker भी होते हैं।

High Score प्राप्त करने वाले तीनों समूह वात प्रकृति, पित्त प्रकृति एवं कफ प्रकृति के छात्र छात्राएँ हैं। ऐसे व्यक्ति जिनको Factor L में उच्चतम अंक प्राप्त होते हैं वे (Suspicious) शंकालु किस्म के होते हैं। ऐसे व्यक्तियों को मूर्ख बनाना कठिन होता है। ये व्यक्ति अपने आंतरिक मानसिक जीवन में रुचि रखने वाले होते है। एवं अपनी क्रियाओं को स्वयं संपादित करते हैं। लेकिन ये Poor teem worker होते हैं।

औसत प्राप्तांक वाले व्यक्तियों में उपरोक्त सभी लक्षण पाये जायेंगें।

तालिका 4.107

व्यक्तित्वशीलगुण 'IMAGINATIVE' काल्पनिक और 'PRACTICAL' व्यवहारिक (FACTOR-M) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	3.05	1.22	0.20	11.48	Significante
प्रधान	छात्र	40	5.40	0.43			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	5.30	1.08	0.28	8.88	Significante
प्रधान	छात्र	40	2.75	1.46			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	3.40	1.84	0.29	7.02	Significante
प्रधान	छात्र	40	5.50	0.44			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78

.05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.107 में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों द्वारा 16 P.F.Test के Factor M के प्राप्तांकों का मध्यमान,प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात दर्शाया गया है।

वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R. 11.48, पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूह का C.R. 8.80 एवं कफ प्रकृति के छात्र छात्राओं के समूहों का C.R. 7.02 आया है । इन तीनों समूहों में 0.1 एवं 0.5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है ।

तालिका में वात प्रकृति एवं कफ प्रकृति की छात्राओं एवं पित्त प्रकृति में छात्रों को निम्नतम अंक प्राप्त हुए हैं। Factor M में Low Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति (practical) व्यवहारिक, सतर्क, नियमित, बाहृय यथार्थ परिस्थितियों में अपने आपको समायोजित करने वाले, वस्तुओं की जानकारी के Detail में ध्यान देने वाले, खतरों पर ध्यान देने वाले एवं सही कार्य को करने वाले होते हैं। सही कार्यों को करने के लिये ये आतुर देखे जाते हैं। ये अकल्पनाशील होते हैं।

High Score किसी भी समूह ने प्राप्त नहीं किया है लेकिन Factor M में High Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति कल्पनाशील काल्पनिक (Imaginative) होते हैं। ये व्यक्ति व्यवहारिक बातों के प्रति लापरवाह व स्वयं प्रेरित होते हैं। ये अपने कार्य को जल्दी करने के इच्छुक रहते हैं। ये व्यक्ति अपने वैयक्तिक क्रियाकलापों के कारण समूह द्वारा तिरस्कृत होते हैं एवं साथ ही (Absent minded) शून्य चित्त होते हैं।

औसत प्राप्तांक वात प्रकृति की छात्राओं के समूह को प्राप्त हुए हैं। इन समूहो के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व में उपरोक्त वर्णित सभी गुण दोषों का सम्मिश्रण औसत मात्रा में प्राप्त होता है ।

तालिका 4.108

व्यक्तित्वशीलगुण 'SHREWD' चतुर' और 'FORTHRIGHT' स्वाभाविक, कलाविहीन (FACTOR-N) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	4.45	1.89	0.36	11.19	Significante
प्रधान	छात्र	40	8.55	1.34			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	7.40	1.84	0.35	3.11	Significante
प्रधान	छात्र	40	8.50	1.26			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	7.20	1.38	0.34	3.35	Significante
प्रधान	छात्र	40	8.35	1.67			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.108 में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों द्वारा 16 P.F. Test में प्राप्तांकों के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं क्रातिक अनुपात को दर्शाया गया है।

वात प्रकृति प्रधान छात्र- छात्राओं के प्राप्तांकों का क्रांतिक अनुपात (C.R.) 11.19, पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R. 3.11, कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों C.R. 3.35 आया है। इन सभी समूह के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर है।

Low Score केवल वात प्रकृति की समस्त छात्राओं ने इस Factor में प्राप्त किये हैं। Factor N में Low Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति स्वभाविक (Natural) होते हैं अर्थात ये लोग दिखावटी नहीं होते है। ये व्यक्ति कभी-कभी क्रूर व विचित्र किस्म के हो जाते हैं पर इन्हें आसानी से मनाया जा सकता हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक एवं कला में कम रुचि लेने वाले होते है।

इसी Factor N में High Score प्राप्त करने वाले समूह हैं। वात प्रकृति छात्र, पित्त प्रकृति छात्र छात्राएँ एवं कफ प्रकृति छात्र छात्राएँ। इस Factor N में High Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति बड़े (Shrewd) चालाक, चतुर, निपुण व धूर्त किस्म के होते हैं। ये लोग पॉलिश्ड कहलाते हैं। स्वभाव से सुशील व शिष्ट होते हैं। ऐसे लोग दुनिया भर की जानकारी रखने वाले होते है। ये व्यक्ति तेज दिमाग के एवं बातो का परिस्थितियों का तुलनात्मक मूल्यांकन करने वाले होते हैं। ये लोग किसी भी परिस्थिति में भावनाओं के बदले दिमाग से कार्य करते हैं। ये लोग विचार करने वाले होते हैं।

Average Score किसी भी समूह ने प्राप्त नहीं किया है ।

तालिका 4.108

व्यक्तित्वशीलगुण 'SHREWD' चतुर' और 'FORTHRIGHT' स्वाभाविक, कलाविहीन (FACTOR-N) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	4.45	1.89	0.36	11.19	Significante
प्रधान	छात्र	40	8.55	1.34			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	7.40	1.84	0.35	3.11	Significante
प्रधान	छात्र	40	8.50	1.26			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	7.20	1.38	0.34	3.35	Significante
प्रधान	छात्र	40	8.35	1.67			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78

.05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.108 में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों द्वारा 16 P.F. Test में प्राप्तांकों के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं क्रातिक अनुपात को दर्शाया गया है।

वात प्रकृति प्रधान छात्र- छात्राओं के प्राप्तांकों का क्रांतिक अनुपात (C.R.) 11.19, पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R. 3.11, कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों C.R. 3.35 आया है। इन सभी समूह के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर है।

Low Score केवल वात प्रकृति की समस्त छात्राओं ने इस Factor में प्राप्त किये हैं। Factor N में Low Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति स्वभाविक (Natural) होते हैं अर्थात ये लोग दिखावटी नहीं होते है। ये व्यक्ति कभी-कभी क्रूर व विचित्र किस्म के हो जाते हैं पर इन्हें आसानी से मनाया जा सकता हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक एवं कला में कम रुचि लेने वाले होते है।

इसी Factor N में High Score प्राप्त करने वाले समूह हैं। वात प्रकृति छात्र, पित्त प्रकृति छात्र छात्राएँ एवं कफ प्रकृति छात्र छात्राएँ। इस Factor N में High Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति बड़े (Shrewd) चालाक, चतुर, निपुण व धूर्त किस्म के होते हैं। ये लोग पॉलिश्ड कहलाते हैं। स्वभाव से सुशील व शिष्ट होते हैं। ऐसे लोग दुनिया भर की जानकारी रखने वाले होते है। ये व्यक्ति तेज दिमाग के एवं बातो का परिस्थितियों का तुलनात्मक मूल्यांकन करने वाले होते हैं। ये लोग किसी भी परिस्थिति में भावनाओं के बदले दिमाग से कार्य करते हैं। ये लोग विचार करने वाले होते हैं।

Average Score किसी भी समूह ने प्राप्त नहीं किया है ।

तालिका 4.109

व्यक्तित्वशीलगुण 'APPEREHENSIVE' बुद्धिमान, विचारवान' और 'PLACID' शांत, गंभीर (FACTOR-O) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	4.15	1.67	0.32	4.92	Significante
	छात्र	40	5.75	1.20			
पित्त प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	4.45	1.78	0.37	9.56	Significante
	छात्र	40	8.05	1.58			
कफ प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	5.55	0.52	0.10	1.39	Non Significante
	छात्र	40	5.40	0.44			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78

.05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.109 में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं द्वारा 16 P.F. Test के Factor O में प्राप्त अंकों का मध्यमान (Mean) ,प्रामाणिक विचलन (S.D.) एवं क्रांतिक अनुपात (C.R.) को प्रदर्शित किया गया है ।

वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C. R.4.92, पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R. 9.56 एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R .1.39 आया है। वात एवं पित्त प्रकृति के छात्र- छात्राओं में सार्थक अंतर है लेकिन कफ प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है।

वात प्रकृति प्रधान छात्राओं एवं पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं को Factor O में निम्नतम अंक प्राप्त हुए हैं। इस Factor में Low Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति (Placid) शांत, गंभीर, परिपक्व, अपने आप पर भरोसा करने वाले, निश्ंचित किस्म के होते हैं। इन्हे जल्दी हिलाया नही जा सकता है । इन्हें परिस्थितियों से मुकाबला करना आता है। इसलिये ये अपने आपको कठिन परिस्थितियों में लचीला व सुरक्षित बना लेते है ।

Factor O में High Score केवल पित्त प्रकृति के छात्रों ने प्राप्त किये हैं। Factor H में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति बुद्विमान परिस्थितियो से भयभीत होने वाले उदासीन रहने वाले, शंकालु, विचारवान, धुनी (अपनी धुन में रहने वाले मूडी) होते हैं। ऐसे व्यक्ति दूसरों को कष्ट देने वाले होते हैं। ये लोग दूरदर्शी अधिक चिंता करने वाले होते हैं। इस प्रकार के व्यक्तित्व

वाले व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में चिन्ता के कारण बचपना दिखाते हैं। या बचकानी हरकत करते हैं। ये लोग समूह में अपने आप को अकेला महसूस करते हैं। इसलिये समूह में सक्रिय रुप से भाग नही ले पाते।

वात प्रकृति प्रधान छात्रों ने एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं ने Average Score प्राप्त किये हो अतः इस समूहों के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व में उपरोक्त सभी गुणों का सम्मिश्रण औसत मात्रा में प्राप्त होता है ।

तालिका 4.110

व्यक्तित्वशीलगुण 'EXPERIMENTING' प्रायोगिक और 'CONCERVATIVE' रूढ़िवादी, (FACTOR-Q1) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	7.70	1.98	0.39	1.14	Non Significante
	छात्र	40	7.25	1.49			
पित्त प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	7.40	0.76	0.33	0.75	Non Significante
	छात्र	40	7.65	1.26			
कफ प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	7.40	1.54	0.28	2.31	Significante
	छात्र	40	8.05	0.89			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78

.05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.110 में वात, पित एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों के प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात को प्रदर्शित किया गया है।

वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का क्रांतिक अनुपात 1.14 पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R. 0.75 एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R. 2.31 आया है जिससे ज्ञात होता है कि वात प्रकृति व पित्त प्रकृति के समूह में सार्थक अंतर नही है। लेकिन कफ प्रकृति के समूह में 0.5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।

Factor Q1 में Low Score किसी भी समूह को प्राप्त नहीं हुए हैं। लेकिन इस कारक में न्यनूतम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति रूढ़िवादी (Concervative) तथा प्राचीन विचारों का आदर करने वाले, सिखाये गये विश्वासों पर भरोसा करने वाले होते है। इन व्यक्तियों में बौद्धिक विश्लेषण करने की क्षमता नहीं होती। ये व्यक्ति परम्पराओं मे शीघ्र परिवर्तन नहीं चाहते हैं। ये लोग नये आर्ट व क्रियाओं को स्वीकार नहीं करते हैं ये व्यक्ति धर्म व राजनीति के प्रति भी रूढ़िवादी होते हैं। विश्लेषण व चतुराई को महत्व नहीं देते हैं व पुराने ढर्रे पर चलना पसंद करते हैं।

वात पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के सभी समूहों ने इस Factor Q1 में High Score प्राप्त किये हैं। उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्तित्व प्रायोगिक (Experimenting) आलोचनात्मक (Critical) उदार, विश्लेषणवादी, शंकालु, स्वतंत्र विचार वाले

होते हैं । ये लोग मानसिक बुद्वि संबंधी बातों में रुचि लेते हैं इनकी रुचि Fundamental चीजों में नही रहती । ये लोग नई तरकीबों (Indias) एवं पुरानी तरकीबों के बारे में पूछताछ करते रहते हैं। ये लोग ज्यादा से ज्यादा जानकारी लेना चाहते हैं। Life में Experiment करते रहना चाहते हैं।

Average Score किसी भी समूह को प्राप्त नहीं हुए हैं।

तालिका 4.111

व्यक्तित्वशीलगुण 'SELF SUSFFICIENT' स्यवं निर्णय लेने में सक्षम' और 'GROUP DIPENDENT' समूह पर निर्भर (FACTOR-Q2) के अंर्तगत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	7.30	1.16	0.23	8.50	Significante
	छात्र	40	5.30	0.93			
पित्त प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	3.75	1.20	0.25	6.43	Significante
	छात्र	40	5.40	1.09			
कफ प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	5.50	0.89	0.20	13.02	Significante
	छात्र	40	8.15	0.93			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78

.05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.111 में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों द्वारा 16 P.F.Test में Factor Q2 का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात को दर्शाया गया है ।

वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं का क्रांतिक अनुपात 8.50,पित्त प्रकृति प्रधान छात्र छात्राओं के समूहों का C.R. 6.43 एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों का क्रांतिक अनुपात 13.02 आया है। इन तीनों समूहों में 0.1 एवं 0.5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।

Factor Q2 में केवल पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं को Low Score प्राप्त हुए हैं। Low Score प्राप्त करने वाले (Group Dependent) समूह पर निर्भर रहने वाले एवं समूह की सहमति चाहने वाले होते हैं। ये लोग दूसरों के साथ कार्य करना चाहते हैं एवं उनसे मिलकर निर्णय लेते हैं। ऐसे व्यक्ति किसी भी कार्य की या चीज की सामाजिक स्वीकृति लेना पसंद करते हैं। किसी भी कार्य को अकेले करना इन्हें पसंद नहीं होता।

High Score प्राप्त करने वाले समूह हैं वात प्रकृति प्रधान छात्राएँ एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के समूह ने । Q2 Factor में High Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति (Self Sufficient) सक्षम होते हैं। ये व्यक्ति अपना निर्णय स्वयं लेते हैं। लेकिन दूसरों की राय को भी बहुत महत्व देते हैं। इनके विचार स्वतंत्र सुलझे हुए होते हैं। ये अपने तरीके से चलना चाहते हैं। ये जरूरी

नहीं हैं कि ये लोग अन्य लोगों को पसंद नहीं करते लेकिन उनकी सहायता व सहमति लेना इन्हें पसंद नहीं।

औसत प्राप्तांक मिले हैं वात प्रकृति प्रधान छात्रों, पित्त प्रकृति के छात्रों एवं कफ प्रकृति की छात्राओं को। अतः इन समूहों के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व में उपरोक्त Low एवं High Score में वर्णित सभी गुण दोष औसत मात्रा में प्राप्त होते हैं ।

तालिका 4.112

व्यक्तित्वशीलगुण 'CONTROLLED' नियंत्रित' और 'UNDISCIPLINED, SELF CONFLICT' अनअनुशासित आत्म तंत्र (FACTOR-Q3) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति	छात्राएँ	40	5.50	0.44	0.19	11.73	Significante
प्रधान	छात्र	40	7.75	1.13			
पित्त प्रकृति	छात्राएँ	40	5.75	1.60	0.36	8.25	Significante
प्रधान	छात्र	40	2.75	1.65			
कफ प्रकृति	छात्राएँ	40	7.15	1.08	0.20	4.36	Significante
प्रधान	छात्र	40	8.05	0.73			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.112 में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं द्वारा 16 P.F.Test के Factor Q3 में प्राप्त परिणाम, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, एवं क्रांतिक अनुपात को दर्शाया गया है।

वात प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूह का क्रांतिक अनुपात 11.73 आया है। पित्त प्रकृति के समूह का C.R. 8.25 एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों का C.R. 4.36 आया है। जिससे पता चलता है कि इन तीनों समूहों में सार्थक अंतर है।

Low Score प्राप्त किये हैं केवल पित्त प्रकृति के छात्रों ने। Factor Q.3 में न्यूनतम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति अनअनुशासित (undisciplined) अर्थात स्वंय में अनुशासित ना रहने वाले होते हैं। ये लोग लापरवाह किस्म के एवं अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर लेने वाले होते हैं। ये लोग समाज की आवश्यकताओं पर भी ध्यान नहीं देते हैं। समायोजित होते हैं।

High Score प्राप्त किया है वात प्रकृति छात्रों एवं कफ प्रकृति छात्र-छात्राओं ने। Factor Q3 में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति उतने ही नियंत्रित (Controlled) होते हैं। ये लोग सामाजिक रूप से प्रशासित होते हैं एवं सामाजिक जानकारी पूरी-पूरी रखते हैं व उसके प्रति जागरुक भी होते हैं। ये अपने संवेगो (Emotions) एवं अपने व्यवहार पर पूरी तरह से काबू

रखते हैं।

Average Score प्राप्त किया है वात प्रकृति एवं पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के समूह ने। अतः इन समूहों को छात्राओं के व्यक्तित्व में उपरोक्त वर्णित Low एवं High Score के सभी गुण दोष औसत मात्रा में प्राप्त होते हैं ।

तालिका 4.113

व्यक्तित्वशीलगुण 'TENSE' तनावयुक्त' और 'RELAXED' संतुष्ट (FACTOR-Q4) के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मध्य प्राप्तांकों की तुलना

N=240

Factor	Groups	Frequency	Mean	S.D.	SED	C.R.	Significance
वात प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	5.50	0.44	0.23	8.50	Significante
	छात्र	40	7.75	1.11			
पित्त प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	5.45	0.54	0.19	1.79	Non Significante
	छात्र	40	5.10	1.11			
कफ प्रकृति प्रधान	छात्राएँ	40	5.70	0.87	0.22	11.55	Significante
	छात्र	40	3.10	1.42			

स्वतंत्रता के अंश df. = (40-1) + (40-1) = 78 .05 = 1.99

.01=2.64

उपरोक्त तालिका 4.113 में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र- छात्राओं के समूहों द्वारा व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) में अंतिम कारक Q4 के परिणामों मध्यमान (mean), प्रामाणिक विचलन (S.D.) एवं उनका क्रांतिक अनुपात (C.R.) प्रदर्शित किया गया है।

वात प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के mean व S.D. के आधार पर इन समूहों का क्रांतिक अनुपात 8.50 आया है। पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूहों का क्रांतिक अनुपात 1.79 एवं कफ प्रकृति के समूहों में 11.55 आया है। वात प्रकृति एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूहों मे 0.1 एवं 0.5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है । लेकिन पित्त प्रकृति के समूह में सार्थक अंतर नहीं है ।

Low Score केवल कफ प्रकृति प्रधान छात्रों ने प्राप्त किये हैं। Factor Q.4 में Low Score प्राप्त करने वाले व्यक्ति (Relexed) संतुष्ट,आरामपूर्वक रहते हैं। कुछ परिस्थितियों में अधिक संतोष के कारण आलसीपन आ जाता है । इन लोगों में तनाव कारण व प्रेरणा की कमी के कारण कार्य निष्पादन (work performance) में कमी आ जाती है।

High Score प्राप्त किये हैं केवल वात प्रकृति प्रधान छात्रों ने। उच्चतम अंक Factor Q4 में प्राप्त करने वाले व्यक्ति (Tense) तनाव युक्त एवं कुंठित होते हैं। ये लोग उत्तेजित, असहनशील होते हैं। ये लोग समूह के अनुशासन एकता व नेतृत्व को महत्व नहीं देते हैं। ये लोग अपनी कुंठा (Frustation) के कारण Show करते हैं कि देखो हम कितने Strong हैं

लेकिन उसमें मानसिक गति नही होती है। ये लोग थकान रहने पर भी निष्क्रिय नहीं रह पाते हैं।

Average Score प्राप्त किये हैं वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के समूह ने पित्त प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं ने व कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं ने। अतः इन समूहों के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व में उपरोक्त वर्णित Low एवं High Score के सभी गुण दोष औसत मात्रा में प्राप्त होते हैं ।

रेखाचित्र 32 से 37 तक में समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र - छात्राओं द्वारा व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16 P.F.) के सोलह कारकों में प्राप्तांकों के निम्न, औसत एवं उच्च स्तर को 16 P.F. Test Profile द्वारा दर्शाया गया है । Profile में बाएँ ओर प्राप्तांकों के निम्न स्तर को एवं दाएँ ओर प्राप्तांकों के उच्च स्तर को दर्शाया गया है । मध्य में प्राप्तांकों के औसत स्तर को प्रदर्शित किया गया है ।

4.2 समस्त वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व की व्याख्यात्मक विवेचना

4.2.1 वात प्रकृति (या हीन प्रकृति) प्रधान छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व

वात प्रकृति के व्यक्तियों के व्यक्तित्व में निम्न गुण दोष पाये जाते हैं।

वात प्रकृति का मनुष्य प्रायः स्फुटित,धूसर बाल व अंगो वाला, शीतलता का बैरी,मित्रता व चेष्टा में चलायमान, अस्थिर, असम्बद्ध बोलने वाला, दोष रूप स्वभाव वाला, नींद की कमी, अवसादी, विलम्ब से बोलने वाला, चलित रूप, जर्जर वाणी, फटी आवाज वाला, अत्याधिक भोजन करने वाला, गाना, हंसना, शिकार व कलह में मन लगाने वाला, मधुर स्वाद्य, सलोना, गर्म रसों का अभिलाषी, आकृति लंबी, शरीर स्थूल, दृढ़ता की कमी, सज्जनता की कमी ,अल्प संतान वाला, स्त्रियों का प्रिय नहीं, नेत्र तीक्ष्ण, धूसर गोल व रक्त की ललामी लिये, सोते वक्त वृक्ष, आकाश में घूमना आदि देखता है । मंगलता से रहित, बदले की भावना वाला, चोरी प्रकृति, ऊंची (पिण्डी) माथा वाला, कुत्ता, गीदड़, ऊँट चूहा, कौवा के स्वभाव वाला होता है।

सुश्रुत में कहा गया है कि वात प्रकृति का मनुष्य अपने में ही बड़बड़ाया करता है व सपनों में अपने को उड़ता हुआ देखता है। इनका नाड़ी संस्थान उत्तेजित और विषय को ग्रहण करने की क्षमता उत्तम किन्तु उसे याद रखने की क्षमता (स्मृति) कम रहती है। वर्षा के पूर्व से इनका स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ रहता है। इनका तापमान 97^0 से 98^0 तक हुआ करता है। मस्तिष्क, श्वसन, मूत्रबस्ति व अस्थियों में व्याधि प्रवणता रहती है।

वात को रज गुण की प्रचुरता वाला माना गया है। अतः वातज प्रकृति के व्यक्तियों में रज गुण की यदि बहुलता मिलती है तो ऐसे व्यक्ति कम निद्रांलु, तीव्र स्वभाव, जल्दी जागने वाले (श्वान निंद्रः), ये स्पष्ट वक्ता एवं तीखी वाणी वाले होते हैं । रजो गुणी व्यक्ति क्रोध करने वाला, मारने पीटने की प्रकृति रखने वाला, किसी बात पर अधिक शोक करने वाला , अधिक सुख की अभिलाषा करने वाला, दंभी, झूठा, कामी, अधैर्यवान, अभिमानी, ऐश्वर्यशाली होने का अभिमान करने वाला, अधिक आनंदित होने वाला व पृथ्वी पर भ्रमण करने वाला होता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में वात प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व में रज गुण की प्रचुरता प्राप्त होती है। लेकिन छात्राओं में सत्व गुण की प्रधानता पाई गई।

4.2.2 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या

वात प्रकृति प्रधान छात्राएँ उभयमुखी व्यक्तित्व की पाई गई अर्थात अंर्तमुखी (Introvert) एवं बर्हिमुखी (Extrovert) दोनों प्रकार के गुण पाये गये। ये गुण परिस्थितिनुसार प्रकट होते हैं। ऐसे व्यक्ति जिनमें समय विशेष पर अंर्तमुखी गुण की प्रधानता होती है। ये लोग दूसरों से अलग रहते हैं । आलोचनात्मक, शांत लोगों की अपेक्षा वस्तुओं को अधिक महत्व देने वाले, अपने वैयक्तिक मानक के साथ चलने वाले, ठंडे, जिददी किस्म के, अपने कार्य को सही ढ़ंग व कठोरता व दृढ़ता से करने वाले होते हैं। जब इनमे बर्हिमुखी गुण प्रकट होता है तो ये लोग उदार, मिलनसार, अपने संवेगों को प्रकट करने वाले, वस्तुओं की अपेक्षा लोगों के साथ काम करना अधिक पसंद करने लगते हैं। आलोचना से कम घबराते हैं व समूह में सक्रिय भाग लेने लगते हैं।

ये लोग कम बुद्दिमान,मूर्त चिंतन करने वाले,धीमी गति से सीखने वाले,शाब्दिक व मूर्त रुप से व्याख्या करने वाले, कम याद रखने वाले, ऐसे व्यक्तियों की सुस्ती उनके Low Intelligence को एवं मस्तिष्क की कमजोरी को show करती है । ये लोग संवेगों से शीघ्र प्रभावित होने वाले होते हैं। इनका अंह (Ego) विस्तार कम होता है। ये लोग जीवन की कुंठाओं को सहन नहीं कर पाते हैं । इन्हें नींद न आने की शिकायत होती है । ये लोग मानसिक परिपक्वता, यथार्थ का सामना करने वाले, जटिल संवेगात्मक परिस्थितियों में समायोजित समूह की नैतिकता को बनाये रखने वाले होते हैं ।

वात प्रकृति की छात्राओं के व्यक्तित्व में उपरोक्त गुण दोषों के अलावा नेतृत्व प्रभुत्व स्थापित करने की क्षमता, क्रोधी, स्वतंत्र प्रतियोगी भावना रखने वाले, जिददी, स्वंय पर विश्वास करने वाले, दूसरों को दबाने वाले व अपने सिद्धांतों पर चलने वाले, बातूनी क्रियाशील आदि गुण पाये जाते हैं। ये लोग योग्य, हितकर कार्य करने वाले, बिना सोचे उद्देश्य निर्धारण करने वाले, अस्थिरता से कार्य करने वाले, प्रभावशाली,नियमों से न बंधने वाले, शुद्दमति , न्यायशील, निरंतर प्रयत्नशील, शांत किस्म के, परिश्रमी, वचनबद्ध, नैतिक व Hard Working People के साथ कार्य करना पसंद करते हैं।

ऐसे व्यक्ति जो वात प्रकृति प्रधान होते हैं वे शर्मीले पीछे हटने वाले डरपोक , एक दो अभिन्न मित्र रखने वाले, जोखिम उठाने वाले, उत्साही, नवीन कार्यों के लिये तैयार रहने वाले, बातों में समय खराब करने वाले व Opposite Sex के प्रति Intrested होते हैं। ये लोग मृदु मन वाले, संवेदनशील, दिवास्वप्न देखने वाले, कलात्मक, असहिष्णु व परनिर्भर होते हैं । Female के प्रति अपना झुकाव रखते हैं। खुद अव्यवहारिक होते हैं। बुरे लोगों को पसंद करते हैं।

ये लोग कठिन नौकरी पसंद नहीं करते । ये समूह निष्पादन (Group- Porformance) को धीमा करने की कोशिश करते हैं। व नैतिकता को भी खत्म करने की कोशिश करते हैं। ये लोग शंकालु किस्म के व अपनी मानसिक जिंदगी में रुचि रखने वाले होते हैं। इन्हें मूर्ख बनाना कठिन होता है। ये Poor teem worker होते हैं । ये लोग अकल्पनाशील सतर्क व नियमित होते हैं। ये दिखावटी नहीं होते हैं। परंतु कभी-कभी क्रूर व विचित्र किस्म के हो जाते हैं। पर आसानी से इन्हें मनाया जा सकता है। ये निश्चिंत किस्म के, परिस्थितियों से मुकाबला करने वाले भी होते हैं। ये व्यक्ति विश्लेषणवादी नई व पुरानी तरकीबों के बारे में जानकारी लेते रहते हैं। व प्रायोगिक होते हैं।

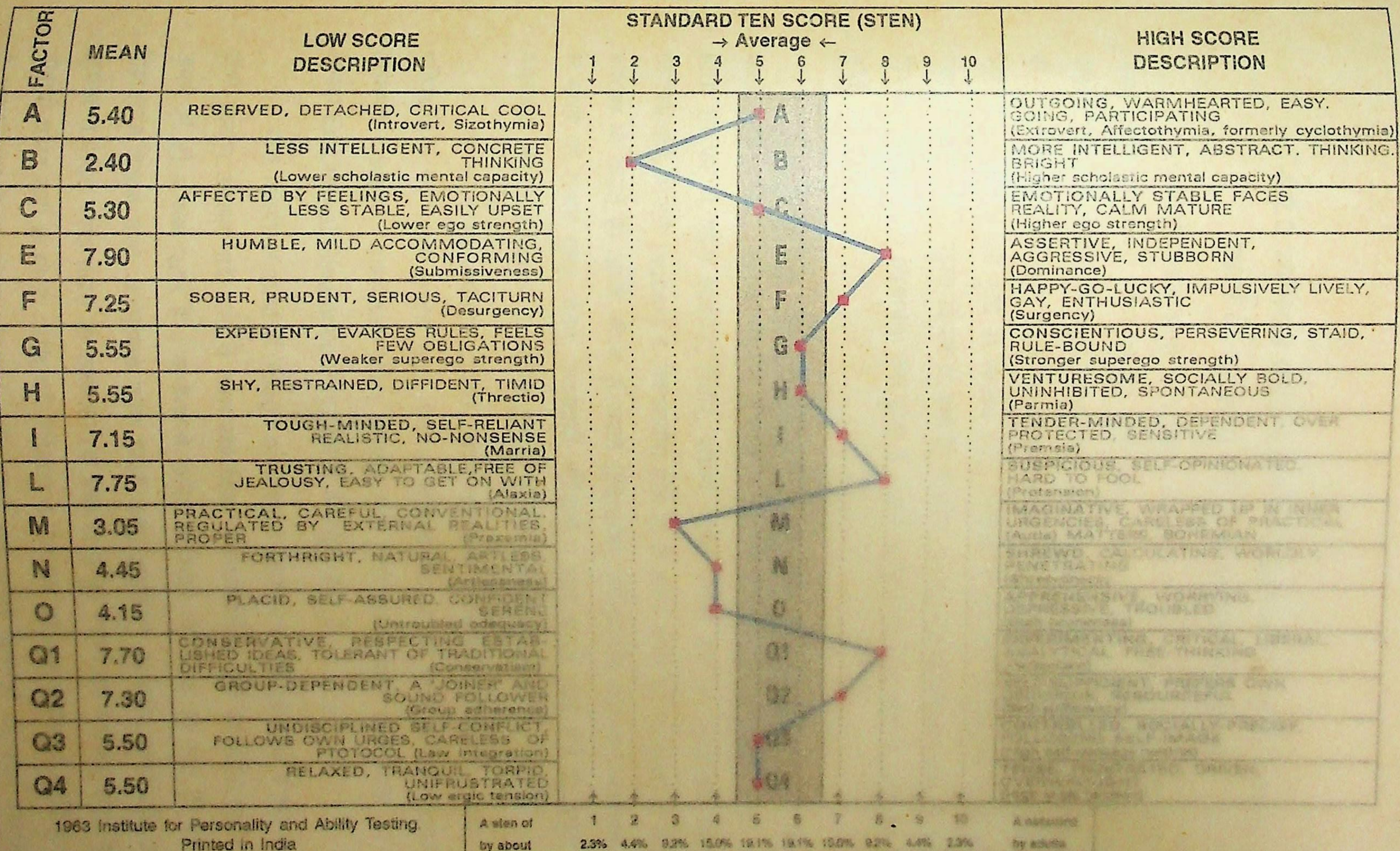
ऐसे व्यक्ति सक्षम (Self Seufficient), दूसरों की राय को महत्व देने वाले होते हैं। ये लोग केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं व स्वयं में अनुशासित नहीं रहते। सामाजिक आवश्यकताओं की तरफ भी ध्यान नहीं देते । लेकिन अपने व्यवहार पर काबू रखते हैं। ऐसे व्यक्ति Relexed कुछ आलसी-तनावयुक्त व कुंठित भी पाये जाते हैं। वात प्रकृति को छात्राएँ स्पष्ट रुप से सत्वगुणी पाई गई।

रेखाचित्र – 32

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च

N = 40

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	5.40	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)	OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert, Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	2.40	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)	MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	5.30	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)	EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	7.90	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)	ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	7.25	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)	HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	5.55	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)	CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	5.55	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctio)	VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	7.15	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Marria)	TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.75	TRUSTING, ADAPTABLE,FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)	SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED HARD TO FOOL (Protension)
M	3.05	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL, REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxernia)	IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	4.45	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS SENTIMENTAL (Artlessness)	SHREWD, CALCULATING, WORLDLY PENETRATING [illegible]
O	4.15	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled adequacy)	APPREHENSIVE, WORRYING, [illegible], TROUBLED [illegible]
Q1	7.70	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS, TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)	[illegible], CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE THINKING [illegible]
Q2	7.30	GROUP-DEPENDENT, A "JOINER" AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)	[illegible], PREFERS OWN [illegible], RESOURCEFUL [illegible]
Q3	5.50	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PTOTOCOL (Law integration)	[illegible], SOCIALLY PRECISE, [illegible] SELF IMAGE [illegible]
Q4	5.50	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNIFRUSTRATED (Low ergic tension)	TENSE, [illegible], DRIVEN, [illegible]

A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	A obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

Name : ....

Comments :

तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र

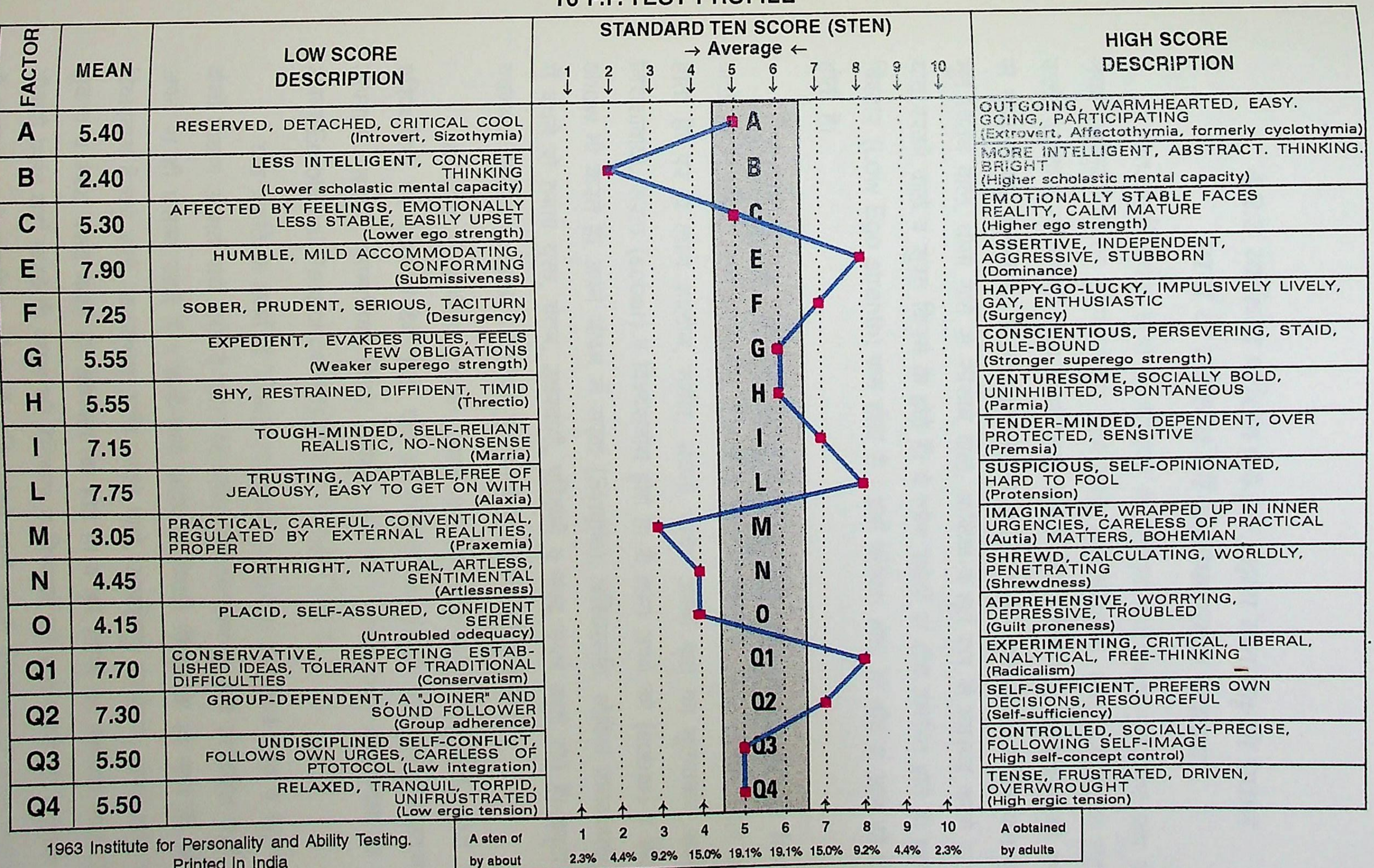


रेखाचित्र – 32

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च

N = 40

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	5.40	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)	OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert, Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	2.40	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)	MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	5.30	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)	EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	7.90	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)	ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	7.25	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)	HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	5.55	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)	CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	5.55	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctio)	VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	7.15	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Marria)	TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.75	TRUSTING, ADAPTABLE,FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)	SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED, HARD TO FOOL (Protension)
M	3.05	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL, REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxemia)	IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	4.45	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS, SENTIMENTAL (Artlessness)	SHREWD, CALCULATING, WORLDLY, PENETRATING (Shrewdness)
O	4.15	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled odequacy)	APPREHENSIVE, WORRYING, DEPRESSIVE, TROUBLED (Guilt proneness)
Q1	7.70	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS, TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)	EXPERIMENTING, CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE-THINKING (Radicalism)
Q2	7.30	GROUP-DEPENDENT, A "JOINER" AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)	SELF-SUFFICIENT, PREFERS OWN DECISIONS, RESOURCEFUL (Self-sufficiency)
Q3	5.50	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PTOTOCOL (Law integration)	CONTROLLED, SOCIALLY-PRECISE, FOLLOWING SELF-IMAGE (High self-concept control)
Q4	5.50	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNIFRUSTRATED (Low ergic tension)	TENSE, FRUSTRATED, DRIVEN, OVERWROUGHT (High ergic tension)

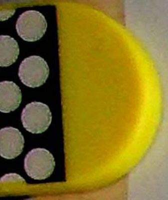
A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	A obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

1963 Institute for Personality and Ability Testing.
Printed In India

तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र

Name : ....

Comments :



4.2.3 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या

वात प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व में अंतर्मुरवी (Introvrt) गुण स्पष्ट रुप से पाया गया। अंतर्मुरवी व्यक्ति लोगों से दूर रहने वाले, आलोचनात्मक, शांत, वस्तुओं को महत्व देने वाले, वैयक्तिक मानकों के साथ चलने वाले, जिद्दी किस्म के, ठंडे, अपने कार्य को सही ढंग से करने वाले, कभी-कभी ये आलोचनात्मक व कठोर भी हो जाते हैं। ये व्यक्ति कम बुद्धिमान, मूर्त चिंतन वाले, धीमी गति से सीरवने वाले, शाब्दिक व मूर्त रुप से व्यारव्या करने वाले, कम याद रखवने वाले व सुस्त किस्म के होते हैं। ये लोग संवेगों से शीघ्र प्रभावित होते हैं। इनका अंह विस्तार (Low Ego strenth) कम होता है । इन्हें फोबिया होता है। नींद न आने की शिकायत होती है।

ये व्यक्ति उदार, आज्ञाकारी, दूसरों के लिये रास्ता छोड़ने वाले, दूसरों पर निर्भर रहने वाले, नरम हृदय, समायोजनशील, इनका आलसीपन इनके Nurotic system का एक भाग होता है। पर ये लोग शालीन, गंभीर, संयमी, सचेत अपनी बात का मूल्यांकन करने वाले, निराशावादी, सरल (sobar) व विश्वसनीय होते हैं। ये लोग अपने को (sobar) व विश्वसनीय show भी करते हैं। अपने जीवन में सरल (Simple), अस्थिरमति, लेकिन प्रभावशाली, नियमों में बंधने से तनाव युक्त, चेतन, उत्तरदायी, परिश्रमी व मदद करने वाले होते हैं। ड्यूटी के प्रति वचनबद्ध। नैतिक (moral) व उद्देश्य पूर्ण कार्यो को करना पसंद करते हैं।

ये लोग भी शर्मीले, डरपोक, अपने को कम अभिव्यक्त करने वाले, चारों ओर की परिस्थतियों पर ध्यान न देने वाले, एक दो अभिन्न मित्र रखवने वाले, जोरिवम उठाने वाले , उत्साही, बातूनी, सामाजिक, निडर, मजबूत इन्हें मोटी चमड़ी वाले कहा जाता है। ये लोग अपना Emotional Responce भरपूर देते हैं व बातूनी होते हैं।

वात प्रकृति के छात्रों में Tough minded व Tender minded (दृढ़ व मृदु मन वाले) दोनों लक्षण औसत पाये गये। ये लोग सामाजिक क्रियाकलापों के प्रति उत्साहित नहीं होते । ये अपने में ही प्रसन्न रहते हैं । कभी-कभी कठोर व जिददी किस्म के हो जाते हैं। संवेदनशील दिवास्वप्न देरवने वाले, कलात्मक रूचि रखवने वाले, असहिष्णु, परनिर्भर, अपने प्रति लोगों का झुकाव व मदद पसंद करते हैं। अव्यवहारिक होते हैं। व बुरे लोगों को नापसंद करते हैं। कठिन नौकरी पसंद नहीं करते हैं। समूह की नैतिकता व निष्पादन को कम करने की कोशिश करते हैं। ये शंकालु अपने मानसिक जीवन में रुचि रखवने वाले अपनी क्रियाओं को स्वयं संपादित करने वाले व Poor teem worker होते हैं ।

उपरोक्त गुण दोषों के अलावा ये लोग सतर्क, नियमित, सामाजिक, अकल्पनाशील समूह

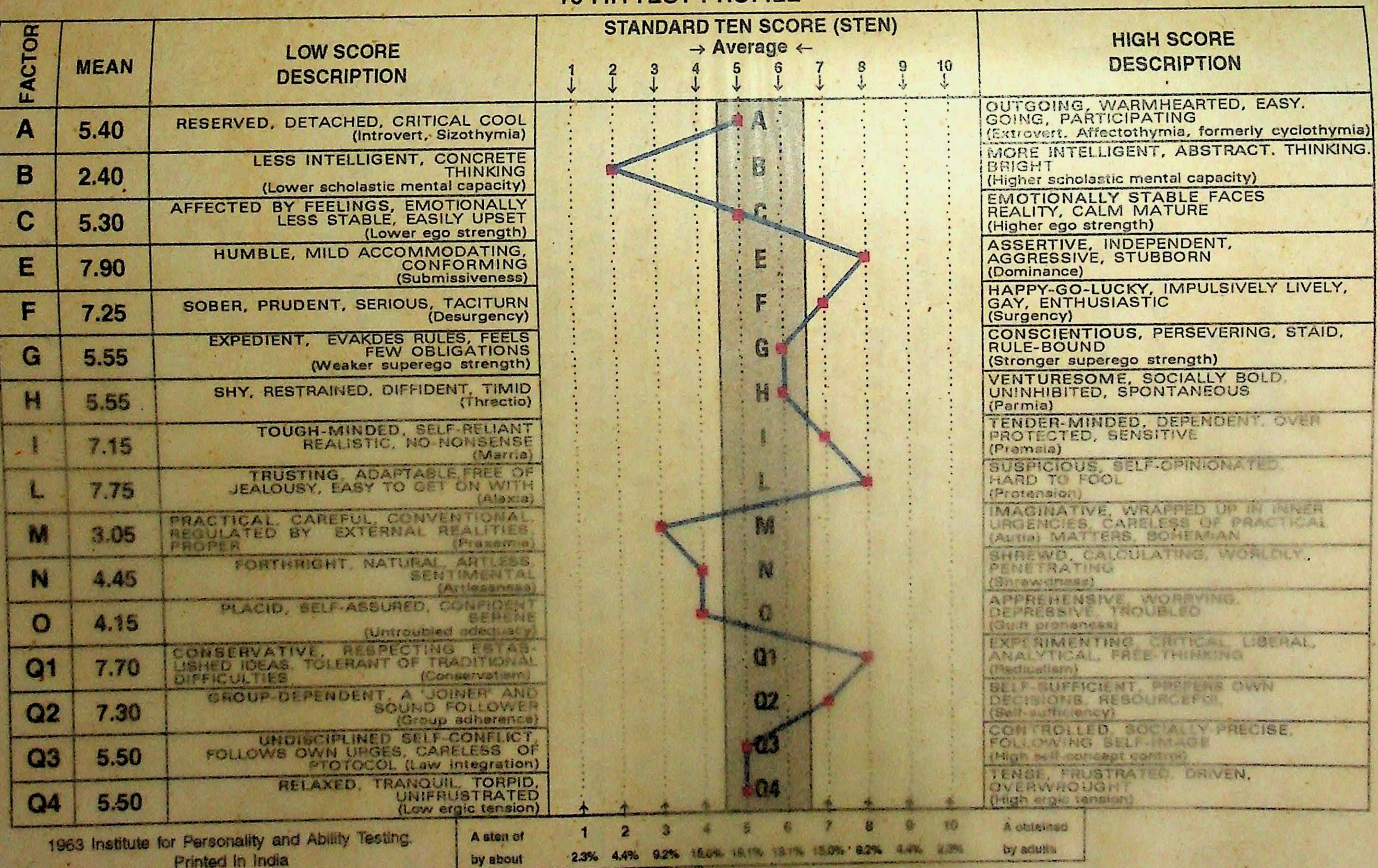
द्वारा तिरस्कृत (अपनी वैयक्तिक क्रियाओं के कारण), शून्य चित्त (Absent minded) व्यवहारिक बातों के प्रति लापरवाह, स्वयं प्रेरित, ये लोग (Shrewd) चालाक, चतुर, निपुण धूर्त व पॉलिश्ड होते हैं। स्वभाव में सुशीलता व शिष्टता होती हैं। दुनिया भर की जानकारी रखने वाले, तेज दिमाग के, तुलनात्मक मूल्यांकन करने वाले, भावनाओं के बदले दिमाग से कार्य करने वाले, विचारवान होते हैं। ऐसे व्यक्ति गंभीर, परिपक्व, अपने पर भरोसा करने वाले. निश्चिंत, परिस्थितियों से मुकाबला करने वाले, किन्ही परिस्थितियों में भयभीत होने वाले, धुनी (मूडी), चिंता के कारण बचकानी हरकत करने वाले, समूह में अकेला महसूस करने वाले, प्रायोगिक (Experimehting), आलोचनात्मक, रूढ़िवादी परम्परा में शीघ्र परिवर्तन न चाहने वाले, स्वतंत्र विचार, बौद्विक रूचि वाले, समूह की सहमति चाहने वाले, सक्षम व सुलझे हुए होते हैं ।

वात प्रकृति प्रधान छात्रों में स्पष्ट रुप से तनाव एवं कुंठा पाई गई। ऐसे उत्तेजित असहनशील व समूह के अनुशासन एकता व बल को महत्व नहीं देते। ये लोग अपने Frustation के कारण show करते हैं कि देखो हम कितने Strong हैं। लेकिन इस बात में गति नहीं होती है। ये लोग थकान होने पर भी निष्क्रिय नहीं होते हैं। वात प्रकृति के छात्र स्पष्ट रुप से रजःगुणी पाये गये।

रेखाचित्र – 32

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च N = 40

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	STANDARD TEN SCORE (STEN) → Average ← 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	5.40	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)	A	OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert. Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	2.40	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)	B	MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	5.30	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)	C	EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	7.90	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)	E	ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	7.25	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)	F	HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	5.55	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)	G	CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	5.55	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctio)	H	VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	7.15	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Harria)	I	TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.75	TRUSTING, ADAPTABLE, FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)	L	SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED, HARD TO FOOL (Protension)
M	3.05	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL, REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxernia)	M	IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	4.45	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS, SENTIMENTAL (Artlessness)	N	SHREWD, CALCULATING, WORLDLY, PENETRATING (Shrewdness)
O	4.15	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled adequacy)	O	APPREHENSIVE, WORRYING, DEPRESSIVE, TROUBLED (Guilt proneness)
Q1	7.70	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS. TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)	Q1	EXPERIMENTING, CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE-THINKING (Radicalism)
Q2	7.30	GROUP-DEPENDENT, A 'JOINER' AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)	Q2	SELF-SUFFICIENT, PREFERS OWN DECISIONS, RESOURCEFUL (Self-sufficiency)
Q3	5.50	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PROTOCOL (Law integration)	Q3	CONTROLLED, SOCIALLY PRECISE, FOLLOWING SELF-IMAGE (High self-concept control)
Q4	5.50	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNIFRUSTRATED (Low ergic tension)	Q4	TENSE, FRUSTRATED, DRIVEN, OVERWROUGHT (High ergic tension)

A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	is obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

1963 Institute for Personality and Ability Testing. Printed in India

Name : ....

Comments :

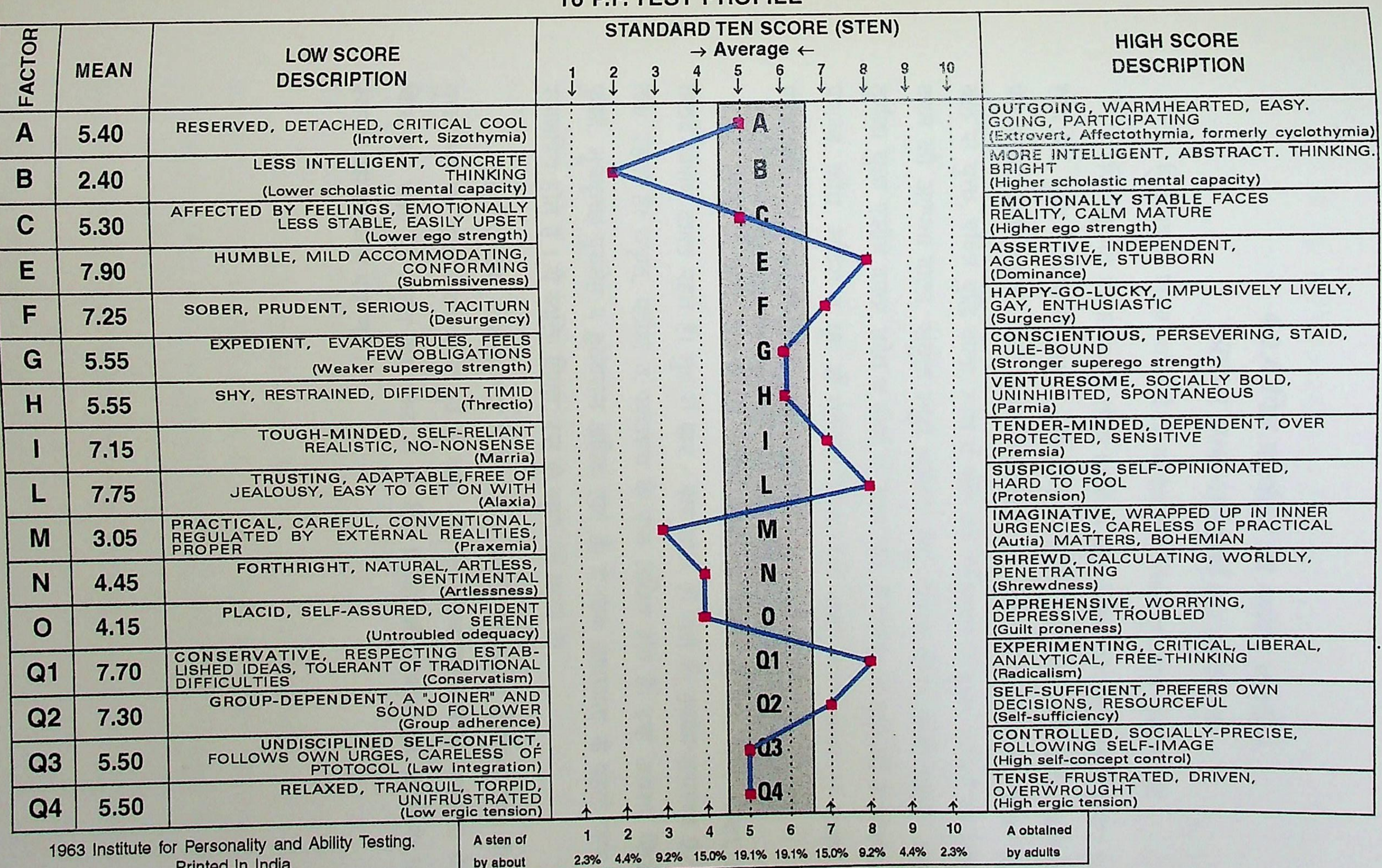
तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र

रेखाचित्र – 32

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च

N = 40

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	STANDARD TEN SCORE (STEN) → Average ← 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	5.40	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)	A	OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert, Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	2.40	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)	B	MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	5.30	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)	C	EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	7.90	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)	E	ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	7.25	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)	F	HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	5.55	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)	G	CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	5.55	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctio)	H	VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	7.15	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Marria)	I	TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.75	TRUSTING, ADAPTABLE,FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)	L	SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED, HARD TO FOOL (Protension)
M	3.05	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL, REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxemia)	M	IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	4.45	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS, SENTIMENTAL (Artlessness)	N	SHREWD, CALCULATING, WORLDLY, PENETRATING (Shrewdness)
O	4.15	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled odequacy)	O	APPREHENSIVE, WORRYING, DEPRESSIVE, TROUBLED (Guilt proneness)
Q1	7.70	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS, TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)	Q1	EXPERIMENTING, CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE-THINKING (Radicalism)
Q2	7.30	GROUP-DEPENDENT, A "JOINER" AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)	Q2	SELF-SUFFICIENT, PREFERS OWN DECISIONS, RESOURCEFUL (Self-sufficiency)
Q3	5.50	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PTOTOCOL (Law integration)	Q3	CONTROLLED, SOCIALLY-PRECISE, FOLLOWING SELF-IMAGE (High self-concept control)
Q4	5.50	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNIFRUSTRATED (Low ergic tension)	Q4	TENSE, FRUSTRATED, DRIVEN, OVERWROUGHT (High ergic tension)

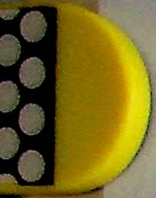
A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	A obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

1963 Institute for Personality and Ability Testing.
Printed In India

Name : ....

Comments :

तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र



4.2.4 पित्त प्रकृति (या मध्यम प्रकृति) प्रधान छात्र -छात्राओं का व्यक्तित्व

पित्त प्रकृति प्रधान व्यक्तियों के व्यक्तित्व में निम्न गुण दोष पाये जाते हैं -

पित्त प्रकृति वाला मनुष्य तीखे तृषांत व क्षुधा वाला, गौरवपूर्ण, गरम शरीर वाला, रक्त, हाथ पैर, मुख शूरवीरों के समान, कुछे पीले से बालों वाला, कम रोंए वाला, चंदन व फूलों से प्रेम करने वाला, सुन्दर चेष्टा करने वाले, शरणागत की रक्षा करने वाला, वैभव, साहस, बुद्धि बल से युक्त, पवित्र बुद्धि वाला, मांस व संधि की शिथिलता से युक्त, नारियों को अप्रिय, वीर्य व काम की अल्पता वाला, संयुक्त मधुर कसैला, कटु, शीतल भोजन करने वाला, धर्म का बैरी, दुर्गन्ध युक्त पसीने वाला, क्रोध व ईर्ष्या से युक्त, नींद में पलाश के वृक्षों को देखनेवाला, शीत से प्रसन्न, क्रोध, मदिरा व धूप से तत्काल लाल नेत्रों वाला, मध्य आयुवाला मध्यम बलकारी, पंडित्यपूर्ण क्लेश की स्थिति में भीरू होता है।

सुश्रुत में कहा गया है कि पैत्तिक प्रकृति के मनुष्य के नेत्र, नख, जिव्हा, हथेली एवं तलवे विशेष लाल रहते हैं। मुंह में बार - बार छाले हो जाते हैं। इनका तापमान 97^0 से 99^0 तक रहता है। यकृत, प्लीहा व पक्वाशय के रोग अधिक होते हैं। इन्हें अक्सर सिरदर्द, फोड़ा फुंसी, मूत्रकृच्छ पूयमेह व हृदयरोग अधिक होते हैं। ये प्रायः उषाकाल से पहले जाग जाते हैं व स्नानप्रिय होते हैं । ये व्यक्ति तिक्त रस से बहुत द्वेष करते हैं।

आयुर्वेद दर्शन में कहा गया है कि पैत्तिक प्रकृति के मनुष्य रजोगुणी होते हैं। रजगुण से युक्त मन के लक्षणों का वर्णन पूर्व में वात - प्रकृति प्रधान व्यक्तियों के व्यक्तित्व के संदर्भ में किया जा चुका है। प्रस्तुत शोध कार्य में भी पित्त प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रों के व्यक्तित्व में रजगुण की प्रधानता पाई गई ।

4.2.5 व्यक्तित्व परीक्षण (16 P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या

पित्त प्रकृति प्रधान छात्राएँ स्पष्ट रुप से बर्हिमुरवी (Extrovert) पाई गई । बर्हिमुरवी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति मिलनसार, अच्छे स्वभाव वाले, उदार, अपने संवेगों को प्रकट करने वाले, संवेगों से युक्त तथा वस्तुओं की अपेक्षा लोगों के साथ कार्य करना पसंद करते हैं। ये लोग आलोचना से कम घबराते हैं एवं समूह में सक्रिय भाग लेते हैं। पित्त प्रकृति की छात्राएँ स्पष्ट रुप से कम बुद्धिमान मूर्त चिन्तन करने वाली, धीमी गति से सीरवने वाली, शाब्दिक व मूर्त रुप से व्यारव्या करने वाली कम याद रखने वाली पाई गई । इनका अहं विस्तार कम होता है। ये लोग जीवन की कुंठाओं को सहन नहीं कर पाते हैं। इन्हें Fobia होता है व नींद की कमी होती है। ये मानसिक रुप से परिपक्व जटिल संवेगात्मक परिस्थितियों में भी अपने आप को अच्छे ढंग से समयोजित करने वाले होते है । इनमें यदि मानसिक रूप से विक्षिप्त होने की संभावना है तो भी ऐसे व्यक्ति परिस्थितिनुसार अपने आपको प्रभावपूर्ण ढंग से Adjust कर लेते हैं।

पित्त प्रकृति की छात्राओं में उदारता, आज्ञाकारिता एवं दूसरों के लिये रास्ता छोड़ना नम्र हृदयता आलसीपन आदि गुण दोष पाये गये । परंतु ये छात्राएँ शालीन, गंभीर सचेत, अपनी भावनाओं व विचारों को दबाने वाली, सरल (Sobar), विश्वसनीय व अच्छी नेतृत्व क्षमता, बातूनीपन, स्वतंत्र अभिव्यक्ति वाले व क्रियाशीलता आदि गुण भी पाये जाते हैं। ये लोग चेतन, शुद्धमति, न्यायशील, निरंतर प्रयत्नशील, शान्त किस्म के, नियमों से बंधे, चरित्रवान व उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें नैतिकता कूट-कूट कर भरी होती है। ऐसे लोग जोरिवम उठाने वाले, उत्साही, नवीन वस्तुओं को प्राप्त करने वाले, बिना रुकावट के लोगों से मिलने जुलने वाले, बातूनी किस्म के, सामाजिक व निडर होते हैं। ये लोग अपना Emotional Responce भरपूर देते हैं। लोगों को डील करते समय जो उतार चढ़ाव आते हैं। उसे ये बिना थकान के सुलझा लेते हैं। ये विस्तार (Detail) जानने में असावधान रहते हैं।

ऐसे लोग (Tough Minded) दृढ़ दिमाग के, यथार्थवादी, पौरुषयुक्त, स्वतंत्र, कभी - कभी कठोर व जिद्धी किस्म के हो जाते हैं। ये मृदुमन वाले, संवेदनशील, दिवास्वप्न देरवने वाले, असहिष्णु, परनिर्भर, अधीर, बुरे व्यक्तियों को नापसंद करने वाले व समूह की नैतिकता को रवत्म करने वाले होते हैं। परंतु ये लोग शंका करने वाले, अपनी क्रियाओं को स्वयं संपादित करने वाले, ये लोग अपने आंतरिक मानसिक जीवन में रुचि लेते हैं व अपनी क्रियाओं को स्वयं संपादित करते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में सतर्क, नियमित, रवतरों पर ध्यान देने वाले, अकल्पनाशील, स्वयं प्रेरित, अपने कार्यों द्वारा समूह द्वारा तिरस्कृत, शून्यचित्त होते हैं। परंतु ये लोग बड़े चालाक चतुर, निपुण व धूर्त किस्म के भी होते हैं। कभी - कभी स्वभाव में सुशीलता व

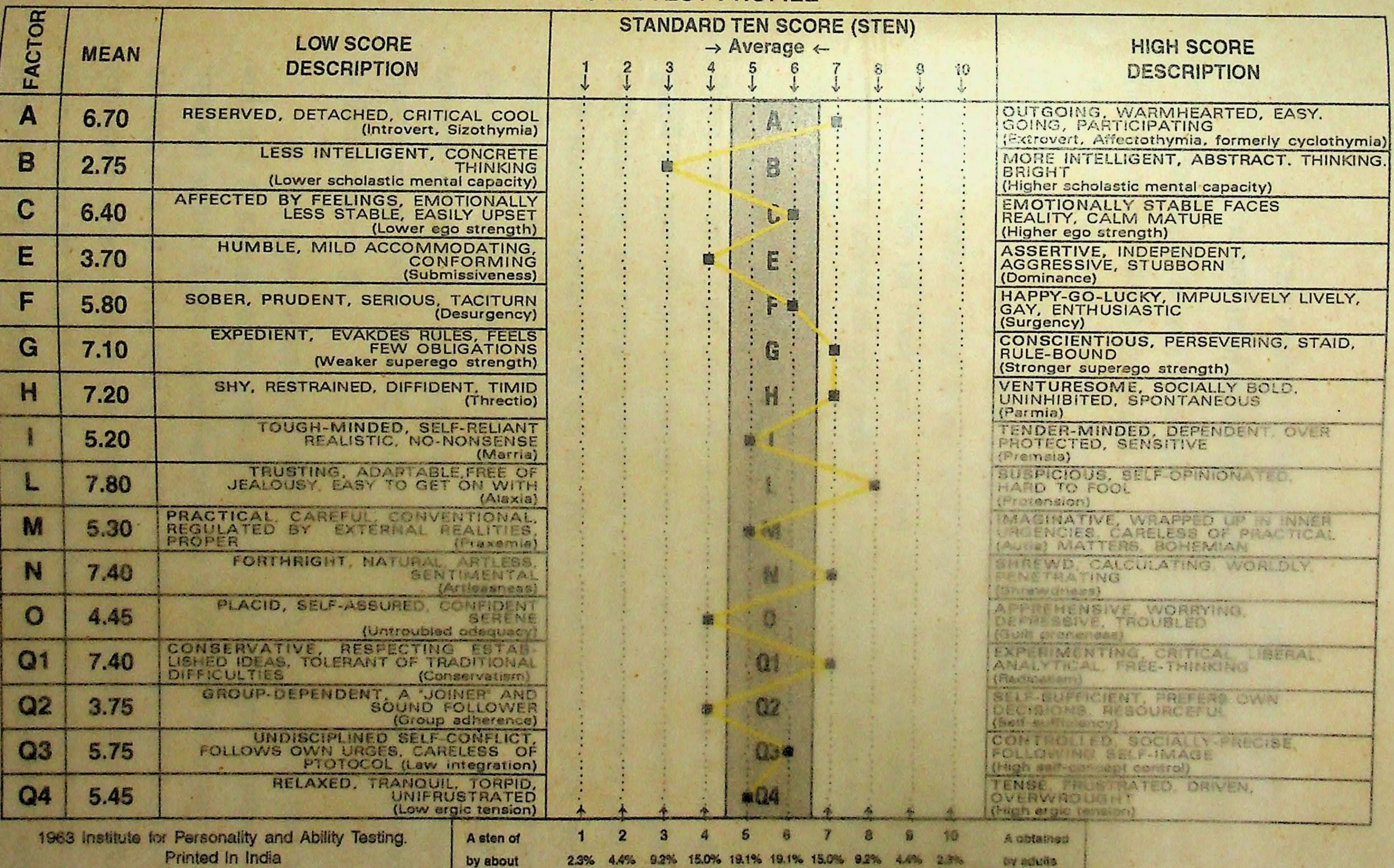
शिष्टता दिखाई देती है। ये लोग तुलनात्मक मूल्यांकन करने वाले, कठिन परिस्थितियों में भावनाओं के बदले दिमाग से कार्य करने वाले होते हैं। ये लोग शांत, गंभीर, परिपक्व अपने आप पर भरोसा करने वाले, निश्चिंत किस्म के होते हैं। इन्हें जल्दी हिलाया नहीं जा सकता। ये कठिन परिस्थितियों में अपने को लचीला व सुरक्षित बना लेते हैं। साथ ही ये लोग प्रायोगिक, आलोचनात्मक, विश्लेषणवादी, अधिक जानकारी रखने वाले होते हैं।

ऐसे व्यक्ति सामूहिक सहमति चाहते हैं स्वयं में अनुशासित ना रहने वाले लापरवाह किस्म के अपने संवेगों व व्यवहार पर पूरी तरह से नियंत्रण रखते हैं इनका दिमाग परिस्थितिनुसार Relexed व Tense होता रहता है । तनाव की स्थिति में उत्तेजित, असहनशील हो जाते हैं। एकता व नेतृत्व को महत्व नहीं देते हैं। Relexed रहने की स्थिति में आलसी हो जाते हैं व प्रेरणा की कमी के कारण इनके कार्य निष्पादन (performance) में कमी आ जाती है । पित्त प्रकृति की छात्राएँ रजोगुणी पाई गई ।

रेखाचित्र – 34

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च N = 40

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	STANDARD TEN SCORE (STEN) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 (→ Average ←)	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	6.70	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)	A	OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert, Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	2.75	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)	B	MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	6.40	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)	C	EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	3.70	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)	E	ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	5.80	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)	F	HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	7.10	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)	G	CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	7.20	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctio)	H	VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	5.20	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Marria)	I	TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.80	TRUSTING, ADAPTABLE,FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)	L	SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED, HARD TO FOOL (Protension)
M	5.30	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL, REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxemia)	M	IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	7.40	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS, SENTIMENTAL (Artlessness)	N	SHREWD, CALCULATING, WORLDLY, PENETRATING (Shrewdness)
O	4.45	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled adequacy)	O	APPREHENSIVE, WORRYING, DEPRESSIVE, TROUBLED (Guilt proneness)
Q1	7.40	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS, TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)	Q1	EXPERIMENTING, CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE-THINKING (Radicalism)
Q2	3.75	GROUP-DEPENDENT, A 'JOINER' AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)	Q2	SELF-SUFFICIENT, PREFERS OWN DECISIONS, RESOURCEFUL (Self-sufficiency)
Q3	5.75	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PTOTOCOL (Law integration)	Q3	CONTROLLED, SOCIALLY-PRECISE, FOLLOWING SELF-IMAGE (High self-concept control)
Q4	5.45	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNIFRUSTRATED (Low ergic tension)	Q4	TENSE, FRUSTRATED, DRIVEN, OVERWROUGHT (High ergic tension)

A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	A obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

1963 Institute for Personality and Ability Testing.
Printed In India

Name : ....

Comments :

तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र

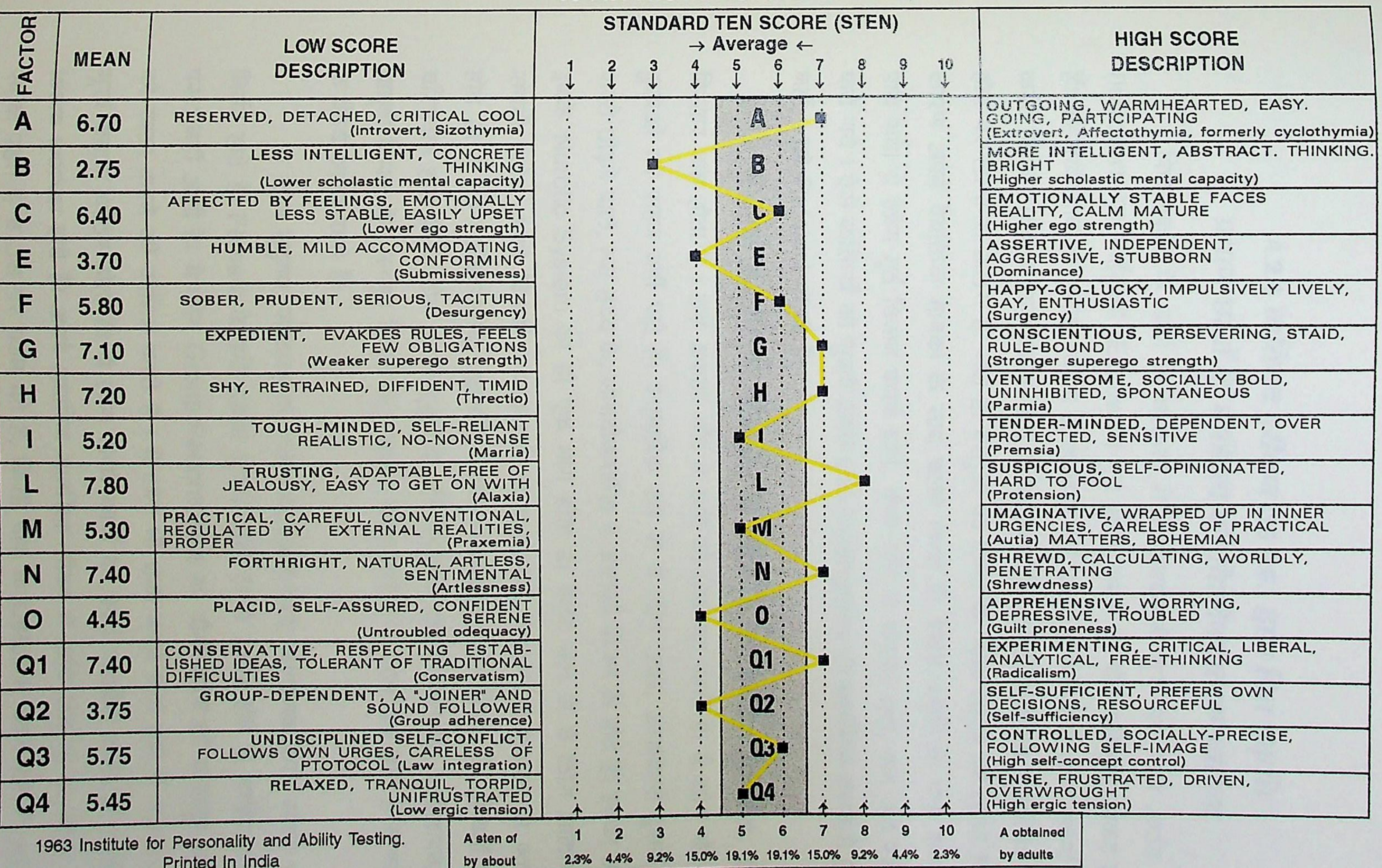


रेखाचित्र – 34

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च

N = 40

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	6.70	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)	OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert, Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	2.75	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)	MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	6.40	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)	EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	3.70	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)	ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	5.80	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)	HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	7.10	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)	CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	7.20	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctlo)	VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	5.20	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Marria)	TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.80	TRUSTING, ADAPTABLE,FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)	SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED, HARD TO FOOL (Protension)
M	5.30	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL, REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxemia)	IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	7.40	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS, SENTIMENTAL (Artlessness)	SHREWD, CALCULATING, WORLDLY, PENETRATING (Shrewdness)
O	4.45	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled odequacy)	APPREHENSIVE, WORRYING, DEPRESSIVE, TROUBLED (Guilt proneness)
Q1	7.40	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS, TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)	EXPERIMENTING, CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE-THINKING (Radicalism)
Q2	3.75	GROUP-DEPENDENT, A "JOINER" AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)	SELF-SUFFICIENT, PREFERS OWN DECISIONS, RESOURCEFUL (Self-sufficiency)
Q3	5.75	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PTOTOCOL (Law integration)	CONTROLLED, SOCIALLY-PRECISE, FOLLOWING SELF-IMAGE (High self-concept control)
Q4	5.45	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNIFRUSTRATED (Low ergic tension)	TENSE, FRUSTRATED, DRIVEN, OVERWROUGHT (High ergic tension)

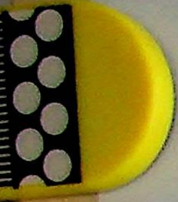
STANDARD TEN SCORE (STEN) → Average ←

A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	A obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र

Name : ....

Comments :



4.2.6 व्यक्तित्व परीक्षण (16 P.F.) द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या

पित्त प्रकृति के छात्रों के व्यक्तित्व में भी उभयमुखी गुण पाया गया अर्थात अंतर्मुखी (Introvert) एवं बर्हिमुखी (Extrovert) गुण समय समय पर परिस्थितिनुसार प्रकट होते रहते हैं। बर्हिमुखी होने पर अपना स्वभाव अच्छा दिखाते हैं, उदार हो जाते हैं व अपने संवेगों को प्रकट करते हैं। आलोचना से कम घबराते हैं व सक्रिय भाग लेने लगते हैं। लेकिन परस्थितिवश अंतर्मुखी होने पर लोगों से अलग हो जाते हैं। वस्तुओं को लोगों से ज्यादा महत्व देने लगते हैं। जिद्द के कारण अपने वैयक्तिक मानकों के साथ चलने लगते हैं। पैत्तिक प्रकृति के छात्र कम बुद्धिमान पाये गये। ये लोग मूर्त चिन्तन करने वाले, धीमी गति से सीखने वाले, कम याद रखने वाले, पाये गये । ऐसे व्यक्तियों की सुस्ती उनके Low Intelligence एवं मानसिक कमजोरी (पागलपन नहीं) को Refelect करती है।

ऐसे व्यक्ति जिनमें पित्त की प्रधानता हो संवेगों से शीघ्र प्रभावित होने वाले, इनका अहं विस्तार कम होता है । इन्हें अक्सर नींद न आने की शिकायत रहती है। ये लोग भी जीवन की कुंठाओं को सहन नहीं पाते हैं। स्वाभाविक रुप से ये लोग उदार, आज्ञाकारी दूसरों के लिये रास्ते छोड़ने वाले, नम्र हृदय के, समायोजनशील व आलसी किस्म के होते हैं। इनका आलसीपन इनके Nurotic System का ही एक भाग होता है। स्पष्ट रूप से ये लोग शालीन, गंभीर, संयमी सचेत, अपने विचारों व भावनाओं को दबानेवाले, निराशावादी जरूरत से ज्यादा सचेत होते हैं। ये लोग विश्वसनीय, शुद्धमति, न्यायी, प्रत्यनशील, शांत किस्म के, नियमों से बंधे व चरित्रवान होते हैं। ये लोग अपनी ड्यूटी के प्रति वचनबद्ध होते हैं। नैतिकता, शर्मीलापन, डरपोक, बातूनी किस्म के मजबूत किस्म के, थकावट रहित होते हैं व सामाजिक होते हैं व नवीन चीजों के लिये आतुर रहते हैं।

ये लोग मृदुमन, संवेदनशील, दिवास्वप्न देखने वाले, कलात्मक रुचि रखने वाले . पर निर्भर होते हैं। Female के प्रति इनका झुकाव होता है। ये अधीर होते हैं, कठिन नौकरी इन्हें पसंद नहीं आती है। ये लोग Group Performance को धीमा करने की व समूह की नैतिकता को खत्म करने की कोशिश करते हैं । ये लोग भी शंका करने वाले होते हैं ऐसे व्यक्तियों को मूर्ख बनाना कठिन होता है। ये लोग अपने कार्यो को स्वयं संपादित करते हैं। लेकिन Poor teem worker होते हैं। अपने आंतरिक मानसिक जीवन में रुचि लेते हैं, ये व्यक्ति खतरों से सर्तक रहते हैं व उस पर ध्यान देते हैं, किसी चीज के Detail में ध्यान देते हैं, व्यवहारिक व नियमित होते हैं साथ ही अकल्पनाशील होते हैं। ये व्यक्ति परिस्थतियों का तुलनात्मक मूल्यांकन करते हैं, विचार करने वाले होते हैं, चलाक, चतुर, निपुण व धूर्त लेकिन सुशील व शिष्ट होने के

गुण भी इनमें पाये जाते हैं। ये लोग अपनी धुन में रहने वाले दूरदर्शी. परिस्थितियों से भयभीत होने वाले समूह में अपने को अकेला महसूस करने वाले। कठिन परिस्थितियों में चिंता के कारण बचकानी हरकत करने वाले, आलोचनात्मक विश्लेषणवादी,स्वतंत्र विचारों वाले व प्रायोगिक होते हैं।

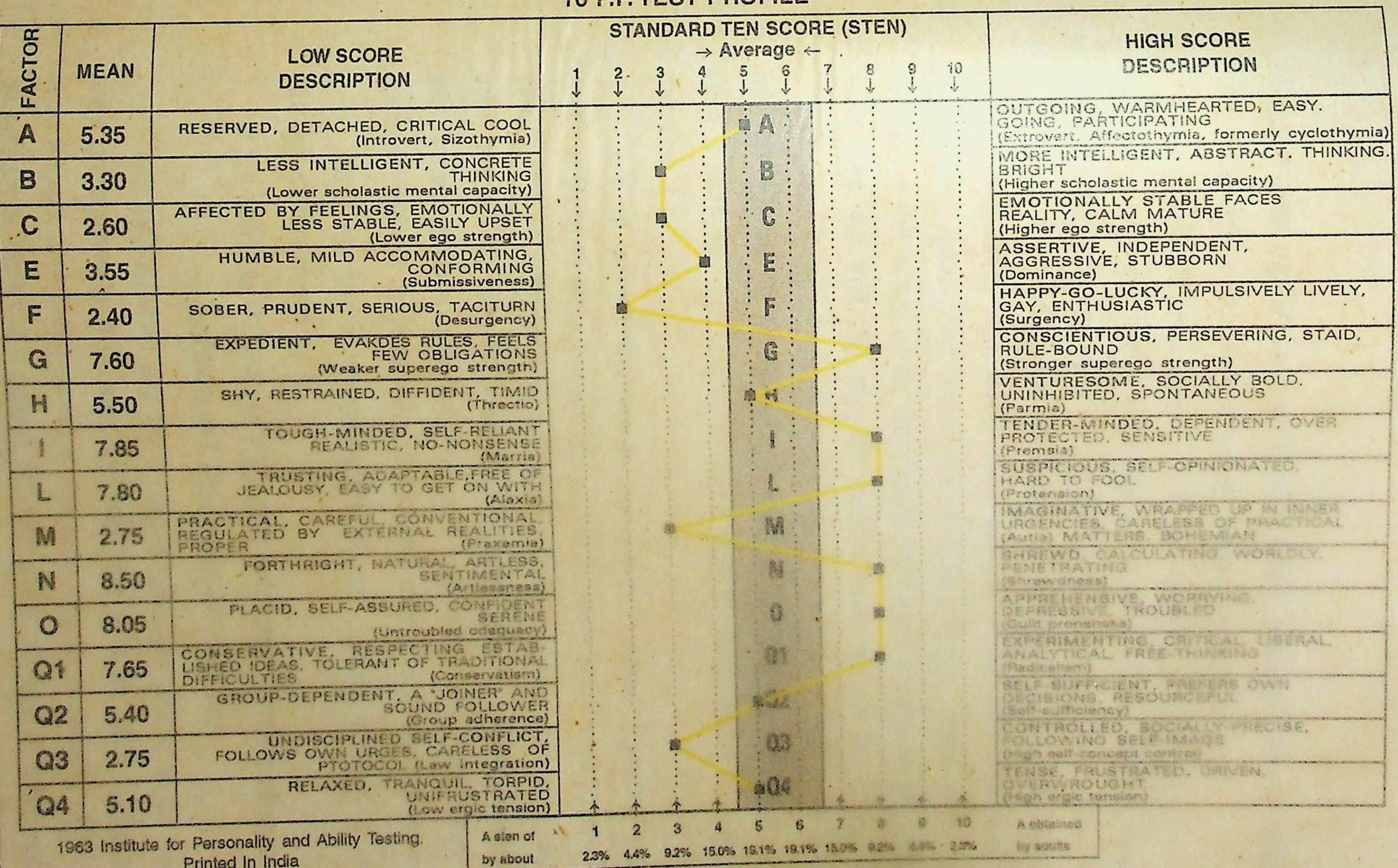
सक्षम होने के साथ-साथ अपना निर्णय स्वयं लेने वाले लोगों की मदद पसंद नहीं करते हैं। कार्य को अकेले करना इन्हें पसंद नहीं होता स्वयं में अनुशासित रहना इन्हें पसंद नहीं। लापरवाह व कुसमायोजित भी कहलाते हैं। ये लोग कभी-कभी परिस्थितिवश Relaxed व Tense भी रहते हैं। जब आराम पूर्वक रहते हैं तो आलसी हो जाते हैं। लेकिन तनाव की स्थिति में प्रेरणा की कमी के कारण कार्य निष्पादन में कमी आ जाती हैं। तनाव की स्थिति में कुंठित, उत्तेजित व असहनशील हो जाते हैं। ये लोग दिखाते हैं कि हम कितने Strong हैं लेकिन उसमें मानसिक गति नहीं होती है पित्त प्रकृति के छात्र रजगुणी पाये गये।

रेखाचित्र – 35

N = 40

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	STANDARD TEN SCORE (STEN) → Average ← 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	5.35	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)	A	OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert, Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	3.30	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)	B	MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	2.60	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)	C	EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	3.55	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)	E	ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	2.40	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)	F	HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	7.60	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)	G	CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	5.50	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctic)	H	VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	7.85	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Marris)	I	TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.80	TRUSTING, ADAPTABLE,FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)	L	SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED, HARD TO FOOL (Protension)
M	2.75	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxemia)	M	IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	8.50	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS, SENTIMENTAL (Artlessness)	N	SHREWD, CALCULATING, WORLDLY, PENETRATING (Shrewdness)
O	8.05	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled adequacy)	O	APPREHENSIVE, WORRYING, DEPRESSIVE, TROUBLED (Guilt proneness)
Q1	7.65	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS, TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)	Q1	EXPERIMENTING, CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE-THINKING (Radicalism)
Q2	5.40	GROUP-DEPENDENT, A 'JOINER' AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)	Q2	SELF SUFFICIENT, PREFERS OWN DECISIONS, RESOURCEFUL (Self-sufficiency)
Q3	2.75	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PTOTOCOL (Law integration)	Q3	CONTROLLED, SOCIALLY PRECISE, FOLLOWING SELF-IMAGE (High self-concept control)
Q4	5.10	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNFRUSTRATED (Low ergic tension)	Q4	TENSE, FRUSTRATED, DRIVEN, OVERWROUGHT (High ergic tension)

A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	A obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

Name : ....

Comments :

तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र

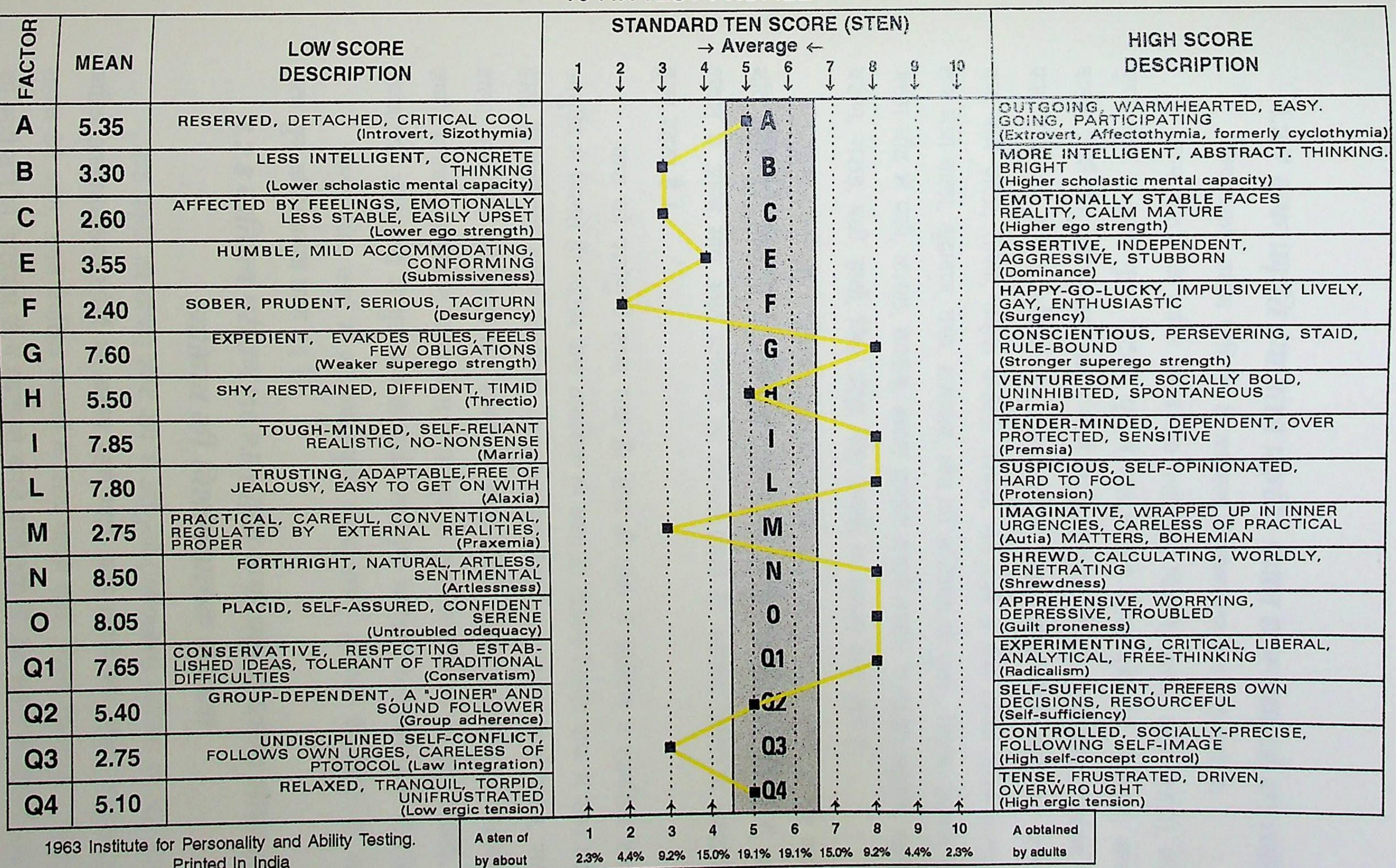


रेखाचित्र – 35

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च

N = 40

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	5.35	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)	OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert, Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	3.30	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)	MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	2.60	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)	EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	3.55	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)	ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	2.40	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)	HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	7.60	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)	CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	5.50	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctio)	VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	7.85	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Marria)	TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.80	TRUSTING, ADAPTABLE,FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)	SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED, HARD TO FOOL (Protension)
M	2.75	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL, REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxemia)	IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	8.50	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS, SENTIMENTAL (Artlessness)	SHREWD, CALCULATING, WORLDLY, PENETRATING (Shrewdness)
O	8.05	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled odequacy)	APPREHENSIVE, WORRYING, DEPRESSIVE, TROUBLED (Guilt proneness)
Q1	7.65	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS, TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)	EXPERIMENTING, CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE-THINKING (Radicalism)
Q2	5.40	GROUP-DEPENDENT, A "JOINER" AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)	SELF-SUFFICIENT, PREFERS OWN DECISIONS, RESOURCEFUL (Self-sufficiency)
Q3	2.75	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PTOTOCOL (Law integration)	CONTROLLED, SOCIALLY-PRECISE, FOLLOWING SELF-IMAGE (High self-concept control)
Q4	5.10	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNIFRUSTRATED (Low ergic tension)	TENSE, FRUSTRATED, DRIVEN, OVERWROUGHT (High ergic tension)

A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	A obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

Name : ....

Comments :

तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र

4.2.7 कफ प्रकृति (या उत्तम प्रकृति) प्रधान छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व

कफ प्रकृति प्रधान व्यक्तियों के व्यक्तित्व में निम्न गुण दोष पाये जाते हैं।

कफ प्रकृति के व्यक्ति सौम्य रूप वाले, गूढ़, चिकनी, शिलष्ट संधी (हड्डी), मांस युक्त, क्षुधा, तृषा व दुःख युक्त, क्लेशी, धूप में तप्त न होने वाला, बुद्विमान, सतोगुणी, सत्य बोलने वाला, लंबी बाहू, बड़ा माथा, धने व नीले से केशों वाला, कोमल अंगों वाला, धर्मात्मा पराक्रमी, रस, रति, पुत्र, नौकर आदि से पूर्ण, बैरी, हाथी के समान गमन करने वाला, नम्र बाल्यकाल में कम रोने वाला, तीखा, कड़वा कसैला चरपरा, गर्म रसों व कम भोजन करने वाला, विशाल, तेज नेत्रो वाला, श्रृद्वावान, दाता, क्षमावान, नींद की अधिकता से युक्त , विद्वान, सज्जन, लज्जावान भक्त। नींद में पक्षी, कमल, तालाब, बादल इत्यादि देखने वाला। ये व्यक्ति ब्राम्हण, महादेव, इन्द्र, वरुण, गरुड़, पक्षी, हाथी, सिंह, घोड़ा, बैल इत्यादि के स्वभाव वाले होते हैं।

कफ प्रकृति के व्यक्तियों का तापमान प्रायः 96^0 से 97^0तक रहता है। इन व्यक्तियों की नींद में लार टपकती है व खर्राटे लेने वाले होते हैं। इन्हें प्रतिश्याय (संधियों में दर्द) कास, श्वास व अग्नि मांध आदि व्याधियों की प्रवणता रहती है। स्वास्थ्य शिशिर व बसंत में बिगड़ा हुआ रहता है ।

कफ को सतोगुणी माना गया है। साथ ही कफ में सात्विक व तामसिक दोनों लक्षण आयुर्वेद मे मिलते हैं। मलिन कफ तामसिक हो जाता है। लेकिन निर्मल कफ में सत्व की प्रधानता होती है। सतोगुणी व्यक्ति आस्तिक, भक्ष्याभक्ष्य का विचार कर भोजन करने वाला, सत्य बोलने वाला, सुनी बात को धारणं कर रखने की शक्ति वाला, बुद्विमान, क्षमावान , करुणा से भरा, ज्ञानी, प्रयत्नशील निर्मल, भोग विलास से दूर व रक्त, संतोषी, सरल, मृदु, विवेकी, उत्साही, लज्जावान आदि गुणों से युक्त मन के लक्षण सतोगुणी व्यक्तियों के व्यक्तित्व में पाये जाते हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य में भी कफ प्रकृति प्रधान छात्र - छात्राओं के समूहों के व्यक्तित्व में सत्व गुण की प्रधानता प्राप्त हुई है।

4.2.8 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या

कफ प्रकृति की छात्राएँ स्पष्ट रुप से अंर्तमुखी (Introvert) व्यक्तित्व की पाई गई। अंर्तमुखी व्यक्ति आलोचनात्मक,लोगों से अलग रहने वाले, शांत लोगों की अपेक्षा वस्तुओं को अधिक महत्व देने वाले, अपने वैयत्तिक मानकों के साथ चलने वाले, जिद्दी किस्म के , ठंडे, अपने कार्य को सही ढ़ंग से, कठोरता से व दृढ़ता से करने वाले होते हैं। इन लोगों में बौद्धिक क्षमता न कम होती हैं न ही बहुत बुद्विमान होते हैं। रुचिपूर्ण कार्यो को तीव्र गति से सीख लेते हैं। आलस करने पर कम बुद्विमान दिखाई देते हैं। ये लोग मूर्त एवं अमूर्त चिंतन करने वाले अच्छी मानसिक कार्य क्षमता वाले होते हैं। ये लोग संवेगों से शीघ्र प्रभावित होते हैं इनका अहं विस्तार कम होता

है। इन्हें फोबिया होता है व नींद न आने की बीमारी सी होती है। ये लोग जीवन की कुंठाओं को सहन नहीं कर पाते हैं।

ये लोग उदार आज्ञाकारी दूसरों के लिये रास्ता छोड़ने वाले नम्र हृदय समायोजनशील व आलसी किस्म के होते हैं। इनका जो ढीलापन है वो इनके Neorotic system का एक भाग होता है। ऐसे व्यक्ति जिनमें कफ की प्रधानता हो उनमें शालीनता, संयम व गंभीरता के गुण स्पष्ट रुप से पाये जाते हैं। ये लोग जरुरत से ज्यादा सचेत व निराशावादी व अपनी बात का मूल्यांकन करने वाले होते हैं। ये व्यक्ति Life में बड़े Casual होते हैं। कभी-कभी बहुत ज्यादा प्रभावशाली हो जाते हैं। परंतु अपने उद्देश्यों के प्रति स्थिरमति नहीं होते हैं। अपने हर कार्य को लगातार नहीं करते बल्कि अस्थिरता से करते हैं। अपनी डयूटी के प्रति वचनबद्ध होते हैं। नैतिकता इनमें भी कूट-कूट कर भरी होती हैं।

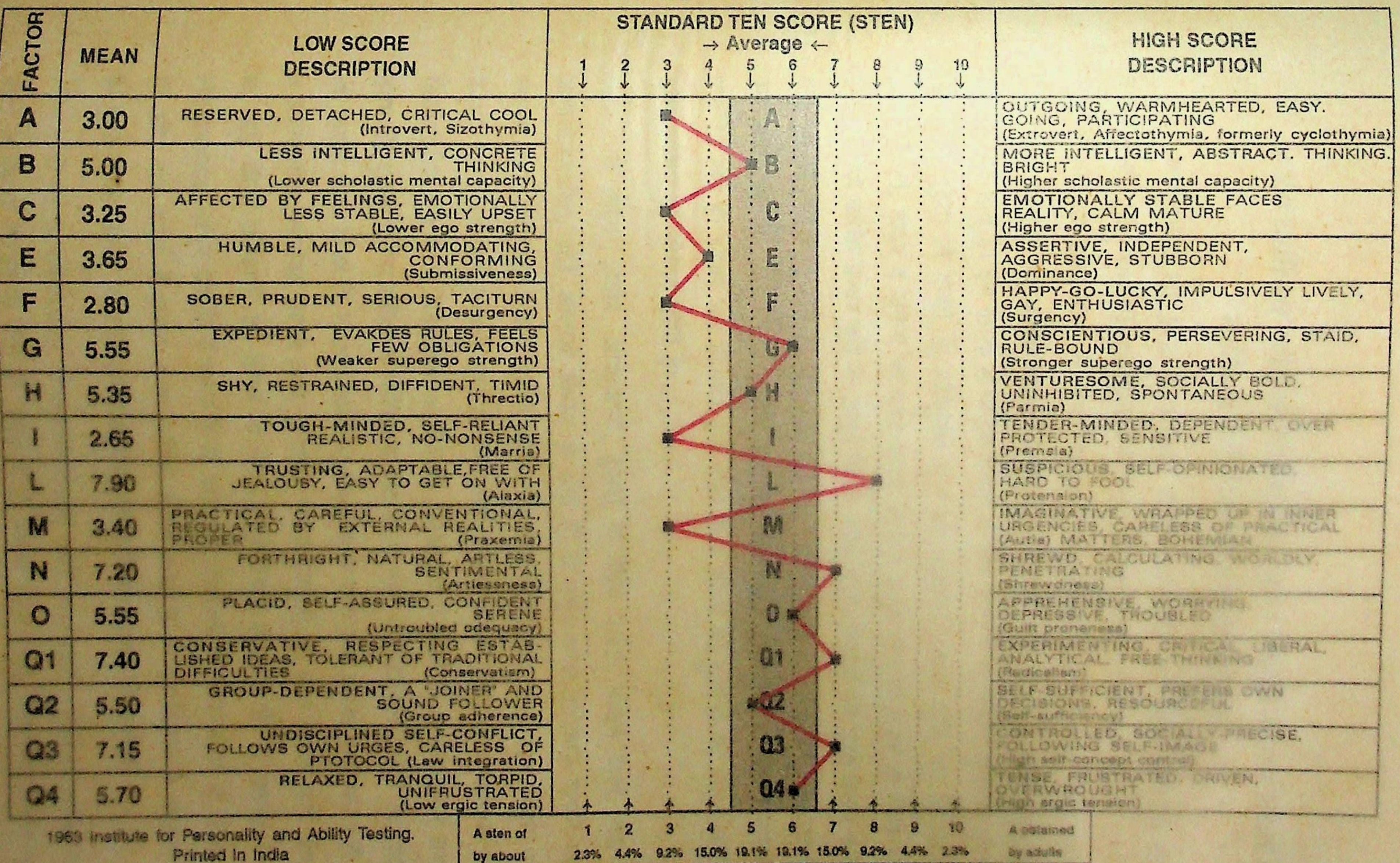
ऐसी व्यक्ति कुछ शर्मीले व डरपोक किस्म के भी देरवे जाते हैं। हर वो चीज जो इसके चारों ओर हो रही हैं, उस पर ये ध्यान नहीं देते हैं। इनके एक दो अभिन्न मित्र होते हैं। उत्साही एवं नवीन वस्तुओं को प्राप्त करने वाले होते हैं। ये अपना Emotional Responce पूरा-पूरा देते हैं। ये मजबूत किस्म के होते हैं। इसीलिये इन्हें भी मोटी चमड़ी वाला कहा जाता है। ये बातूनी होते हैं। ये छात्राएँ Tough minded दृढ़ दिमाग की आत्मनिर्भर, यर्थाथवादी एवं उत्तरदायित्व निभाने वाली पाई गईं। पर ये सामाजिक क्रिया कलापों के प्रति उत्साहित नहीं पाई गई। कभी-कभी ये लोग बहुत कठोर व जिद्दी किस्म के हो जाते हैं।

ये लोग अपने में ही प्रसन्न रहते हैं। इन लोगों को मूरर्व बनाना कठिन होता है। ये शंकालु किस्म की होते हैं। अपने कार्यो को स्वयं करते हैं। व Poor team worker होते हैं। व्यवहारिक बातों के प्रति ये लोग लापरवाह होते हैं। अपने वैयक्तिक क्रियाकलापों के कारण समूह से तिरस्कृत होते एवं शून्य चित्त होते हैं। जटिल परिस्थितियों में भावनाओं के बदले दिमाग से काम करते हैं। व पॉलिश्ड निपुण चालाक कहलाते हैं। दुनिया भर की जानकारी रखते हैं। परिस्थितियों से भयभीत होने वाले, धुनी, अपने को अकेला महसूस करने वाले, विचारवान, उदासीन रहने वाले होते हैं। ये लोग दूरदर्शी होते हैं। मानसिक बुद्वि संबंधी बातों में रुचि लेते हैं। नई व पुरानी तरकीबों के बारे में सोचते रहते हैं। Life में Experiment करना चाहते हैं। ये स्वयं सक्षम लेकिन दूसरों के साथ कार्य करना चाहते हैं। हर चीज की सामाजिक स्वीकृति लेना चाहते हैं। विचार स्वतंत्र होते हैं। इन्हें किसी की मदद पसंद नहीं होती । सामाजिक रुप से प्रशासित होते हैं। संवेगों व व्यवहार पर पूरी तरह से नियंत्रण रखते हैं। Relaxed एवं Tense दोनों प्रकार इनमें पाये गये हैं। तनाव में अनुशासन, एकता, व नेतृत्व को महत्व नही देते हैं। आराम की स्थिति में आलसीपन के कारण कार्य संपादन धीमा कर देते हैं। थकान रहने पर भी निष्क्रिय नहीं रहते। कफ प्रकृति की छात्राएँ सत्वगुणी पाई गई ।

रेखाचित्र – 36

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च N = 40

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	3.00	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)	OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert, Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	5.00	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)	MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	3.25	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)	EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	3.65	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)	ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	2.80	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)	HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	5.55	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)	CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	5.35	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctio)	VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	2.65	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Marria)	TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.90	TRUSTING, ADAPTABLE,FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)	SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED, HARD TO FOOL (Protension)
M	3.40	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL, REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxemia)	IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	7.20	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS, SENTIMENTAL (Artlessness)	SHREWD, CALCULATING, WORLDLY, PENETRATING (Shrewdness)
O	5.55	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled adequacy)	APPREHENSIVE, WORRYING, DEPRESSIVE, TROUBLED (Guilt proneness)
Q1	7.40	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS, TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)	EXPERIMENTING, CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE THINKING (Radicalism)
Q2	5.50	GROUP-DEPENDENT, A 'JOINER' AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)	SELF SUFFICIENT, PREFERS OWN DECISIONS, RESOURCEFUL (Self-sufficiency)
Q3	7.15	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PTOTOCOL (Law integration)	CONTROLLED, SOCIALLY PRECISE, FOLLOWING SELF-IMAGE (High self-concept control)
Q4	5.70	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNIFRUSTRATED (Low ergic tension)	TENSE, FRUSTRATED, DRIVEN, OVERWROUGHT (High ergic tension)

A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	is obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

1963 Institute for Personality and Ability Testing. Printed In India

Name : ....

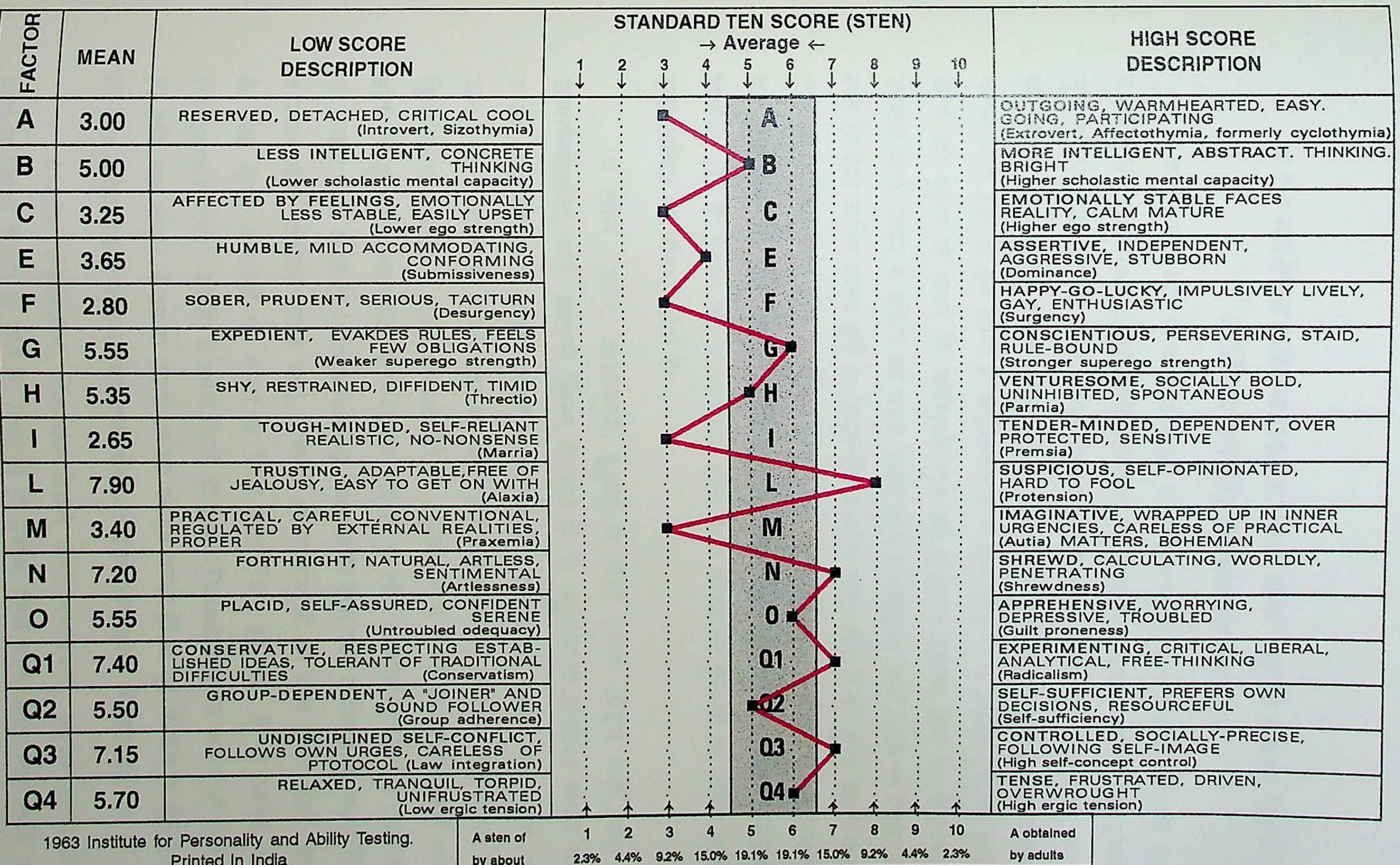
Comments :

तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र

रेखाचित्र – 36

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च N = 40

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	STANDARD TEN SCORE (STEN) → Average ← 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	3.00	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)	A	OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert, Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	5.00	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)	B	MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	3.25	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)	C	EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	3.65	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)	E	ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	2.80	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)	F	HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	5.55	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)	G	CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	5.35	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctio)	H	VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	2.65	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Marria)	I	TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.90	TRUSTING, ADAPTABLE,FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)	L	SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED, HARD TO FOOL (Protension)
M	3.40	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL, REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxemia)	M	IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	7.20	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS, SENTIMENTAL (Artlessness)	N	SHREWD, CALCULATING, WORLDLY, PENETRATING (Shrewdness)
O	5.55	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled odequacy)	O	APPREHENSIVE, WORRYING, DEPRESSIVE, TROUBLED (Guilt proneness)
Q1	7.40	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS, TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)	Q1	EXPERIMENTING, CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE-THINKING (Radicalism)
Q2	5.50	GROUP-DEPENDENT, A "JOINER" AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)	Q2	SELF-SUFFICIENT, PREFERS OWN DECISIONS, RESOURCEFUL (Self-sufficiency)
Q3	7.15	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PTOTOCOL (Law integration)	Q3	CONTROLLED, SOCIALLY-PRECISE, FOLLOWING SELF-IMAGE (High self-concept control)
Q4	5.70	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNIFRUSTRATED (Low ergic tension)	Q4	TENSE, FRUSTRATED, DRIVEN, OVERWROUGHT (High ergic tension)

A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	A obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

Name : ....

Comments :

तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र

4.2.9 व्यक्तित्व परीक्षण (16.P.F.) द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के व्यक्तित्व की विश्लेषणात्मक व्याख्या

कफ प्रकृति की छात्रा के व्यक्तित्व में भी उभयमुखी गुण अर्थात अंर्तमुखी (Introvert) व बहिर्मुखी (Extrovert) गुण समय-समय पर परिस्थितिवश उत्पन्न होते हैं। जब इनमें अंर्तमुखी गुण की प्रधानता होती है तो ये लोग आलोचनात्मक, लोगों से अलग रहने वाले, शांत व लोगों की अपेक्षा वस्तुओं को अधिक महत्व देते हैं। ये ठंडें किस्म के व अपने वैयक्तिक मानकों के साथ चलने वाले होते हैं। इन लोगों में बौद्विक क्षमता न कम होती है न अधिक बुद्विमान होते हैं। अपने कार्य को दृढ़ता से करते हैं। बर्हिमुखी गुण की प्रधानता उत्पन्न होने पर मिलनसार, अच्छे स्वभाव वाले, उदार व संवेगो को प्रकट करने वाले व समूह में कार्य करने के लिये सक्रिय भाग लेते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रखर बुद्वि के अमूर्त चितंन करने वाले, विचारों को तुरंत ग्रहण करने वाले व तेजी से सीखने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की (Intelligence) बौद्विक क्षमता उनकी संस्कृति को show करती है । इनकी मानसिक कार्यक्षमता अच्छी होती है । ये लोग संवेगों से शीघ्र प्रभावित होते हैं। इनका अंह विस्तार कम होता है। व जीवन की कुठांओ को सहन नहीं कर पाते। इन्हें अनिद्रां की बीमारी होती है।

ये लोग उदार, आज्ञाकारी, दूसरों के लिये रास्ता छोड़ने वाले, नम्र हृदय के, समायोजनशील, थोड़े आलसी किस्म के होते हैं। ये प्रभुत्वशाली,अधिकार जताने वाले, क्रोधी, स्वतंत्र, उग्र प्रतियोगी भावना रखने वाले, जिद्दी व दूसरों को दबाने वाले, खुद पर विश्वास रखने वाले, शालीन, संयमी, जरुरत से ज्यादा सचेत, अपनी बात का मूल्यांकन करने वाले, विश्वसनीय व Life में बड़े Casual होते हैं। अनुशासन में बंधने के कारण इनमें तनाव उत्पन्न होता है। शुद्वमति, न्यायशील व चरित्रवान होते हैं। ये लोग उत्तरदायित्व पूर्ण व उद्देश्यपूर्ण कार्यो को करना पसंद करते हैं। Hard Working People के साथ कार्य करना पसंद करते हैं। न्यायशील व प्रयत्नशील, जोखिम उठाने वाले, उत्साही, नवीन वस्तुओं को प्राप्त करने वाले, बातूनी किस्म के, नई चीजों व कार्यो को करने के लिये तुरंत तैयार हो जाते हैं। ये अपना Emotional Responce भरपूर देते हैं। ये लोग किसी चीज का (Detail) विस्तार जानने में असावधान रहते हैं। औंर बात करने में अपना समय अधिक खराब करते हैं। ये दृढ़ दिमाग व मृदुमान वाले होते हैं। कुछ व्यवहारिकता व अव्यवहारिकता दोनों का सम्मिश्रण इनमें मिलता हैं।

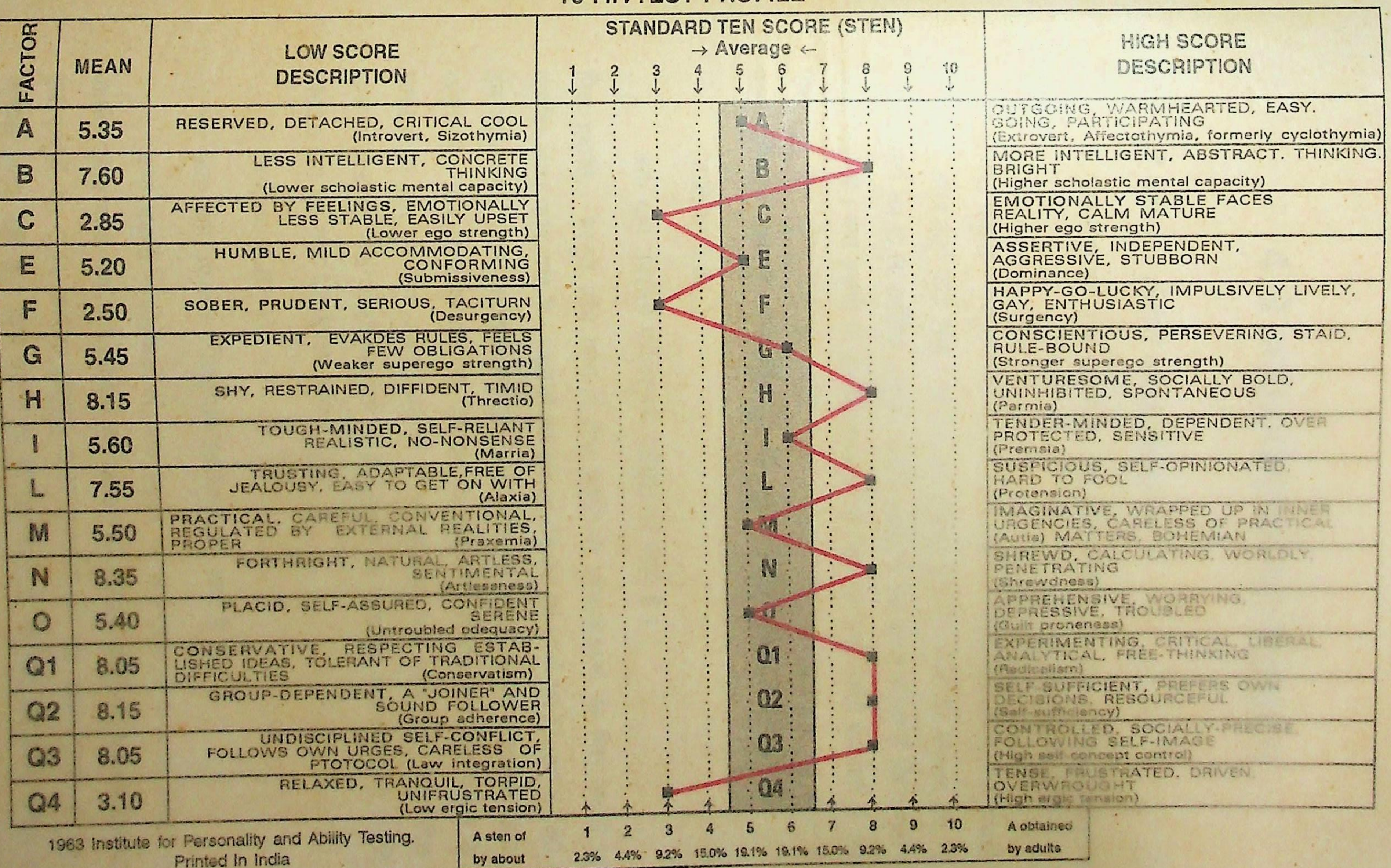
ये लोग संवेदनशील, दिवास्वप्न देखने वाले, यर्थाथवादी, स्वतंत्र उत्तरदायित्व निभाने वाले व जिद्दी किस्म के होते हैं। अपने में ही प्रसन्न रहने वाले, कलात्मक रुचि रखने वाले. अपनी तरफ लोगों का झुकाव पसंद करने वाले, असहिष्णु, परनिर्भर, बुरे लोगों को नापसंद करने वाले और समूह की नैतिकता को खत्म करने वाले, शंकालु व अपने आंतरिक मानसिक जीवन में रुचि रखने वाले पर Poor Teem Worker होते हैं। स्वयं पर ध्यान देने वाले, सही

कार्यों को करने के लिये आतुर, अकल्पनाशील, व्यवहारिक बातों के प्रति लापरवाह, होते हैं। कार्यो को जल्दी करने के इच्छुक होते हैं। ये शून्य चित्त, चालाक, चतुर, निपुण, धूर्त किस्म के, पॉलिश्ड व दुनिया भर की जानकारी रखने वाले होते हैं। भावनाओं के बदले दिमाग से कार्य करने वाले, जटिल परिस्थतियों से मुकाबला व उनसे बचाव करने वाले होते हैं। कठिन परिस्थितियों में चिंता के कारण बचकानी हरकत करते हैं। ये विश्लेषणवादी नई व पुरानी तरकीबों की जानकारी लेने वाले, Life में Experimenting व स्वतंत्र, सुलझे विचारों वाले, अपने तरीकों से चलने वाले, सक्षम, अपना निर्णय स्वयं लेने वाले, नियंत्रित, भावनाओं व व्यवहार पर पूरी तरह काबू रखने वाले, सामाजिक रुप से प्रशासित, संतुष्ट (Relaxed) होते हैं। अधिक संतोष के कारण इनमें आलसीपन आ जाता है। व प्रेरणा की कमी के कारण कार्य निष्पादन (Work Performance) में कमी आ जाती है। कफ प्रकृति प्रधान छात्र भी सतोगुणी पाये गये।

रेखाचित्र – 37

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च N = 40

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	STANDARD TEN SCORE (STEN) → Average ← 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	5.35	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)	A	OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert, Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	7.60	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)	B	MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	2.85	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)	C	EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	5.20	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)	E	ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	2.50	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)	F	HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	5.45	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)	G	CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	8.15	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctio)	H	VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	5.60	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Marria)	I	TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.55	TRUSTING, ADAPTABLE,FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)	L	SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED, HARD TO FOOL (Protension)
M	5.50	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL, REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxemia)	M	IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	8.35	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS, SENTIMENTAL (Artlessness)	N	SHREWD, CALCULATING, WORLDLY, PENETRATING (Shrewdness)
O	5.40	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled odequacy)	O	APPREHENSIVE, WORRYING, DEPRESSIVE, TROUBLED (Guilt proneness)
Q1	8.05	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS, TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)	Q1	EXPERIMENTING, CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE-THINKING (Radicalism)
Q2	8.15	GROUP-DEPENDENT, A "JOINER" AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)	Q2	SELF SUFFICIENT, PREFERS OWN DECISIONS, RESOURCEFUL (Self-sufficiency)
Q3	8.05	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PTOTOCOL (Law integration)	Q3	CONTROLLED, SOCIALLY-PRECISE FOLLOWING SELF-IMAGE (High self concept control)
Q4	3.10	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNIFRUSTRATED (Low ergic tension)	Q4	TENSE, FRUSTRATED, DRIVEN, OVERWROUGHT (High ergic tension)

A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	A obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

1963 Institute for Personality and Ability Testing.
Printed In India

Name : ....

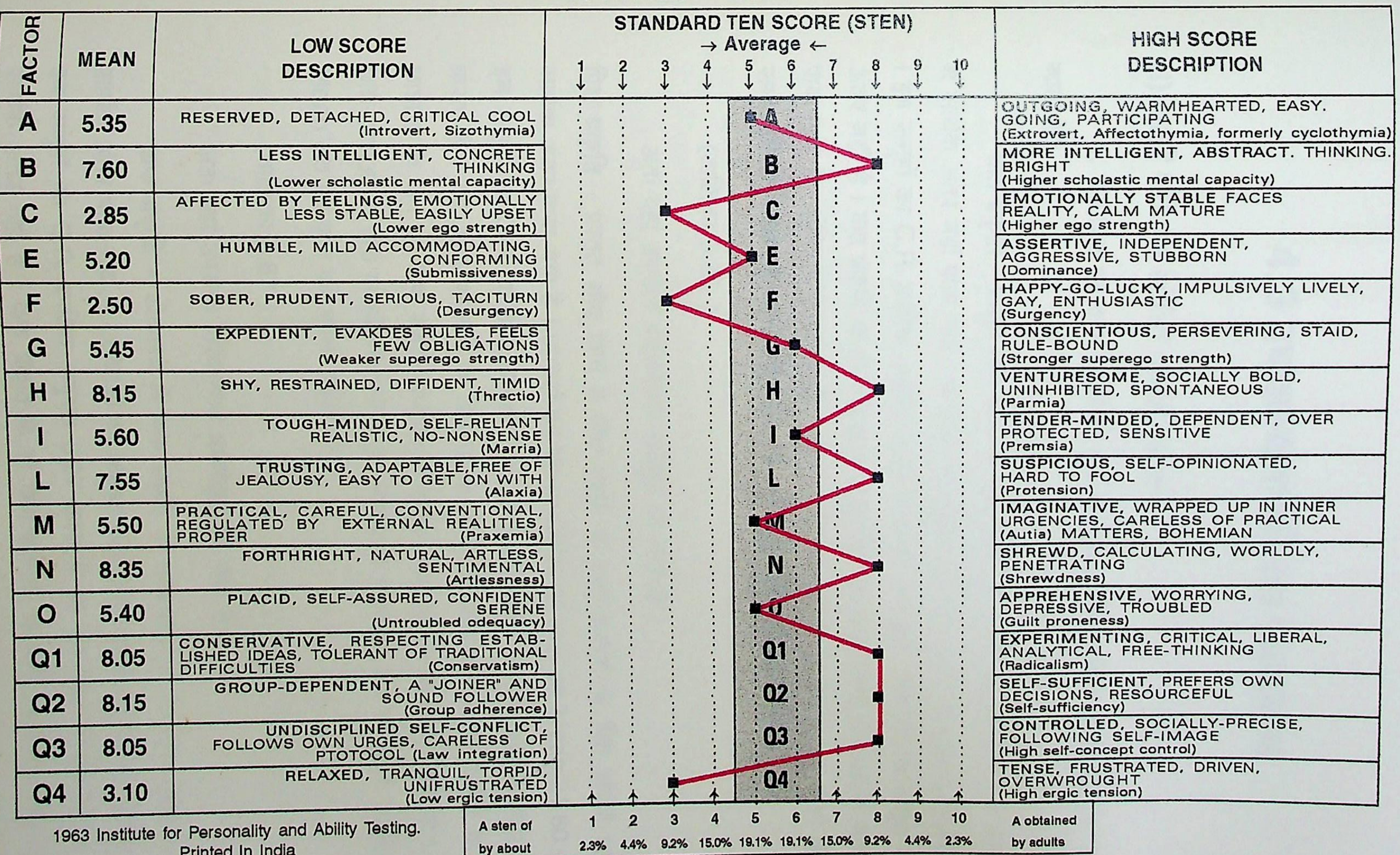
Comments :

तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र

रेखाचित्र – 37

व्यक्ति के सोलह कारक मापनी में कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के प्राप्तांक निम्न, औसत एवं उच्च N = 40

16 P.F. TEST PROFILE



FACTOR	MEAN	LOW SCORE DESCRIPTION	STANDARD TEN SCORE (STEN) → Average ← 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10	HIGH SCORE DESCRIPTION
A	5.35	RESERVED, DETACHED, CRITICAL COOL (Introvert, Sizothymia)		OUTGOING, WARMHEARTED, EASY. GOING, PARTICIPATING (Extrovert, Affectothymia, formerly cyclothymia)
B	7.60	LESS INTELLIGENT, CONCRETE THINKING (Lower scholastic mental capacity)		MORE INTELLIGENT, ABSTRACT. THINKING. BRIGHT (Higher scholastic mental capacity)
C	2.85	AFFECTED BY FEELINGS, EMOTIONALLY LESS STABLE, EASILY UPSET (Lower ego strength)		EMOTIONALLY STABLE FACES REALITY, CALM MATURE (Higher ego strength)
E	5.20	HUMBLE, MILD ACCOMMODATING, CONFORMING (Submissiveness)		ASSERTIVE, INDEPENDENT, AGGRESSIVE, STUBBORN (Dominance)
F	2.50	SOBER, PRUDENT, SERIOUS, TACITURN (Desurgency)		HAPPY-GO-LUCKY, IMPULSIVELY LIVELY, GAY, ENTHUSIASTIC (Surgency)
G	5.45	EXPEDIENT, EVAKDES RULES, FEELS FEW OBLIGATIONS (Weaker superego strength)		CONSCIENTIOUS, PERSEVERING, STAID, RULE-BOUND (Stronger superego strength)
H	8.15	SHY, RESTRAINED, DIFFIDENT, TIMID (Threctio)		VENTURESOME, SOCIALLY BOLD, UNINHIBITED, SPONTANEOUS (Parmia)
I	5.60	TOUGH-MINDED, SELF-RELIANT REALISTIC, NO-NONSENSE (Marria)		TENDER-MINDED, DEPENDENT, OVER PROTECTED, SENSITIVE (Premsia)
L	7.55	TRUSTING, ADAPTABLE,FREE OF JEALOUSY, EASY TO GET ON WITH (Alaxia)		SUSPICIOUS, SELF-OPINIONATED, HARD TO FOOL (Protension)
M	5.50	PRACTICAL, CAREFUL, CONVENTIONAL, REGULATED BY EXTERNAL REALITIES, PROPER (Praxemia)		IMAGINATIVE, WRAPPED UP IN INNER URGENCIES, CARELESS OF PRACTICAL (Autia) MATTERS, BOHEMIAN
N	8.35	FORTHRIGHT, NATURAL, ARTLESS, SENTIMENTAL (Artlessness)		SHREWD, CALCULATING, WORLDLY, PENETRATING (Shrewdness)
O	5.40	PLACID, SELF-ASSURED, CONFIDENT SERENE (Untroubled odequacy)		APPREHENSIVE, WORRYING, DEPRESSIVE, TROUBLED (Guilt proneness)
Q1	8.05	CONSERVATIVE, RESPECTING ESTABLISHED IDEAS, TOLERANT OF TRADITIONAL DIFFICULTIES (Conservatism)		EXPERIMENTING, CRITICAL, LIBERAL, ANALYTICAL, FREE-THINKING (Radicalism)
Q2	8.15	GROUP-DEPENDENT, A "JOINER" AND SOUND FOLLOWER (Group adherence)		SELF-SUFFICIENT, PREFERS OWN DECISIONS, RESOURCEFUL (Self-sufficiency)
Q3	8.05	UNDISCIPLINED SELF-CONFLICT, FOLLOWS OWN URGES, CARELESS OF PTOTOCOL (Law integration)		CONTROLLED, SOCIALLY-PRECISE, FOLLOWING SELF-IMAGE (High self-concept control)
Q4	3.10	RELAXED, TRANQUIL, TORPID, UNIFRUSTRATED (Low ergic tension)		TENSE, FRUSTRATED, DRIVEN, OVERWROUGHT (High ergic tension)

A sten of	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	A obtained
by about	2.3%	4.4%	9.2%	15.0%	19.1%	19.1%	15.0%	9.2%	4.4%	2.3%	by adults

1963 Institute for Personality and Ability Testing.
Printed In India

Name : ....

Comments :

तालिका 4.98 से 4.113 तक, से संबंधित रेखाचित्र

4.3 उपकल्पनाओं का सत्यापन

(I) *नाड़ी परीक्षण संबंधी परिकल्पनाएं*

1. वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के क्षेत्र में लैगिंक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है ।

वात प्रकृति - प्रस्तुत शोध कार्य में वात प्रकृति के छात्र-छात्राओं में वात संबंधी प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया । छात्राओं का Mean 26.75, छात्रों का Mean 26.10 आया है । इन समूहों का C.R. क्रांतिक अनुपात 0.63 आया जो यह प्रकट करता है कि समूहों में सार्थक अंतर नहीं है । वात प्रकृति के ही छात्र-छात्राओं के पित्त एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया है । चूंकि यहाँ वात प्रकृति के छात्र-छात्राओं के वात संबंधी प्राप्तांकों में ही भिन्नता या समानता ज्ञात करना है वात का Mean पित्त एवं कफ की अपेक्षा अधिक है।

(तालिका 3.86)

अतः यहां उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

पित्त प्रकृति - प्रस्तुत शोध कार्य में पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया है । छात्राओं का Mean 26.20 एवं छात्रों का Mean 21.80 आया है । इन समूहों का C.R. क्रांतिक अनुपात 7.06 आया जो समूहों के मध्य सार्थक अंतर को प्रकट करता है । यह अंतर प्राप्तांकों के विचलन के कारण हो सकता है । पित्त प्रकृति के ही छात्र-छात्राओं के वात एवं कफ संबंधी प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया । यहां पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं के पित्त संबंधी प्राप्तांकों में ही भिन्नता या समानता ज्ञात करना है क्योंकि पित्त का Mean वात एवं कफ की अपेक्षा अधिक है ।

(तालिका 3.87)

अतः यहां उपरोक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

कफ प्रकृति - शोधकार्य में कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया है । छात्राओं का Mean 27.00 एवं छात्रों का Mean 26.80 आया है। इन समूहों का C.R. क्रांतिक अनुपात 0.27 आया है जो यह प्रकट करता है कि समूहों में सार्थक अंतर नहीं है । कफ प्रकृति के ही छात्र-छात्राओं के वात एवं पित्त संबंधी प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया है । यहां कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के कफ संबंधी प्राप्तांकों में भिन्नता या समानता को ज्ञात करना था कफ संबंधी प्राप्तांकों का Mean सर्वाधिक है ।

(तालिका 3.88)

अतः यहां उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

2. वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के क्षेत्र में सत्व,रज एवं तम(त्रिगुण मन के लक्षण) में लैंगिक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है ।

वात प्रकृति - इस शोध कार्य में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के रजगुण संबंधी प्राप्तांकों का Mean 9.72 एवं छात्रों का 8.07 है इन समूहों का C.R. 3.36 है । तम गुण संबंधी प्राप्तांकों में छात्राओं का Mean 4.32 एवं छात्रों का Mean 4.85 है। इन समूहों का C.R. 1.01 है । छात्राओं के सत्व गुण संबंधी प्राप्तांकों का Mean 10.10 एवं छात्रों का Mean 7.72 है इनका C.R. 4.49 है ।

(तालिका 3.89)

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वात प्रकृति के छात्र छात्राओं के रज गुण में सार्थक अंतर पाया गया है इसलिये यहां परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है एवं तम गुण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया । अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है एवं सत्वगुण में सार्थक अंतर पाया गया इसलिये यहां परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है । वात प्रकृति की छात्राओं का Mean सर्वाधिक 10.10 सत्व गुण को प्राप्त हुआ है एवं छात्रों का Mean सर्वाधिक 8.07 रज गुण को प्राप्त हुआ है। अतः यह कहा जा सकता है कि वात प्रकृति की छात्राओं में सत्व गुण की प्रधानता पाई गई एवं वात प्रकृति के छात्रों में रज गुण की प्रधानता पायी गयी । ग्रंथों में वात को रज गुण की प्रचुरता वाला कहा गया है ।

पित्त प्रकृति - इस शोध कार्य में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के रज गुण संबंधी प्राप्तांकों का Mean 8.07 एवं छात्रों का Mean 9.35 है इन समूहों का C.R. 1.89 है । तम गुण संबंधी प्राप्तांकों में छात्राओं का Mean 6.05 छात्रों का Mean 5.82 । इन समूहों का C.R. 1.32 है । सत्व गुण संबंधी प्राप्तांकों में छात्राओं का Mean 7.10 छात्रों का Mean 7.62 है इनका C.R. 0.73 है ।

(तालिका 3.90)

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं के रज,तम एवं सत्व इन तीनों गुणों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। पित्त प्रकृति की छात्राओं का Mean 8.07 रजगुण को प्राप्त हुआ है, अपेक्षाकृत तम एवं सत्व गुण के । अतः यह कहा जा सकता है कि पित्त प्रकृति की छात्राओं में रज गुण की प्रधानता पाई गई एवं पित्त प्रकृति के छात्रों में भी रज गुण की प्रधानता

पाई गई, अपेक्षाकृत तम एवं सत्व गुण के । प्राप्त परिणाम संपूर्ण प्राप्तांकों की सांख्यिकीय गणना के आधार पर है । जबकि प्राप्तांकों की तालिका के विश्लेषण के आधार पर कुछ परिणाम अपवाद स्वरुप भी प्राप्त हुये हैं ।

आयुर्वेद दर्शन में कहा गया है कि पैत्रिक प्रकृति के मनुष्य पूर्णतः रजोगुणी होते है **कफ प्रकृति** - शोध कार्य में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के रज गुण संबंधी प्राप्तांकों का Mean 6.89 एवं छात्रों का Mean 7.40 है। इन समूहों का C.R. 1.17 है । तम गुण संबंधी प्राप्तांकों में छात्राओं का Mean 3.80 एवं छात्रों का Mean 3.87 व C.R. 0.18 है । सत्व गुण संबंधी प्राप्तांकों में छात्राओं का Mean 11.60 छात्रों का Mean 9.87 व C.R.3.15 है

(तालिका 3.91)

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कफ प्रकृति के छात्र एवं छात्राओं के रज एवं तम गुण में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है एवं सत्व गुण संबंधी प्राप्तांकों में सार्थक अंतर है अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है । कफ प्रकृति की छात्राओं का सर्वाधिक Mean सत्व गुण को प्राप्त हुआ है अपेक्षाकृत रज एवं तम गुण के । छात्रों का भी सर्वाधिक Mean 9.87 सत्व गुण को ही प्राप्त हुआ है अपेक्षाकृत रज एवं तम गुण के । प्राप्तांकों की सारिणी के विश्लेषण के आधार पर कुछ परिणाम अपवाद स्वरूप भी प्राप्त हुये हैं ।

कफ को सतोगुणी कहा है निर्मल कफ सात्विक होता है एवं मलिन(दूषित) कफ तामसिक होता है ।

(II) *मनोवैज्ञानिक परीक्षण संबंधी परिकल्पनाएं*

1. व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16.PF) के Factor A,B,C,E में लैंगिक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है ।

Factor A - के प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति तीनों समूहों का C.R. क्रमशः 4.23, 4.39 व 11.14 ज्ञात हुआ है जो यह बताता है कि तीनों समूहों के छात्र-छात्राओं में सार्थक अंतर है ।

(तालिका 4.98)

अतः यहां Factor A के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

Factor B - के प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के तीनों समूहों का C.R. क्रमशः 1.57, 1.41 व 6.53 आया है जिससे यह ज्ञात होता है कि वात,पित्त प्रकृति के

छात्र-छात्राओं के समूहों में सार्थक अंतर नहीं है एवं कफ प्रकृति के छात्र छात्राओं में सार्थक अंतर है । परिकल्पना Factor A में कफ प्रकृति वालों के लिये अस्वीकृत एवं वात एवं पित्त प्रकृति वालों के लिये स्वीकृत की जाती है । परिकल्पना आंशिक रूप से असत्य पाई गई ।

(तालिका 4.99)

Factor C - के प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के तीनों समूहों का C.R. क्रमशः 12.96, 8.98 व 1.39 आया है । जिससे ज्ञात होता है कि वात एवं पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं में सार्थक अंतर है एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं में सार्थक अंतर नहीं है ।

(तालिका 4.100)

अतः यहाँ Factor C में वात,पित्त के प्रकृति के समूहों के लिये परिकल्पना अस्वीकृत एवं कफ प्रकृति वालों के लिये स्वीकृत की जाती है ।

Factor E - के परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के तीनों समूहों का C.R. क्रमशः 16.30, 0.44 व 7.37 आया है जिससे ज्ञात होता है कि वात एवं कफ प्रकृति के छात्र- छात्राओं में सार्थक अंतर है एवं पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं में सार्थक अंतर नहीं है ।

(तालिका 4.101)

अतः यहाँ Factor E में वात,कफ प्रकृति के समूहों के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है एवं पित्त प्रकृति वालों के लिये स्वीकृत की जाती है ।

2. व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16.P.F.) के Factor F, G, H, I में लैंगिक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है ।

Factor F - के परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के तीनों समूहों का C.R. क्रमशः 16.54, 7.86 व 1.30 आया है जिससे ज्ञात होता है कि वात एवं पित्त प्रकृति के समूहों में सार्थक अंतर है एवं कफ प्रकृति के समूहों में सार्थक अंतर नहीं है ।

(तालिका 4.102)

अतः यहाँ Factor F में वात एवं पित्त प्रकृति के समूहों के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है एवं कफ प्रकृति के समूहों के लिये स्वीकृत की जाती है ।

Factor G - के परिणामों में वात,पित्त एव कफ प्रकृति के तीनो समूहों का C.R. क्रमशः 4.16, 1.96 व 1.02 आया है जिससे ज्ञात होता है कि वात प्रकृति के छात्र एवं छात्राओं के समूहों में सार्थक अंतर पाया गया है एवं पित्त व कफ प्रकृति के समूहों में सार्थक अंतर नहीं है ।

(तालिका 4.103)

अतः यहाँ Factor G में वात प्रकृति वालों के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है एवं पित्त व कफ प्रकृति वालों के लिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

Factor H - के परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों का C.R. क्रमशः 1.67, 8.78 व 15.44 आया है । जिससे ज्ञात होता कि वात प्रकृति के समूहों में सार्थक अंतर नहीं है । एवं पित्त व कफ प्रकृति के समूहों में सार्थक अंतर है ।

(तालिका 4.104)

अतः यहाँ Fator H में वात प्रकृति वालों के लिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है एवं पित्त एवं कफ प्रकृति वालों के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

Factor I - के परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों का C.R. क्रमशः 5.80 ,9.29 व 14.92 आया है । जिससे ज्ञात होता है कि तीनों समूहों के छात्र-छात्राओं में सार्थक अंतर है ।

(तालिका 4.105)

अतः यहां Factor I के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

3. व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16.P.F.) के Factor L, M, N, O में लैंगिक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है ।

Factor L - के परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों का C.R. क्रमशः 1.31,0 व 1.68 आया है जिससे ज्ञात होता है कि तीनों समूहों के छात्र छात्राओं में सार्थक अंतर नहीं है ।

(तालिका 4.106)

अतः यहां Factor L के लिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

Factor M - के परिणामों मे वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के प्रधान छात्र-छात्राओं के समूहों का C.R. क्रमशः 11.48, 8.88 व 7.02 आया है जिससे ज्ञात होता है कि तीनों में सार्थक अंतर है ।

(तालिका 4.107)

अतः यहाँ Factor M के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

Factor N - के परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र- छात्राओं के समूहों का C.R. क्रमशः 11.19, 3.11 व 3.35 आया है जिससे ज्ञात होता है कि तीनों समूहों में सार्थक

अंतर है ।

(तालिका 4.108)

अतः Factor N के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

Factor O - के परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूहों का C.R. क्रमशः 4.92, 9.56 व 1.39 आया है जिससे ज्ञात होता है कि वात एवं पित्त प्रकृति के समूहों मे सार्थक अंतर पाया गया एवं कफ प्रकृति के समूह में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है ।

(तालिका 4.109)

अतः यहाँ Factor O में वात एवं पित्त प्रकृति वालों के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है एवं कफ प्रकृति वालों के लिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

4. व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी (16P.F.) के Factor Q1, Q2, Q3, Q4 में लैगिंक अंतर (Sex Difference) नहीं पाया जाता है ।

Factor Q1 - के परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूहों का C.R. क्रमशः 1.14, 0.75 व 2.31 आया है जिससे ज्ञात होता है कि वात एवं पित्त प्रकृति के समूहों में सार्थक अंतर है एवं कफ प्रकृति के समूह में सार्थक अंतर नहीं है ।

(तालिका 4.110)

अतः यहाँ Factor Q1 में वात एवं पित्त प्रकृति वालों के लिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है एवं कफ प्रकृति वालों के लिये अस्वीकृत की जाती है ।

Factor Q2 - के परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूहों का C.R. क्रमशः 8.50,6.43 व 13.02 आया है जिससे ज्ञात होता है कि तीनो समूहों में सार्थक अंतर है ।

(तालिका 4.111)

अतः यहाँ Factor Q2 के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है

Factor Q3 - के परिणामों में वात एवं पित्त व कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूहों का C.R. क्रमशः 11.73, 8.25 व 4.36 आया है जिससे ज्ञात होता है कि तीनों समूहों में सार्थक अंतर है ।

(तालिका 4.112)

अतः यहाँ Factor Q3 के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

Factor Q4 - के परिणामों मे वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूहों का क्रमशः 8.50,1.79 व 11.55 आया है जिससे ज्ञात होता है कि वात एवं कफ प्रकृति के समूहों में सार्थक अंतर है एवं पित्त प्रकृति के समूहों मे सार्थक अंतर नहीं है ।

(तालिका 4.113)

अतः यहाँ Factor Q4 में वात एवं कफ प्रकृति वालों के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है एवं पित्त प्रकृति वालों के लिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

(III) व्यक्तित्व शीलगुण संबंधी परिकल्पना -

1. वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के व्यक्तित्व में शीलगुणों में कोई लैगिंक अंतर (Sex Defference) परिलक्षित नहीं होता है ।

व्यक्तित्व-शीलगुण

Factor A - में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रों का Mean क्रमशः वात प्रकृति छात्राएँ एवं छात्र 5.40, 3.95 पित्त प्रिकृति के 6.70, 5.35 एवं कफ प्रकृति के 3.00, 5.35 आया है ।

इन तीनों समूहों के छात्र-छात्राओं में सार्थक अंतर पाया गया।

(तालिका 4.98)

यहां वात प्रकृति की छात्राऍ उभयमुरवी (अर्थात अंर्तमुरवी व बहिर्मुरवी दोनो गुण औसत रुप में उपस्थित) व छात्र अंर्तमुरवी (Introvert), पित्त प्रकृति की छात्राऍ बर्हिमुरवी (Extrovert) छात्र उभयमुरवी एवं कफ प्रकृति की छात्राऍ अंर्तमुरवी व छात्र उभयमुरवी पाये गये। अतः इस प्रकार छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व शील गुणों में भिन्नता पाई गई इसलिये उपरोक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

Factor B में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात 2.40,2.85, पित्त 2.75,3.30, कफ 5.00,7.60 आया है। तीनों समूहों में से वात एवं पित्त प्रकृति के समूहो के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि कफ प्रकृति वाले समूह में पाया गया।

(तालिका 4.99)

यहाँ वात एवं पित्त प्रकृति की छात्राऍ एवं छात्र दोनों ही कम बुद्विमान (Less intelligence) पाये गये जबकि कफ प्रकृति की छात्राऍ औसत बुद्वि की व छात्र अधिक बुद्विमान (more intelligence) पाये गये। इस प्रकार यहा वात एवं पित्त प्रकृति के समूह के

लिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं एवं कफ प्रकृति वालों के लिये अस्वीकृत की जाती है।

Factor C में प्राप्त परिणामों में वात,पिंत्त,एवं कफ प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात 5.30, 2.60 पित्त 6.40, 2.60 एवं कफ 3.25, 2.85 आया है। तीनों समूहों में से वात एवं पित्त प्रकृति के समूहो के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अंतर पाया गया जबकि कफ प्रकृति के समूह में सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

(तालिका 4.100)

यहाँ वात प्रकृति की छात्राओं की संवेगात्मक स्थिति औसत एवं छात्र संवेगात्मक रुप से प्रभावित (Affected by fellings) पाये गये। पित्त प्रकृति की छात्राओं की संवेगात्मक स्थिति औसत एवं छात्र संवेगात्मक रुप से प्रभावित पाये गये। कफ प्रकृति की छात्राएँ एवं छात्र दोनों ही संवेगात्मक रुप से प्रभावित पाये गये। अतः वात एवं पित्त प्रकृति के समूहों के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं। एवं कफ प्रकृति वालों के लिये स्वीकृत की जाती है।

Factor E में प्राप्त परिणामों में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात- 7.90, 3.15 पित्त-3.70,3.55 एवं कफ 3.65,5.20 आया है। तीनों समूहो में वात एवं कफ प्रकृति के समूहों के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अंतर पाया गया जबकि पित्त प्रकृति के समूह में सार्थक अंतर नहीं है।

(तालिका 4.101)

यहाँ वात प्रकृति की छात्राएँ 'प्रभुत्व शाली'(Asserative) एवं छात्र उदार (humble) किस्म के पाये गये। पित्त प्रकृति के छात्र छात्राएँ दोनो ही उदार पाये गये एवं कफ प्रकृति की छात्राएँ उदार एवं छात्रों में औसत रुप से दोनों गुण पाये गये । अतः वात एवं कफ प्रकृति वालों के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। एवं पित्त प्रकृति वालों के लिए स्वीकृत की जाती है।

Factor F में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात 7.25, 2.55 पित्त 5.80,2.40 एवं कफ 2.80, 2.50 आया है। तीनों समूहों में से वात एवं पित्त प्रकृति के समूहों के व्यक्तित्व शीलगुणो में सार्थक अंतर पाया गया जबकि कफ प्रकृति के समूह में सार्थक अंतर नहीं है।

(तालिका 4.102)

यहाँ वात प्रकृति की छात्राएँ उत्साही (Happy go Lucky) व छात्र शालीन व संयमी (Sober) पाये गये। पित्त प्रकृति की छात्राओं में दोनो गुण औसत एवं छात्र शालीन व संयमी पाये गये। कफ प्रकृति की छात्राएँ व छात्र दोनो ही शालीन व संयमी पाये गये। अतः वात एवं पित्त प्रकृति वालों के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। एवं कफ प्रकृति के लिये स्वीकृत की

जाती है।

Factor G में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रो का mean क्रमशः वात- 5.55, 4.60 पित्त- 7.10, 7.60 एवं कफ 5.55, 5.45 आया है। तीनों समूहों में से वात प्रकृति के समूह में सार्थक अंतर पाया गया जबकि पित्त एवं कफ प्रकृति के समूहों के व्यक्तित्व शीलगुणो में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(तालिका 4.103)

यहॉ वात प्रकृति की छात्राओं में योग्य, हितकर (Expedient) व शुद्दमति (Conscientious) दोनो गुण औसत रुप से पाये गये। जबकि छात्र पूर्णतः योग्य पाये गये। पित्त प्रकृति की छात्राऍ छात्र दोनो ही शुद्धमति (पुण्यात्मा अंर्तरात्मा के आदेशो को मानने वाले) पाये गये। कफ प्रकृति के छात्र व छात्राओं में उपरोक्त दोनो ही गुण औसत रूप में प्राप्त होते हैं। अतः वात प्रकृति के समूह के लिये परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। एवं पित्त एवं कफ प्रकृति के समूह के लिये स्वीकृत की जाती है।

Factor H में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के समूहों की छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात 5.55,5.35 पित्त- 7.20,5.50 एवं कफ 5.35,8.15 आया हैं। तीनों समूहो में से वात प्रकृति के समूह में सार्थक् अंतर नहीं पाया गया जबकि पित्त एवं कफ प्रकृति के समूहों मे सार्थक अंतर पाया गया।

(तालिका 4.104)

यहाँ वात प्रकृति के छात्र छात्राओ में (Shyness) शर्मीलापन एवं (Venturesome) 'जोरिवम उठाने वाले' शीलगुण औसत रुप में पाये गये। जबकि पित्त प्रकृति की छात्राऍ स्पष्ट रुप में जोरिवम उठाने वाली एवं छात्रों में दोनों गुण औसत रुप से पाये गये। कफ प्रकृति की छात्राओं में भी दोनों गुण औसत एवं छात्रों में 'जोरिवम उठाने वाले' पाये गये। अतः वात प्रकृति के समूह के लिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। एवं पित्त व कफ प्रकृति वालों के लिये अस्वीकृत की जाती है।

Factor I में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के समूहों की छात्राओं व छात्रों का mean क्रमशः वात- 7.15,5.45 पित्त- 5.20,7.85 एवं कफ- 2.65,5.60 आया है। तीनों समूहों के व्यक्तित्व शीलगुणो में सार्थक अंतर पाया गया।

(तालिका 4.105)

यहाँ वात प्रकृति की छात्राऍ Tough दृढ़मति (Tough minded) एवं छात्र दृढ़ एवं मृदु मन के औसत शीलगुणों वाले पाये गये। पित्त प्रकृति की छात्राओं में भी दोनो गुण औसत लेकिन

छात्र स्पष्ट रूप से 'मृदु मन वाले' (Tender minded) पाये गये।

कफ प्रकृति छात्राएँ दृढ़मति व छात्रों में दोनों शील गुणों की प्राप्ति औसत रूप से होती है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

Factor L में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात 7.75, 8.10 पित्त 7.80, 7.80 एवं कफ 7.90, 7.55 आया है। यहाँ तीनों समूहों के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(तालिका 4.106)

यहाँ वात, पित्त एवं कफ प्रकृति के तीनों समूहों के छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व में शंकालु (Suspicious) शीलगुण पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

Factor M में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात 3.05, 5.40 पित्त 5.30, 2.75 एवं कफ 3.40, 5.50 आया है। तीनों समूहों में सार्थक अंतर पाया गया।

(तालिका 4.107)

यहाँ वात प्रकृति की छात्राएँ व्यवहारिक (Practical) एवं छात्रों में व्यवहारिकता व काल्पनिक (Imaginative) शील गुण औसत रुप में प्राप्त हुए हैं। पित्त प्रकृति की छात्राओं में भी औसत एवं छात्र स्पष्ट रुप से व्यवहारिक पाये गये। कफ प्रकृति की छात्राएँ भी स्पष्ट रुप से व्यवहारिक व छात्रों में दोनो गुण औसत रुप में पाये गये । अतः यहाँ परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है

Factor N में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात- 4.45, 8.55 पित्त- 7.40, 8.50 एवं कफ 7.20, 8.35 आया हैं। तीनो समूहो के व्यक्तित्व शील गुणों में सार्थक अंतर पाया गया।

(तालिका 4.108)

यहाँ वात प्रकृति की छात्राओं के व्यक्तित्व में स्वभाविक (Foothright) शीलगुण पाया गया। जबकि छात्र चतुर (निपुण) (Shrewd) किस्म के पाये गये। पित्त एवं कफ प्रकृति की छात्राएँ व छात्र दोनों ही चतुर पाये गये। इन समूहों के व्यक्तित्व शीलगुणों में अंतर नहीं हैं। लेकिन प्राप्तांकों के विचलन व सांख्यिकीय गणना के अनुसार सार्थक अंतर प्राप्त हो रहा है शीलगुणों में असमानता पाई जाने के कारण परिकल्पना पित्त एवं कफ प्रकृति वालों के लिये स्वीकृत की जाती है । लेकिन वात प्रकृति वालों के लिये अस्वीकृत की जाती है।

Factor O में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्राओं एवं छात्रों का

mean क्रमशः वात 4.15, 5.75 पित्त 4.45, 8.05 एवं कफ 5.55, 5.40 आया है। वात एवं पित्त प्रकृति के समूहों में सार्थक अंतर पाया गया जबकि कफ प्रकृति के समूह में सार्थक अंतर नहीं है।

(तालिका 4.109)

यहाँ वात प्रकृति की छात्राऍं 'शांत' (Placid) गंभीर' शीलगुण वाली पाई गई जबकि छात्रों में गंभीरता एवं विचारवान (Apprehensive) दोनों गुण आसत रुप में प्राप्त होते हैं। पित्त प्रकृति की छात्राऍं स्पष्ट रूप से गंभीर एवं छात्र स्पष्ट रुप से विचारवान (बुद्धिमान) पाये गये। कफ प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रों में दोनो गुण औसत रुप में पाये गये। अतः वात एवं पित्त प्रकृति के समूहों के लिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है एवं कफ प्रकृति वालो के लिये स्वीकृत की जाती है।

Factor Q1 में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात 7.70,7.25, पित्त 7.40,7.65 एवं कफ 7.40,8.05 आया है। तीनों समूहों में सार्थक अंतर नहीं है। केवल कफ प्रकृति के समूह में 0.5 स्तर पर अंतर प्राप्त होता है। लेकिन शीलगुणो में समानता है।

(तालिका 4.110)

यहाँ वात , पित्त एंव कफ तीनो प्रकृति के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व में 'प्रायोगिक' (Experimenting) शीलगुण प्राप्त होता है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

Factor Q2 में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति की छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात 7.30,5.30 पित्त 3.75,5.40 एवं कफ 5.50,8.15 आया है। तीनों समूहो में सार्थक अंतर पाया गया।

(तालिका 4.111)

यहाँ वात प्रकृति की छात्राऍं 'समूह पर निर्भर' (Group Dependent) शीलगुण वाली पाई गई। छात्रों में समूह पर निर्भरता एवं सक्षमता (Self Sufficient) दोनो ही गुण औसत रूप में पाये गये।

पित्त प्रकृति की छात्राऍं समूह पर निर्भर, छात्रों में दोनों गुण औसत रूप में पाये गये। कफ प्रकृति की छात्राओं में भी औसत एवं छात्र 'सक्षम' (अपना निर्णय लेने मे) पाये गये। अतः यहाँ परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

Factor Q.3 में प्राप्त परिणामों में वात, पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात 5.50, 7.75 पित्त 5.75, 2.75 एवं कफ 7.15, 8.05 आया है। इन

तीनों समूहों में सार्थक अंतर पाया गया है।

(तालिका 4.112)

यहाँ वात प्रकृति की छात्राओं के व्यक्तित्व में 'अनअनुशासित' (Undisciplined) एवं 'नियंत्रित' (Controld) शीलगुण औसत मात्रा में पाये गये। छात्रों में औसत छात्रों में अनुशासित शीलगुण पाया गया। कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं दोनों के व्यक्तित्व में 'नियंत्रित' शीलगुण पाया गया। अतः यहाॅ परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

Factor Q4 में प्राप्त परिणामों में वात,पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं एवं छात्रों का mean क्रमशः वात 5.50, 7.75 पित्त 5.45, 5.10 एवं कफ 5.70, 3.10 आया है। यहाँ वात एवं कफ प्रकृति के समूहों मे सार्थक अंतर पाया गया एवं पित्त प्रकृति वालों में सार्थक अंतर नहीं है।

(तालिका 4.113)

यहाँ वात प्रकृति की छात्राओं में संतुष्ट (Relexed) व तनाव युक्त (Tense) दोनों शीलगुण औसत मात्रा में पाये गये। छात्र तनाव युक्त पाये गये। पित्त प्रकृति की छात्राओं में व छात्रों में दोनो गुण औसत मात्रा मे पाये गये। कफ प्रकृति की छात्राओं में भी दोनों गुण औसत पाये गये। कफ प्रकृति की छात्राओं के व्यक्तित्व में 'संतुष्ट' (Relexed) शीलगुण स्पष्ट रूप में पाया गया।

अध्याय- 5

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

5.2 सुझाव

5.2.1 भावी अनुसंधानकर्त्ता के लिये

5.2.2 चिकित्सकों के लिये

5.2.3 मनोवैज्ञानिकों के लिये

5.2.4 शिक्षकों के लिये

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

प्राप्तांकों का विवरण

उपकरण

अध्याय- 5
निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

5.2 सुझाव

5.2.1 भावी अनुसंधानकर्त्ता के लिये

5.2.2 चिकित्सकों के लिये

5.2.3 मनोवैज्ञानिकों के लिये

5.2.4 शिक्षकों के लिये

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

प्राप्तांकों का विवरण

उपकरण

अध्याय- 5

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

5.2 सुझाव

5.2.1 भावी अनुसंधानकर्त्ता के लिये

5.2.2 चिकित्सकों के लिये

5.2.3 मनोवैज्ञानिकों के लिये

5.2.4 शिक्षकों के लिये

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

प्राप्तांकों का विवरण

उपकरण

अध्याय -5

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष -

ज्ञान की सामाजिक विरासत बनाना और उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करने के उद्देश्य से निष्कर्ष (परिणाम) ज्ञात किये जाते हैं। ये निष्कर्ष योजनाओं का मूल्यांकन करते हैं, अनुसंधान में अंर्तनिहित तथ्यों की स्थिति का ज्ञान कराते हैं। शोधार्थी को प्राप्त किये गये समंको के विश्लेषण एवं सांख्यिकीय गणना के आधार पर परिकल्पना की पुष्टि हुई है अथवा नहीं यह स्पष्ट रूप से बताना होता है एवं यह निष्कर्ष किन किन क्षेत्रों में उपयोगी हो सकते हैं इसकी भी जानकारी देनी पड़ती है ।

वर्तमान शोध के प्राप्त निष्कर्ष -

(1) वात प्रकृति की छात्राओं के व्यक्तित्व में परिणामों के आधार पर रज गुण प्राप्त नहीं हुआ। ये छात्राएँ सतोगुणी पाई गईं ।

(2) वात प्रकृति के छात्रों के व्यक्तित्व में परिणामों के आधार पर रज गुण की प्रधानता पाई गई।

(3) पित्त प्रकृति की छात्राओं के व्यक्तित्व में परिणामों के आधार पर रज गुण की प्रधानता पाई गई।

(4) पित्त प्रकृति के छात्रों के व्यक्तित्व में परिणामों के आधार पर रज गुण की प्रचुरता पाई गई।

(5) कफ प्रकृति की छात्राओं के व्यक्तित्व में परिणामों के आधार पर सत्वगुण प्रधान रूप से पाया गया।

(6) कफ प्रकृति के छात्रों के व्यक्तित्व में परिणामों के आधार पर सत्व गुण प्रधान रूप से पाया गया।

(7) उपरोक्त वात,पित्त एवं कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व मापन के सोलह कारकों द्वारा प्राप्त परिणामों में छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व में भिन्नता पाई गई।

(8) समस्त वात पित्त एवं कफ प्रकृति प्रधान छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व मापन के सोलह करकों द्वारा प्राप्त परिणामों में छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व शीलगुण में लैंगिक भिन्नता (Sex Differences) पाई गयी। उपरोक्त सभी परिणामों में प्राप्तांकों के विश्लेषण की दृष्टि से कुछ परिणाम अपवाद स्वरूप भी प्राप्त हुए हैं। जिनका विवरण पूर्व में अध्याय 3 के अंतर्गत किया जा चुका है ।

(9) वात प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूह में 4 Factor B.H.L.Q.1 में समानता पाई गई।

(10) पित्त प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूह में 6 Factor B.E.G.L.Q.1, Q.4 में असमानता पाई गई।

(11) कफ प्रकृति के छात्र-छात्राओं के समूह मे 5 Factor C, F, G, L, O में समानता पाई गई।

उपरोक्त सभी परिणामों में प्राप्तांकों के विश्लेषण की दृष्टि से कुछ परिणाम अपवाद स्वरूप भी प्राप्त हुए हैं लेकिन समस्त प्राप्तांकों की सांख्यिकीय गणना के आधार पर उपरोक्त परिणाम प्राप्त हुए हैं।

5.2 सुझाव

अनुसंधान कार्य के जो निष्कर्ष प्राप्त होते है। उसके आधार पर सुझाव भी दिया जाना चाहिये यदि अनुसंधान पूर्णतः वैज्ञानिक उददेश्य के लिये न हो तो। कभी-कभी किया गया शोध कार्य सामाजिक व्याधियों से सबंधित होता हैं तब भी सुझाव देना आवश्यक होता है। इन सभी सुझावों को निष्कर्ष के अंत में दिया जाना उचित होता है। सुझाव हमेशा तर्क पर आधारित एवं व्यवहारिक होते हैं। एवं अनेकों सुझाव कार्य रूप में परिणित करने में आने वाली संभावित कठिनाईयों को ध्यान में रखकर दिया जाता है।

5.2-1 *भावी अनुसंधानकर्ता के लिये*

ज्ञान एक बौद्धिक प्रक्रिया है जो नये ज्ञान को प्रकाश में लाती हैं अथवा पुरानी त्रुटियों एवं भ्रांत धारणाओं का परिमार्जन करती है तथा व्यवस्थित रूप में वर्तमान ज्ञान कोष मे वृद्धि करती है।

वर्तमान शोध का अध्ययन केवल न्यादर्श द्वारा चयनित वात प्रकृति पित्त प्रकृति एवं कफ प्रकृति को छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व मापन (16 शीलगुणों के आधार पर) तक ही सीमित है। भावी अनुसंधानकर्ता को चाहिये कि वे द्विदोषज एवं त्रिदोषज (सन्निपात) प्रकृति के व्यक्तियों का व्यक्तित्व मापन करें एवं वात,पित्त कफ के पाँच-पाँच प्रकारों को भी व्यक्तित्व से जोड़कर व्यक्तित्व में भिन्नता व समानता ज्ञात करने का प्रयास करें जिससे व्यक्तित्व मापन एवं निर्धारण में अधिक परिशुद्ध परिणाम प्राप्त हो सकेंगे।

5.2-2 *चिकित्सकों के लिये -*

चिकित्सक को चाहे वह किसी भी प्रकार की चिकित्सा करता हो जैसे आयुर्वेदिक, यूनानी, मानसिक, एलोपैथिक व होम्योपैथी। उसे मनोविज्ञान एवं आयुर्वेद का ज्ञान होना आवश्यक है। तभी वह रोगी के मानसिक दोष (विकार) को एवं उसकी प्रकृति के आधार पर उसकी सही चिकित्सा कर सकेगा। यदि चिकित्सक मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को (विशेषकर व्यक्तित्व मापनी) को अपनी चिकित्सा के पूर्व प्रयोग में लाते हैं तो रोगियों की मानसिक स्थिति का काफी वर्णन उन्हे प्राप्त हो सकेगा। जो व्याधिमोक्ष के लिए सहायक होगा ।

5.2-3 *मनोवैज्ञानिकों के लिये -*

आयुर्वेद शास्त्र में अनेकों पक्ष ऐसे हैं जिन्हे मनोविज्ञान से जोड़ा जा सकता है। मनोविज्ञान के अनेक पक्ष जैसे अभियोग्यता, अधिगमता, अभिवृत्ति, अभिरुचि, बौद्धिक क्षमता, आयुर्वेद के

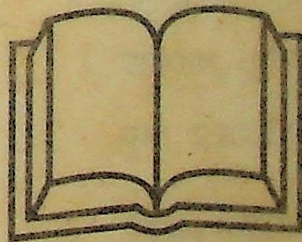
अनुसार वात, पित्त एवं कफ प्रकृति से जोड़े जा सकते हैं जो शोध का विषय तैयार करने में मदद करेंगे। आयुर्वेद के अनुसार विशेष प्रकार के प्रकृति के व्यक्ति को विशेष प्रकार के रोग होते हैं उन रोगों को ध्यान में रखकर मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का निर्माण उपचार अधिक सटीक ढंग से किये जा सकते हैं।

5.2-4 *शिक्षकों के लिये-*

16 वर्ष 20 वर्ष तक की आयु के किशोर व किशोरियों के व्यक्तित्व की विकासशील अवस्था होती है। और यही समय होता है जब उन्हें उचित मार्गदर्शन जीवन के हर क्षेत्र के लिये दिया जाना चाहिये ताकि उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का समुचित विकास हो सके। अतः स्कूल के शिक्षकों या प्रबंधकों को चाहिये कि वे अपने स्कूलों में छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व परीक्षण करवाकर उसका रिकार्ड अपने पास रखे एवं छात्र-छात्राओं को उनके व्यक्तित्व के संबंध में जानकारी देवें एवं उनका उचित मार्गदर्शन करें। ताकि वे हर परिस्थिति में अपना समायोजन कर सकें।

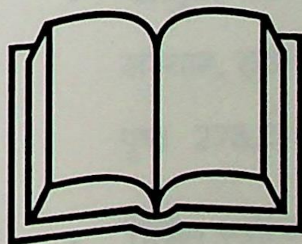
संदर्भ ग्रंथ सूची

(BIBLIOGRAPHY)



संदर्भ ग्रंथ सूची

(BIBLIOGRAPHY)





संदर्भ ग्रंथ सूची

अत्रिदेव : **'सुश्रुत संहिता'** मोतीलाल बनारसीदास द्वारा प्रकाशित, दिल्ली, पंचम संस्करण(1975) पृष्ठ 8, 9, 149, 310, 560

उपाध्याय, यदुनंदन : **'माधवनिदानम्' part I**, चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, छब्बीसवां संस्करण, (वि.सं.2053)

उपाध्याय, यदुनंदन : **'माधवनिदानम्' part II,** चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, सत्ताइसवां संस्करण, (वि.सं.2054

कुमार, विनय : **'रोग विज्ञान'** ललित प्रकाशन,डी.34, पांडव नगर, दिल्ली92, बारहवां संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण(1996)

गुप्त, अत्रिदेव : **'अष्टाङ्गहृदयम'** चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, ग्यारहवां संस्करण(वि.सं.2050) पृष्ठ 2, 4, 6, 7

जैन, आचार्य राजकुमार : **'आयुर्वेद दर्शन'** प्राणावाय जैनायुर्वेद शोध संस्थान, तृतीय संस्करण(1997) पृष्ठ 278,279

तिवारी, आचार्य सहजानंद : **'त्रिदोष ज्योत्स्ना'** चौखंबा विद्या भवन, चौक बनारस, वाराणसी(1969) पृष्ठ 49, 50, 52, 63, 64, 74,87-92, 108-118

देसाई, वैद्य रणजितराय : **'आयुर्वेदीय क्रियाशरीर'** श्री वैद्यनाथआयुर्वेद भवन लिमिटेड, प्रथम संस्करण(1953)

दास, उपेन्द्रनाथ : **'त्रिदोष विज्ञानम'** चौरवंबा अमरभारती, वाराणसी चतुर्थ संस्करण(1966)

द्विवेदी, मूलशंकर वासुदेव : **'नाड़ी विज्ञान'** आर.के. भट्ट द्वारा प्रकाशित(1983) पृष्ठ 37, 74

पाठक, रामरक्ष : **'त्रिदोष तत्व विमर्श'** श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड, चतुर्थ संस्करण(1981) पृष्ठ 25, 29, 30

मिश्रा, भाव : **'भावप्रकाशः' part I,** चौरवंबा संस्कृत संस्करण, (वि.सं.2047) पृष्ठ 1,12,13,29,30

मिश्रा, भाव : **'भावप्रकाशः'** part II,चौरवंबा संस्कृत संस्थान वाराणसी, षष्टम संस्करण

मिश्रा, भाव : **'भावप्रकाश संहिता'** चौरवंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, छब्बीसवां संस्करण(वि.सं.2053) पृष्ठ 3

वैद्य, ताराशंकर : **'नाड़ी दर्शन'** नरेंद्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसी द्वारा प्रकाशित, दिल्ली, सप्तम संशोधित संस्करण(1998)

पृष्ठ 36, 40, 130, 131

शास्त्री, रामावलम्ब : **'हारीत'** संहिता' प्राच्य प्रकाशन, जगतगंज वाराणसी(1985)

शास्त्री, पंडित काशीनाथ : **'चरक संहिता' part I** चौरवंबा संस्कृत संस्थान,वाराणसी, पंचम संस्करण,(वि.सं.2054)

पृष्ठ 13, 14, 450

शास्त्री, पंडित काशीनाथ : **'चरक संहिता' part II**, चौखबा संस्कृत संस्थान,वाराणसी, चतुर्थ संस्करण(वि.सं.2051)

शर्मा, पंडित हेमराज : **'काश्यप संहिता'** चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पंचम संस्करण,(1994)
पृष्ठ 3, 4, 6,7

शर्मा, प्रयागदत्त : **'शार्ङ्गधर संहिता'** चौखंबा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी, सप्तम संस्करण(1988)
पृष्ठ 26

शर्मा, ताराचंद : **'आयुर्वेद का परिचयात्मक इतिहास'** नाथ पुस्तक भंडार, रेल्वे रोड, रोहतक, तृतीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण,(1995)

शुक्ल, विद्याधर एवं त्रिपाठी, रविदत्त : **'आयुर्वेद का इतिहास एवं परिचय'** चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, पंचम संस्करण(1997)
पृष्ठ 4, 23,24, 28, 199, 231, 291

शुक्ल, विद्याधर : **'आयुर्वेदीय विकृति विज्ञान'** चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान, चतुर्थ संस्करण(1997)
पृष्ठ 10, 11, 317, 420, 433

सातवलेकर, दामोदर : **'अथर्ववेद'** प्रथम भाग बसंत सातवलेकर, बी.ए. स्वाध्याय मंडल, सन 1958(संवत 2015)

त्रिपाठी, ब्रह्मानंद : **'शार्ङ्गधर संहिता'** चौखंबा सुभारती प्रकाशन, द्वितीय संस्करण(1994)
पृष्ठ 37, 60

त्रिपाठी, इंद्रदेव : **'नाड़ी विज्ञानम्'** चौखंबा ओरियंटालिया, वाराणसी, तृतीय संस्करण(1987) पृष्ठ 3, 4, 5, 7-11, 48

अस्थाना, मधु एवं वर्मा, किरन बाला : **'व्यक्तित्व मनोविज्ञान'** मोतीलाल बनारसीदास द्वारा प्रकाशित, दिल्ली प्रथम संस्करण(1996)

अग्रवाल, आर.एन. : **'व्यक्तित्व प्रकृति एवं मापन'** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण(1963)

ओझा, आर.के. : **'मनोवैज्ञानिक समकालीन सम्प्रदाय'** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-3 (1982)

EYSENCK, H.J. : **"THE SRUCTURE OF HUMAN PERSONALITY"** LONDON METHUN & CO.LTD.

NEW YORK JOHN WILLY & SONS INC FIRST PUBLISHED AUGUST(1959) SECOND EDITION(1960)

Ackoff, R.L. : **"THE DESIGN OF SOCIAL REASEARCH"** Page 14

एलहंस, देवकीनंदन : **'सांख्यिकी के सिद्धांत'** किताब महल, इलाहाबाद,(1968)

कपिल, एच.के. : **'अनुसंधान विधियाँ'** हरप्रसाद भार्गव, पुस्तक प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण(1956)

कपिल, एच.के. : **'सांख्यिकी के मूलतत्व'** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, द्वितीय संस्करण(1980)

कपिल, एच.के. : **'अनुसंधान विधियाँ'** हरप्रसाद भार्गव, पुस्तक प्रकाशन, आगरा, द्वितीय संस्करण(1981)

कपिल, एच.के. : **'अनुसंधान विधियाँ व्यवहारपरक विज्ञानों में'** हरप्रसाद भार्गव, आगरा-4, पंचम संस्करण(1989) पृष्ठ 38,43

कोठारी, एवं कोठारी : **'सांख्यिकी सिद्धांत एवं व्यवहार'** म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, प्रथम संस्करण(1990) पृष्ठ 69

खरे, एवं सिन्हा : **'सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी'** पुस्तक भवन, रीवा, प्रथम संस्करण(1981) पृष्ठ 41

गुप्त, रमेशचंद्र : **'शिक्षा में सांख्यिकी गणना'** गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ(1996)

गैरट, हैनरी ई. : **'शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी'** कल्याणी पब्लिशर्स, दिल्ली, ग्यारवां संस्करण(1989)

Good and Halt : "Method in social Research" Hegraw Hill book company in New York(1952) p. 209

Guilford, J.P. : **"PERSONALITY"** McGRAW HILL COMPANY INC. NEW YORK, TORONTO LONDON (1959).

गुप्त, रामबाबू : **'सामान्य मनोविज्ञान'** न्यू पब्लिशिंग हाउस, तृतीय संस्करण(1994)

जायसवाल, सीताराम : **'व्यक्तित्व का मनोविज्ञान'** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, द्वितीय संस्करण(1991)

जयप्रकाश एवं तिवारी, गोविंद : **'मापन मूल्यांकन एवं परीक्षण'** श्रीराम मेहरा एंड कंपनी, आगरा -3, प्रथम संस्करण(1974)

झा, काशीनाथ : **'सामान्य मनोविज्ञान'** ज्ञानदा प्रकाशक, पटना, प्रथम संस्करण(1994)

डे, रश्मि : **'व्यक्तित्व मनोविज्ञान'** हरप्रसाद भार्गव 4/430 कचहरीघाट, आगरा, प्रथम संस्करण(1979) पृष्ठ 1, 18, 22, 25

तिलारा, कुंवर सिंह : **'सामाजिक अनुसंधान'** प्रकाशन केंद्र, न्यू बिल्डिंग, अमीनाबाद, लखनऊ(1968)

टाउनसैंड, जे.सी. : **"Introduction of expermental method"** Page 45

तोमर, रामबिहारी सिंह : **'व्यक्तित्व'** श्रीराम मेहरा एंड कंपनी विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, द्वितीय संस्करण(1991)

तोमर, रामबिहारी : **'व्यक्तित्व'** नेशनल प्रिंटिग वर्क्स,(दि टाइम्स आफ इंडिया प्रेस) 10 दरियागंज, दिल्ली

दीक्षित, ब्रजमोहन : **'मनोवैज्ञानिक सांख्यिकी'** जयभारत प्रकाशन, राजामंडी, आगरा(1969)

नारमन, एल.मन. : **'मनोविज्ञान'** राजकमल प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण(1961)

पाण्डे, के.पी. : **'शिक्षा में सरल सांख्यिकी'** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा(1965)

बाजपेयी, एस.आर. : **'सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण'** किताब घर, कानपुर,दशम संस्करण(1969) पृष्ठ 59

बघेल, डी.एस. एवं पाण्डे, के.सी. : **'सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी के तत्व'** पुष्पराज प्रकाशन, रीवा, तृतीय संस्करण(1976)

भार्गव, महेश : **'आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'** अर्चना प्रिंटस,आगरा अष्टम संस्करण(1985)

महाजन, धर्मवीर : **'सामाजिक अनुसंधान सर्वेक्षण एवं सांख्यिकी'** शिक्षा साहित्य प्रकाशन, मेरठ(1985) पृष्ठ 179

मुकर्जी, रविन्द्रनाथ : **'सामाजिक सर्वेक्षण व शोध'** सरस्वती सदन, जवाहर नगर , दिल्ली, प्रथम संस्करण(1969)

मुकर्जी, रविन्द्रनाथ : **'सामाजिक शोध व सांख्यिकी'** विवेक प्रकाशन, दिल्ली, षष्टम संस्करण(1989) पृष्ठ 171

मिश्र, राजेन्द्रकुमार : **'मनोवैज्ञानिक मापन एक परिचयात्मक अध्ययन'** ओरियंट लोन्गमैन लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम प्रकाशन(1971)

मिश्रा, एन. : **'सांख्यिकी के सिद्धांत'** रामप्रसाद एंड संस आगरा-3, प्रथम संस्करण(1972)

मिश्रा, बब्बन, त्रिपाठी, लाल बचन : **'मनोवैज्ञानिक सांख्यिकी'** हरप्रसाद भार्गव, शैक्षिक प्रकाशन 4/230 कचहरीघाट, आगरा, प्रथम संस्करण(1994) पृष्ठ 56

मोहसिन, एस.एम. : **'प्रारंभिक मनोविज्ञान'** लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण(1969)

माथुर, एस.एस. : **'सामान्य मनोविज्ञान'** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, हास्पिटल रोड चतुर्थ संस्करण(1969)

माहेश्वरी, पी.डी. एवं जोशी, बी.डी. : **'सांख्यिकीय प्रविधियाँ'** विवेक प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण(1991)

राय, पारसनाथ : **'अनुसंधान परिचय'** लक्ष्मीनारायण अग्रवाल सागर विश्वविधालय, प्रथम संस्करण

लाल, जे.एन. : **'मनोवैज्ञानिक सांख्यिकी'** प्रेमनारायण बैजल, बक्शीपुर, गोरखपुर, प्रथम संस्करण(1974)

वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन. : **'आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान'** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, द्वितीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण(1980)

पृष्ठ 11, 406

वर्मा, प्रीति श्रीवास्तव, डी.एन. : **'आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान'** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, द्वितीय संस्करण(1997) पृ. 447, 586

वर्मा, ओमप्रकाश : **'सामाजिक अनुसंधान'** सरस्वती सदन, मसूरी(1967)

वुडवर्थ, एस. राबर्ट एवं मार्क्विस, डोनाल्ड जी : **'मनोविज्ञान'** द अपर इंडिया, पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड(1963)

शर्मा, एन.डी.एवं बाजपेयी, एस.आर. : **'सांख्यिकी के सिद्धांत'** किताब घर, कानपुर, पंचम संस्करण(1968)

पृष्ठ 59

शर्मा, जे.डी. : **'सामान्य मनोविज्ञान'** एल.एन.हास्पिटल रोड, आगरा, द्वितीय संस्करण(1971)

शर्मा, एस.एन. : **'आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान'** हरप्रसाद भार्गव, कचहरीघाट, आगरा, द्वितीय संस्करण(1978) पृष्ठ 3, 348, 349

शर्मा, के.एन. : **'मनोवैज्ञानिक विचारधारायें'** हरप्रसाद भार्गव 4/230 कचहरीघाट, आगरा, प्रथम संस्करण(1988-89)

शर्मा, रामनाथ : **'व्यक्तित्व'** केदारनाथ शर्मा द्वारा प्रकाशित, कालेज रोड, द्वितीय संशोधित संस्करण(1983-84)

शर्मा, रामनाथ : **'मनोविज्ञान के आधार'** प्रकाशक केदारनाथ रामनाथ(1990)
पृष्ठ 495

शुक्ल, लालजीराम : **'मनोविज्ञान और जीवन'** तारा पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी, तृतीय संस्करण(1982)

शुक्ल, लालजीराम : **'सरल मनोविज्ञान'**
पृष्ठ 2,32

शुक्ल, एस.एम. : **'सांख्यिकी के सिद्धांत'** साहित्य भवन, आगरा, चतुर्थ संस्करण(1966)

श्रीवास्तव, डी.एन. : **'सामाजिक मनोविज्ञान'** साहित्य प्रकाशन, आगरा, द्वितीय संस्करण(1988)

सिंह, प्रसाद एवं भार्गव : **'मनोविज्ञान एवं शैक्षिक सांख्यिकी के मूल आधार'** हरप्रसाद भार्गव,4/230 कचहरीघाट, आगरा-4

सिंह, महेन्द्रप्रताप : **'मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी'** लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा (1979)

सिन्हा, यदुनाथ : **'मनोविज्ञान'** लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, पंचम संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण (1962)

Stagner, Ross : **"PSYCHOLOGY OF PERSONALITY"** McGRAW HILL COMPANY INC. NEW YORK TORONTO LONDON THIRD EDITION(1961)

त्रिपाठी, लाल बच्चन : **'मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति'** हरप्रसाद भार्गव, आगरा(1983)

त्रिपाठी, राम ऋषि : **'व्यवहारिक मनोविज्ञान'** गयाप्रसाद एंड संस (1961)

त्रिपाठी, त्रिवेणी प्रसाद : **'व्यवहारिक मनोविज्ञान'** साहित्य संस्थान, पन्द्रवां संस्करण(1977) **संदर्भ ग्रंथ सूची**

परिशिष्ट

(APPENDIX)

परिशिष्ट

(APPENDIX)

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक

वात प्रकृति प्रधान छात्राएँ

Class 12th N = 40

प्रयोज्य क्रमांक	आयु	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	32 - 13 - 18	10 - 3 - 8
2.	17 वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 23 - 16	9 - 5 - 7
3.	17 वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 23 - 16	11 - 3 - 7
4.	17 वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 21 - 19	9 - 6 - 6
5.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	29 - 23 - 11	12 - 2 - 7
6.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	27 - 19 - 17	11 - 2 - 8
7.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 22 - 18	11 - 1 - 9
8.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 17 - 21	10 - 5 - 6
9.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 19 - 19	13 - 3 - 5
10.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	29 - 20 - 14	13 - 3 - 5
11.	17 वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 22 - 17	9 - 7 - 5
12.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	26 - 18 - 19	11 - 4 - 7
13.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	22 - 21 - 20	9 - 5 - 7
14.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	36 - 14 - 13	10 - 6 - 5
15.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	22 - 21 - 20	8 - 6 - 7
16.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	23 - 19 - 21	9 - 8 - 4
17.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 17 - 21	9 - 3 - 9
18.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	29 - 16 - 18	11 - 4 - 6
19.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	22 - 20 - 21	9 - 4 - 8
20.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 15 - 23	12 - 4 - 5
21.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	29 - 17 - 17	10 - 3 - 8
22.	18 वर्ष	4 - 1 - 7	28 - 16 - 19	9 - 5 - 7
23.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 23 - 16	8 - 7 - 6
24.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	32 - 13 - 18	10 - 4 - 7
25.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	26 - 13 - 14	9 - 4 - 8
26.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	41 - 13 - 9	10 - 3 - 8
27.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	33 - 8 - 22	9 - 5 - 7
28.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	34 - 16 - 13	12 - 2 - 7
29.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 23 - 15	8 - 6 - 7
30.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	26 - 21 - 16	8 - 5 - 8
31.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	26 - 19 - 18	11 - 4 - 6
32.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 24 - 14	9 - 4 - 8
33.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	24 - 19 - 20	10 - 5 - 6
34.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	25 - 22 - 16	7 - 8 - 6
35.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 23 - 15	8 - 8 - 5
36.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	25 - 18 - 20	9 - 5 - 7
37.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	29 - 16 - 18	11 - 2 - 8
38.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 19 - 19	9 - 3 - 9
39.	18 वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 18 - 20	12 - 1 - 8
40.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	41 - 11 - 11	10 - 4 - 7

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक

पित्त प्रकृति प्रधान छात्राएँ

Class 12th N = 40

प्रयोज्य क्रमांक	आयु	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	17 वर्ष	1 - 7 - 4	18 - 23 - 22	7 - 4 - 10
2.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	13 - 32 - 18	8 - 9 - 4
3.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	17 - 23 - 23	7 - 8 - 6
4.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	20 - 27 - 16	7 - 9 - 5
5.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	16 - 36 - 11	8 - 7 - 6
6.	17 वर्ष	4 - 7 - 1	14 - 26 - 23	4 - 10 - 7
7.	17 वर्ष	1 - 7 - 4	15 - 26 - 22	5 - 2 - 14
8.	17 वर्ष	7 - 1 - 4	20 - 24 - 19	10 - 2 - 9
9.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 25 - 21	7 - 8 - 6
10.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	13 - 26 - 24	7 - 8 - 6
11.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 25 - 24	9 - 4 - 8
12.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	11 - 27 - 25	9 - 4 - 8
13.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	15 - 25 - 23	8 - 3 - 10
14.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	12 - 34 - 17	8 - 3 - 10
15.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	19 - 23 - 21	8 - 6 - 10
16.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	20 - 24 - 19	6 - 8 - 7
17.	17 वर्ष	4 - 7 - 1	18 - 23 - 22	8 - 4 - 9
18.	17 वर्ष	1 - 7 - 4	12 - 28 - 23	9 - 7 - 5
19.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	14 - 26 - 23	10 - 5 - 6
20.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	20 - 22 - 21	10 - 3 - 8
21.	17 वर्ष	1 - 7 - 4	14 - 25 - 24	7 - 8 - 6
22.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 27 - 22	7 - 7 - 7
23.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	15 - 26 - 22	11 - 4 - 7
24.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	15 - 27 - 21	9 - 4 - 8
25.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	14 - 25 - 24	6 - 8 - 7
26.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	19 - 24 - 20	9 - 5 - 7
27.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	18 - 25 - 20	6 - 8 - 7
28.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	17 - 29 - 17	8 - 8 - 5
29.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	17 - 27 - 19	7 - 8 - 6
30.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 27 - 19	7 - 8 - 6
31.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	19 - 23 - 21	7 - 8 - 6
32.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	21 - 23 - 19	7 - 8 - 6
33.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 24 - 22	13 - 3 - 5
34.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	13 - 28 - 22	6 - 9 - 6
35.	17 वर्ष	7 - 4 - 1	17 - 29 - 17	9 - 4 - 8
36.	17 वर्ष	1 - 7 - 4	10 - 32 - 21	9 - 3 - 9
37.	17 वर्ष	4 - 7 - 1	19 - 25 - 19	4 - 11 - 6
38.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	13 - 30 - 20	6 - 8 - 7
39.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	16 - 25 - 22	8 - 2 - 11
40.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	18 - 24 - 21	10 - 2 - 9

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक

कफ प्रकृति प्रधान छात्राएँ

Class 12th N = 40

प्रयोज्य	आयु क्रमांक	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	18वर्ष	1 - 4 - 7	12 - 21 - 30	9 - 2 - 10
2.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 23 - 25	6 - 3 - 12
3.	18वर्ष	1 - 7 - 4	18 - 22 - 23	9 - 2 - 10
4.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 23 - 24	8 - 4 - 9
5.	18वर्ष	1 - 4 - 7	12 - 25 - 26	6 - 3 - 12
6.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 22 - 28	7 - 4 - 10
7.	18वर्ष	1 - 7 - 4	15 - 15 - 33	7 - 5 - 10
8.	18वर्ष	1 - 4 - 7	12 - 24 - 27	8 - 4 - 9
9.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 22 - 26	7 - 5 - 9
10.	18वर्ष	7 - 4 - 1	13 - 17 - 33	4 - 2 - 15
11.	18वर्ष	4 - 1 - 7	11 - 21 - 31	6 - 4 - 11
12.	18वर्ष	4 - 1 - 7	14 - 18 - 31	8 - 2 - 11
13.	18वर्ष	7 - 4 - 1	14 - 20 - 29	5 - 3 - 13
14.	18वर्ष	4 - 7 - 1	13 - 22 - 28	5 - 6 - 10
15.	18वर्ष	1 - 4 - 7	12 - 20 - 31	5 - 4 - 12
16.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 23 - 25	6 - 7 - 8
17.	17वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 24 - 26	6 - 2 - 13
18.	17वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 21 - 27	9 - 2 - 10
19.	17वर्ष	1 - 4 - 7	18 - 21 - 24	7 - 6 - 8
20.	17वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 22 - 26	9 - 2 - 10
21.	17वर्ष	1 - 7 - 4	15 - 23 - 25	7 - 4 - 10
22.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 23 - 25	6 - 2 - 13
23.	18वर्ष	1 - 7 - 4	11 - 22 - 30	7 - 4 - 10
24.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 23 - 25	9 - 3 - 9
25.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 20 - 29	7 - 5 - 9
26.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 21 - 26	8 - 4 - 9
27.	18वर्ष	4 - 1 - 7	12 - 23 - 28	6 - 4 - 11
28.	18वर्ष	1 - 4 - 7	19 - 20 - 24	8 - 3 - 10
29.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 20 - 29	9 - 1 - 11
30.	18वर्ष	4 - 1 - 7	20 - 17 - 26	6 - 6 - 9
31.	18वर्ष	1 - 4 - 7	18 - 22 - 23	8 - 4 - 9
32.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 19 - 31	5 - 4 - 12
33.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 23 - 24	9 - 2 - 10
34.	18वर्ष	7 - 1 - 4	17 - 22 - 23	7 - 5 - 9
35.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 19 - 27	6 - 4 - 11
36.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 20 - 27	8 - 2 - 11
37.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 20 - 29	11 - 3 - 7
38.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 19 - 31	4 - 4 - 13
39.	18वर्ष	4 - 7 - 1	15 - 22 - 26	4 - 6 - 8
40.	18वर्ष	1 - 4 - 7	18 - 22 - 23	9 - 2 - 10

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा वात प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त, कफ एवं सत्व, रज, तम संबंधी प्राप्तांक

वात प्रकृति प्रधान छात्र

Class 12th N = 40

प्रयोज्य	आयु क्रमांक	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	18वर्ष	7 - 1 - 4	22 - 20 - 21	7 - 6 - 8
2.	18वर्ष	7 - 4 - 1	30 - 18 - 15	14 - 2 - 5
3.	18वर्ष	7 - 4 - 1	30 - 16 - 17	6 - 3 - 12
4.	18वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 16 - 23	12 - 3 - 6
5.	18वर्ष	1 - 4 - 7	33 - 18 - 22	8 - 1 - 12
6.	18वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 22 - 17	9 - 6 - 6
7.	18वर्ष	7 - 1 - 4	28 - 17 - 18	7 - 8 - 6
8.	18वर्ष	7 - 1 - 4	22 - 20 - 21	4 - 4 - 13
9.	18वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 18 - 22	4 - 15 - 2
10.	19वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 20 - 16	6 - 6 - 9
11.	18वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 18 - 22	7 - 3 - 11
12.	16वर्ष	7 - 1 - 4	23 - 17 - 23	9 - 4 - 8
13.	16वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 22 - 17	8 - 5 - 8
14.	17वर्ष	7 - 1 - 4	39 - 17 - 7	13 - 2 - 6
15.	17वर्ष	4 - 7 - 1	28 - 17 - 18	9 - 2 - 10
16.	18वर्ष	4 - 7 - 1	26 - 16 - 21	8 - 3 - 10
17.	18वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 15 - 21	10 - 5 - 6
18.	18वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 22 - 17	3 - 9 - 9
19.	18वर्ष	4 - 1 - 7	32 - 21 - 10	8 - 2 - 11
20.	18 वर्ष	1 - 4 - 7	23 - 20 - 20	11 - 3 - 7
21.	18वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 22 - 18	9 - 8 - 4
22.	18वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 19 - 19	8 - 5 - 8
23.	18वर्ष	1 - 7 - 4	26 - 20 - 17	5 - 5 - 11
24.	18वर्ष	1 - 7 - 4	26 - 18 - 19	9 - 5 - 7
25.	18वर्ष	7 - 4 - 1	30 - 23 - 10	6 - 4 - 11
26.	18वर्ष	7 - 1 - 4	25 - 20 - 18	10 - 7 - 4
27.	18वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 18 - 18	9 - 8 - 4
28.	18वर्ष	7 - 4 - 1	26 - 21 - 16	6 - 6 - 9
29.	18वर्ष	7 - 4 - 1	23 - 22 - 18	8 - 6 - 7
30.	18वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 19 - 17	8 - 6 - 7
31.	18वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 18 - 20	11 - 3 - 7
32.	18वर्ष	7 - 4 - 1	26 - 20 - 17	9 - 8 - 4
33.	18वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 20 - 18	6 - 4 - 11
34.	18वर्ष	7 - 4 - 1	28 - 25 - 10	11 - 3 - 7
35.	18वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 19 - 17	10 - 8 - 3
36.	18वर्ष	7 - 1 - 4	23 - 18 - 22	6 - 3 - 12
37.	18वर्ष	7 - 4 - 1	27 - 20 - 16	8 - 6 - 7
38.	18वर्ष	7 - 4 - 1	24 - 21 - 18	9 - 8 - 4
39.	18वर्ष	7 - 4 - 1	25 - 21 - 17	9 - 8 - 4
40.	18वर्ष	7 - 4 - 1	29 - 24 - 10	12 - 2 - 7

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त कफ एवं सत्व रज तम संबंधी प्राप्तांक

पित्त प्रकृति प्रधान छात्र

Class 12th N = 40

प्रयोज्य	आयु क्रमांक	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	17वर्ष	1 - 7 - 4	16 - 26 - 21	11 - 4 - 6
2.	18वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 25 - 21	7 - 3 - 11
3.	17वर्ष	4 - 7 - 1	15 - 26 - 22	8 - 4 - 9
4.	18 वर्ष	4 - 7 - 1	15 - 26 - 22	9 - 8 - 4
5.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 23 - 23	9 - 4 - 8
6.	18वर्ष	7 - 1 - 4	15 - 26 - 22	7 - 3 - 11
7.	17वर्ष	7 - 4 - 1	11 - 25 - 17	8 - 5 - 8
8.	17वर्ष	4 - 7 - 1	13 - 27 - 23	10 - 6 - 5
9.	18वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 28 - 18	9 - 3 - 9
10.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	15 - 25 - 23	8 - 5 - 9
11.	18 वर्ष	7 - 4 - 1	16 - 27 - 20	11 - 3 - 7
12.	18वर्ष	4 - 7 - 1	16 - 27 - 20	9 - 5 - 7
13.	18 वर्ष	1 - 7 - 4	12 - 26 - 25	8 - 4 - 9
14.	18वर्ष	1 - 7 - 4	12 - 26 - 25	9 - 6 - 6
15.	18वर्ष	7 - 4 - 1	17 - 23 - 23	7 - 2 - 12
16.	18वर्ष	7 - 1 - 4	17 - 23 - 23	8 - 7 - 6
17.	18वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 28 - 18	6 - 6 - 9
18.	18वर्ष	1 - 7 - 4	12 - 26 - 25	8 - 4 - 9
19.	18वर्ष	1 - 7 - 4	14 - 27 - 22	7 - 8 - 6
20.	18वर्ष	4 - 7 - 1	19 - 22 - 22	9 - 5 - 7
21.	18वर्ष	1 - 4 - 7	20 - 22 - 21	6 - 7 - 8
22.	18वर्ष	1 - 7 - 4	17 - 25 - 21	10 - 6 - 5
23.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 28 - 18	7 - 13 - 11
24.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 26 - 20	8 - 5 - 9
25.	18वर्ष	1 - 7 - 4	16 - 25 - 22	12 - 5 - 4
26.	18वर्ष	1 - 7 - 4	14 - 28 - 21	7 - 12 - 2
27.	18वर्ष	4 - 7 - 1	20 - 24 - 19	7 - 11 - 3
28.	18वर्ष	4 - 1 - 7	13 - 26 - 24	9 - 6 - 6
29.	17वर्ष	4 - 7 - 1	19 - 27 - 17	11 - 2 - 8
30.	17वर्ष	1 - 7 - 4	19 - 28 - 26	4 - 5 - 12
31.	17वर्ष	4 - 7 - 1	22 - 25 - 16	5 - 8 - 8
32.	17वर्ष	4 - 7 - 1	22 - 26 - 15	12 - 5 - 4
33.	18वर्ष	4 - 7 - 1	21 - 23 - 19	3 - 5 - 13
34.	18वर्ष	1 - 7 - 4	18 - 27 - 18	4 - 8 - 9
35.	18वर्ष	7 - 4 - 1	20 - 24 - 19	8 - 8 - 5
36.	18वर्ष	7 - 4 - 1	21 - 26 - 16	8 - 6 - 7
37.	18वर्ष	7 - 4 - 1	20 - 23 - 20	8 - 5 - 8
38.	18वर्ष	1 - 7 - 4	14 - 25 - 24	8 - 5 - 8
39.	18वर्ष	1 - 7 - 4	9 - 27 - 27	6 - 6 - 9
40.	17वर्ष	1 - 7 - 4	17 - 24 - 22	12 - 6 - 3

नाड़ी परीक्षण एवं प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली द्वारा कफ प्रकृति प्रधान छात्रों के वात, पित्त कफ एवं सत्व रज तम संबंधी प्राप्तांक

कफ प्रकृति प्रधान छात्र

Class 12th N = 40

प्रयोज्य	आयु क्रमांक	नाड़ी स्पन्दन वात - पित्त - कफ	त्रिदोष - (प्रकृति) वात - पित्त - कफ	त्रिगुण रज - तम - सत्व
1.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 24 - 25	10 - 6 - 5
2.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 22 - 28	6 - 2 - 13
3.	18वर्ष	4 - 7 - 1	20 - 21 - 22	10 - 4 - 7
4.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 20 - 30	13 - 4 - 4
5.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 20 - 26	7 - 5 - 9
6.	18वर्ष	1 - 4 - 7	19 - 20 - 24	5 - 9 - 7
7.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 21 - 26	11 - 6 - 4
8.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 22 - 25	5 - 2 - 14
9.	18वर्ष	4 - 1 - 7	13 - 24 - 26	9 - 6 - 6
10.	18वर्ष	4 - 1 - 7	20 - 25 - 28	7 - 4 - 10
11.	18वर्ष	1 - 7 - 4	22 - 17 - 24	4 - 1 - 16
12.	18वर्ष	4 - 1 - 7	20 - 18 - 25	7 - 5 - 9
13.	18वर्ष	4 - 1 - 7	17 - 14 - 32	7 - 1 - 13
14.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 15 - 32	9 - 4 - 8
15.	18वर्ष	1 - 4 - 7	22 - 13 - 28	11 - 5 - 5
16.	18वर्ष	1 - 4 - 7	21 - 19 - 23	7 - 4 - 10
17.	17वर्ष	1 - 7 - 4	14 - 23 - 25	9 - 2 - 10
18.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 22 - 25	6 - 3 - 12
19.	18वर्ष	1 - 4 - 7	18 - 18 - 27	4 - 6 - 11
20.	18वर्ष	4 - 1 - 7	13 - 18 - 32	10 - 2 - 9
21.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 15 - 34	9 - 2 - 10
22.	18वर्ष	4 - 7 - 1	17 - 20 - 26	8 - 4 - 9
23.	18वर्ष	1 - 4 - 7	14 - 22 - 27	8 - 1 - 12
24.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 22 - 25	4 - 4 - 13
25.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 23 - 24	8 - 2 - 11
26.	18वर्ष	4 - 1 - 7	16 - 21 - 26	9 - 3 - 9
27.	18वर्ष	1 - 4 - 7	13 - 18 - 32	6 - 2 - 13
28.	18वर्ष	1 - 7 - 4	13 - 24 - 26	6 - 3 - 12
29.	18वर्ष	1 - 4 - 7	16 - 23 - 24	5 - 2 - 14
30.	18वर्ष	7 - 4 - 1	17 - 21 - 25	9 - 6 - 6
31.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 22 - 26	6 - 4 - 11
32.	18वर्ष	7 - 4 - 1	15 - 20 - 28	8 - 4 - 9
33.	18वर्ष	7 - 4 - 1	12 - 22 - 28	9 - 5 - 7
34.	18वर्ष	1 - 4 - 7	18 - 22 - 23	6 - 4 - 11
35.	18वर्ष	1 - 4 - 7	17 - 22 - 24	9 - 3 - 9
36.	18वर्ष	1 - 4 - 7	15 - 17 - 31	6 - 5 - 10
37.	18वर्ष	1 - 4 - 7	21 - 17 - 25	8 - 4 - 7
38.	18वर्ष	1 - 4 - 7	20 - 20 - 23	7 - 4 - 10
39.	18वर्ष	4 - 7 - 1	16 - 19 - 28	5 - 4 - 12
40.	18वर्ष	1 - 4 - 7	20 - 20 - 23	5 - 2 - 14

व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में वात प्रकृति प्रधान छात्राओं द्वारा प्राप्त STEN SCORE

N=40

Factor	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
A	6	6	6	6	6	6	6	5	6	6	6	5	6	6	6	5	5	5	6	6	6	5	6	5	6	6	5	6	6	6	6	6	6	4	6	5	3	6	6	6
B	1	4	1	2	2	4	4	2	1	4	2	4	1	3	1	4	1	4	4	4	1	1	1	3	1	2	1	1	3	2	2	4	1	5	1	4	5	4	4	1
C	6	5	6	5	5	6	6	5	5	5	5	5	5	5	1	5	5	5	6	5	5	5	5	5	6	5	5	5	6	5	6	5	5	3	6	5	4	5	6	6
E	8	7	7	7	7	7	7	8	5	7	8	7	7	7	5	7	7	7	7	7	7	7	8	7	7	7	8	8	8	8	8	7	7	4	7	7	4	7	4	8
F	7	7	7	7	7	7	7	7	10	7	7	7	7	7	10	7	7	7	7	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	2	7	7	3	2	7	7
G	6	5	6	5	5	6	6	5	5	5	5	5	6	5	5	5	6	5	6	6	6	6	5	6	5	5	5	5	6	6	6	6	5	8	5	5	5	5	5	6
H	5	5	5	6	6	5	5	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	6	6	5	5	5	5	5	5	6	5	5	5	6	5	6	4	5	5	6	5	5	5
I	6	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	10	7	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	8	7	7	7	5	7	7	2	7	1	6
L	7	9	10	7	7	7	7	7	8	8	7	5	8	7	8	8	8	8	7	7	7	8	7	7	7	7	7	8	7	7	7	7	8	10	7	7	7	8	7	7
M	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	1	2	3	4	4	2	3	4	2	4	4	4	1	1	2	4	5	4	2	4	4	3	4	2	1	8	4	1	1	4
N	4	4	4	3	8	4	4	10	4	4	3	4	4	5	4	4	4	4	4	10	4	3	4	4	3	4	3	8	3	7	4	3	4	10	3	6	7	3	3	4
O	4	9	9	4	4	4	4	4	4	4	1	4	4	4	4	4	3	4	4	8	4	4	1	4	3	4	3	4	4	6	4	9	4	7	3	5	6	3	2	4
Q1	7	7	9	7	7	9	9	8	7	7	7	7	9	7	7	7	7	7	7	8	7	7	7	7	8	9	10	7	7	7	8	7	7	4	7	7	7	7	8	7
Q2	7	7	7	7	7	1	7	7	7	7	7	7	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	8	7	7	7	10	7	8	7	8	7	7	6	8	7	5	8	8	7
Q3	6	6	6	5	6	6	6	5	6	6	6	5	6	6	6	6	5	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	6	6	6	6	5	3	6	5	7	6	6	6
Q4	5	6	6	6	5	5	5	5	6	6	6	6	5	6	6	6	6	5	5	5	5	6	6	5	5	5	5	7	6	6	5	5	6	8	5	6	7	5	5	5

व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में पित्त प्रकृति प्रधान छात्राओं द्वारा प्राप्त STEN SCORE

N=40

Factor	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
A	7	7	7	7	4	4	8	3	7	7	8	7	7	7	8	4	7	8	8	7	7	7	7	7	8	7	8	7	8	8	8	8	7	7	3	3	4	6	6	8
B	2	2	4	4	7	7	2	6	2	4	3	4	4	4	4	5	1	1	2	3	4	2	1	1	1	4	1	1	1	1	3	4	4	1	2	4	5	1	1	1
C	7	7	9	9	1	1	7	2	7	7	7	7	7	7	7	3	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	1	1	1	3	3	8
E	4	4	4	4	5	5	9	1	4	2	5	3	4	4	3	4	4	4	4	4	3	3	3	4	4	4	4	4	4	3	2	4	4	4	3	6	3	3	3	4
F	7	7	7	7	2	2	7	1	5	7	1	7	1	7	7	1	5	7	7	7	3	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	4	1	2	3	3	7
G	7	7	7	7	7	7	7	5	8	8	10	7	7	7	7	5	7	7	7	7	8	8	7	7	8	8	6	7	7	7	8	6	7	7	8	6	6	6	6	6
H	7	7	9	9	7	7	7	5	7	8	7	7	7	7	8	5	7	7	8	7	4	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	5	5	5	8
I	5	5	5	5	2	2	5	2	5	5	6	6	6	5	5	3	5	5	5	5	5	5	5	5	7	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	3	3	7	7	5
L	9	9	8	8	7	7	7	8	7	7	10	7	7	7	8	7	9	7	7	7	7	7	4	7	8	10	7	8	7	7	8	7	9	7	9	9	7	8	8	8
M	5	5	5	5	4	4	5	6	5	6	5	5	5	5	6	4	5	5	5	5	5	6	5	5	5	7	6	6	5	2	6	7	5	5	5	7	5	4	4	5
N	7	7	9	9	2	2	7	7	9	8	7	8	7	8	10	7	8	7	9	7	9	7	7	7	7	10	9	7	7	7	7	7	7	7	5	4	7	6	6	10
O	4	4	4	4	10	10	4	6	4	4	4	4	4	4	4	6	4	4	4	10	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	8	6	6	6	6	7
Q1	7	7	8	8	6	6	7	7	7	8	8	7	7	8	7	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	8	8	7	7	7	7	9	9	7	7	7	7	6	6	8
Q2	4	4	4	4	4	4	4	5	4	1	4	7	4	4	4	7	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	2	4	4	4	3	4	4	8	5	6	6	2
Q3	5	5	6	6	1	1	6	7	6	5	6	5	5	5	5	7	6	6	5	5	5	6	6	6	6	6	5	5	5	5	6	6	6	9	6	6	7	9	9	6
Q4	6	6	5	5	4	4	5	5	7	5	5	6	6	5	6	5	5	5	5	5	6	5	6	5	5	6	5	6	6	5	5	6	6	5	5	5	5	5	5	6

व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में कफ प्रकृति प्रधान छात्राओं द्वारा प्राप्त STEN SCORE

N=40

Factor	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
A	3	4	4	2	4	3	1	4	4	4	4	3	4	4	4	4	4	3	1	2	4	4	3	4	4	1	4	1	2	2	4	3	4	4	4	3	2	4	1	3
B	5	6	5	5	5	5	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	3	5	5	6	5	5	5	4	6	3	5	6	1	8	4	1	4	3	1	8	6	5	5	5
C	4	4	1	4	4	4	1	4	4	4	3	3	4	4	3	4	2	2	1	2	4	4	4	1	6	1	5	1	3	4	3	6	5	6	5	4	1	4	1	4
E	4	4	4	4	4	3	4	4	4	4	4	4	4	4	4	1	3	2	4	3	4	4	4	4	4	4	7	3	4	4	6	5	3	5	5	4	3	4	2	4
F	4	4	4	2	4	1	1	3	1	3	4	4	1	3	3	5	1	1	3	2	2	3	3	3	1	1	4	1	2	3	3	3	3	3	4	3	1	4	1	3
G	5	5	6	6	6	6	5	5	6	6	6	8	6	6	5	6	5	6	5	5	6	5	6	6	6	5	6	5	5	5	5	6	5	4	5	8	5	6	5	5
H	6	6	5	5	6	3	5	4	6	6	6	5	6	6	6	5	5	6	5	6	6	5	6	5	6	5	6	5	5	5	4	5	4	5	7	5	6	6	6	6
I	4	4	3	3	3	3	1	1	5	7	2	3	2	4	3	2	1	2	5	1	1	2	1	4	3	1	2	1	1	4	2	5	3	1	3	4	1	4	1	2
L	8	7	7	7	10	7	7	7	7	7	9	8	8	7	7	7	7	7	8	7	8	9	8	9	7	7	8	7	7	8	9	9	7	6	8	8	9	7	7	7
M	4	4	4	2	1	4	1	4	1	4	4	4	4	4	4	4	4	2	7	1	4	2	4	8	2	2	5	2	2	4	5	5	3	5	4	4	1	4	1	4
N	7	7	7	7	9	7	7	7	7	8	7	7	7	7	5	8	7	7	6	7	7	7	4	7	7	7	7	7	10	7	5	9	4	3	6	7	7	9	8	7
O	6	6	6	6	6	6	5	6	6	5	6	5	5	5	6	5	5	5	5	5	5	6	6	6	6	5	6	6	5	5	6	4	5	7	7	5	5	6	5	6
Q1	7	9	7	7	7	10	7	7	7	5	7	7	8	7	8	7	8	10	7	7	8	7	7	10	3	7	7	8	7	4	9	9	7	5	8	4	8	8	8	7
Q2	5	6	5	6	6	3	5	6	6	6	6	6	6	6	6	5	6	6	7	7	5	4	6	5	6	5	8	5	6	3	7	5	6	6	7	6	5	6	5	5
Q3	8	7	7	7	7	6	7	7	7	7	7	7	7	8	7	7	7	9	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	8	8	3	6	5	4	6	8	7	7	7	7
Q4	6	5	5	5	6	5	5	7	5	6	8	5	5	5	7	5	5	5	6	5	5	5	5	7	5	5	6	5	5	5	5	4	7	3	5	5	5	5	5	7

व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में वात प्रकृति प्रधान छात्रों द्वारा प्राप्त STEN SCORE

N=40

Factor	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
A	2	1	3	5	4	2	9	5	5	4	3	4	8	7	2	4	3	2	1	3	5	4	1	5	1	2	5	7	4	3	7	2	5	4	7	8	8	7	2	3
B	1	1	3	5	4	1	1	2	4	4	2	6	1	3	3	2	1	1	2	4	3	4	1	3	1	2	3	1	5	2	4	2	4	1	4	3	4	5	5	2
C	1	1	2	3	4	1	1	4	4	2	3	2	1	4	4	3	2	3	3	1	2	1	4	3	4	1	4	1	5	2	4	1	2	4	4	2	8	1	4	3
E	3	8	4	3	4	1	2	3	4	4	4	7	2	5	4	3	3	2	3	4	4	1	3	2	4	4	3	1	5	2	4	2	1	3	3	3	1	1	2	4
F	3	2	3	1	4	1	2	1	5	3	3	3	4	4	4	4	3	2	3	1	3	4	1	4	2	2	2	2	4	2	1	1	3	2	4	2	3	1	2	1
G	4	4	5	4	6	6	3	1	5	4	5	5	5	6	5	5	4	3	4	6	4	4	5	5	2	5	4	4	5	3	8	5	8	5	5	6	1	5	3	5
H	5	6	5	6	6	6	5	3	6	5	6	7	5	6	6	6	5	5	6	6	6	4	5	4	5	6	5	5	5	5	6	5	6	6	6	5	5	5	6	4
I	5	7	5	4	6	4	7	5	6	8	2	8	6	5	6	7	5	6	6	6	4	6	5	4	6	6	6	5	5	6	5	6	6	5	5	8	6	6	6	3
L	9	5	7	10	10	7	8	6	6	7	10	9	6	10	10	6	10	7	10	7	10	8	7	7	7	8	10	10	7	10	10	10	6	7	7	6	10	9	9	10
M	5	6	6	5	6	5	5	5	5	6	5	4	6	6	6	5	5	6	5	6	6	5	6	6	5	6	5	6	5	5	6	6	5	4	5	5	5	6	6	6
N	6	9	9	10	10	10	10	7	8	10	10	6	9	10	10	10	10	7	7	10	8	8	7	6	10	10	9	10	5	9	10	7	7	7	7	9	10	10	9	9
O	5	6	5	4	6	5	5	5	5	5	5	9	6	5	5	7	5	6	5	5	5	5	9	9	5	5	5	6	5	5	6	4	5	5	5	5	5	4	4	6
Q1	5	5	7	6	7	10	7	7	7	7	9	6	7	10	9	4	9	7	7	7	10	8	7	7	7	5	5	5	4	5	7	5	7	7	7	10	7	7	5	5
Q2	5	6	6	6	4	4	5	6	6	5	6	7	6	5	5	5	6	6	6	6	6	5	6	6	6	5	6	5	5	6	5	6	6	6	6	5	6	5	5	5
Q3	7	7	8	8	9	7	7	7	7	7	9	6	5	8	9	7	7	7	7	7	8	8	7	7	7	8	7	4	6	7	7	7	7	7	7	9	7	10	7	9
Q4	6	8	8	6	10	6	7	7	7	10	10	7	7	10	10	7	8	7	8	7	7	8	7	8	7	7	7	7	7	7	7	8	6	7	10	7	10	10	8	10

व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में पित्त प्रकृति प्रधान छात्रों द्वारा प्राप्त STEN SCORE

N=40

Factor	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
A	6	7	5	5	5	4	4	7	6	5	5	5	5	4	3	5	5	7	6	5	5	6	6	6	5	5	5	6	7	5	5	3	4	5	5	2	5	6	7	5
B	5	4	4	5	7	6	4	8	4	6	5	2	3	3	1	4	2	3	10	3	3	4	1	1	4	1	4	3	3	3	1	5	5	4	3	4	1	3	3	9
C	4	4	3	2	3	2	1	5	1	4	5	3	4	4	1	1	1	4	1	1	2	4	1	1	1	1	1	5	2	3	1	4	4	3	1	4	1	3	1	1
E	3	4	2	4	1	3	1	5	3	5	6		1	5	1	3	6	2	1	1	1	3	4	5	5	1	4	6	6	1	4	1	5	7	4	2	4	6	1	6
F	1	4	2	1	1	3	4	4	2	4	4	1	4	1	4	1	1	1	2	2	1	1	3	1	1	1	1	5	1	2	1	3	5	3	2	4	2	3	1	3
G	8	3	8	8	10	8	8	7	9	7	9	9	10	8	5	9	7	8	8	6	8	8	8	8	8	8	9	7	8	8	9	9	6	8	8	5	9	9	7	6
H	5	5	5	5	6	6	6	7	5	6	6	5	6	6	4	5	6	5	6	5	5	5	6	5	6	5	5	5	6	5	5	5	5	6	5	4	6	5	6	8
I	7	6	8	8	9	8	8	10	8	7	10	10	10	7	6	10	7	10	7	7	7	7	7	7	7	7	10	10	6	9	7	8	6	7	10	6	10	7	7	7
L	10	5	10	8	9	8	9	10	1	10	7	7	10	8	9	7	7	7	6	8	1	10	7	10	10	7	10	7	5	9	8	6	7	10	10	7	10	7	6	10
M	4	6	3	2	2	2	2	3	4	1	3	2	4	1	2	4	3	6	3	1	4	3	1	1	3	1	3	1	5	1	2	2	1	4	2	3	3	1	2	7
N	9	6	8	10	9	9	9	8	8	10	8	5	10	8	9	8	9	7	8	9	10	8	9	10	9	8	10	8	5	10	9	8	9	10	10	9	8	9	8	10
O	8	7	6	10	10	10	10	10	10	7	6	7	10	7	7	10	7	10	7	7	7	7	7	7	7	7	10	7	7	10	6	10	10	10	8	7	7	10	7	6
Q1	8	3	7	5	10	10	10	8	9	7		7	9	10	10	10	8	8	7	8	7	8	7	9	8	7	5	1	2	7	9	5	9	7	7	9	7	7	9	9
Q2	6	4	6	5	6	6	6	6	3	6	6	7	5	6	5	5	6	5	6	7	4	5	3	6	6	5	5	6	2	6	5	5	6	6	6	6	6	6	6	8
Q3	4	4	1	1	4	1	4	1	4	1	4	2	3	2	1	1	1	4	1	4	1	1	7	4	3	2	1	4	1	4	3	1	1	4	4	1	4	3	1	9
Q4	5	7	6	5	6	6	6	6	6	6	5	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	6	4	5	5	5	3	7	6	2	5	4	5	5	6	5	3	5	4

व्यक्तित्व के सोलह कारक मापनी में कफ प्रकृति प्रधान छात्रों द्वारा प्राप्त STEN SCORE

N=40

Factor	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
A	5	6	6	5	6	5	5	5	7	5	6	5	4	5	8	5	5	5	6	6	5	5	7	4	5	5	6	5	4	7	6	5	5	5	5	5	3	5	2	5
B	7	9	8	10	10	7	2	10	10	7	10	7	5	8	4	8	10	7	8	10	7	7	9	4	9	7	3	7	9	8	10	7	8	8	9	7	1	8	7	9
C	3	1	3	1	4	1	4	1	4	3	5	1	2	3	6	4	1	4	1	4	1	4	5	1	1	3	4	3	2	4	5	3	4	4	1	1	2	1	3	1
E	5	6	5	5	6	5	5	6	6	5	6	5	5	5	6	6	6	5	5	6	5	6	5	5	4	5	2	5	4	5	6	5	5	5	5	5	6	5	5	5
F	1	2	3	4	4	1	4	2	4	3	1	1	3	4	4	4	4	4	1	4	1	1	1	1	1	1	4	3	2	3	4	4	1	3	1	1	2	1	4	1
G	5	6	5	6	6	5	5	5	6	5	5	5	5	6	5	5	5	6	6	7	5	6	5	5	5	6	6	5	5	6	5	6	6	5	5	5	5	5	5	6
H	7	7	7	10	10	7	7	8	9	7	7	7	7	10	9	7	7	10	7	10	7	7	7	5	9	10	7	7	7	8	7	7	9	7	9	9	7	7	7	10
I	5	5	6	6	7	5	5	5	5	6	6	5	6	6	6	6	6	6	5	6	5	5	5	5	6	5	7	6	5	5	5	5	6	6	5	5	5	6	5	5
L	6	6	7	7	10	7	7	8	10	7	9	10	10	7	7	7	7	7	7	10	7	7	7	7	8	7	8	7	7	7	8	7	7	7	7	7	9	8	9	7
M	5	5	5	6	6	5	6	6	5	5	6	6	6	6	5	5	6	6	5	7	6	5	5	5	5	6	3	6	5	6	5	6	5	5	6	6	6	5	6	6
N	5	6	7	9	10	7	10	9	8	8	9	10	9	8	9	10	10	10	8	10	10	10	8	8	8	10	5	7	7	10	10	7	7	9	10	10	10	9	10	8
O	6	5	6	6	6	5	5	6	6	5	5	6	5	3	6	6	5	5	5	6	5	5	5	5	5	5	6	6	5	6	4	6	6	6	6	6	5	5	6	5
Q1	7	7	7	7	10	7	7	10	7	8	7	10	7	10	8	7	10	7	7	10	9	8	7	7	7	9	7	8	7	7	7	9	9	8	7	7	7	7	9	7
Q2	7	8	7	7	10	7	9	9	7	10	8	10	8	8	10	7	10	7	8	9	10	7	8	7	7	10	7	9	7	8	7	7	7	7	7	7	8	6	9	10
Q3	7	7	7	7	10	7	7	9	7	9	7	9	7	6	10	9	7	10	8	7	9	7	9	7	7	10	7	7	7	8	7	7	9	7	7	7	7	6	9	10
Q4	2	4	4	4	4	1	1	4	4	4	4	4	1	4	8	7	1	4	1	1	3	3	2	1	3	4	6	9	1	3	3	4	2	3	1	1	3	4	4	4

जय गुरुदेव

वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली



निर्देशक

डॉ. श्री आर.पी. श्रीवास्तव (मनोविज्ञान)

वैद्यरत्न श्री एम.डी. शास्त्री (आयुर्वेद)

शोधकर्ता

श्रीमती ऋतु कौशल

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर १९९९

सामान्य - परिचय

नाम : (Name) .... आयु : (Age) ....

लिंग : (Sex) .... शिक्षाः (Education) ....

व्यवसाय : (Profession) .... विवाहित : (Married) ....

भाई : (Brothers) .... बहिन : (Sister) ....

संस्कृति : (Culture) .... पता : (Address) ....

निर्देश :-

१. इस कथनावली में ८४ कथन हैं जो आपसे आयुर्वेद के अनुसार आपकी प्रकृति एवं व्यक्तित्व की जानकारी के लिये पूछे जा रहे हैं। प्रकृति निर्धारण के पश्चात मनोवैज्ञानिक परीक्षण द्वारा आपके व्यक्तित्व का निर्धारण होगा।

२. प्रत्येक कथन के तीन संभावित उत्तर अ, ब एवं स हैं। कथन व उनके उत्तरों को पढ़ने के बाद जो भी उत्तर आपके ऊपर पूरी तरह लागू होता हो उस पर आपको (✓) सही का निशान लगाना है।

३. यदि आप अपने व्यक्तित्व के बारे में सही जानकारी चाहते हैं तो कथनों का जवाब भी निःसंकोच एवं सही देना है। कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं है। आपके उत्तरों को गुप्त रखा जावेगा इसका उपयोग केवल अनुसंधान कार्य के लिये किया जावेगा।

४. समय सीमा नहीं है फिर भी पूरा की कोशिश कीजिये। कोई भी कथन छोड़ना नहीं है।

उदा. - जैसे कथन है।

1. आपको ज्यादा पसंद है -
   ✓अ - मीठा, खट्टा, नमकीन
   ब - मीठा, कसैला, चिरपिरा
   स - कड़वा, कसैला, चिरपिरा

मान लीजिये आपको मीठा-खट्टा नमकीन ज्यादा पसंद है तो आप अ में (✓) सही का निशान लगायेंगे। ऐसा ही निशान प्रत्येक कथन के जवाब में लगाना है।

जय गुरुदेव

वात, पित्त एवं कफ प्रकृति निर्धारण प्रश्नावली



निर्देशक

डॉ. श्री आर.पी. श्रीवास्तव (मनोविज्ञान)

वैद्यरत्न श्री एम.डी. शास्त्री (आयुर्वेद)

शोधकर्ता

श्रीमती ऋतु कौशल

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर १९९९

सामान्य - परिचय

नाम : (Name) .... आयु : (Age) ....

लिंग : (Sex) .... शिक्षाः (Education) ....

व्यवसाय : (Profession)............................ विवाहित : (Married) ....

भाई : (Brothers) .... बहिन : (Sister) ....

संस्कृति : (Culture) .... पता : (Address) ....

निर्देश :-

१. इस कथनावली में ८४ कथन हैं जो आपसे आयुर्वेद के अनुसार आपकी प्रकृति एवं व्यक्तित्व की जानकारी के लिये पूछे जा रहे हैं। प्रकृति निर्धारण के पश्चात मनोवैज्ञानिक परीक्षण द्वारा आपके व्यक्तित्व का निर्धारण होगा।

२. प्रत्येक कथन के तीन संभावित उत्तर अ, ब एवं स हैं। कथन व उनके उत्तरों को पढ़ने के बाद जो भी उत्तर आपके ऊपर पूरी तरह लागू होता हो उस पर आपको (✓) सही का निशान लगाना है।

३. यदि आप अपने व्यक्तित्व के बारे में सही जानकारी चाहते हैं तो कथनों का जवाब भी निःसंकोच एवं सही देना है। कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं है। आपके उत्तरों को गुप्त रखा जावेगा इसका उपयोग केवल अनुसंधान कार्य के लिये किया जावेगा।

४. समय सीमा नहीं है फिर भी पूरा की कोशिश कीजिये। कोई भी कथन छोड़ना नहीं है।

उदा. - जैसे कथन है।

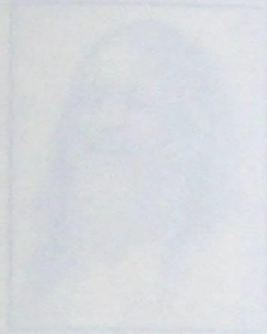
1. आपको ज्यादा पसंद है -

✓अ - मीठा, खट्टा, नमकीन

ब - मीठा, कसैला, चिरपिरा

स - कड़वा, कसैला, चिरपिरा

मान लीजिये आपको मीठा-खट्टा नमकीन ज्यादा पसंद है तो आप अ में (✓) सही का निशान लगायेगे। ऐसा ही निशान प्रत्येक कथन के जवाब में लगाना है।



कथन-प्रपत्र

1. आपका रंग है -
(अ) सांवला , गेहूँआ, दबा हुआ गोरा, काला
(ब) गोरा(पीलापन लिये हुये)
(स) गोरा(सफेद्दी लिये हुये)
2. आपकी देह आकृति है -
(अ) अपरिपक्व, लंबा, दुबला, पतला, कमजोर, असुंदर
(ब) परिपक्व, सामान्य, अधिक दुबला, सामान्य बली सुंदर
(स) परिपक्व, मोटा, अधिक सुंदर, मांसल
3. आप शारीरिक रुप से है -
(अ) कठोर
(ब) मुलायम
(स) चिकने
4. आपके नेत्र है -
(अ) कम सफेद्द, रुखे, असुंदर, गोल से, अंदर की तरफ
(ब) पीलापन लिये हुये, सामान्य, बाहर की तरफ
(स) सफेद्द सुंदर बड़े
5. आपके केश हैं -
(अ) छोटे कड़े व फैले हुये ये
(ब) सामाय, अधिक छोटे व चिकने पीले
(स) अधिक घने व नीले से रंग के
6. आपके पेट का आकार है -
(अ) कुछ बड़ा स्थूल सा
(ब) सामान्य शरीर के हिसाब से
(स) सुडौल भरा हुआ सा
7. आपकी त्वचा है -
(अ) रुखी, ठंड सहन करने वाली
(ब) लिबलिबी पीली सी, गर्म सहन करने वाली
(स) चिकनी सामान्य, ठंडा गर्म दोनों सहन करने वाली
8. आपका वजन आपके शरीर की लंबाई के अनुसार है
(अ) कम
(ब) अधिक
(स) सामान्य
9. आपकी देह रहती है -
(अ) ठंडी सी
(ब) गर्म सी
(स) सामान्य
10. आपको नींद आती है(8 घंटे से) -
(अ) कम
(ब) अधिक
(स) सामान्य
11. आपके वार्तालाप का ढंग है -
(अ) अधिक व उटपटांग
(ब) कम व सामान्य
(स) धीरे व अच्छा
12. आपका आहार होता है(सामान्य से)
(अ) कम
(ब) अधिक
(स) सामान्य
13. आपके स्वभाव में शामिल है
(अ) चंचलता
(ब) जरा में उत्तेजित होना
(स) उपरोक्त दोनों नहीं
14. आपकी आवाज है अन्य लोगों के अनुसार -
(अ) कठोर सी
(ब) कमजोर सी
(स) कोमल सी
15. आपकी कार्य करने की गति है -
(अ) धीमी
(ब) तेज
(स) सामान्य
16. आप व्यवहारिक है -
(अ) कम
(ब) सामान्य
(स) अत्याधिक
17. आपको पसीना आता है -
(अ) सामान्य
(ब) अधिक
(स) कम
18. आपका शारीरिक बल है -
(अ) कम
(ब) मध्यम
(स) उत्तम
19. आपका पेट रहता है - (अंदर से)
(अ) ठंडा
(ब) गर्म
(स) सामान्य
20. आप सह सकते हैं -
(अ) शीत
(ब) गर्म
(स) सामान्य
21. आपकी याददाश्त है -

(अ) कम
(ब) मध्यम
(स) तीक्ष्ण

22. दैनिक कार्यो को करने में आप हैं -
(अ) आलसी
(ब) स्फूर्तिवान
(स) सामान्य

23. किसी के अहसान के प्रति आप आभारी होते हैं -
(अ) कम आभारी
(ब) सामान्य व्यवहार
(स) अत्यधिक आभारी

24. किसी विषय को ग्रहण करने की आप में शक्ति है -
(अ) कमजोर(देर से ग्रहण करना)
(ब) सामान्य(सामान्य रुप से ग्रहण कर लेते हैं)
(स) तीक्ष्ण (जल्दी व तुरंत ग्रहण करते हैं)

25. आप हैं -
(अ) असहनशील
(ब) सामान्य अपनी बात ऊंची रखने वाले
(स) सहनशील

26. किसी के द्वारा समझाई गई बात आप समझ लेते हैं
(अ) जल्दी
(ब) सामान्य
(स) विलंब से

27. लड़ाई-झगड़े के दौरान आप -
(अ) शीघ्र शांत हो जाते हैं
(ब) क्लेश सहन करते हैं
(स) क्लेश करते रहते हैं

28. आपके स्वभाव में शामिल है -
(अ) किसी बात से हड़बड़ा जाना
(ब) सामान्य व्यवहार करते हैं
(स) स्थिर शांत सा रहना

29. आपके अंदर किसी कार्य को करने के प्रति उत्साह होता है -
(अ) सामान्य (कम सा)
(ब) ज्यादा
(स) अत्यधिक उत्साहित रहते हैं

30. आप किसी डरावनी परिस्थिति में भयभीत होते हैं -
(अ) अधिक
(ब) सामान्य रुप से
(स) निर्भय

31. आप किसी दुरवद समाचार को सुनकर शोक(दुरव) करते हैं -
(अ) अधिक
(ब) सामान्य
(स) बहुत कम

32. आप आकांक्षा रखते हैं (र्स्पश प्रियता की)
(अ) चिकनी त्वचा की
(ब) ठंडी त्वचा की
(स) रुखी त्वचा की(सामान्य)

33. आपको पसंद है -
(अ) मीठा, खट्टा, नमकीन
(ब) मीठा, कसैला, चटपटा
(स) कड़वा, कसैला, चटपटा

34. आपको असहनीय होता है -
(अ) ठंडा मौसम
(ब) गर्म मौसम
(स) उपरोक्त दोनों

35. आपको अत्यधिक अरुचि है -
(अ) ठंडे पदार्थो से
(ब) गर्म पदार्थो से
(स) अत्यधिक ठंडे पदार्थो से

36. आपकी रुचि है -
(अ) इतिहास में
(ब) शास्त्रों में
(स) सामान्यतः सभी विषयों में

37. खाली समय में आप पसंद करेंगे -
(अ) शिकार
(ब) फूलों के बीच में रहना
(स) सोना(निंद्रा)

38. आपको सबसे अच्छा मौसम लगता है -
(अ) गर्मी का
(ब) ठंड का
(स) बरसात का

39. आप किसी से मित्रता रखते हैं तो -
(अ) मित्रता हर परिस्थिति में निभाते हैं
(ब) सामान्य व्यवहार रखते हैं
(स) किसी कारण से अचानक बैरी हो जाते हैं

40. आप कोई कार्य करते हैं -
(अ) आपकी इच्छा से
(ब) दूसरे की इच्छा से पर आपको कोई रोक नहीं सकता
(स) विचार करने के बाद ही कार्य करते हैं

41. आपके मित्र बनते हैं -
(अ) कम समय के लिये
(ब) सामान्य रुप से मित्र बनते रहते हैं
(स) लंबे समय के लिये

42. समूह में बात बिगड़ जाने पर आप बोलते हैं -
(अ) जोर से असंबंद्ध उटपटांग
(ब) सामान्य तरीके से
(स) कम बोलते है व सुनते अधिक हैं

43. गुस्से में आप -
(अ) दोषपूर्ण व्यवहार करते हैं

(ब) उग्र हो जाते हैं

(स) कठोर वचन बोलते हैं

44. मित्रों के साथ या अन्य किसी समूह में आप बोलते हैं -

(अ) देर से

(ब) सबके साथ बराबरी से बोलते हैं

(स) कम बोलते है या नहीं बोलते हैं

45. आप है -

(अ) नास्तिक(पूजा पाठ न करने वाला)

(ब) आस्तिक(पूजा पाठ करने वाला)

(स) गुरुभक्त

46. आप भोजन करते हैं -

(अ) अधिक व समय पर

(ब) अत्यधिक बहुत ज्यादा बेसमय

(स) कम परंतु समय पर

47. किसी भी कार्य को करने के प्रति आपका इरादा होता हैं -

(अ) अदृढ़ प्रकार का

(ब) सामान्य प्रकार का

(स) दृढ़ प्रकार

48. आप हैं -

(अ) सज्जन

(ब) दयालु

(स) वचन का पालन करने वाले

49. आप में निम्न किस गुण की प्रधानता है -

(अ) हंसमुख

(ब) क्रोध

(स) शर्मीलापन

50. आपको लगता है कि आप हैं -

(अ) स्त्रियों को अप्रिय

(ब) स्त्रियों को अत्यधिक अप्रिय

(स) स्त्रियों को प्रिय

51. आप अक्सर बोलते हैं -

(अ) झूठ

(ब) पवित्र बातें

(स) सत्य

52. आपकी प्रवृत्ति है -

(अ) घुमक्कड़

(ब) सामान्य घूमने फिरने की

(स) कम घूमने की

53. आपके स्वभाव में यह शामिल है -

(अ) रुखापन देर से क्षमा करना

(ब) गुस्सा न होना

(स) तुरंत शांत होकर क्षमा कर देना

54. आपको लगता है कि आप हैं -

(अ) झगड़ालू

(ब) शांत किस्म के

(स) बैर को गुप्त रखने वाले

55. दूसरों के लड़ाई झगड़े निपटाने में -

(अ) आप कुछ नहीं बोलते सामान्य रूप से देखते रहते हैं

(ब) वीरता से आगे आकर झगड़ा शांत कराते हैं

(स) दब्बू किस्म के है चुपचाप वहां से चले जाते हैं

56. आप में है -

(अ) पराक्रम की कमी

(ब) सामान्य पराक्रम

(स) अत्यधिक पराक्रम

57. आप धर्म को मानते हैं -

(अ) ज्यादा

(ब) सामान्य

(स) कम

58. आप देखने में -

(अ) शांत पर अंदर से उग्र स्वभाव वाले हैं

(ब) चंचल पर अंदर से डरपोक हैं

(स) स्थिर प्रकृति के परंतु बदला लेने वाले

59. बिगड़ी परिस्थिति में आप -

(अ) सामान्य कथन बोलते हैं

(ब) कड़वा बोलते हैं

(स) स्पष्ट एवं कड़वा सच बोलते हैं

60. किसी के दुख के प्रति आप -

(अ) सामान्य व्यवहार रखते हैं

(ब) कोई दुख नहीं होता(कठोर)

(स) अधिक दुखी हो जाते हैं (नम्र)

61. आप आते हैं -

(अ) कर्मठ इंसान की श्रेणी में

(ब) सामान्य कार्य करने वाले की श्रेणी में

(स) आलसी की श्रेणी में

62. आपके अनुसार आप में ये भी शामिल है जो आप पसंद या नापसंद करते हैं -

(अ) सरलता

(ब) तीखापन (स्वभाव)

(स) कुटिलता

63. दूसरों के अनुसार आपके अंदर अक्सर ये विद्यमान रहता है -

(अ) संतोष

(ब) खिन्नता

(स) धूर्तता

64. आपकी नींद है -

(अ) सामान्य

(ब) अल्प(कम समय के लिये आती है)

(स) अधिक

65. आपको लगता है कि आपकी वाणी में है -

(अ) मृदुता
(ब) तीखापन
(स) सामान्य वाणी है

66. ऐशो आराम आप चाहते हैं -
(अ) बिल्कुल कम
(ब) सामान्य
(स) अधिक

67. आप हैं -
(अ) स्वाभिमानी (अधिक)
(ब) सामान्य स्वाभिमानी
(स) स्वाभिमानी की कमी

68. अधिक मेहनत का काम आप करते हैं -
(अ) कम
(ब) अधिक
(स) सामान्य

69. ईश्वर आराधना में आपका विश्वास है -
(अ) अधिक
(ब) सामान्य (कम)
(स) बिल्कुल नहीं

70. आप हैं -
(अ) बुद्धिमान(अधिक)
(ब) सामान्य बुद्धिमान
(स) दुर्बुद्धि(कम बुद्धिमान)

71. आपके गुणों-अवगुणों में शामिल है
(अ) सत्यता
(ब) झूठापन
(स) कुंठित रहना या क्लेश करना

72. मूक पशुओं की हत्या के बारे में अपके विचार हैं -
(अ) अहिसंक
(ब) सामान्य
(स) हिसंक

73. किसी कार्य के संपादन में आप -
(अ) सूक्ष्म जानकारी एकत्र करते हैं
(ब) सामान्य बुद्धि का प्रयोग करते हैं
(स) जल्दबाजी में अविचारपूर्वक कार्य करते हैं

74. धर्म के प्रति आपकी आस्था है -
(अ) अत्यधिक
(ब) प्रदर्शनशील
(स) कम या बिल्कुल नहीं

75. आपके अनुसार आप-
(अ) सभी क्षेत्रों व विषयों के ज्ञाता
(ब) सामान्य ज्ञान रखते हैं
(स) अज्ञानी या कम ज्ञानी

76. जीवन के प्रति आपका लगाव है -
(अ) कम
(ब) सामान्य
(स) अधिक

77. आप अक्सर रहते हैं -
(अ) शांत
(ब) दुखी
(स) कुंठित

78. आपको अन्य लोग कहते हैं -
(अ) स्थिर चित्त
(ब) सामान्य
(स) अस्थिरचित्त

79. आपकी प्रकृति है -
(अ) कफ
(ब) वात
(स) पित्त

80. अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में आप करते हैं -
(अ) सामान्य परिश्रम
(ब) अत्यधिक परिश्रम
(स) परिश्रम से डरते हैं

81. आपको निम्न में से कौन सी व्याधियाँ ज्यादा होती हैं
(अ) हड्डी व शरीर दर्द से संबंधित
(ब) पेट की समस्यायें
(स) सर्दी, खांसी सिरदर्द से संबंधित

82. आप महत्वाकांक्षा रखते हैं -
(अ) अधिक ऊपर उठने की
(ब) सामान्य जीवन बिताने की
(स) कुछ खास सोचते नहीं हैं

83. आप समाज के लोगों से व्यवहार रखते हैं -
(अ) सामान्य
(ब) अत्यधिक मेलमिलाप
(स) बिल्कुल नहीं या कम

84. आप पराधीन होकर रह सकते हैं -
(अ) कम
(ब) अपने स्वभाव की तुलना में कुछ ज्यादा समझौता करके
(स) सामान्य

16PF

FORM A
[IPAT'S 1967-68 Edition
Revised 1978 Printing]

VSJ 1970 Hindi Edition

Prepared by : S.D. KAPOOR, Ph.D.

आपको क्या करना है : इस पुस्तिका में कुछ प्रश्न ऐसे हैं जिनसे पता चलेगा कि आपका मनोभाव कैसा है और आपकी पसंद किस तरह की है। इनके कोई 'सही' या 'गलत' उत्तर नहीं है, क्योंकि हर आदमी को अपना-अपना दृष्टिकोण रखने का अधिकार है। इस जांच के जरिये सबसे अच्छा सुझाव पाने के लिये आपको चाहिये कि सभी प्रश्नों का उत्तर ठीक-ठीक और सच्चाई के साथ दें।अगरआपको अलग से एक 'उत्तर पत्र' नहीं दिया गया हो तो इस पुस्तिका को उलटिये और आखिरी पन्ने पर दिये 'उत्तर-पत्र' को फाड़कर अलग कर लीजिये।

अपना नाम और अन्य जानकारी की बातें 'उत्तर-पत्र' पर दी हुई ऊपर की लाइनों पर लिख दीजिये।

सबसे पहले आपको नीचे लिखे नमूने के चार प्रश्नों का उत्तर देना चाहिये जिससे आपको पता चल जाये कि जांच शुरु करने के पहले आपको कुछ प्रश्न पूछना तो नहीं है। वैसे आपको सभी प्रश्नों को तो इस पुस्तिका से पढ़ना है, पर उनके उत्तर केवल 'उत्तर-पत्र' में देना है(जिससे नंबर का प्रश्न पुस्तिका से पढ़ना है, [illegible] उत्तर केवल हर एक प्रश्न के तीन संभावित उत्तर दिये गये है। नीचे लिखे उदाहरणों को पढ़िये और अपने उत्तरों को 'उत्तर-पत्र' के ऊपरी भाग पर, जहां 'उदाहरण' छपां है, गुणा या क्रास (X) के निशान से [illegible] (box) में भरते जाइये। अगर आप अपना उत्तर 'अ' वाले उत्तर के लिये चुनते है तो बायें वाले खाने में (box के अंदर) निशान लगाइये। अगर आपका उत्तर 'ब' वाला है तो बीच वाले खाने में निशान लगाइये। इसी तरह अगर आपका उत्तर 'स' वाला है तो दाहिने वाले खाने के अंदर निशान लगा दीजिये।

उदाहरण :

1. मैं टीम वाले खेलों को देखना पसंद करता हूँ।
   a. हां b. कभी-कभी c. नहीं
2. मैं ऐसे लोगों को पसंद करता हूँ, जो :
   a गंभीर हो,
   b. दोनों के बीच के हों
   c. जल्दी दोस्त बना लेते हों।
3. [illegible] (खुशी) नहीं ला सकता।
   a. हां (सच) b. दोनों के बीच का c. नहीं(गलत)
4. औरत का बच्चे से वही संबंध है जो भेड़ का :
   a. मेमना b. कुत्ता c. लड़के से है।

आखिरी उदाहरण में एक उत्तर सही है - मेमना। लेकिन, इस तरह के तर्क वाले प्रश्न इस पुस्तिका में बहुत कम है। अब अगर कोई बात आपके समझ में नहीं आई हो तो अभी पूछ लीजिये। क्योंकि, परीक्षक अब थोड़ी ही देर में आपको पन्ना उलटने के लिये और उत्तर देना शुरु करने के लिये कहेंगे।

प्रश्नों का उत्तर देते समय नीचे लिखी इन चारों बातों को अपने मन में रखें :

1. आपको किसी प्रश्न पर ज्यादा सोच-विचार करने की जरुरत नहीं है। जो सबसे पहला उत्तर मन में आये उसमें ही निशान लगा दें। यह सच है कि प्रश्न बहुत छोटे हैं और आपको उनसे सारी जानकारी नहीं मिल सकती जिन्हें आप कभी-कभी जानना चाहेंगे। उदाहरण के लिये, ऊपर के पहले प्रश्न में 'टीम वाले खेलों' के बारे में पूछा गया है जबकि ऐसा भी हो सकता है कि आप फुटबाल को बास्केटबाल से ज्यादा पसंद करते हों। लेकिन आपको 'औसत या आमतौर के खेल के लिये' उत्तर देना है या उसी तरह की मिलती-जुलती एक आम या औसत अवस्था का ख्याल करके उत्तर देना है। जहां तक हो सके, आप अपना सब से ठीक उत्तर दें। उत्तर देने की रफ्तार एक मिनट में पांच या छह प्रश्नों से कम नहीं होना चाहिये। ज्यादा से ज्यादा चालीस मिनट में सभी प्रश्नों का उत्तर दे देना चाहिये।
2. बीच वाले 'अनिश्चित' उत्तरों का सहारा लेने की कोशिश मत करिये। इन पर तभी निशान लगायें जब किनारे वाले उत्तरों को देना आपके लिये सचमुच ही असंभव हो - शायद ऐसा चार या पांच प्रश्नों में एक बार हो।
3. इस बात का पक्का ख्याल रखें कि कोई प्रश्न छूटने न पाये, और जैसे भी हो सभी प्रश्नों का उत्तर दें। ऐसा लग सकता है कि कुछ प्रश्न आप पर अच्छी तरह लागू न होते हों पर आप अपने को उस परिस्थिति में डाल कर अपना उत्तर दें। आपको कुछ प्रश्न अपने निजी मामलों से भी संबंधित लगेंगे, पर याद रखिये कि आपके उत्तर-पत्रों को बिल्कुल गुप्त रखा जाता है और उनको खास तौर से बनाई हुई कुंजियों की मदद के बगैर नहीं जाना जा सकता। साथ ही एक-एक प्रश्न के उत्तर की जांच अलग-अलग नहीं की जाती है। इसलिये आप बेझिझक अपने मन का उत्तर दें।
4. जो उत्तर आपके लिये सही हैं वही उत्तर सच्चाई और ईमानदारी से दें। परीक्षक पर अच्छा प्रभाव डालने के लिये 'यह कहना ठीक होगा' ऐसा सोचकर निशान न लगायें।

जब तक कहा ना जाय कृपया पन्ना मत उलटिये

16PF

FORM A

[IPAT'S 1967-68 Edition
Revised 1978 Printing]

THE PSYCHO CENTRE

VSJ 1970 Hindi Edition

Prepared by : S.D. KAPOOR, Ph.D.

आपको क्या करना है : इस पुस्तिका में कुछ प्रश्न ऐसे हैं जिनसे पता चलेगा कि आपका मनोभाव कैसा है और आपकी पसंद किस तरह की है। इनके कोई 'सही' या 'गलत' उत्तर नहीं है, क्योंकि हर आदमी को अपना-अपना दृष्टिकोण रखने का अधिकार है। इस जांच के जरिये सबसे अच्छा सुझाव पाने के लिये आपको चाहिये कि सभी प्रश्नों का उत्तर ठीक-ठीक और सच्चाई के साथ दें।अगरआपको अलग से एक 'उत्तर-पत्र' नहीं दिया गया हो तो इस पुस्तिका को उलटिये और आखिरी पन्ने पर दिये 'उत्तर-पत्र' को फाड़कर अलग कर लीजिये।

अपना नाम और अन्य जानकारी की बातें 'उत्तर-पत्र' पर दी हुई ऊपर की लाइनों पर लिख दीजिये।

सबसे पहले आपको नीचे लिखे नमूने के चार प्रश्नों का उत्तर देना चाहिये जिससे आपको पता लग जायेगा कि जांच शुरु करने के पहले आपको कुछ प्रश्न पूछना तो नहीं है। वैसे आपको सभी प्रश्नों को तो इस पुस्तिका से पढ़ना है, पर उनके उत्तर केवल 'उत्तर-पत्र' में देना है(जिससे नंबर का प्रश्न पुस्तिका से पढ़ना है, पर उनके उत्तर केवल हर एक प्रश्न के तीन संभावित उत्तर दिये गये है। नीचे लिखे उदाहरणों को पढ़िये और अपने उत्तरों को 'उत्तर-पत्र' के ऊपरी भाग पर, जहां 'उदाहरण' छपा है, गुणा या क्रास (X) के निशान के जरिये किसी एक खाने (box) में भरते जाइये। अगर आप अपना उत्तर 'अ' वाले उत्तर के लिये चुनते है तो बांये वाले खाने में (box के अंदर) निशान लगाइये। अगर आपका उत्तर 'ब' वाला है तो बीच वाले खाने में निशान लगाइये। इसी तरह अगर आपका उत्तर 'स' वाला है तो दाहिने वाले खाने के अंदर निशान लगा दीजिये।

उदाहरण :

1. मैं टीम वाले खेलों को देखना पसंद करता हूँ।
   a. हां b. कभी-कभी c. नहीं
2. मैं ऐसे लोगों को पसंद करता हूँ, जो :
   a गंभीर हो,
   b. दोनों के बीच के हों
   c. जल्दी दोस्त बना लेते हों।
3. रुपया आनंद(खुशी) नहीं ला सकता।
   a. हां (सच) b. दोनों के बीच का c. नहीं(गलत)
4. औरत का बच्चे से वही संबंध है जो भेड़ का :
   a. मेमना b. कुत्ता c. लड़के से है।

आखिरी उदाहरण में एक उत्तर सही है - मेमना। लेकिन, इस तरह के तर्क वाले प्रश्न इस पुस्तिका में बहुत कम है। अब अगर कोई बात आपके समझ में नहीं आई हो तो अभी पूछ लीजिये। क्योंकि, परीक्षक अब थोड़ी ही देर में आपको पन्ना उलटने के लिये और उत्तर देना शुरु करने के लिये कहेंगे।

प्रश्नों का उत्तर देते समय नीचे लिखी इन चारों बातों को अपने मन में रखें :

1. आपको किसी प्रश्न पर ज्यादा सोच-विचार करने की जरुरत नहीं है। जो सबसे पहला उत्तर मन में आये उसमें ही निशान लगा दें। यह सच है कि प्रश्न बहुत छोटे हैं और आपको उनसे सारी जानकारी नहीं मिल सकती जिन्हें आप कभी-कभी जानना चाहेंगे। उदाहरण के लिये, ऊपर के पहले प्रश्न में 'टीम वाले खेलों' के बारे में पूछा गया है जबकि ऐसा भी हो सकता है कि आप फुटबाल को बास्केटबाल से ज्यादा पसंद करते हों। लेकिन आपको 'औसत या आमतौर के खेल के लिये' उत्तर देना है या उसी तरह की मिलती-जुलती एक आम या औसत अवस्था का ख्याल करके उत्तर देना है। जहां तक हो सके, आप अपना सब से ठीक उत्तर दें। उत्तर देने की रफ्तार एक मिनट में पांच या छह प्रश्नों से कम नहीं होना चाहिये। ज्यादा से ज्यादा चालीस मिनट में सभी प्रश्नों का उत्तर दे देना चाहिये।
2. बीच वाले 'अनिश्चित' उत्तरों का सहारा लेने की कोशिश मत करिये। इन पर तभी निशान लगायें जब किनारे वाले उत्तरों को देना आपके लिये सचमुच ही असंभव हो - शायद ऐसा चार या पांच प्रश्नों में एक बार हो।
3. इस बात का पक्का ख्याल रखें कि कोई प्रश्न छूटने न पाये, और जैसे भी हो सभी प्रश्नों का उत्तर दें। ऐसा लग सकता है कि कुछ प्रश्न आप पर अच्छी तरह लागू न होते हो पर आप अपने को उस परिस्थिति में डाल कर अपना उत्तर दें। आपको कुछ प्रश्न अपने निजी मामलों से भी संबंधित लगेंगे, पर याद रखिये कि आपके उत्तर-पत्रों को बिल्कुल गुप्त रखा जाता है और उनको खास तौर से बनाई हुई कुंजियों की मदद के बगैर नहीं जाना जा सकता। साथ ही एक-एक प्रश्न के उत्तर की जांच अलग-अलग नहीं की जाती है। इसलिये आप बेझिझक अपने मन का उत्तर दें।
4. जो उत्तर आपके लिये सही हैं वही उत्तर सच्चाई और ईमानदारी से दें। परीक्षक पर अच्छा प्रभाव डालने के लिये 'यह कहना ठीक होगा' ऐसा सोचकर निशान न लगायें।

जब तक कहा ना जाय कृपया पन्ना मत उलटिये

1. इस जाँच के नियम मुझे अच्छी तरह मालूम हैं :
   a. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं
2. इस प्रश्नों के उत्तर में सच्चाई से देने के लिये तैयार हूँः
   A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं
3. मैं ऐसा मकान लेना पसंद करूँगा जो :
   A. शहर के नजदीक अच्छी बस्ती में हो
   B. दोनों के बीच का
   C. घने जंगल में अकेला हो
4. अपनी कठिनाइयों का सामना करने के लिये मुझ में काफी ताकत है :
   A. हमेशा B. आमतौर से C. कभी-कभी
5. मैं जंगली जानवरों से थोड़ा घबरा जाता हूँ, भले ही वे मजबूत पिंजड़ों में क्यों न बंद हों :
   A. हाँ (सही) B. अनिश्चित C. नहीं(गलत)
6. मैं दूसरे लोगो और उनके विचारों में दोष निकालने से अपने को रोकता हूँ :
   A. हाँ B. कभी-कभी C. नहीं
7. मैं उन लोगों पर तीखी फबती कसता हूँ जिन्हें मैं इसके लायक समझता हूँ :
   A. आमतौर से B. कभी-कभी C. नहीं
8. मैं सबको अच्छी लगने वाली(चालू) धुनों (बाजे की आवाज) के बजाय, अर्ध-शास्त्रीय संगीत अधिक पसंद करता हूँ :
   A. सही B. अनिश्चित C. गलत
9. यदि मैं दो पड़ोसियों के बच्चों को लड़ते देखूं तो मैंः
   A. उन्हें इसका समझौता स्वंय करने के लिये छोड़ दूंगा
   B. अनिश्चित
   C. उन्हें समझाऊंगा
10. सामाजिक अवसरों पर, मैं :
    A. तुरंत सामने आता हूँ
    B. दोनों के बीच का
    C. चुपचाप पीछे रहना पसंद करता हूँ
11. मेरे लिये यह बात अधिक मन-पसंद होगी :
    A. एक निर्माण-अभियंता(इंजीनियर) बनना
    B. अनिश्चित
    C. नाटकों का एक लेखक बनना
12. मैं कुछ लोगों के झगड़े सुनने के बजाय रास्ते में खड़े होकर एक कलाकार की 'पेंटिंग' को देखना अधिक पसंद करूँगा :
    A. सही B. अनिश्चित C. गलत
13. मैं आमतौर से घमंडी लोगों के साथ भी रह सकता हूँ भले ही वे शेखी मारें या दिखावा करें और अपने आप को बहुत ही अच्छा समझें :
    A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं
14. जब कोई बेईमानी करता है तो आप करीब-करीब हमेशा ही उसके चेहरे से पता लगा सकते हैं :
    A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं
15. यदि छुट्टियाँ लंबी हों और उन्हें सभी को लेना पड़े तो यह सबके लिये अच्छा होगा :
    A. सहमत B. अनिश्चित C. असहमत
16. मैं एक निश्चित और कम वेतन वाले काम की अपेक्षा एक अधिक परंतु असमान आमदनी वाले काम को करने का जोखिम(खतरा) उठाना ज्यादापसंद करूँगाः
    A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं
17. मैं अपनी भावनाओं के बारे में तभी बात करता हूँ :
    A. जब यह जरुरी हो
    B. दोनों के बीच का
    C. तुरंत जब कभी मुझे मौका मिल जाता है :
18. कभी-कभी मुझे बेकार के खतरे या अचानक डर का आभास होता है परंतु मैं इनके कारणों को नहीं समझ पाता हूँ
    A. हाँ
    B. दोनों के बीच का
    C. नहीं
19. जब मुझे किसी ऐसी चीज के लिये बुरा-भला कहा जाता है जिसे मैंने नहीं किया, तो मैं :
    A. दोषी होने की भावना नहीं रखता
    B. दोनों के बीच का
    C. फिर भी अपने को थोड़ा दोषी समझता हूँ
20. रूपये-पैसे से करीब-करीब हर चीज खरीदी जा सकती है :
    A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं
21. मेरे फैसले अधिकतर नियंत्रित होते हैं मेरे :
    A. दिल से
    B. तर्क और भावनाओं दोनो से
    C. दिमाग से
22. बहुत से लोग अधिक खुश होते यदि वे अपने साथियों के साथ ज्यादा रहकर दूसरों की तरह काम करते :
    A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं
23. जब मैं शीशे में देखता हूँ कि कौन मेरा दाहिना है और कौन बांया, तो मैं अक्सर परेशान हो जाता हूँः
    A. सही B. अनिश्चित C. गलत
24. बातें करते समय मैं :
    A. बातों को वैसे ही कहना पसंद करता हूँ जैसी वे मेरे साथ घटती(या होती) हैं
    B. दोनों के बीच का
    C. अपने विचारों को पहले अच्छी तरह संजोना पसंद करता हूँ
25. जब कुछ बातें वास्तव में मुझे बहुत क्रोधित कर देती हैं, तो मैं फिर जल्दी ही शांत भी हो जाता हूँ :
    A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

(उत्तर-पत्र के कालम 1 का अंत)

26. अगर काम करने के घंटे और तनख्वाह बराबर हों, तो यह बनना ज्यादा दिलचस्प होगा :
A. एक बढ़ई या बावर्ची बनना
B. अनिश्चित
C. किसी अच्छे रेस्तरां(या होटल) में एक वेटर बनना

27. आज से पहले, मैं निर्वाचित(चुना गया) किया गयाहूँ:
A. केवल कुछ पदों(पोजीशन) के लिये
B. अनेकों के लिये
C. बहुत से पदों के लिये

28. 'फावड़े' का 'खोदने' से वैसा ही संबंध है जैसा 'चाकू' का :
A. धार से B. काटने से C. नोक से

29. कभी-कभी मैं सो नहीं पाता क्यों कि एक विचार मेरे दिमाग में घूमता रहता है :
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

30. अपने निजी जीवन में मैं करीब-करीब हमेशा ही अपनी तय की हुई मंजिलों को पा लेता हूँ :
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

31. एक पिछड़ा हुआ कानून बदल देना चाहिये :
A. केवल उचित तर्क-वितर्क(सोच-विचार) के बाद
B. दोनों के बीच का
C. तुरंत

32. मैं ऐसी योजना पर काम करते समय परेशान रहता हूँ जिसे तुरंत चालू (कार्यान्वित) करना होता है और जिसकी वजह से दूसरों पर असर पड़ता है:
A. सही B. दोनों के बीच का C. नहीं

34. जब मैं ओछे(बेढ़ंगें) और भद्दे लोगों से मिलता हूँ, तो मैं :
A. इसे(उनकी बात को) वैसे ही मान लेता हूँ
B. दोनों के बीच का
C. नफरत करने लगता हूँ और चिढ़ जाता हूँ

35. किसी सामाजिक समूह(ग्रुप) में जब सबका ध्यान अचानक मुझ पर जम जाता है तो मैं थोड़ी उलझन में पड़ जाता हूँ :
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

36. मुझे एक बड़े जलसे में शामिल होने में हमेशा खुशी होती है, उदाहरण के लिये, एक दावत, नृत्य, या आम सभा :
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

37. मैंने स्कूल में यह पसंद किया था (या करता हूँ) :
A. संगीत
B. अनिश्चित
C. दस्तकारी और शिल्पकला

38. जब मुझे किसी काम का इंचार्ज बनाया जाता है तो मैं इस बात पर अड़ जाता हूँ कि मेरी हिदायतों का माना जाये, नहीं तो मैं स्तीफा दे दूंगा :
A. हाँ B. कभी-कभी C. नहीं

39. माता-पिता के लिये यह बहुत जरुरी है कि :
A. बच्चों को अपना स्नेह(प्यार) बढ़ाने में मदद दें
B. दोनों के बीच का
C. बच्चों को उनकी भावनाओं पर काबू रखना सिखाये

40. एक समूह में काम करते समय मैं खास तौर से :
A. व्यवस्था को सुधारने की कोशिश करुँगा
B. दोनों के बीच का
C. रिकार्ड रखूँगा और देखूँगा कि नियमों का पालन हो

41. मैं जब-तब अपने को ज्यादा मेहनत वाले काम में लगाने की जरुरत महसूस करता हूँ :
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

42. मैं भद्दे और लड़ने झगड़ने वाले लोगों के बजाय सरल और नम्र स्वभाव वालों के साथ मिलना जुलना चाहूँगाः
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

43. जब लोग मुझे किसी समूह में भला-बुरा कहते हैं तो मैं बेहद खिन्न और उदास हो जाता हूँ :
A. सही B. दोनों के बीच का C. गलत

44. यदि मैं अपने अफसर द्वारा बुलाया जाता हूँ, तो मैं :
A. इसे अपने लिये कुछ कहने(मांगने का, जो मैं चाहता हूँ) का एक मौका समझता हूँ
B. दोनों के बीच का
C. डरता हूँ कि मैंने कोई गलती कर दी है

45. इस दुनिया को जिसे चीज की जरुरत है, वह है :
A. ज्यादा नियमित और पक्के नागरिक
B. अनिश्चित
C. संसार को और अच्छा बनाने वाली योजनाओं के साथ ज्यादा 'आदर्शवादी' लोग

46. मैं जिन चीजों को पढ़ता हूँ(पत्र-पत्रिकायें) उनमें प्रचार के लिये की गई कोशिश से मैं हमेशा सावधान रहता हूँ :
A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं

47. किशोरावस्था तक मैंने स्कूल के खेलों में :
A. कभी-कभी भाग लिया है
B. अनेकों बार
C. बहुत ही ज्यादा भाग लिया है

48. मैं अपने को सजाकर इस तरह रखता हूँ वे सभी चीजें अपनी-अपनी जानी हुई जगहों पर हमेशा रहती हैं :
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

49. जब मैं दिनभर की घटनाओं के बारे में सोचता हूँ तब मैं कभी-कभी तनाव और बैचेनी की हालत में पड़ जाता हूँ :
A. हाँ B. दोनों को बीच का C. नहीं

50. मुझे कभी-कभी शक पड़ जाता है कि जिन लोगों से मैं बाते कर रहा हूँ क्या वे मेरी बातों में दिलचस्पी भी लेते है :
A. सही B. अनिश्चित C. नहीं

(उत्तर-पत्र के कालम 2 का अंत)

51. अगर मेरे ऊपर छोड़ दिया जाये तो मैं बेशक यह बनना चाहूँगा :
A. वन-विभाग में एक अधिकारी
B. अनिश्चित
C. हाई-स्कूल का एक अध्यापक

52. खास-खास त्यौहारों और जन्म-दिनों के लिये मुझेः
A. सौगात या उपहार निजी तौर पर देना पसंद है
B. अनिश्चित
C. सौगात या उपहारों का खरीदना एक तरह की बाधा लगती है

53. 'थकने' का 'कार्य' ये वही संबंध है जो 'घमंड' का :
A. मुस्कराहट B. सफलता
C. खुशी से है

54. नीचे लिखी तीन चीजों में से कौन सी एक चीज सी दूसरी दो चीजों से अलग है :
A. मोमबत्ती B. चाँद C. बिजली की रोशनी

55. मेरे दोस्तों ने जरुरत के वक्त मेरा साथ छोड़ दिया हैः
A. शायद ही कभी B. कभी-कभी
C. अनेकों बार

56. मुझमें कुछ ऐसी खास बातें(गुण)हैं जिनसे मुझे ऐसा अवश्य लगता है कि मैं बहुत से लोगों से ऊंचा हूँ
A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं

57. घबराहट की दशा में, मैं अपनी भावनाओं को दूसरों से छिपाने की पूरी कोशिश करता हूँ :
A. सही B. दोनों के बीच का C. गलत

58. किसी फिल्म-शो या मनोरंजन के लिये में घर से बाहर जाना पसंद करता हूँ :
A. हफ्ते में एक बार से ज्यादा(औसत से अधिक)
B. हफ्ते में लगभग एक बार(औसत)
C. हफ्ते में एक बार से भी कम(औसत से कम)

59. मैं सोचता हूँ कि अच्छे तरीकों(शिष्टाचार) और कानून की इज्जत के बजाये खूब आजादी देना ज्यादा जरुरी है :
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

60. मैं अपने से बड़े(बुजुर्ग, अनुभवी और ऊंचे पद वाले) लोगों के मौजूदगी में चुप ही रहता हूँ
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

61. किसी बड़े समूह में भाषण देना या कोई चीज सुनाना मुझे मुश्किल मालूम पड़ता है :
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

62. किसी अनजान या नई जगह होने पर भी मुझे दिशाओं की जल्दी समझ है(मैं आसानी से बता सकता हूँ कि किधर उत्तर, दक्षिण, पूरब या पश्चिम है):
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

63. अगर कोई मुझ पर बौखला पड़े तो मैं :
A. उसे शांत करने की कोशिश करूँगा
B. अनिश्चित C. चिढ़ जाऊँगा

64. जब किसी पत्रिका में मैं कोई अनुचित लेख पढ़ता हूँ तो उसका 'करारा जवाब' देने के बजाये मैं उसे भूल जाना पसंद करता हूँ
A. हाँ B. अनिश्चित C. गलत

65. बहुत सी अनावश्यक और फालतू चीजें, जैसे शहर की गलियों या दुकानों के नाम, मेरी याददाश्त के बाहर हो जाया करती है ।
A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं

66. जानवरों का इलाज और आपरेशन करते हुये एक पशु चिकित्सक (Animal Doctor) का जीवन बिताने में मुझे आनंद आ सकेगा ।
A. हाँ B. दोनों के बीच का
C. नहीं

६७. मैं अपना खाना बड़े स्वाद के साथ खाता हूँ, लेकिन हमेशा उतनी सावधानी और सही तरीके से नही जितना कि कुछ दूसरे लोग अपनाते हैं।
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

68. बाजे - बाजे वक्त ऐसा भी होता जब मेरा किसी से भी मिलने के लिये मूड (मिजाज) नहीं बन पाता है।
A. शायद ही की कभी B. दोनों के बीच का
C. अक्सर, कई बार

69. कभी-कभी लोग मुझे अगाह कर देते हैं कि बोलचाल और बर्ताव में मेरा क्षोभ (गुस्सा, रोष) बहुत साफ झलक जाया करता है।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. गलत

70. अपनी किशोरावस्था (Teen-age) में अगर माता-पिता से मेरा मतभेद हो जाता था, तो मैं आमतौर परः
A. अपना मत (राय) कायम रखता हूँ
B. दोनों के बीच का
C. उनका अधिकार (मत या सत्ता) मान लेताथा

71. दूसरे आदमी के साथ शामिल होकर साझा करने के बजाय,. मैं अपने लिए अलग आफिस का होना ज्यादा पसंद करता हूँ।
A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं

72. अपनी सपलताओं पर तारीफ पाने के बजाय, अपनी जिन्दगी अपने ढंग से शांति से बिताने में मुझे ज्यादा आनंद आयेगा ।
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

73 मैं बहुत सी बातों में अपने को परिपक्व (सिद्ध, समझदार) समझता हूँ ।
A. सही, B. अनिश्चित C. गलत

74. जिस तरह का सुझाव (आलोचना) बहुत से लोग मुझे देते हैं तो उससे फायदा उठाने के बजाय में घबड़ा जाता हूँ।
A. अक्सर B. कभी - कभी C. कभी नहीं

75 अपनी भावनाओं (Feeling) को प्रकट करना हमेशा पूरी तरह से मेरे वश (काबू) मे रहा है।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं ।

(उत्तर-पत्र के कालम 3 का अंत)

76. एक लाभदायक अविष्कार को चालू करने लिये , मैं
A. उस पर प्रयोगशाला (Laboratory) में काम करना चाहूँगा
B. अनिश्चित C. उसे लोगों में बेचना चाहूँगा ।

77. 'आश्चर्य' का अजीब से वही संबंध है जो 'डर' का
A. बहादुर B. बैचेन C. डरावना से हैं।

78. नीचे लिखी तीन भिन्नों (fractions) में से वह कौन सी एक भिन्न है जो बाकी दो भिन्न की तरह नहीं है?
A. 3/77 B. 3/9 C. 3/11

79. ऐसा लगता है कि कुछ लोग मेरी उपेक्षा करते हैं या मुझसे किनारा काटते हैं, हालांकि मैं नहीं जानता कि ऐसा क्यों है।
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

80. मेरे मन के अच्छे इरादों व विचारों के मुकाबले में जितना अच्छा व्यवहार लोगों से मिलना चाहिये, लोग उससे कम मुझे देते हैं।
A. अक्सर B. कभी - कभी C. कभी नहीं

81 किसी भी जगह, चाहे वहाँ औरतों व मर्दो का मिला जुला समूह (ग्रुप) न भी हो, अगर गन्दी भाषा का इस्तेमाल होता है तो मुझे बड़ी ऊब सी मालूम होती है।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

82 यह तय बात हैं कि ज्यादातर लोगों के मुकाबले में मेरे दोस्तो की संख्या कम है।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

83 मुझे ऐसी जगह जाने में नफरत होगी जहाँ बात-चीत करने के लिये ढेर सारे लोग न हों।
A. सही, B. अनिश्चित C. गलत

84. कभी-कभी लोग मुझे लापरवाह कहते हैं, जबकि वे यह भी मानते हैं कि मैं एक रोचक (पसन्द आने लायक) व्यक्ति हूँ।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

85 अनेक सामाजिक अवसरों पर मुझे ऐसी घबराहट महसूस हुई है जैसी मंच (स्टेज) पर पहले-पहल आने पर होती हैं।
A. अक्सर, कई बार, B. कभी-कभी
C. शायद ही कभी

86 जब मैं किसी छोटे समूह (ग्रुप) में होता हूँ तो मुझे चुपचाप पीछे बैठने में ही संतोष होता है ताकि दूसरे लोग ही ज्यादा बातचीत कर सके।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

87 मुझे यह पढ़ना ज्यादा पसंद है ।
A. सैनिक या राजनैतिक लड़ाईयो का एक जीता जागता बयान,
B. अनिश्चित,
C. एक असरदार और भावपूर्ण उपन्यास (नॉवेल)

88 जब रोब जमाने वाले लोग अपनी मर्जी के मुताबिक मुझे चलाने की कोशिश करते हैं, तो मैं उनकी मर्जी के बिल्कुल खिलाफ काम करता हूँ।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

89 मेरे धंधे के बड़े लोग या मेरे परिवार के लोग, नियम के अनुसार मेरे अन्दर तभी गलती निकालते हैं जब उसके लिये सचमुच ही कोई वजह रहती है।
A. सही, B. दोनों के बीच का C. गलत।

90 सड़कों पर या दुकानों के अन्दर, जिस तरीके से कुछ आदमी दूसरे लोगों को घूर कर देखते हैं वह तरीका मुझे नापसंद है।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

91 रेल के एक लम्बे सफर में, मुझे यह ज्यादा पसन्द होगा :
A. किसी गम्भीर मगर दिलचस्प विषय को पढ़ना
B. अनिश्चित,
C. साथ के मुसाफिर से बीच-बीच में बात-चीत करते हुए समय काटना।

92 एक ऐसी स्थिति (दशा) में, जो कि खतरनाक बन सकती है, मैं खुलकर बोलने और हंगामा मचाने में विश्वास करता हूँ चाहे इससे नम्रता और शांति क्यों न भंग हो जाय।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

93 अगर जान-पहचान के लोग मुझसे खराब बर्ताव करते हैं और वे यह दिखाते हैं कि मुझे नापसंद करते हैं, तो
A. इससे मुझे जरा भी घबराहट नहीं होती,
B. दोनों के बीच का,
C. इससे मेरा दिल बैठने लगता है।

94 मुझे अपने लिये तारीफ और बड़ाई पाने पर बड़ी उलझन या परेशानी मालूम होती है।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

95 मैं एक ऐसा धंधा ज्यादा पसंद करूँगा, जिसमें
A. एक निश्चित बंधी हुई तनख्वाह हो
B. दोनों का बीच का
C. एक ज्यादा या बड़ी तनख्वाह हो, पर इस बात पर मुनासिब हो कि मैं बराबर लोगों से मनवाता रहूँ कि मैं इतनी बड़ी तनख्वाह के काबिल भी हूँ।

96. अपनी जानकारी को बढ़ाने के लिये मैं :
A. तरह तरह के विषयों पर लोगों से चर्चा करना पसंद करता हूँ ।
B. दोनों के बीच का
C. छपे हुये समाचार या अखबारों की खबरों पर विश्वास करता हूँ ।

97. मैं सामाजिक मामलों और कमेटियों आदि के कामों में सक्रिय रुप से भाग लेना पसन्द करता हूँ ।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

98. किसी दिये हुये काम को पूरा करने में मुझे तब तक संतोष नहीं होता जब तक कि उसकी छोटी- छोटी बातों पर भी गहराई से ध्यान न दिया गया हो।
A. सही B. दोनों के बीच का C. गलत

99. कभी - कभी बहुत छोटी बाधाओं या रुकावटों से भी बहुत खीझ (गुस्सा) हो जाती है।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

100. मैं हमेशा ' गहरी नींद' सोने वाला रहा हूँ और नींद की दशा में कभी भी टहलता या बोलता नहीं हूँ ।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं ।

(उत्तर-पत्र के कालम 4 का अंत)

101. किसी व्यापार में काम करते हुए, मुझे काम ज्यादा दिलचस्प लगेगाः
A. ग्राहकों (Customers) से बातचीत करना
B. दोनों के बीच का
C. दफ्तर के कागज-पत्र और हिसाब किताब रखना

102 'नाप' का 'लम्बाई' से वही संबंध है जो 'बेईमानी' का A. जेल B. पाप C. चोरी से है।

103 AB का DC से वही सम्बन्ध है जो SR का
A. ए. पी. B. पी. क्यू. C. टी. यू. से है।

104 जब लोग अनुचित (बेतुके) काम करते हैं तो मैं :
A. चुपचाप शान्त रहता हूँ। B. अनिश्चित
C. उनसे नफरत करता हूँ।

105 मेरे गाना सुनते समय अगर लोग जोर - जोर से बातचीत करते है तो भी मैं
A. अपना मन गाना सुनने में लगाये रख सकता हूँ और लोगों की बात-चीत से परेशानी नहीं होता
B. दोनों के बीच का
C. ऐसा महसूस करता हूँ कि जैसे मेरा आनंद बर्बाद हो रहा है। और जिसकी वजह से मुझ लोगों पर गुस्सा आने लगता है।

106 मैं सोचता हूँ कि मेरे बारे में यह ज्यादा ठीक होगा अगर लोग मुझे ऐसे समझे जैसे
A. नम्र, सभ्य और शान्त व्यक्ति
B. दोनों के बीच का
C. एक प्रबल (बलवान) और प्रभावशाली व्यक्ति

107. सामाजिक उत्सवों में मैं तभी शामिल होता हूँ जब उनमें मेरा होना जरुरी होता है, नहीं तो मैं अपने को इनसे अलग रखता हूँ।
A. हाँ B. अनिश्चित C. गलत

108 हमेशा सफल होने की उम्मीद रखने और खुशदिल (प्रसन्नचित्त) रहने के बजाय यह ज्यादा अच्छा होगा कि उम्मीद कम रखी जाय और हमेशा सावधान रहा जाये।
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

109 अपने काम में आने वाली कठिनाइयों पर सोचते समय मैं
A. कठिनाईयों में आने से पहले ही उनसे मुकाबला करने की योजना शुरु से बनाने की कोशिश करता हाँ। B. दोनों के बीच का
C. यही समझ लेता हूँ कि अब कठिनाइयाँ आयेंगी तो उसी समय उनसे निपट लूँगा

110 किसी सामाजिक सभा में या जलसे के मौके पर लोगों में घुलमिल जाना मुझे बड़ा आसान लगता है। A. सही B. अनिश्चित C. गलत

111 जब लोगों पर असर डालकर तुरन्त काम कराने के लिए थोड़ी कूटनीति (दाव- पेंच) और समझाने - मनवाने की जरुरत पड़ती है। तब अक्सर ही ऐसा काम सौंपा जाता है।
A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं

112 मेरे लिये यह बनना ज्यादा दिलचस्प होगा :
A. नवयुवकों को काम धंधा (नौकरी) पाने में मदद करने वाला एक सलाहकार (मार्गदर्शक)
B. अनिश्चित C. किसी प्रभावशाली यंत्रालय (इंजीनियरी) का प्रबंधक (मैनेजर)

113. अगर मुझे पूरा विश्वास हो जाय कि कोई आदमी स्वार्थी (मतलबी) है और गलत रास्ते पर है, तो थोड़ी परेशानी उठाकर भी मैं उसकी पोलखोलने की कोशिश करता हूँ
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

114. लोगों को चकित कर देने के लिये और यह देखने के लिये कि वे क्या कहते हैं, मैं कभी - कभी मजाक में बेवकूफी भरी बातें कह देता हूँ।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

115. नाटक संगीत सम्मान - सम्मेलन नृत्य (ड्रामा, नाचगाना) आदि पर अखबार में लिखने वाले एक लेखक बनने में मुझे आनंद आयेगा
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नही

116. जब मुझे किसी मीटिंग में देर तक चुपचाप शान्त होकर बैठे रहना पड़ता है तो भी किसी तरह शारीरिक सुस्ती और बैचेनी जैसी अकुलाहट मुझे कभी नहीं महसूस होती
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

117. अगर कोई मुझ में कुछ ऐसी बात कहता है जिसे मैं गलत समझता हूँ तो ज्यादातर मैं अपने मन में यही कहता हूँ कि
A. 'वह झूठा है', B. दोनों के बीच का
C. 'जाहिर है कि उसे गलत जानकारी है।'

118. जबकि मैने कोई गलत काम न भी किया हो तो भी मैं ऐसा महसूस करता हाँ कि मुझे कोई सजा मिलने वाली है।
A. अक्सर B. कभी - कभी C. नहीं।

119. 'बीमारी जितना शारीरिक कारणों से होती है उतनी मानसिक कारणों से भी ', यह विचार हद से ज्यादा बढ़ाचढाकर बयान किया जाता है
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

120. बड़े - बड़े राजकीय (रियासती) समारोहों की शान - शौकत और तड़क- भड़क भी ऐसी चीजे हैं जिन्हें बनाये रखना चाहिए।
A. हाँ B. दोनों के बीच का नहीं

121. अगर लोग मेरे बारे में सोचते हैं कि मैं काफी गैर - रिवाजी (प्रथा-विरोधी) और बेमेल होता जा रहा है, तो इससे मुझे परेशानी होती है।
A. काफी ज्यादा B. थोड़ा बहुत C.बिल्कुल नहीं

122. किसी चीज का निर्माण करने (बनाने) में, मैं ज्यादातर इस तरह काम करूँगा :
A. एक समिति (कमेटी) बनाकर B. अनिश्चित
C. अपने भरोसे, अकेले ही, स्वतंत्र रुप से।

123. मेरी जिन्दगी में ऐसे वक्त आते हैं जब मुझे अपने पर ही तरस खाने से खुद को रोकना मुश्किल हो जाता है।
A. अक्सर B. कभी- कभी C. कभी नहीं

124. मुझे अक्सर लोगों पर बहुत जल्द ही गुस्सा आ जाता है।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

125. मैं पुरानी आदतों को, बिना किसी अड़चन के और बिना भूले- चूके हमेशा छोड़ (बदल) सकता हूँ
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

(उत्तर-पत्र के कालम 5 का अंत)

126. अगर दोनों की आमदनी बराबर हो तो मैं बेशक यह बनना चाहूँगा
A. एक वकील B. अनिश्चित
C. एक नाविक (नेवीगेटर) या विमान-चालक (पायलट)

127. "उससे अच्छा" का "सबसे खराब" से वही सम्बंध है जो "उससे धीमा" का
A. तेज B. सबसे अच्छा C. सबसे तेज से है।

128 .XOXOXOXOOOXOXO अक्षरों की इस लाइन के ठीक के बाद में , नीचे लिखे तीनों में से किसे रखा जाना चाहिए?
a. OXXX, B. OOXX, C. XOOO

129. किसी ऐसी चीज के लिए, जिसे मैं बड़ी तरकीब से बनाकर पूरा करने की उम्मीद कर रहा था, जब मौका आ जाता है तो उसे पूरा करने की कभी-कभी मेरी तबियत नहीं होती है।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

130. मैं बहुत से कामों में सावधानी से, बिना तंग हुए, कर सकता हूँ, भले ही लोग मेरे चारों ओर काफी शोरगुल क्यों न मचा रहे हों ।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

१३१. कभी - कभी मैं अनजान लोगों को ऐसी बता देता हूँ जो मुझे जरुरी लगती हैं, भले ही वे उनके बारे में न पूछे ।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

132. मैं अपने खाली समय के ज्यादातर हिस्से को अपने दोस्तों के साथ बीती हुई मजेदार सामाजिक घटनाओं पर बातें करने में बिताता हूँ
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

133. मुझे 'केवल खिलबाड़ के लिए' दिलेरी व अक्खड़पन वाले कामों में मजा आता है।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C.नहीं

134. मुझे एक बिखरे हुए गन्दे कमरे को देखकर बहुत झुंझलाहट होती है।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

135. मैं अपने आपको एक बहुत मिलनसार और बाहर घूमने वाला (घूमक्कड़) व्यक्ति समझता हूँ ।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

136. सामाजिक अवसरों पर (या सम्बन्धों) में :
A. अपने मन के भावों को जैसा चाहता हूँ वैसा ही प्रकट कर देता हूँ, B. दोनों के बीच का
C. अपने मन के भावों को अपने अन्दर ही रखताहूँ।

137. मैं ऐसा संगीत पसंद करता हूँ जो
A. हल्का, सीधा-साधा और जोशीला हो,
B. दोनों के बीच का C. भावपूर्ण व रसपूर्ण

138. अच्छी तरह से बनी हुई एक बन्दूक की तारीफ से ज्यादा तारीफ मैं एक कविता की सुन्दरता की करता हैं ।
A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं

139. अगर मेरे द्वारा कही गई कोई अच्छी बात लोग अनसुनी कर देते हैं तो मैं :
A. इसका ख्याल नहीं करता B. दोनों के बीच का
C. लोगों को सुनने का एक और मौका देता हूँ।

140. मैं कुछ शर्तें पर रिहा किए गए अपराधियों के साथ काम करने वाला, एक अधिकारी (प्रोवेशन आफिसर) बनना पसंद करूँगा ।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

141. हर तरह के अन्जान लोगों से मिलने - जुलने में होशियार रहना चाहिए क्योंकि इसमें छूत की बीमारी आदि के होने का डर रहता है।
A. हाँ, B. अनिश्चित C. नहीं

142. विदेशी यात्रा के समय, मैं अपने आप योजना बनाकर अपनी पसंद के स्थानों को देखने के बजाय किसी कुशलता पूर्वक आयोजित 'टूर' (सैरयात्रा) के साथ जाना अधिक पसंद करूँगा।
A. हाँ, B. अनिश्चित C. नहीं

143. वास्तव में, मुझे सिर्फ एक चाकर (सेवक) व अर्ध - सफल व्यक्ति ही समझा जाता है।
A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं

144. अगर लोग मेरी दोस्ती से फायदा उठाते हैं तो बुरा नहीं मानता और जल्दी ही भूल जाता हूँ ।
A. सही अनिश्चित गलत।

145.अगर एक समूह (ग्रुप) में, लोगों के बीच बातचीत के दौरान गर्मागर्म बहस छिड़ जाये, तो मैं यह चाहूँगा कि
A. कोई एक 'विजयी' हो तो (जीत जाये)
B. दोनों के बीच का
C. बहस चुपचाप खत्म हो जाये ।

146. मैं अपनी योजना को, बिना बाधाओं और दूसरों के सुझावों के, अपने आप अकेले ही बनाना पसंद करता हूँ।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

147. मैं कभी - कभी अपने व्यवहारों को ईर्ष्या (जलन) के दबाव में आ जाने देता हूँ ।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

148. मेरा पक्का विश्वास है कि 'अधिकारी हमेशा सही नहीं हो सकता किन्तु उसे हमेशा अधिकार जताने का अधिकार है.'
A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं

149. आगे आने वाले सभी कामों की बात सोचते ही मैं परेशान हो जाता हूँ
A. हाँ B. कभी - कभी C. नहीं

150. अगर मुझे खेल- खेलते समय लोग चिल्ला - चिल्लाकर सुझाव देते हैं। तो भी मुझे उससे परेशानी नहीं होती है।
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

(उत्तर-पत्र के कालम 6 का अंत)

151. मेरे लिये यह बताना ज्यादा दिलचस्प होगा :-
A. एक कलाकार/अर्टिस्ट B. अनिश्चित
C. क्लब को चलाने वाला सेक्रेटरी

152 नीचे लिखे शब्दों में कौन सा एक शब्द दूसरे दो शब्दों से ठीक - ठीक मेल नहीं खाता ?
A. कोई B. कुछ C. ज्यादातर

153. 'लौ' (लपट) का 'गर्मी' से वही सम्बन्ध है जो 'गुलाब' का
A. कांटे से B. लाल पंखुड़ियों से C.खुशबू से है

154. मुझे इतने सजीव सपने आते हैं कि नींद उचट जाती है।
A. अक्सर B. कभी - कभी C. कभी भी नहीं

155. यदि किसी काम के सफल होने में वास्तव में रुकावटें हों, तो भी मैं उसकी जिम्मेदारी लेने में विश्वास रखता हूँ।
A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं

156. किसी समूह (ग्रुप) को क्या करना है, जब मैं इसे अच्छी तरह जान लेता हूँ तो स्वाभाविक रूप से उस ग्रुप का शासन अपने हाथ में आ जाना मुझे पसंद है।
A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं

157. लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले निजी ढंग से कपड़े पहनने के बजाय, मैं बिलकुल सही ढंग से कपड़े पहनना ज्यादा पसंद करूँगा।
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

158. मुझे शाम का वक्त एक चहल - पहल वाली पार्टी में बिताने के बजाय चुपचाप अपने किसी शौकिया काम (हॉबी) में बिताना ज्यादा मन को भाताहै।
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

159. मैं दूसरों के अच्छे मतलब वाले सुझावों को भी नहीं सुनता, हालांकि मैं जानता हूँ कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये
A. कभी- कभी) B. शायद ही कभी C. कभी नहीं

160. किसी भी बात का फैसला करने से पहले मैं हमेशा 'सही' और 'गलत' के बुनियादी नियमों का सहारा लेता हूँ।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. कभी नहीं

161. अगर लोग मेरे काम पर नजर रखते हैं तो मुझे थोड़ा खराब लगता है।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

162. चूंकि सभी कामों का धीरे व ठीक तरीकों से पूरा होना सम्भव नहीं है, इसलिये कभी - कभी कड़ाई से काम लेना जरुरी होता है।
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

163. स्कूल में मैं यह पढ़ना पसब्द करता था (या हूँ)
A. हिन्दी (मातृभाषा, या कोई साहित्य),
B. अनिश्चित C. गणित या अंकगणित

164. बिना किसी आधार (सच्चाई) के जब लोगों ने मेरे पीछे मेरी बुराई की है तो उसे जानकर कभी - कभी मैं दुखी हुआ हूँ
A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं।

165. आदतों और परम्पराओं (रीति - रिवाजों) से बंधे मामूली लोगों से बात करना :
A. अक्सर बहुत दिलचस्प और मतलब का होता है
B. दोनों के बीच का
C. मुझे झुंझला देता है क्योंकि बात सब बेकार की होती है जिसका कोई मतलब नहीं होता।

166. कुछ बातें मुझे इतना नाराज कर देती है कि मैं उन पर कुछ न बोलना ही अच्छा समझता हूँ
A. हाँ, B. दोनों के बीच का C. नहीं

167. शिक्षा में, यह ज्यादा जरुरी है कि
A. बच्चे की काफी स्नेही (प्यार) दिया जाये।
B. दोनों के बीच का
C. बच्चों को ठीक आदतें और उचित दृष्टिकोण सिखाया जाये।

168. मुझे लोग, एक ठोस, परेशान होने वाला, और जीवन के उतार - चढ़ाव (सुख-दुख) की दशाओं में पड़कर न घबड़ाने वाला आदमी मानते हैं।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

169 मैं सोचता हूँ कि समाज को पुरानी आदतों या रूढ़ियों को एक तरफ छोड़कर 'ज्ञान और तर्क' के सहारे नये रीति रिवाजों को अपनाना चाहिये।
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं।

170. मैं सोचता हूँ कि आज की आधुनिक दुनियां में इसे सुलझाना ज्यादा जरुरी है
A. नैतिक उद्देश्यों की समस्या
B. अनिश्चित
C. राजनितिक समस्यायें और कठिनाइयां।

171. मैं इस तरह से ज्यादा अच्छी तरह से सीख सकता हूँ,
A.एक अच्छी तरह से लिखी हुई किताब को पढ़कर
B.दोनों के बीच का
C.एक सामूहिक (ग्रुप) चर्चा में शामिल होकर

172. माने हुये नियमों पर चलने के बजाय मैं अपने ढंग से काम करना पसंद करता हूँ.
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

173. किसी तर्क को रखने (करने) से पहले मैं तब तक इन्तजार करना पसंद करता हूँ जब तक मुझे विश्वास नहीं हो जाता कि मैं जो कहने जा रहा हूँ वह ठीक है।

174. यह जानते हुये भी कि वे बिल्कुल मामूली चीजें हैं, कभी-कभी छोटी-छोटी बातें मुझे इतना परेशान कर देती हैं कि बर्दाश्त के बाहर हो जाता है:
A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं

175. मैं अक्सर झटपट बातें नहीं कर बैठता कि मुझे ज्यादा पछताना पड़े
A. सही B. अनिश्चित C. गलत

(उत्तर-पत्र के कालम 7 का अंत)

176. यदि मुझे चंदा इकट्ठा करने वाले कामों को करने के लिये कहा जाये, तो मैं उसे
   A. मान लूंगा
   B. अनिश्चित
   C. मुलायमियत से कहूँगा कि 'मैं बहुत व्यस्त हूँ'
177. नीचे लिखे शब्दों में से कौन सा एक शब्द दूसरे शब्दों से अलग है :
   A. चौड़ा B. टेढ़ा-मेढ़ा C. सीधा
178. 'जल्दी' का संबंध 'कभी नहीं' से वैसे ही है जैसे 'नजदीक' का :
   A. कहीं नहीं से
   B. दूर से
   C. दूरी से
179. यदि मैं कोई भद्दी सामाजिक गलती कर बैठूं तो मैं उसे जल्दी ही भूल सकता हूँ :
   A. हाँ
   B. दोनों के बीच का
   C. नहीं
180. मैं एक 'आदर्श व्यक्ति' के रुप में जाना जाता हूँ जो करीब-करीब हमेशा हर समस्या पर कुछ विचार सामने रखता है :
   A. हाँ
   B. दोनों के बीच का
   C. नहीं
181. मैं सोचता हूँ कि मैं इन बातों में ज्यादा कुशल हूँ :
   A. चुनौतियों का दिलेरी से सामना करने में
   B. अनिश्चित
   C. दूसरे लोगो की इच्छाओं को निभा लेने में
182. मैं एक बहुत उत्साही व्यक्ति समझा जाता हूँ :
   A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं
183. मैं एक ऐसा धंधा पसंद करता हूँ जिसमें नयापन, विभिन्नता और यात्रा करने का मौका मिलता हो, भले ही उसमें कुछ खतरा क्यों न हो :
   A. हाँ B. दोनों के बीच का C. गलत
184. मैं एक बहुत सख्त आदमी हूँ, जो हमेशा जहाँ तक हो सकता है सही ढंग से काम करने के लिये जोर देता है :
   A. सही B. दोनों के बीच का C. नहीं
185. मुझे उस काम को करने में आनंद आता है जिसमें विवेक(चेतना) और काम करने की क्षमता(सकुशलता) की जरुरत पड़ती है :
   A. हाँ B. दोनों के बीच का C. नहीं
186. मैं एक क्रियाशील (हमेशा काम करने वाला) व्यक्ति हूँ जो अपने को हमेशा व्यस्त(मशगूल) रखता है :
   A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं
187. मुझे यकीन है कि मैंने बीच में कोई भी प्रश्न नहीं छोड़ा है और न ही किसी का ठीक-ठीक उत्तर देने में असमर्थ रहा हूँ :
   A. हाँ B. अनिश्चित C. नहीं

(परीक्षा का अंत)

उदाहरण	a	b	c
1	☐	☐	☐
2	☐	☐	☐

PSYCHO CENTRE

(V.S.J.)

उत्तर-पत्र	a	b	c
3	☐	☐	☐
4	☐	☐	☐

ANSWER SHEET : THE 10 P.F. TEST FORM .... (A OR B)

Name .... First .... Middle .... Last

Sex .... (Write M or F) Age .... (Nearest year) Date .... ★

FILL IN THE BOX COMPLETELY. ERASE ENTIRELY ANY ANSWER YOU WISH TO CHANGE.

(Each item: a ☐ b ☐ c ☐)

1	26	51	76	101	126	151	176
2	27	52	77	102	127	152	177
3	28	53	78	103	128	153	178
4	29	54	79	104	129	154	179
5	30	55	80	105	130	155	180
6	31	56	81	106	131	156	181
7	32	57	82	107	132	157	182
8	33	58	83	108	133	158	183
9	34	59	84	109	134	159	184
10	35	60	85	110	135	160	185
11	36	61	86	111	136	161	186
12	37	62	87	112	137	162	187
13	38	63	88	113	138	163	188
14	39	64	89	114	139	164	END OF TEST
15	40	65	90	115	140	165	
16	41	66	91	116	141	166	
17	42	67	92	117	142	167	
18	43	68	93	118	143	168	
19	44	69	94	119	144	169	
20	45	70	95	120	145	170	
21	46	71	96	121	146	171	
22	47	72	97	122	147	172	
23	48	73	98	123	148	173	
24	49	74	99	124	149	174	
25	50	75	100	125	150	175	

Do not wright here

NORMS USED

- ☐ HS
- ☐ COLL
- ☐ GEN PEO
- ☐ A
- ☐ B
- ☐ A+B
- ☐ O

RAW SCORE
A
B
C
E
F
G
H
I
L
M
N
O
P
Q
Q
Q

